



CENTER FOR
CIVIL SERVICES
DEDICATED TO UPSC CSE

करेंट अफेयर्स

मैगजीन
FEBRUARY
2025



CENTER FOR
CIVIL SERVICES
DEDICATED TO UPSC CSE

Address: Police Line Road, Daltonganj, Palamu, Jharkhand

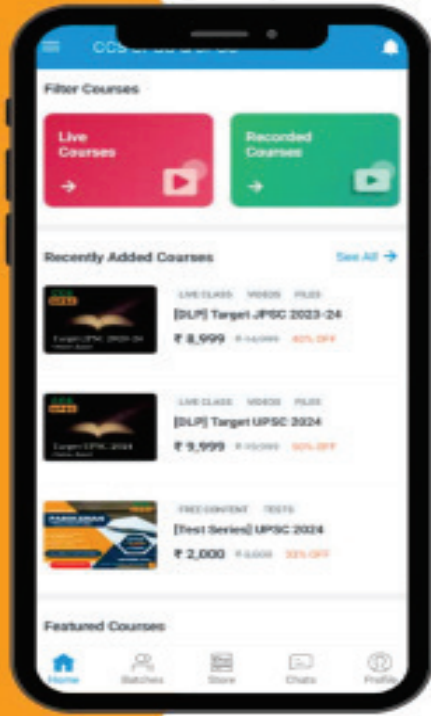
Contact: 7909017633

email: contact@ccsupsc.com Website: ccsupsc.com

▶ **CCS UPSC & JPSC**

@ccsupsc

CCS
UPSC



अब करें तैयारी
UPSC/JPSC/BPSC की
कहीं से!

- Live + Recorded क्लास
- विशेष रूप से तैयार समग्र पाठ्यसमग्री
- अखिल भारतीय टेस्ट सीरीज
- निःशुल्क पाठ्यसमग्री
- निःशुल्क टेस्ट सीरीज
- करेंट अफेयर्स
- 24*7 डाउट समाधान
- बेहद किफायती फीस
- उच्च गुणवत्ता की तैयारी

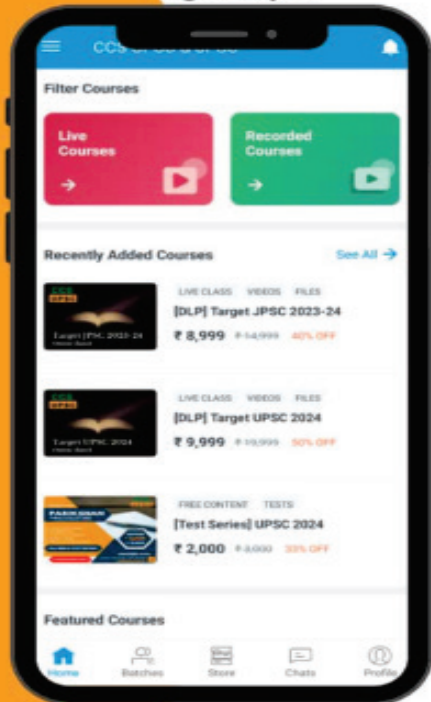
GET IT ON
Google Play

Download: ccsupsc.com/get-app

▶ **CCS UPSC & JPSC**

@ccsupsc

CCS
UPSC



Now prepare for
UPSC/JPSC/BPSC
from Anywhere!

- Live + Recorded Classes
- Study Materials
- All India Test Series
- Free Study Materials
- Free Test Series
- Current Affairs
- 24*7 Doubt Support
- Highly Affordable Fee
- Highly Effective Preparation

GET IT ON
Google Play

Download: ccsupsc.com/get-app

फरवरी- 2025

करेंट अफेयर मैगज़ीन

विषय सूची

विषय

पृष्ठ संख्या

इतिहास एवं संस्कृति

1-7

फ्रांस का अफ्रीका में उपनिवेशीकरण
लौह युग
कोणार्क सूर्य मंदिर
कलारीपयट्टू
कूका विद्रोह
गणतंत्र दिवस शिल्प उत्पाद
सिंधु घाटी लिपि
राष्ट्रगान

राज्यवस्था

8-30

वक्फ (संशोधन) विधेयक, 2024
पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना
एएसईआर रिपोर्ट, 2024
होम्योपैथी और एलोपैथी का एकीकरण
स्पैम विनियमन
एकीकृत पेंशन योजना (UPS)
जन्मसिद्ध नागरिकता
सचेटाइजेशन योजना
NHM उपलब्धियाँ 2021-24
तदर्थ न्यायाधीश
योजना का दुरुपयोग
सिंधु जल संधि (आईडब्ल्यूटी), 1960
एक राष्ट्र, एक विधायी मंच
कुलपतियों के चयन और नियुक्ति के लिए मसौदा विनियम
अनुबंध खेती
अंतर्राष्ट्रीय प्रवासी श्रमिकों पर वैश्विक अनुमान 2022 रिपोर्ट
स्वामित्व योजना
पीएम-आयुष्मान भारत स्वास्थ्य अवसंरचना मिशन (पीएम-एबीएचआईएम)
भारत रणभूमि दर्शन
सामुदायिक नोट्स
न्यायपालिका में असहमति
भारत में विदेशी मतदाता
निजी सदस्य विधेयक
यूडीआईएसई+ 2023-24 रिपोर्ट

इन-फ़्लाइट इंटरनेट
यूजीसी ड्राफ्ट रेगुलेशन 2025
ज्वारीय बाढ़

भूगोल

31-38

वेगई नदी
काँफी
आसन वेटलैंड
भरथपुझा नदी
भारत मौसम विज्ञान विभाग
क्यूबा
मेक्सिको की खाड़ी
भूजल संरक्षण

पर्यावरण

39-44

ऑलिव रिडले कछुए
ग्लोबल वार्मिंग और भारत
भारतीय द्विवार्षिक अद्यतन रिपोर्ट
2024 के पर्यावरण शिखर सम्मेलन
भस्मीकरण
नाइट्रेट संदूषण

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

45-59

साल्मोनेला प्रकोप
रेटिनल रोग
परमाणु संलयन
एआई क्रांति
WASP-127b
सुदृढीकरण सीखने का मॉडल
पैराक्वाट विषाक्तता
ग्रह परेड
सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र
स्पेस डॉकिंग एक्सपेरिमेंट (SpaDeX)
अंतरिक्ष में लोबिया के बीजों का अंकुरण
तीन जहाज कमीशन किए गए
Google विलो चिप
ग्रीन बैंक
ओपन डेटा किट प्लेटफ़ॉर्म
इंजेक्टेबल हाइड्रोजेल

अर्थव्यवस्था

60-74

भुगतान और निपटान प्रणाली अधिनियम, 2007
“जब-सूचीबद्ध” प्लेटफ़ॉर्म
गरीबी के कम आंकलन का मुद्दा
विभेदक मूल्य निर्धारण
रुपया अवमूल्यन
विश्व आर्थिक मंच की रिपोर्ट
लंबे समय तक काम करने की बहस
वेतन आयोग
क्यूएस वर्ल्ड फ्यूचर स्किल्स इंडेक्स 2025
स्टार्ट अप इंडिया के नौ साल

नकद हस्तांतरण
भारत की आर्थिक वृद्धि
न्यूनतम समर्थन मूल्य

आर्थिक सर्वेक्षण

75-78

आर्थिक सर्वेक्षण नवीनतम समाचार

पीआईबी

79-91

देवी अहिल्याबाई होल्कर
भाषिणी
उन्नत मूल प्रमाण पत्र (eCoO) 2.0 प्रणाली
बाहरी वाणिज्यिक उधार
राजकोषीय स्वास्थ्य सूचकांक (एफएचआई) 2025
सुपरसोनिक कम्बशन रैमजेट (स्क्रेमजेट) इंजन
नेताजी सुभाष चंद्र बोस
खो-खो विश्व कप 2025
मेजर ध्यानचंद खेल रत्न 2024
ग्लोबल साउथ और भारत
तीसरा लॉन्च पैड
सुधारों का वर्ष
LEADS 2024 रिपोर्ट
मसौदा डिजिटल व्यक्तिगत डेटा सुरक्षा नियम

अंतर्राष्ट्रीय संबंध

92-101

पेरिस एआई शिखर सम्मेलन, 2025
भारत - इंडोनेशिया
WHO से अमेरिका का बाहर होना
विश्व आर्थिक मंच
जयशंकर का 5-सूत्री एजेंडा
अभ्यास ला पेरिस
ग्लोबल साउथ और भारत
यूएस एआई निर्यात नियम
भारत बांग्लादेश सीमा विवाद

आपदा प्रबंधन

102-103

भगदड़
मानव-हाथी संघर्ष

योजना फरवरी 2025

104-115

1. भारतीय ज्ञान प्रणालियों (आईकेएस) पर ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य
2. भारतीय ज्ञान प्रणालियों (IKS) के माध्यम से मन का विउपनिवेशीकरण
3. ज्ञान प्रणाली के रूप में संस्कृत
4. कोणार्क का सूर्य मंदिर: महानदी डेल्टा पर एक भू-विरासत चमत्कार
5. लोक प्रशासन में भावनात्मक बुद्धिमत्ता: एक बौद्ध परिप्रेक्ष्य
6. भारत के वैश्विक क्षमता केंद्र (GCC) अगली पीढ़ी की ओर ले जाते हैं

कुरुक्षेत्र फरवरी 2025

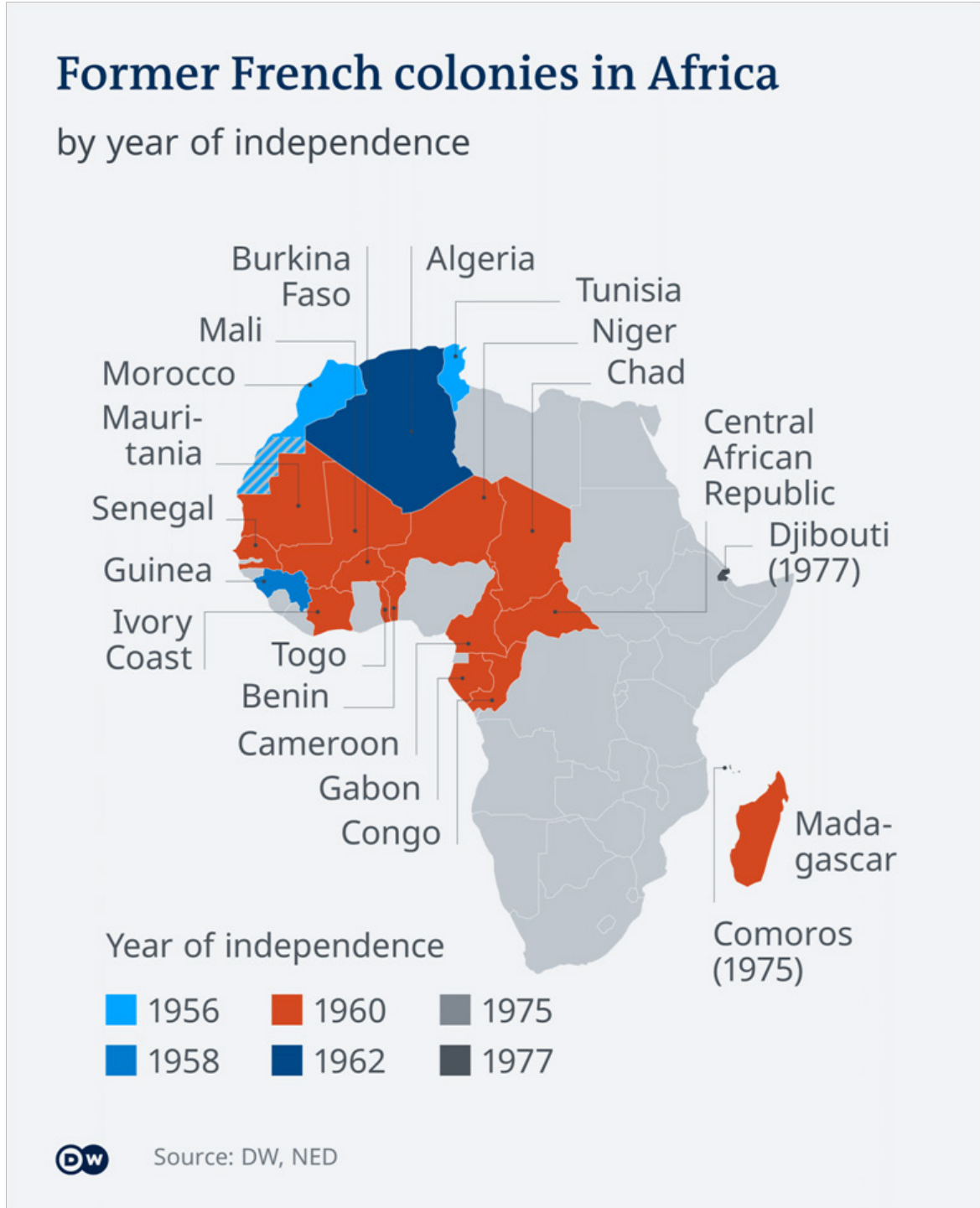
116-123

1. ग्रामीण विकास में इसरो की भूमिका
2. अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी: भारत में ग्रामीण-शहरी अंतर को पाटना
3. सीखने के भविष्य की पुनर्कल्पना: अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी पर शिक्षा
4. सूखा और बाढ़ प्रबंधन के लिए उपग्रह-आधारित प्रारंभिक चेतावनी प्रणाली
5. कृषि निर्णय सहायता प्रणाली (कृषि-DSS)

फ्रांस का अफ्रीका में उपनिवेशीकरण

संदर्भ:

पश्चिमी अफ्रीकी देश फ्रांस के साथ पारंपरिक औपनिवेशिक संबंधों से दूर जा रहे हैं, सुरक्षा और आर्थिक सहयोग के लिए वैश्विक शक्तियों के साथ साझेदारी की तलाश कर रहे हैं।



फ्रांस द्वारा अफ्रीका में उपनिवेशीकरण के बारे में

फ्रांस ने अफ्रीका में उपनिवेशीकरण कैसे किया?

1. प्रारंभिक उद्यम (1830): फ्रांस ने 1830 में अल्जीरिया पर कब्जा करके अपना उपनिवेशीकरण शुरू किया, जिसने उत्तरी अफ्रीका में फ्रांसीसी प्रभाव के विस्तार को चिह्नित किया।
2. पश्चिमी अफ्रीका में विस्तार: गाम्बिया, आइवरी कोस्ट और सेनेगल जैसे क्षेत्रों को फ्रांसीसी नियंत्रण में लाया गया।
3. बर्लिन सम्मेलन (1884-85): फ्रांस ने अपने क्षेत्रीय दावों को औपचारिक रूप दिया, उत्तर, पश्चिम और मध्य अफ्रीका में विशाल क्षेत्रों का अधिग्रहण किया।
4. प्रत्यक्ष शासन: फ्रांस ने यूरोपीय शासन पर आधारित एक केंद्रीकृत प्रशासनिक प्रणाली लागू की, जिसने अफ्रीकी उपनिवेशों में पारंपरिक सत्ता संरचनाओं को कमजोर कर दिया।
5. आर्थिक शोषण: जबरन श्रम और संसाधन निष्कर्षण का व्यापक उपयोग, विशेष रूप से सोने, कोको, मूंगफली और लकड़ी में, यह सुनिश्चित करता है कि उपनिवेश फ्रांस के लिए आर्थिक केंद्र के रूप में काम करते हैं।

फ्रांसीसी उपनिवेशीकरण के परिणाम:

1. आर्थिक:

- संसाधन निष्कर्षण: अफ्रीकी संसाधनों को फ्रांस में निर्यात किया गया, जिससे स्थानीय विकास न्यूनतम रहा।
- एकल-कृषि अर्थव्यवस्थाएँ: उपनिवेशों को मूंगफली (सेनेगल) और कोको (घाना) जैसी एकल फसलों पर निर्भर रहने के लिए मजबूर होना पड़ा।
- कराधान: कठोर राजकोषीय नीतियों ने स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं को खत्म कर दिया, जिससे गरीबी बढ़ गई।

2. सामाजिक और सांस्कृतिक

- नस्लीय भेदभाव: अफ्रीकी लोगों को फ्रांसीसी शासन के तहत दूसरे दर्जे के नागरिकों के रूप में माना जाता था।
- पारंपरिक प्रणालियों का क्षरण: स्वदेशी शासन संरचनाओं को यूरोपीय मॉडलों द्वारा प्रतिस्थापित किया गया, जिससे स्थानीय समाजों में व्यवधान उत्पन्न हुआ।
- सांस्कृतिक लूट: हज़ारों अफ्रीकी कलाकृतियों को तस्करी करके फ्रांस ले जाया गया, जिससे अफ्रीकी राष्ट्र अपनी विरासत से वंचित हो गए।

3. राजनीतिक

- कृत्रिम सीमाएँ: औपनिवेशिक शक्तियों द्वारा खींची गई मनमानी सीमाओं ने जातीय विभाजन पैदा किया, जिससे स्वतंत्रता के बाद संघर्षों को बढ़ावा मिला।
- श्रम का शोषण: जबरन श्रम प्रणाली के कारण कई क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर विस्थापन और जनसंख्या में गिरावट आई।

अफ्रीका का उपनिवेशवाद-विहीन होना:

- द्वितीय विश्व युद्ध के बाद के दबाव: वैश्विक उपनिवेशवाद-विरोधी आंदोलनों और अफ्रीकी प्रतिरोध ने उपनिवेशवाद-विहीन होने को बढ़ावा दिया।
- स्वतंत्रता आंदोलन: सेनेगल, अल्जीरिया और गिनी जैसे देशों ने बातचीत या संघर्ष के माध्यम से स्वतंत्रता प्राप्त की।
- निरंतर प्रभाव: स्वतंत्रता प्रदान करने के बावजूद, फ्रांस ने फ्रैंकाफ्रिक प्रणाली के माध्यम से मजबूत आर्थिक और राजनीतिक संबंध बनाए रखे, जिससे यह सुनिश्चित हुआ कि अफ्रीकी देश फ्रांस पर निर्भर रहें।

अफ्रीका में फ्रांस की वर्तमान भूमिका:

1. सैन्य:

- सैन्य उपस्थिति: विद्रोहियों से निपटने के उद्देश्य से चाड, सेनेगल और आइवरी कोस्ट में फ्रांसीसी सैनिक तैनात थे।
- हाल ही में वापसी: फ्रांसीसी विरोधी भावनाओं और क्षेत्रीय आतंकवाद से निपटने में विफलताओं के कारण कई देशों से सैनिकों की वापसी हुई।

2. आर्थिक:

- आर्थिक निर्भरता: कई अफ्रीकी देश अभी भी फ्रांस के साथ भारी मात्रा में व्यापार करते हैं। हालाँकि, चीन की बेल्ट एंड रोड पहल और रूस के सैन्य गठबंधनों से प्रतिस्पर्धा फ्रांसीसी प्रभुत्व को कम कर रही है।

3. घटना प्रभाव:

- गठबंधनों में बदलाव: अफ्रीकी देश रूस और चीन जैसी वैश्विक शक्तियों के साथ साझेदारी कर रहे हैं, औपनिवेशिक संबंधों से दूर जा रहे हैं।
- संकट में फ्रांसाफ्रिक: निर्भरता के मॉडल को अस्वीकार किया जा रहा है क्योंकि राष्ट्र संप्रभुता और न्यायसंगत भागीदारी की मांग कर रहे हैं।

निष्कर्ष:

फ्रांस के औपनिवेशिक इतिहास ने अफ्रीका पर गहरे निशान छोड़े हैं, जिसने इसकी राजनीतिक और आर्थिक प्रणालियों को आकार दिया है। जबकि विउपनिवेशीकरण आंदोलन ने औपचारिक उपनिवेशवाद को समाप्त कर दिया, फ्रांस का घटना प्रभाव अफ्रीका की संप्रभुता और साझेदारी के विधिकरण के लिए जोर को दर्शाता है। यह बदलाव एक बदलती वैश्विक व्यवस्था को दर्शाता है, जिसमें नए खिलाड़ी अफ्रीका के भू-राजनीतिक परिदृश्य में कदम रख रहे हैं।



कोणार्क सूर्य मंदिर के बारे में:

- स्थान: बंगाल की खाड़ी के पास ओडिशा के कोणार्क में स्थित है।
- निर्माण: 13वीं शताब्दी (1238-1264 ई.) में निर्मित।
- द्वारा निर्मित: गंगा वंश के राजा नरसिंह देव प्रथम द्वारा कमीशन।
- संबंधित राज्य: गंगा साम्राज्य की ताकत और स्थिरता का प्रतिनिधित्व करता है।

वास्तुकला संबंधी विशेषताएँ:

- रथ का डिज़ाइन: मंदिर को सूर्य देवता के भव्य रथ के रूप में डिज़ाइन किया गया है, जिसमें 24 नवकाशीदार पहिए हैं, जिनमें से प्रत्येक का व्यास 3 मीटर है, जो समय और आकाशीय गति का प्रतीक है।
- सात घोड़े: मंदिर में रथ को खींचने वाले सात घोड़े हैं, जो आकाश में सूर्य की यात्रा को दर्शाते हैं।
- जटिल मूर्तियाँ: चबूतरे और दीवारों पर नर्तकियों, संगीतकारों, जानवरों और पौराणिक कथाओं की विस्तृत नवकाशी की गई हैं, जो उस युग की कलात्मक उत्कृष्टता को दर्शाती हैं।
- विमान और शिखर: मूल मुख्य अभयारण्य (विमान) के ऊपर एक विशाल शिखर (मुकुट) था, जो 19वीं शताब्दी में ढह गया।
- नटमंदिर और जहामोगना: नृत्य हॉल (नटमंदिर) और दर्शक हॉल (जहामोगना) पिरामिडनुमा डिज़ाइन प्रदर्शित करते हैं, जो कलिंग मंदिर वास्तुकला की भव्यता को दर्शाते हैं।
- प्रतीकात्मक रूपांकन: शेरों, पौराणिक प्राणियों और कामुक मूर्तियों के चित्रण 13वीं सदी के जीवन के आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और प्रतीकात्मक पहलुओं को उजागर करते हैं।
- वैश्विक मान्यता: यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल के रूप में सूचीबद्ध, अपनी कलात्मक सरलता और सांस्कृतिक प्रासंगिकता के लिए मान्यता प्राप्त, दुनिया भर के पर्यटकों को आकर्षित करती है।

कलारीपयट्टू

संदर्भ:

उत्तराखंड में 38वें राष्ट्रीय खेलों ने केरल के प्राचीन मार्शल आर्ट रूप कलारीपयट्टू को प्रदर्शन अनुभाग में शामिल करने पर विवाद खड़ा कर दिया है।

कलारीपयट्टू के बारे में:

- यह क्या है: कलारीपयट्टू दुनिया की सबसे पुरानी मार्शल आर्ट में से एक है, जिसमें युद्ध तकनीक, शारीरिक प्रशिक्षण और उपचार पद्धतियों का संयोजन किया जाता है।
- उत्पत्ति का राज्य: केरल में उत्पन्न, यह दक्षिण भारत में गहरी सांस्कृतिक और ऐतिहासिक जड़ें रखता है।

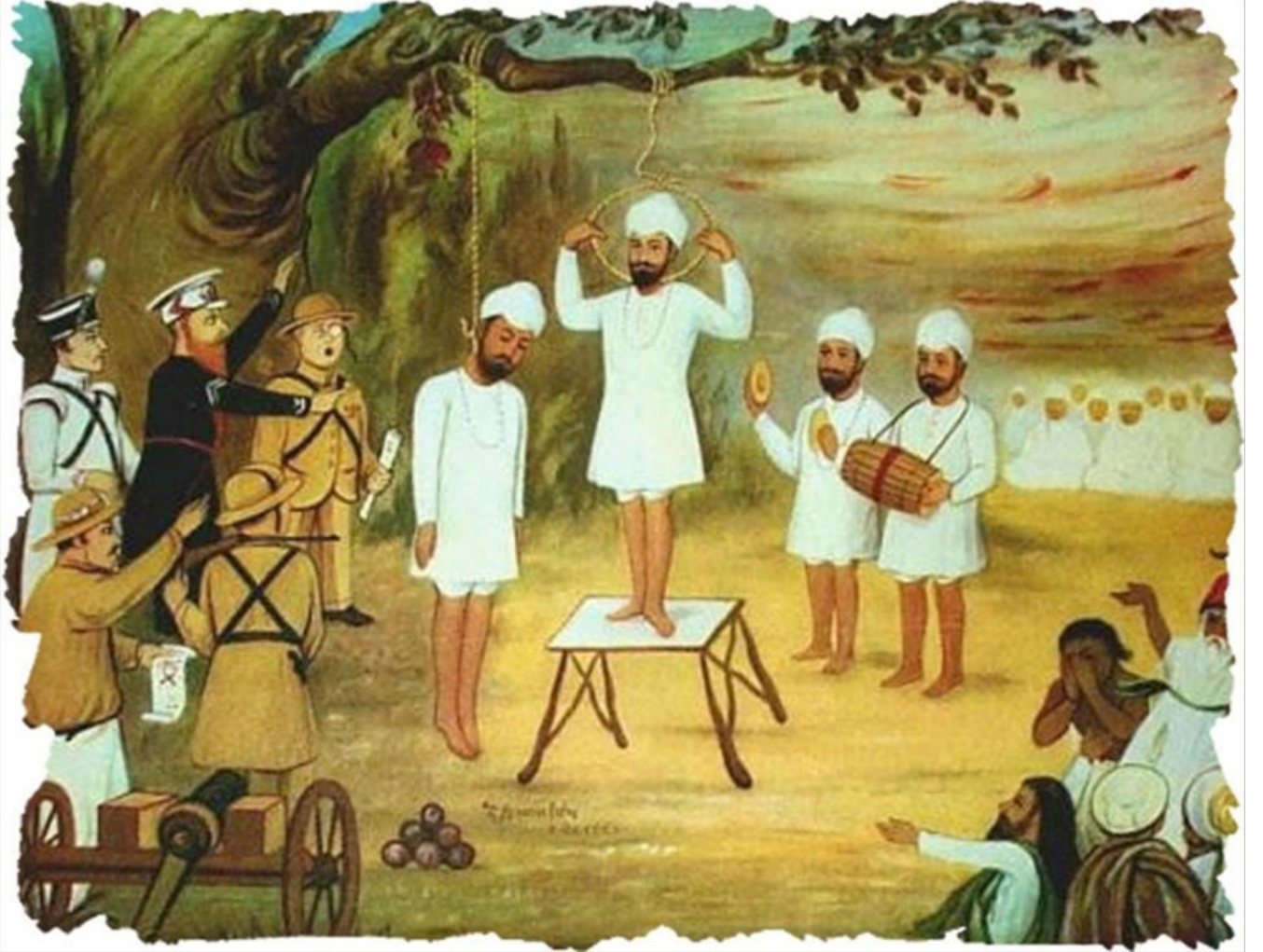


इतिहास और विशेषताएँ:

- इतिहास: पौराणिक कथाओं में योद्धा ऋषि परशुराम को इसके निर्माण का श्रेय दिया जाता है। मलयालम में "कलारी" शब्द का अर्थ है "युद्ध का मैदान", और "पयट्टू" का अर्थ है "लड़ाई"।
- मुख्य विशेषताएँ: मार्शल आर्ट में शरीर की कंडीशनिंग (मैप्पयट्टू), लकड़ी के हथियार (कोलथारी), धातु के हथियार (अंगाथारी) और नंगे हाथों की तकनीक (वेरुमकई) पर जोर दिया जाता है। यह ताकत, लचीलापन, सजगता और अनुशासन को बढ़ाता है।
- मान्यता: इसे 2009 में भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत (ICH) की राष्ट्रीय सूची में जोड़ा गया था।
- महिलाओं की भागीदारी: ऐतिहासिक रूप से, महिलाओं ने कलारीपयट्टू का प्रशिक्षण लिया है, और वे आज भी इसके अभ्यास में उत्कृष्टता हासिल कर रही हैं।

कूका विद्रोह**संदर्भ:**

17 जनवरी को, पंजाब के मुख्यमंत्री ने कूका शहीद दिवस के उपलक्ष्य में मलेरकोटला में नामधारी शहीद स्मारक पर आयोजित एक समारोह में श्रद्धांजलि अर्पित की। कूका विद्रोह के बारे में:

**यह क्या है:**

- कूका विद्रोह पंजाब में नामधारी संप्रदाय, जिसे कूका के नाम से भी जाना जाता है, के नेतृत्व में एक ब्रिटिश विरोधी विद्रोह था। इस आंदोलन में धार्मिक सुधार और औपनिवेशिक सत्ता के प्रति प्रतिरोध का मिश्रण था।
- कहाँ हुआ: जनवरी 1872 में विद्रोह अपने चरम पर पहुँच गया, जिसमें मलेरकोटला और मलौंध किले में महत्वपूर्ण झड़पें हुईं।
- नेता: विद्रोह का नेतृत्व नामधारी संप्रदाय के संस्थापक सतगुरु राम सिंह ने किया था, साथ ही कूका हीरा सिंह और लहना सिंह जैसे नेताओं ने भी इसका नेतृत्व किया था।

आंदोलन के पीछे का कारण:

- धार्मिक सुधार: मांसाहार, शराब और विदेशी वस्तुओं जैसी सामाजिक बुराइयों का विरोध।
- औपनिवेशिक उत्पीड़न: ब्रिटिश शासन और उपनिवेशवादियों के प्रति वफादार देशी सहयोगियों के प्रति असंतोष।
- गोहत्या: गोहत्या के खिलाफ विरोध, जिसने कूकाओं की भावनाओं को बहुत आहत किया।

आंदोलन के दौरान की घटनाएँ:

- मलेरकोटला पर हमला (13 जनवरी, 1872): गौहत्या की घटना के बाद कूकाओं की अधिकारियों से झड़प हुई।
- मलौद किले पर हमला (15 जनवरी, 1872): एक कूका टुकड़ी ने ब्रिटिश समर्थक शासक के नेतृत्व में किले पर हमला किया, लेकिन उसे कड़े प्रतिरोध का सामना करना पड़ा।
- सामूहिक फांसी: आत्मसमर्पण के बाद, 17 जनवरी को 49 कूकाओं को और 18 जनवरी को 17 अन्य को तोपों से उड़ाकर मौत के घाट उतार दिया गया।
- दमन: जॉन लैम्बर्ट कोवान के नेतृत्व में अंग्रेजों ने अत्यधिक क्रूरता से काम किया। हजारों लोगों को इन फांसी को देखने के लिए मजबूर किया गया ताकि वे डरें नहीं।

विद्रोह के बाद हुए बदलाव:

- नेताओं का निर्वासन: सतगुरु राम सिंह और प्रमुख नेताओं को रंगून, बर्मा में निर्वासित कर दिया गया, जिससे आंदोलन का दमन हुआ।
- शहादत की विरासत: 12 वर्षीय बिशन सिंह और वर्याम सिंह के बलिदान जैसी बहादुरी की कहानियों ने भविष्य के प्रतिरोध आंदोलनों को प्रेरित किया।

गणतंत्र दिवस शिल्प उत्पाद

संदर्भ:

भारत गणराज्य के 75 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में, राष्ट्रपति ने एक अनूठा गणतंत्र दिवस "एट होम" रिसेप्शन शुरू किया है। आमंत्रित लोगों को दक्षिण भारत की समृद्ध विरासत को प्रदर्शित करने वाले शिल्पों का एक क्यूरेटेड बॉक्स मिलेगा।

- ये शिल्प, "एक जिला एक उत्पाद" योजना के तहत पाँच दक्षिणी राज्यों के कारीगरों द्वारा बनाए गए हैं।

समाचार में शिल्प उत्पादों के बारे में:

1. कलमकारी चित्रित बांस बॉक्स (आंध्र प्रदेश):

- विशेषताएँ: पारंपरिक निम्मलकुंटा कलमकारी चित्रों के साथ हस्तनिर्मित।
- जीआई टैग राज्य: आंध्र प्रदेश।

2. इकत-पोचमपल्ली कवर (तेलंगाना):

- विशेषताएँ: इकत बुनाई परंपरा को प्रदर्शित करने वाला पुनः प्रयोज्य कवर।
- जीआई टैग राज्य: तेलंगाना।

3. गंजिफा आर्ट मैग्नेट (कर्नाटक):

- विशेषताएँ: जटिल गंजिफा कला को दर्शाता है, जो ताश के पत्तों से अपने संबंध के लिए जाना जाता है।
- जीआई टैग राज्य: कर्नाटक।

4. कांजीवरम सिल्क पाउच (तमिलनाडु):

- विशेषताएँ: कांजीवरम बुनाई की भव्यता का प्रतीक हस्तनिर्मित रेशम पाउच।
- जीआई टैग राज्य: तमिलनाडु।

5. एटिकोपवका गुड़िया (आंध्र प्रदेश):

- विशेषताएँ: पर्यावरण के अनुकूल, पारंपरिक लकड़ी की गुड़िया।
- जीआई टैग राज्य: आंध्र प्रदेश।

6. स्कूपाइन् लीफ बुकमार्क (केरल):

- विशेषताएँ: प्राकृतिक स्कूपाइन् पत्तियों से बुना हुआ, स्थिरता का प्रतीक।
- जीआई टैग राज्य: केरल।

Art in a box

President Droupadi Murmu's guests are set to receive a gift box containing the best of south India's GI-tagged crafts. Here are some products featured in the hamper:



Pochampally Ikat on a pencil

pouch: This Telangana staple is known for its distinct geometric patterns and bold colours



Etikoppaka toys:

The soft wood and lacquer toys from the eponymous village in Andhra Pradesh are valued for the use of natural dyes and themes depicting everyday life



Kalamkari on bamboo:

These goodies will arrive in a bamboo box decorated with Kalamkari motifs, pen-drawn with natural dyes



Kanchipuram silk as a pouch: The handloom silk, world renowned for its richness and elegance, makes its way from Tamil Nadu

सिंधु घाटी लिपि

संदर्भ:

तमिलनाडु के मुख्यमंत्री द्वारा सिंधु घाटी लिपि को समझने वाले को 1 मिलियन डॉलर का पुरस्कार देने की पेशकश 5,000 साल पुरानी सभ्यता के बारे में रहस्य को सुलझाने से कहीं बढ़कर एक उद्देश्य पूरा करती है।

हड़प्पा लिपि के बारे में:

यह क्या है:

- सिंधु घाटी सभ्यता (लगभग 2600-1900 ईसा पूर्व) की लेखन प्रणाली, जिसमें बिना किसी पुष्टि किए गए भाषाई संबंध के साथ अपठित प्रतीक हैं।

प्रयुक्त सामग्री:

- स्टीटाइट मुहरों, मिट्टी के छापों, मिट्टी के बर्तनों, कांस्य औजारों, पत्थर की चूड़ियों, गोले, हाथी दांत और छोटी तांबे की गोलियों पर पाया जाता है।
- मुहरें अक्सर चौकोर होती थीं, लगभग 2.54 सेमी, और कभी-कभी चांदी, फ़ाइनेस और कैल्साइट जैसी सामग्रियों से बनी होती थीं।

लिपि की विशेषताएँ:

- पाँच प्रतीकों वाले छोटे शिलालेख, जिनमें सबसे लंबे ज्ञात 26 प्रतीक हैं।
- प्रारंभिक रूप रावी और कोट दीजी चरणों (लगभग 3500-2700 ईसा पूर्व) के दौरान दिखाई दिए।
- ऐसा प्रतीत होता है कि लिपि शहरी काल (लगभग 2600-1900 ईसा पूर्व) तक पूरी तरह से विकसित हो गई थी।

लिपि पर पाए जाने वाले रूपांकन:

- गेंडा, बैल, बाघ, हाथी और पौराणिक जीव जैसे पशु रूपांकन।
- मानव आकृतियों का चित्रण, अक्सर प्रतीकात्मक या कथात्मक संदर्भों में, जिसमें युद्ध या अनुष्ठान दृश्य शामिल हैं।

राष्ट्रगान

संदर्भ:

विवाद तमिलनाडु की विधान सभा में तब पैदा हुआ जब राज्यपाल राष्ट्रगान की अनुपस्थिति का हवाला देते हुए प्रथागत संबोधन दिए बिना चले गए।

राष्ट्रगान के बारे में:

- लेखक: रवींद्रनाथ टैगोर द्वारा बांग्ला में रचित।
- अपनाया गया: हिंदी संस्करण को 24 जनवरी, 1950 को संविधान सभा द्वारा भारत के राष्ट्रगान के रूप में अपनाया गया।

राष्ट्रगान गाने की प्रक्रिया:

पूर्ण संस्करण:

- समय: लगभग 52 सेकंड।

परिस्थितियाँ और अवसर:

- नागरिक और सैन्य निवेश के दौरान।
- जब राष्ट्रपति या राज्यपाल औपचारिक राजकीय समारोहों में आते हैं या वहाँ से प्रस्थान करते हैं।
- परेड के समय या जब राष्ट्रीय ध्वज फहराया जाता है।
- किसी सार्वजनिक समारोह के लिए राष्ट्रपति के आगमन या प्रस्थान पर।
- जब बैंड द्वारा बजाया जाता है तो उसके पहले ढोल बजाया जाता है।

संक्षिप्त संस्करण:

- राष्ट्रगान का संक्षिप्त संस्करण:
- जन-गण-मन-अधिनायक जय हे,
- भारत-भाण्य-विधाता,
- जय हे, जय हे, जय हे, जय जय जय जय हे।
- समय: लगभग 20 सेकंड।

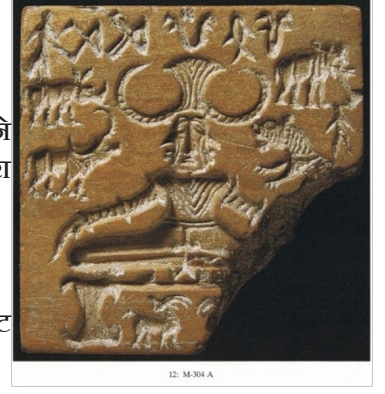
परिस्थितियाँ और अवसर:

- मेस में टोस्ट के दौरान बजाया जाता है।
- भारत सरकार द्वारा विशेष आदेश दिए जाने पर।

सामूहिक गायन:

परिस्थितियाँ और अवसर:

- राष्ट्रीय ध्वज फहराए जाने के दौरान।
- सांस्कृतिक या औपचारिक समारोहों में, गायन मंडली या सार्वजनिक भागीदारी के साथ।
- गैर-राज्य सार्वजनिक समारोहों में राष्ट्रपति के आगमन या प्रस्थान पर।
- स्कूल: राष्ट्र के प्रति सम्मान पैदा करने के लिए सुबह की सभाओं के हिस्से के रूप में प्रोत्साहित किया जाता है।



वक्फ (संशोधन) विधेयक, 2024

संदर्भ:

वक्फ (संशोधन) विधेयक, 2024 पर संयुक्त समिति ने बहुमत से अपनी रिपोर्ट को स्वीकार कर लिया, जिससे सरकार के लिए संसद के आगामी बजट सत्र के दौरान विधेयक को आगे बढ़ाने का रास्ता साफ हो गया।



वक्फ बोर्ड क्या है?

- स्थापना: वक्फ बोर्ड की अवधारणा को वक्फ अधिनियम, 1954 के तहत औपचारिक रूप दिया गया था, और वक्फ अधिनियम, 1995 द्वारा इसे और मजबूत किया गया। (यह एक वैधानिक निकाय है)
- शासित: अल्पसंख्यक मामलों का मंत्रालय, भारत सरकार, वक्फ बोर्डों के कामकाज की देखरेख करता है।

कार्य और शक्तियाँ:

- प्रशासन: वक्फ संपत्तियों का प्रबंधन और पर्यवेक्षण करता है।
- वसूली: खोई हुई या अतिक्रमण की गई वक्फ संपत्तियों को वापस प्राप्त करता है।
- हस्तांतरण: बिक्री, उपहार, बंधक, विनिमय या पट्टे के माध्यम से अचल वक्फ संपत्तियों के हस्तांतरण को मंजूरी देता है।
- नियुक्ति: वक्फ राजस्व का उपयोग निर्दिष्ट उद्देश्यों के लिए किया जाना सुनिश्चित करने के लिए संरक्षकों की नियुक्ति करता है।
- कानूनी प्राधिकारी: मुकदमा कर सकता है और अदालत में मुकदमा चलाया जा सकता है।

बोर्ड और सदस्य:

- अध्यक्ष: राज्य सरकार द्वारा नियुक्त किया जाता है।
- सदस्य: मुस्लिम विधायक, सांसद, राज्य बार काउंसिल के सदस्य, इस्लामी विद्वान और वक्फ के मुतवल्ली (प्रबंधक) जिनकी वार्षिक आय ₹1 लाख और उससे अधिक है।
- केंद्रीय वक्फ परिषद (CWC): राज्य स्तरीय वक्फ बोर्डों की देखरेख और सलाह देने के लिए 1964 में स्थापिता।

2024 विधेयक में प्रस्तावित संशोधन:

1. गैर-मुस्लिम सदस्यों को शामिल करना:

- केंद्रीय वक्फ परिषद और राज्य वक्फ बोर्डों में कम से कम दो गैर-मुस्लिम सदस्यों को अनिवार्य बनाता है।
- गैर-मुस्लिम सदस्यों को इन निकायों में बहुमत बनाने की अनुमति देता है।

- उपयोगकर्ता द्वारा वक्फ को हटाना: उपयोगकर्ता द्वारा वक्फ की अवधारणा को समाप्त करता है, जो समय के साथ धार्मिक या धर्मार्थ उद्देश्यों के लिए उपयोग की जाने वाली संपत्तियों को वक्फ के रूप में मान्यता देता है।
- जिला कलेक्टर की भूमिका: जिला कलेक्टरों को विवादित संपत्तियों के स्वामित्व का निर्धारण करने और राजस्व रिकॉर्ड को अपडेट करने का अधिकार देता है।
- न्यायाधिकरणों की संरचना: वक्फ न्यायाधिकरणों से मुस्लिम कानून के विशेषज्ञ की आवश्यकता को हटाता है।
- अपील प्रक्रिया: न्यायाधिकरण के निर्णयों के खिलाफ उच्च न्यायालयों में सीधे अपील करने की अनुमति देता है, जिससे न्यायाधिकरण के फैसलों की अंतिमता समाप्त हो जाती है।

2024 में संशोधन की आवश्यकता:

- पारदर्शिता और दक्षता: इसका उद्देश्य वक्फ संपत्तियों के प्रबंधन में पारदर्शिता और दक्षता में सुधार करना है।
- समावेशिता: वक्फ प्रशासन में गैर-मुस्लिम सदस्यों को शामिल करके समावेशिता को बढ़ावा देना है।
- विवाद समाधान: संपत्ति विवादों पर जिला कलेक्टरों को अधिकार प्रदान करके विवाद समाधान तंत्र को बढ़ावा देना है।
- कानूनी स्पष्टता: वक्फ संपत्तियों के निर्माण और प्रबंधन पर स्पष्टता प्रदान करता है।
- आधुनिकीकरण: वक्फ प्रशासन को समकालीन कानूनी और प्रशासनिक प्रथाओं के साथ संरेखित करता है।

नए विधेयक से जुड़े मुद्दे:

- मुस्लिम नियंत्रण का कमजोर होना: विपक्ष का तर्क है कि गैर-मुस्लिम सदस्यों को शामिल करने से वक्फ संपत्तियों पर मुस्लिम नियंत्रण कमजोर होता है।
- अनुच्छेद 26 का उल्लंघन: आलोचकों का दावा है कि विधेयक संविधान के अनुच्छेद 26 का उल्लंघन करता है, जो धार्मिक समुदायों को अपने मामलों का प्रबंधन करने का अधिकार देता है।
- उपयोगकर्ता द्वारा वक्फ को हटाना: उपयोगकर्ता द्वारा वक्फ को हटाने से मौजूदा वक्फ संपत्तियों की स्थिति पर विवाद हो सकता है।
- मुस्लिम कानून में विशेषज्ञता: न्यायाधिकरणों से मुस्लिम कानून के विशेषज्ञ की आवश्यकता को हटाने से वक्फ से संबंधित विवादों के निर्णय पर असर पड़ सकता है।
- दुरुपयोग की संभावना: संपत्ति विवादों पर जिला कलेक्टरों को अधिकार देने से दुरुपयोग और पक्षपात हो सकता है।

आगे की राह:

- हितधारक परामर्श: चिंताओं को दूर करने के लिए मुस्लिम समुदाय के नेताओं और हितधारकों के साथ जुड़ें।
- कानूनी सुरक्षा उपाय: जिला कलेक्टरों की शक्तियों के दुरुपयोग को रोकने के लिए सुरक्षा उपाय लागू करें।
- क्षमता निर्माण: जिला कलेक्टरों और न्यायाधिकरण सदस्यों को वक्फ कानूनों पर प्रशिक्षण प्रदान करें।
- पारदर्शिता उपाय: वक्फ संपत्तियों के प्रबंधन में पारदर्शिता सुनिश्चित करने के उपायों को लागू करें।
- समीक्षा और निगरानी: वक्फ शासन की नियमित समीक्षा और निगरानी के लिए एक तंत्र स्थापित करें।

निष्कर्ष:

वक्फ (संशोधन) विधेयक, 2024 का उद्देश्य वक्फ शासन को आधुनिक बनाना है, लेकिन मुस्लिम नियंत्रण के कमजोर होने और शक्तियों के संभावित दुरुपयोग की चिंताओं के कारण इसे काफी विरोध का सामना करना पड़ रहा है। वक्फ संपत्तियों के प्रभावी और निष्पक्ष प्रबंधन को सुनिश्चित करने के लिए हितधारकों की प्रतिक्रिया और कानूनी सुरक्षा उपायों को शामिल करते हुए एक संतुलित दृष्टिकोण आवश्यक है।

पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना

संदर्भ:

केंद्रीय नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री ने कहा कि ₹75,000 करोड़ की पीएम सूर्य घर योजना शुरू होने के लगभग एक साल बाद, 8.5 लाख घरों ने छत पर सौर कनेक्शन लगाए हैं।



पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना के बारे में:

पीएम सूर्य घर योजना क्या है?

- पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना एक केंद्र प्रायोजित योजना है जिसका उद्देश्य छत पर सौर पैनल लगाने पर सब्सिडी देकर घरों को मुफ्त बिजली उपलब्ध कराना है।
- मंत्रालय: नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय (एमएनआरई)।
- लॉन्च की तारीख: जनवरी 2024 में इसकी घोषणा के बाद, इस योजना को आधिकारिक तौर पर 15 फरवरी, 2024 को लॉन्च किया गया।

उद्देश्य:

- एक करोड़ परिवारों को प्रति माह 300 यूनिट तक मुफ्त बिजली उपलब्ध कराना।
- परिवारों और सरकार के लिए बिजली की लागत कम करना।
- भारत के ऊर्जा मिश्रण में नवीकरणीय ऊर्जा की हिस्सेदारी बढ़ाना।
- कार्बन उत्सर्जन को कम करना और सतत विकास को बढ़ावा देना।

मुख्य विशेषताएँ:

- सब्सिडी: यह योजना सौर पैनल स्थापना के लिए लागत का 40% सब्सिडी प्रदान करती है। 2 किलोवाट क्षमता तक की प्रणालियों के लिए, सब्सिडी 60% है, और 2 किलोवाट से 3 किलोवाट के बीच की प्रणालियों के लिए, यह अतिरिक्त लागत का 40% है। सब्सिडी 3 किलोवाट क्षमता तक सीमित है।
- वित्तीय परिव्यय: योजना के लिए कुल परिव्यय ₹75,021 करोड़ है, जिसमें DISCOMs (वितरण कंपनियों) के लिए प्रोत्साहन के रूप में ₹4,950 करोड़ आवंटित किए गए हैं।
- लक्ष्य: इस योजना का लक्ष्य वित्त वर्ष 2026-27 तक एक करोड़ परिवारों को कवर करना है।
- बचत: परिवार बिजली बिलों पर सालाना ₹18,000 तक बचा सकते हैं।
- सरकारी बचत: इस योजना से सरकार को बिजली की लागत में सालाना ₹75,000 करोड़ की बचत होने की उम्मीद है।
- डिस्कॉम प्रोत्साहन: डिस्कॉम को राज्य कार्यान्वयन एजेंसियों (एसआईए) के रूप में नामित किया गया है और उन्हें बेसलाइन स्तर से परे रूफटॉप सौर क्षमता स्थापित करने में उनके प्रदर्शन के आधार पर प्रोत्साहन मिलता है।

पात्रता मानदंड:

- आवेदक भारतीय नागरिक होना चाहिए।
- परिवार के पास सोलर पैनल लगाने के लिए उपयुक्त छत वाला घर होना चाहिए।
- परिवार के पास वैध बिजली कनेक्शन होना चाहिए।
- परिवार ने सोलर पैनल के लिए किसी अन्य सब्सिडी का लाभ नहीं उठाया होगा।

एसईआर रिपोर्ट, 2024

संदर्भ:

वार्षिक शिक्षा स्थिति रिपोर्ट (एसईआर) 2024 कोविड-19 के कारण सीखने की क्षमता में हुई कमी के बाद बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता (एफएलएन) में उल्लेखनीय सुधार पर प्रकाश डालती है।

एसईआर रिपोर्ट 2024 क्या है?

- प्रथम एनजीओ द्वारा संचालित, 3 से 16 वर्ष की आयु के छात्रों के पढ़ने और अंकगणित कौशल का आकलन।
- 2011 की जनगणना के आंकड़ों का उपयोग करता है, मूल्यांकन के लिए प्रति जिले 30 गांवों और प्रति गांव 20 घरों का चयन करता है।
- यह विशेष रूप से ग्रामीण स्कूलों को कवर करता है।
- मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता (FLN) पर ध्यान केंद्रित करता है और सरकारी और निजी स्कूलों में सीखने के परिणामों को ट्रैक करता है।

तीन समूह - मूल्यांकन श्रेणियाँ:

- प्री-प्राइमरी (3-5 वर्ष)
- प्राथमिक (6-14 वर्ष)
- बड़े बच्चे (15-16 वर्ष)।
- पहली बार डिजिटल साक्षरता मूल्यांकन: 14-16 वर्ष के बच्चों के बीच स्मार्टफोन की पहुँच, उपयोग और सुरक्षा जागरूकता का आकलन करता है।

ASER 2024 से मुख्य डेटा अंतर्दृष्टि:

1. पढ़ने के कौशल में सुधार: सरकारी स्कूलों में कक्षा 3 के छात्रों द्वारा कक्षा 2 की पाठ्य सामग्री पढ़ने की संख्या 16.3% (2022) से बढ़कर 23.4% (2024) हो गई।
2. अंकगणित कौशल में वृद्धि: घटाव करने में सक्षम कक्षा 3 के छात्रों की संख्या 28.1% (2018) से बढ़कर 33.7% (2024) हो गई।
3. राज्यवार प्रगति: गुजरात, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, तमिलनाडु, सिक्किम, मिजोरम ने पढ़ने के कौशल में 10% से अधिक सुधार दिखाया।
4. किशोरों के बीच स्मार्टफोन की पहुँच: 14-16 वर्ष के 89% बच्चों के पास इसकी पहुँच है, 57% इसका उपयोग शिक्षा के लिए करते हैं और 76% इसका उपयोग सोशल मीडिया के लिए करते हैं।
5. सरकारी बनाम निजी स्कूल: सरकारी स्कूलों ने निजी स्कूलों के साथ अंतर को कम करते हुए सीखने में अधिक लाभ दिखाया।

एसईआर 2024 से सकारात्मक बातें:

- एफएलएन कौशल में सुधार: कोविड के बाद केंद्रित हस्तक्षेपों (जैसे, निपुण भारत मिशन) के कारण बेहतर साक्षरता और संख्यात्मकता।
- सरकारी स्कूल में नामांकन स्थिरकरण: 66.8% बच्चे सरकारी स्कूलों में नामांकित हैं, जो महामारी से पहले के स्तर के करीब हैं।
- मजबूत शिक्षक प्रशिक्षण: 78% स्कूलों ने एफएलएन प्रशिक्षण और संसाधन प्राप्त करने की सूचना दी, जिससे सीखने की क्षमता में सुधार हुआ।
- बेहतर डिजिटल साक्षरता: 87% छात्र ऑनलाइन वीडियो पा सकते हैं, और 92.1% उन्हें साझा कर सकते हैं, जिससे स्व-शिक्षण क्षमता में सुधार होता है।
- राज्य-विशिष्ट लाभ: यूपी में कक्षा 3 के पढ़ने के स्तर में 15% की वृद्धि देखी गई, जबकि बिहार और ओडिशा में 8-10% सुधार हुआ।

ASER 2024 से नकारात्मक:

- सीखने में उच्च अंतराल बना हुआ है: कक्षा 3 के 76.6% छात्र अभी भी कक्षा 2 की पाठ्य सामग्री नहीं पढ़ सकते हैं, जो धीमी आधारभूत सुधार को दर्शाता है।
- अंकगणित की कमजोरी: कक्षा 3 के 66.3% छात्र और कक्षा 5 के 70% छात्र सरल अंकगणितीय गणना नहीं कर सकते हैं।
- डिजिटल सुरक्षा में लैंगिक अंतर: केवल 55.2% लड़कियाँ जानती हैं कि अपनी ऑनलाइन प्रोफाइल को कैसे निजी बनाया जाए, जो लड़कों से कम है।
- राज्यों में भिन्नता: हिमाचल प्रदेश और बिहार में केवल 4-5% की वृद्धि देखी गई, जबकि गुजरात और यूपी में यह 10%+ थी।
- महामारी के बाद सरकारी नामांकन में गिरावट: सरकारी स्कूलों में नामांकन 72.9% (2022) से गिरकर 66.8% (2024) हो गया।

आगे की राह:

- मूलभूत साक्षरता कार्यक्रमों को मजबूत करें: 2026-27 तक सीखने के अंतराल को पाटने के लिए NEP 2020 और NIPUN भारत का विस्तार करें।
- शिक्षक प्रशिक्षण और संसाधनों में सुधार करें: छात्र जुड़ाव को बढ़ावा देने के लिए शिक्षण-आधारित प्रशिक्षण पर ध्यान केंद्रित करें।



Annual Status of Education Report (Rural) 2024

Provisional
January 28, 2025



- डिजिटल साक्षरता और सुरक्षा को बढ़ाएँ: साइबर सुरक्षा जागरूकता पर स्कूल-स्तरीय प्रशिक्षण शुरू करें, खासकर लड़कियों के लिए।
- राज्य-विशिष्ट हस्तक्षेपों पर ध्यान दें: J&K और नागालैंड जैसे कम प्रदर्शन करने वाले राज्यों को अनुकूलित सीखने की पुनर्प्राप्ति योजनाओं की आवश्यकता है।
- पोस्ट-प्राइमरी लर्निंग सपोर्ट का विस्तार करें: प्रारंभिक सीखने के लाभों को बनाए रखने के लिए मिडिल स्कूल और हाई स्कूल सुधारों की आवश्यकता है।

निष्कर्ष:

ASER 2024 में COVID के बाद पढ़ने और अंकगणित में पर्याप्त सुधार पर प्रकाश डाला गया है, लेकिन सीखने में बड़ी कमी बनी हुई है। निरंतर शैक्षिक प्रगति के लिए केंद्रित सरकारी हस्तक्षेप, बेहतर शिक्षक प्रशिक्षण और राज्य-विशिष्ट नीतियाँ आवश्यक हैं।

होम्योपैथी और एलोपैथी का एकीकरण

संदर्भ:

महाराष्ट्र स्वाद्य एवं औषधि प्रशासन ने हाल ही में एक निर्देश में आधुनिक औषध विज्ञान में सर्टिफिकेट कोर्स पूरा करने वाले होम्योपैथिक चिकित्सकों को एलोपैथिक दवाएं लिखने की अनुमति दे दी है।

एलोपैथी क्या है?

- एलोपैथी, या आधुनिक चिकित्सा, रोगों के लक्षणों और अंतर्निहित कारणों को लक्षित करके उनका उपचार करने पर ध्यान केंद्रित करती है। यह निदान और उपचार के लिए वैज्ञानिक रूप से मान्य दवाओं, सर्जरी और उन्नत तकनीकों का उपयोग करती है। एलोपैथिक उपचार तेजी से काम करते हैं और अक्सर आपात स्थितियों में उपयोग किए जाते हैं।



होम्योपैथी क्या है?

- होम्योपैथी वैकल्पिक चिकित्सा का एक रूप है जो "जैसे इलाज वैसे ही" के सिद्धांत पर आधारित है। यह शरीर के स्व-उपचार तंत्र को उत्तेजित करने के लिए अत्यधिक पतला प्राकृतिक पदार्थों का उपयोग करता है। होम्योपैथी रोगियों की शारीरिक, भावनात्मक और मानसिक भलाई पर विचार करते हुए समग्र देखभाल पर जोर देती है।

होम्योपैथी एलोपैथी से अलग है:

पहलू	होम्योपैथी	एलोपैथी
दृष्टिकोण	शरीर की प्राकृतिक उपचार प्रक्रिया को उत्तेजित करके मूल कारण का इलाज करती है।	दवाओं और सर्जरी का उपयोग करके लक्षणों और विशिष्ट अंगों को लक्षित करती है।
दवाएँ	अत्यधिक पतला प्राकृतिक पदार्थों का उपयोग करती है।	सिंथेटिक, मशीन-निर्मित दवाइयों पर निर्भर करती है।
दुष्प्रभाव	पतलापन के कारण न्यूनतम दुष्प्रभाव।	शक्तिशाली दवाओं या आक्रामक उपचारों के कारण दुष्प्रभाव हो सकते हैं।
फोकस	समग्र कल्याण को संबोधित करने वाला समग्र दृष्टिकोण।	रोग-विशिष्ट दृष्टिकोण, तत्काल लक्षण राहत पर ध्यान केंद्रित करना।
कार्रवाई की गति	धीरे-धीरे और दीर्घकालिक प्रभाव।	त्वरित और प्रभावी, विशेष रूप से आपात स्थितियों में।

होम्योपैथी और एलोपैथी के एकीकरण की आवश्यकता:

- बेहतर स्वास्थ्य सेवा पहुंच: ग्रामीण स्वास्थ्य केंद्रों (भारत की स्वास्थ्य गतिशीलता 2022-23) में विशेषज्ञ डॉक्टरों की 80% से अधिक कमी के साथ, प्रणालियों को एकीकृत करने से देखभाल वितरण में अंतराल को पाटा जा सकता है।
उदाहरण के लिए होम्योपैथी गठिया और अस्थमा जैसी पुरानी बीमारियों के प्रबंधन में एलोपैथी का पूरक हो सकती है।
- समग्र देखभाल: होम्योपैथी का प्रतिरक्षा और समग्र कल्याण पर ध्यान एलोपैथी के लक्षण-आधारित उपचार को बढ़ा सकता है। आयुष स्वास्थ्य और कल्याण केंद्रों ने 2022 तक 8.42 करोड़ रोगियों की सेवा की, जो उनकी लोकप्रियता को दर्शाता है।
- जीर्ण रोग प्रबंधन: गैर-संचारी रोगों के प्रबंधन में एकीकृत दृष्टिकोण प्रभावी हो सकते हैं, जहाँ दीर्घकालिक देखभाल महत्वपूर्ण है।
उदाहरण के लिए, आयुष का एक घटक योग, मधुमेह और तनाव के प्रबंधन के लिए आधुनिक स्वास्थ्य सेवा में व्यापक रूप से एकीकृत है।

चुनौतियाँ और सीमाएँ:

- विश्वास की कमी: कई होम्योपैथिक उपचारों के लिए साक्ष्य-आधारित सत्यापन की कमी एलोपैथिक चिकित्सकों के बीच संदेह पैदा करती है।
- विनियमन के मुद्दे: कमजोर नियामक ढाँचे एकीकृत प्रथाओं में जवाबदेही सुनिश्चित करना मुश्किल बनाते हैं।
- परिचालन चुनौतियाँ: आधुनिक डॉक्टरों को होम्योपैथी और इसके विपरीत प्रशिक्षण देना समय लेने वाला है और इससे चिकित्सा पाठ्यक्रम पर बोझ पड़ सकता है।
- संगतता संबंधी चिंताएँ: होम्योपैथी के समग्र दृष्टिकोण को एलोपैथी की साक्ष्य-आधारित पद्धति के साथ संरेखित करने के लिए एक महत्वपूर्ण मानसिकता परिवर्तन की आवश्यकता है।
- गुणवत्ता नियंत्रण: होम्योपैथिक दवाओं की गुणवत्ता और मानकीकरण सुनिश्चित करना एक चुनौती बनी हुई है।

न्यायालय के निर्णय:

- पूनम वर्मा बनाम अश्विन पटेल और अन्य (1996): सर्वोच्च न्यायालय ने होम्योपैथ को लापरवाही के लिए उत्तरदायी ठहराया, यह निर्णय दिया कि किसी प्रशिक्षित चिकित्सा प्रणाली के बाहर अभ्यास करना कदाचार माना जाता है।
- बॉम्बे उच्च न्यायालय ने 2017 की अधिसूचना पर रोक लगाई: बॉम्बे उच्च न्यायालय ने रोगियों के लिए जोखिम पर सवाल उठाते हुए और क्रॉसपैथी की अनुमति देने के लिए प्राधिकरण की कमी को उजागर करते हुए एक रोक जारी की।
- सुरेश बड़ा मठ एट अल. (2015 अनुसंधान विश्लेषण): न्यायपालिका ने लगातार क्रॉसपैथी को लापरवाही के रूप में बरकरार रखा, इसे केवल तभी अनुमति दी जब राज्य सरकारों द्वारा स्पष्ट रूप से अधिकृत किया गया हो।

आगे की राह:

- साक्ष्य-आधारित अभ्यास: होम्योपैथिक उपचारों की प्रभावकारिता को मान्य करने और उन्हें आधुनिक स्वास्थ्य सेवा दिशानिर्देशों में एकीकृत करने के लिए बड़े पैमाने पर नैदानिक परीक्षण आयोजित करें।
- शैक्षिक सुधार: डॉक्टरों के लिए दोनों प्रणालियों को समझने के लिए क्रॉस-डिसिप्लिनरी प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू करें, सहयोग को बढ़ावा दें।
- विनियमन को मजबूत करें: एकीकृत प्रथाओं को नियंत्रित करने, सुरक्षा और जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए एक मजबूत नियामक ढांचा विकसित करें।
- जन जागरूकता: दोनों प्रणालियों में विश्वास बनाने के लिए एकीकृत स्वास्थ्य सेवा के लाभों और सीमाओं पर जनता को शिक्षित करें।
- पायलट प्रोजेक्ट: एकीकृत स्वास्थ्य सेवा मॉडल की प्रभावशीलता का परीक्षण करने के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में पायलट कार्यक्रम शुरू करें।

निष्कर्ष:

होम्योपैथी और एलोपैथी का एकीकरण दोनों प्रणालियों की ताकत को मिलाकर स्वास्थ्य सेवा में क्रांति ला सकता है। जबकि विश्वास की कमी और नियामक मुद्दों जैसी चुनौतियाँ बनी हुई हैं, साक्ष्य-आधारित अभ्यास और सहयोगी ढाँचे एक अधिक समग्र और सुलभ स्वास्थ्य सेवा मॉडल का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

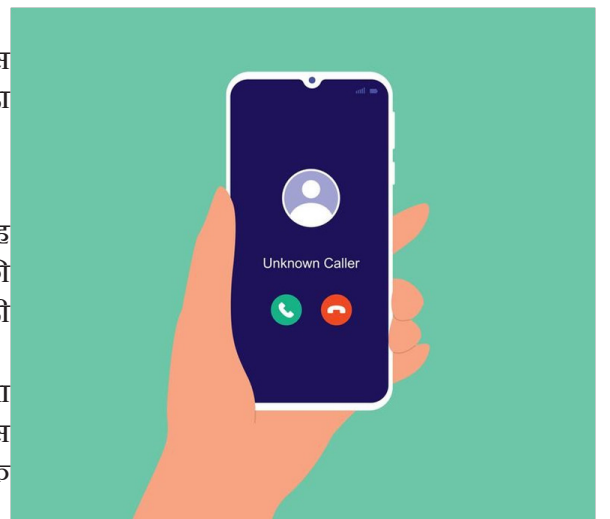
स्पैम विनियमन

संदर्भ:

स्पैम, जिसे आधिकारिक तौर पर अनसॉलिसिटेड कमर्शियल कम्युनिकेशंस (UCC) के रूप में जाना जाता है, भारत के दूरसंचार उद्योग में एक लगातार मुद्दा बन गया है, जिससे जनता की निराशा और सुरक्षा जोखिम बढ़ रहे हैं।

स्पैम से निपटने के लिए सरकारी उपायों के बारे में:

- डू-नॉट-डिस्टर्ब (डीएनडी) रजिस्ट्री: 2007 में ट्राई द्वारा शुरू की गई यह रजिस्ट्री ग्राहकों को वाणिज्यिक कॉल/संदेशों को ब्लॉक करने की अनुमति देती है। इसका उल्लंघन करने वाले टेलीमार्केटर्स को चेतावनी दी जाती है और उन्हें ब्लैकलिस्ट किया जाता है।
- ब्लॉकचेन तकनीक (DLT): दूरसंचार वाणिज्यिक संचार ग्राहक वरीयता विनियम (TCCPR) 2018 के तहत, ब्लॉकचेन स्वीकृत प्रेषकों/टेम्पलेट्स की ट्रेसबिलिटी सुनिश्चित करता है। 2024 में, संदेश की उत्पत्ति को ट्रैक करने और छेड़छाड़ को रोकने के लिए नियमों को कड़ा किया गया।
- संचार साथी पोर्टल: धोखाधड़ी वाले कॉल/संदेशों की रिपोर्ट करने के लिए DoT द्वारा लॉन्च किया गया, अनाधिकृत नंबरों को रद्द करने के लिए बैंकों, कानून प्रवर्तन और दूरसंचार कंपनियों के साथ सहयोग किया गया।
- दूरसंचार सुरक्षा संचालन केंद्र: स्पैम, घोटाले और धोखाधड़ी वाले संचार के खिलाफ कार्रवाई को बढ़ाने के लिए वास्तविक समय में संदिग्ध इंटरनेट ट्रैफिक की निगरानी करता है।



- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस इंटीग्रेशन: एयरटेल जैसी टेलीकॉम कंपनियाँ संदिग्ध कॉल को "संदिग्ध स्पैम" के रूप में चिह्नित करने के लिए AI का उपयोग करती हैं। VoIP नंबरों के माध्यम से धोखाधड़ी का पता लगाने के लिए अंतर्राष्ट्रीय कॉल को चिह्नित किया जाता है।
- अंतर्राष्ट्रीय कॉल मॉनिटरिंग: लीज्ड वीओआईपी नंबरों से धोखाधड़ी वाली कॉल की पहचान करना और उन पर अंकुश लगाना, जिससे घोटालों के खिलाफ वास्तविक समय में कार्रवाई सुनिश्चित हो सके।

यूपीएससी परीक्षा के सिलेबस में प्रासंगिकता

जीएस पेपर 2 (शासन):

- विनियामक नीतियाँ: यूसीसी को विनियमित करने और उपभोक्ता संरक्षण सुनिश्चित करने के लिए ट्राई और दूरसंचार विभाग द्वारा उठाए गए उपाय।
- शासन में प्रौद्योगिकी की भूमिका: ब्लॉकचेन और एआई ट्रेसबिलिटी बढ़ाने और धोखाधड़ी से निपटने के लिए उपकरण के रूप में।

जीएस पेपर 3 (विज्ञान और प्रौद्योगिकी):

- प्रौद्योगिकी का अनुप्रयोग: स्पैम और घोटालों से निपटने के लिए डीएलटी, एआई और वास्तविक समय ट्रैफिक मॉनिटरिंग का उपयोग।
- साइबर सुरक्षा: धोखाधड़ी वाली कॉल, वित्तीय घोटालों से निपटना और डिजिटल बुनियादी ढांचे की सुरक्षा करना।

निबंध और नैतिकता:

- "डिजिटाइजेशन और गोपनीयता को संतुलित करना" या "शासन में प्रौद्योगिकी का नैतिक उपयोग" जैसे विषय।

एकीकृत पेंशन योजना (UPS)

संदर्भ:

वित्त मंत्रालय ने केंद्र सरकार के कर्मचारियों के लिए राष्ट्रीय पेंशन प्रणाली (NPS) के तहत एक विकल्प के रूप में एकीकृत पेंशन योजना (UPS) के संचालन को अधिसूचित किया है, जो 1 अप्रैल 2025 से प्रभावी होगी।

एकीकृत पेंशन योजना (UPS) के बारे में:

यह क्या है?

- एकीकृत पेंशन योजना (UPS) एक अंशदायी पेंशन योजना है जो सरकारी कर्मचारियों को मासिक पेंशन के रूप में उनके अंतिम आहरित मूल वेतन का 50% सहित गारंटीकृत सेवानिवृत्ति लाभ प्रदान करती है।
- मंत्रालय: वित्त मंत्रालय द्वारा प्रस्तुत, इसे पेंशन फंड नियामक और विकास प्राधिकरण (PFRDA) द्वारा विनियमित किया जाएगा।
- कब शुरू हुआ: UPS को 24 अगस्त, 2024 को कैबिनेट द्वारा अनुमोदित किया गया था, और यह 1 अप्रैल, 2025 से चालू होगा।
- उद्देश्य: इस योजना का उद्देश्य गारंटीकृत लाभ प्रदान करके और सेवानिवृत्ति के बाद वित्तीय सुरक्षा सुनिश्चित करके NPS के बाजार से जुड़े रिटर्न के बारे में कर्मचारियों की शिकायतों को दूर करना है।

मुख्य विशेषताएं:

- गारंटीकृत पेंशन: कर्मचारियों को सेवानिवृत्ति से पहले अंतिम 12 महीनों के दौरान उनके औसत मूल वेतन का 50% प्राप्त होगा।
- महंगाई सहित: मुद्रास्फीति के रुझान के आधार पर पेंशन को समायोजित करने के लिए नियमित बढ़ोतरी।
- पारिवारिक पेंशन: मृत्यु के मामले में, परिवार के सदस्यों को कर्मचारी की पेंशन का 60% प्राप्त होगा।
- सुपरएनुएशन लाभ: सेवानिवृत्ति पर ब्रेच्युटी के साथ एकमुश्त भुगतान।
- न्यूनतम पेंशन: कम से कम 10 साल की सेवा पूरी करने वाले कर्मचारियों के लिए न्यूनतम ₹10,000 प्रति माह।

योजना के तहत योगदान:

- कर्मचारी अपने मूल वेतन का 10% योगदान करते हैं।
- सरकार मूल वेतन का 5% योगदान करती है, जिसे स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए एक्चुरियल समीक्षाओं के आधार पर संशोधित किया जा सकता है।

कवरेज:

- केंद्र सरकार के उन कर्मचारियों पर लागू है जो पहले NPS के अंतर्गत आते थे।
- 1 जनवरी, 2004 को या उसके बाद नियुक्त कर्मचारी, जिनमें सेवानिवृत्त कर्मचारी भी शामिल हैं, NPS से UPS में स्विच करने का विकल्प चुन सकते हैं।

CABINET APPROVED THE UNIFIED PENSION SCHEME (UPS)

SALIENT FEATURES:

- Scheme Options:** Central government employees will have the option to choose between the new Unified Pension Scheme and the existing New Pension Scheme.
- Pension Contribution:** The staff contribution to the scheme will remain at 10%, unchanged from the previous structure. However, the Central Government's contribution will be reassessed every three years.
- Expenditure:** The financial implications include a total expenditure of ₹800 crore for arrears, with an estimated initial annual cost of ₹6,250 crore for the scheme.
- Implementation:** The UPS is set to take effect from April 1, 2025. It will also be applied retroactively to government employees who retired from 2004 onwards.

NPS से UPS में संक्रमण:

- NPS ने योगदान के आधार पर पेंशन को बाजार संचालित रिटर्न से जोड़ा, जिससे अनिश्चितता को लेकर चिंताएँ पैदा हुईं
- UPS आजीवन मासिक पेंशन की गारंटी देकर इन चिंताओं को दूर करता है, जिससे यह अनुमानित 99% NPS सदस्यों के लिए लाभकारी हो जाता है।

जन्मसिद्ध नागरिकता

हाल ही में, संयुक्त राज्य अमेरिका में चर्चाएँ तेज़ हो गई हैं, जहाँ 14वें संशोधन की व्याख्या को बदलने के प्रयासों ने कानूनी चुनौतियों को जन्म दिया है।

जन्मसिद्ध नागरिकता के बारे में:**यू.एस.ए. में:****14वाँ संशोधन:**

- 1868 में अनुसमर्थित, यू.एस. संविधान के 14वें संशोधन में कहा गया है कि संयुक्त राज्य अमेरिका में जन्मे या प्राकृतिक रूप से बसे सभी व्यक्ति और इसके अधिकार क्षेत्र के अधीन देश के नागरिक हैं।
- इसे गृह युद्ध के बाद मुक्त दासों के लिए नागरिकता के अधिकार सुनिश्चित करने के लिए पेश किया गया था।

भारत में:**संवैधानिक प्रावधान (अनुच्छेद 5):**

- भारतीय संविधान के अनुच्छेद 5 ने शुरू में इसके लागू होने (26 जनवरी, 1950) से पहले भारत में जन्मे किसी भी व्यक्ति को जन्म से नागरिकता प्रदान की।
- नागरिकता अधिनियम, 1955 ने सीमित अपवादों (जैसे, विदेशी दूतों या शत्रु विदेशियों के बच्चे) के साथ, इस तिथि के बाद पैदा हुए व्यक्तियों को शामिल करने के लिए इसका विस्तार किया।

नागरिकता अधिनियम में संशोधन:**1986 संशोधन:**

- जन्म से नागरिकता केवल उन लोगों तक सीमित कर दी गई जिनके माता-पिता में से कम से कम एक भारतीय नागरिक है।
- बांग्लादेश और श्रीलंका से प्रवासन पर चिंताओं को संबोधित किया गया।

2003 संशोधन:

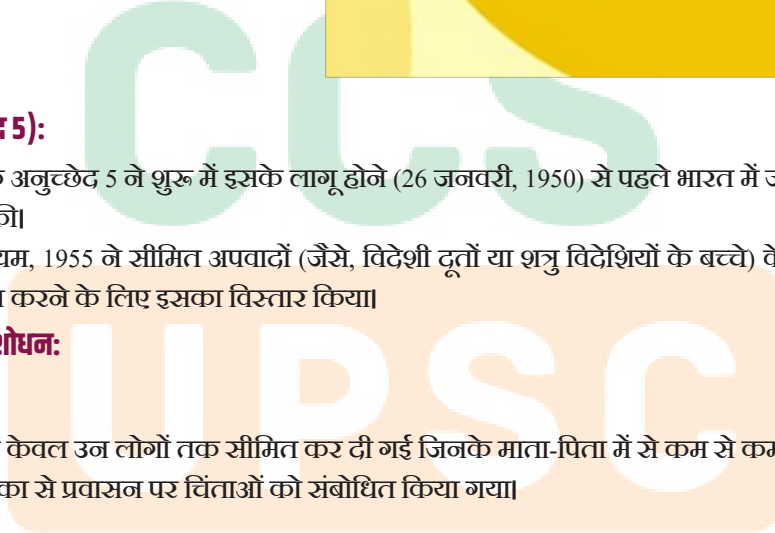
- अवैध अप्रवासियों से जन्मे बच्चों को छोड़कर नागरिकता पर और प्रतिबंध लगा दिया गया।
- इस परिवर्तन का उद्देश्य अनधिकृत प्रवासन और जनसांख्यिकी पर इसके प्रभाव को नियंत्रित करना था।

संचेताइजेशन योजना**संदर्भ:**

भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) ₹250 प्रति माह से शुरू होने वाली छोटी-टिकट वाली व्यवस्थित निवेश योजनाओं (एसआईपी) को सक्षम करने के लिए एक संचेताइजेशन योजना शुरू कर रहा है।

म्यूचुअल फंड निवेश के संचेताइजेशन के बारे में:**संचेताइजेशन क्या है?**

- मूल्य-संवेदनशील बाजारों में प्रवेश करने के लिए छोटी, सस्ती इकाइयाँ (जैसे, शैम्पू पाउच) प्रदान करने वाले FMCG उत्पादों से प्रेरित एक रणनीति।
- वित्तीय सेवाओं पर लागू, यह कम आय वाले निवेशकों को छोटे, किफायती निवेशों के माध्यम से म्यूचुअल फंड में प्रवेश करने की अनुमति देता है।



सैचेटाइजेशन की आवश्यकता:

- वित्तीय समावेशन: म्यूचुअल फंड में निवेश को सक्षम करने के लिए कम आय वाले समूहों को लक्षित करता है।
- बाधाओं को संबोधित करना: पारंपरिक म्यूचुअल फंड एसआईपी की उच्च प्रवेश लागतों को दूर करता है।
- बाजार में गहराई: इक्विटी बाजारों में सुदरा निवेशक आधार का विस्तार, विदेशी निवेशकों की अस्थिरता के खिलाफ बाजार प्रवाह को स्थिर करना।

सैचेटाइजेशन का उद्देश्य:

- वित्तीय उत्पादों तक पहुँच को लोकतांत्रिक बनाने के लिए छोटे-टिकट वाले एसआईपी निवेश को प्रोत्साहित करना।
- विशेष रूप से कम आय वाले निवेशकों के लिए दीर्घकालिक बचत और धन सृजन को बढ़ावा देना।

यह कैसे काम करता है:

- न्यूनतम एसआईपी राशि: ₹250/माह (नए म्यूचुअल फंड निवेशकों पर लक्षित)।

पात्रता मानदंड:

- केवल नए निवेशकों के लिए उपलब्ध है।
- एसेट मैनेजमेंट कंपनियों (AMC) में प्रति निवेशक अधिकतम तीन ₹250 एसआईपी।
- बहिष्कृत योजनाएँ: ऋण योजनाएँ, क्षेत्रीय, विषयगत, लघु-कैप और मिड-कैप इक्विटी फंड उनकी अस्थिरता के कारण।
- प्रतिबद्धता अवधि: निवेशकों को 5 वर्ष (60 कि०तों) के लिए प्रतिबद्ध होने के लिए प्रोत्साहित किया गया, लेकिन समय से पहले निकासी की अनुमति है।
- प्रौद्योगिकी-संचालित प्रक्रिया: लागत कम करने के लिए UPI ऑटो पे या NACH के माध्यम से निवेश।

NHM उपलब्धियाँ 2021-24**संदर्भ:**

मंत्रिमंडल ने राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (2021-24) के तहत उपलब्धियों की समीक्षा की, जिसमें भारत के सार्वजनिक स्वास्थ्य परिणामों को मजबूत करने में महत्वपूर्ण प्रगति पर प्रकाश डाला गया।

NHM (2021-2024) के तहत प्रमुख उपलब्धियाँ:

उपलब्धि क्षेत्र	प्रमुख उपलब्धियाँ
कोविड-19 टीकाकरण	देश भर में 220 करोड़ से अधिक वैक्सीन की खुराकें दी गईं।
मानव संसाधन	3.57 लाख सीएचओ सहित 12.13 लाख अतिरिक्त स्वास्थ्य कर्मियों को शामिल किया गया।
मातृ मृत्यु दर (एमएमआर)	1990 से 83% की गिरावट आई है, 130 (2014-16) से घटकर 97 प्रति लाख जीवित जन्म (2018-20)।
5 वर्ष से कम आयु के बच्चों की मृत्यु दर (यू5एमआर)	1990 से 75% की गिरावट आई है, 45 (2014) से घटकर 32 प्रति 1,000 जीवित जन्म (2020)।
टीबी उन्मूलन	घटना 2015 में 237/1,00,000 से घटकर 2023 में 195/1,00,000 हो गई।
खसरा-रूबेला टीकाकरण	97.98% कवरेज हासिल किया, 34.77 करोड़ से अधिक बच्चों का टीकाकरण किया।
सिकल सेल एनीमिया	राष्ट्रीय सिकल सेल एनीमिया मिशन के तहत 2.61 करोड़ व्यक्तियों की जांच की गई।
आयुष्मान आरोग्य मंदिर	1.72 लाख केंद्रों का संचालन किया गया, जिनमें से 1.34 लाख केंद्रों पर 12 आवश्यक सेवाएँ प्रदान की गईं।
डायलिसिस कार्यक्रम	62.35 लाख से अधिक हेमोडायलिसिस सत्रों के साथ 4.53 लाख रोगियों को लाभ पहुँचाया गया।
कालाजार उन्मूलन	सभी स्थानिक ब्लॉकों में <1 केस/10,000 जनसंख्या का लक्ष्य प्राप्त किया गया।
डिजिटल स्वास्थ्य	65 जिलों में वास्तविक समय पर टीकाकरण ट्रैकिंग के लिए U-WIN प्लेटफॉर्म लॉन्च किया गया।
सार्वजनिक स्वास्थ्य अवसंरचना	राष्ट्रीय गुणवत्ता आश्वासन मानकों के तहत 7,998 स्वास्थ्य सुविधाओं को प्रमाणित किया गया।

यूपीएससी परीक्षा पाठ्यक्रम में प्रासंगिकता:

- सामान्य अध्ययन पेपर II: शासन और सामाजिक न्याय

- स्वास्थ्य सेवा की पहुँच और सामर्थ्य में सुधार के लिए केस स्टडी के रूप में एनएचएम
- कमजोर आबादी के लिए योजनाएँ (एमजीएनआरईजीए, पीएमजेडीवाई, पीएमजेएवाई, आदि)
- टीबी, मलेरिया और कालाजार जैसी बीमारी उन्मूलन पहल
- सामान्य अध्ययन पेपर III: आर्थिक विकास और प्रौद्योगिकी
- स्वास्थ्य सेवा वितरण में डिजिटल स्वास्थ्य पहल (यू-विन प्लेटफॉर्म) की भूमिका
- स्वास्थ्य सेवा के बुनियादी ढांचे और मानव संसाधन विकास के बीच संबंध

तदर्थ न्यायाधीश

संदर्भ:

सर्वोच्च न्यायालय ने आपराधिक मामलों के बढ़ते लंबित मामलों को संबोधित करने के लिए संविधान के अनुच्छेद 224A के तहत तदर्थ आधार पर सेवानिवृत्त उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों की अस्थायी नियुक्ति का प्रस्ताव दिया है।

तदर्थ न्यायाधीशों के बारे में:

- संवैधानिक प्रावधान: भारतीय संविधान का अनुच्छेद 224A राष्ट्रपति की पूर्व सहमति से उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश को न्यायिक कर्तव्यों का पालन करने के लिए सेवानिवृत्त उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों को नियुक्त करने की अनुमति देता है।
- नियुक्ति के लिए मानदंड: सेवानिवृत्त न्यायाधीश जो पहले किसी भी उच्च न्यायालय में सेवा कर चुके हैं, उनसे अस्थायी न्यायिक सेवा के लिए अनुरोध किया जा सकता है यदि वे नियुक्ति के लिए सहमति देते हैं।



तदर्थ न्यायाधीश कौन हैं?

- तदर्थ न्यायाधीश सेवानिवृत्त न्यायाधीश होते हैं जिन्हें उच्च न्यायालयों में लंबित मामलों को निपटाने में मदद करने के लिए अस्थायी रूप से वापस बुलाया जाता है। उन्हें मौजूदा न्यायाधीशों के समान ही शक्तियाँ और विशेषाधिकार प्राप्त हैं, लेकिन उन्हें नियमित न्यायाधीश नहीं माना जाता।

नियुक्ति की प्रक्रिया:

- उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश संभावित उम्मीदवारों की पहचान करते हैं और उनकी सहमति लेते हैं।
- सिफारिश केंद्रीय कानून मंत्रालय के माध्यम से भारत के राष्ट्रपति को भेजी जाती है।
- सर्वोच्च न्यायालय के कॉलेजियम को भी सिफारिश का समर्थन करना चाहिए।
- अंतिम निर्णय प्रधानमंत्री की सलाह के आधार पर राष्ट्रपति द्वारा किया जाता है।

नियम और शर्तें:

- आवश्यकता के आधार पर कार्यकाल आमतौर पर 2-3 साल का होता है।
- ये न्यायाधीश राष्ट्रपति द्वारा निर्धारित भत्ते के हकदार होते हैं और अपने कार्यकाल के दौरान उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों के सभी विशेषाधिकारों का आनंद लेते हैं।

योजना का दुरुपयोग

संदर्भ:

2024 में, महाराष्ट्र में 4.14 लाख बीमा दावे फर्जी पाए गए, जिससे प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के दुरुपयोग का पता चला।

सरकारी योजनाओं में लीकेज:

- फर्जी दावे: किसानों ने गैर-मौजूद फसलों या अनधिकृत भूमि, जैसे मंदिर, सरकारी भूखंड और पेट्रोल पंपों के लिए फर्जी दावे प्रस्तुत किए।
- उदाहरण के लिए, नासिक में एक किसान ने पेट्रोल पंप के भूखंड पर बीमा के लिए आवेदन किया।



- बिचौलियों द्वारा हेरफेर: कॉमन सर्विस सेंटर (CSC) ने किसानों की सहमति के बिना जाली दस्तावेजों का उपयोग करके झूठे आवेदन दायर किए।
उदाहरण के लिए, महाराष्ट्र में 96 CSC अनियमितताओं के लिए जांच के दायरे में हैं।
- सत्यापन का अभाव: समय पर क्रॉस-चेक न होने से झूठे दावों को प्रारंभिक जांच से गुजरने का मौका मिल गया।
- प्रशासनिक चुनौतियाँ: आवेदनों की अधिक संख्या के कारण भौतिक निरीक्षण में देरी हुई, जिससे प्रणालीगत अक्षमताएँ पैदा हुईं।
- संसाधनों का हास: दुरुपयोग के कारण वास्तविक लाभार्थियों के लिए निर्धारित सार्वजनिक धन की हानि हुई।

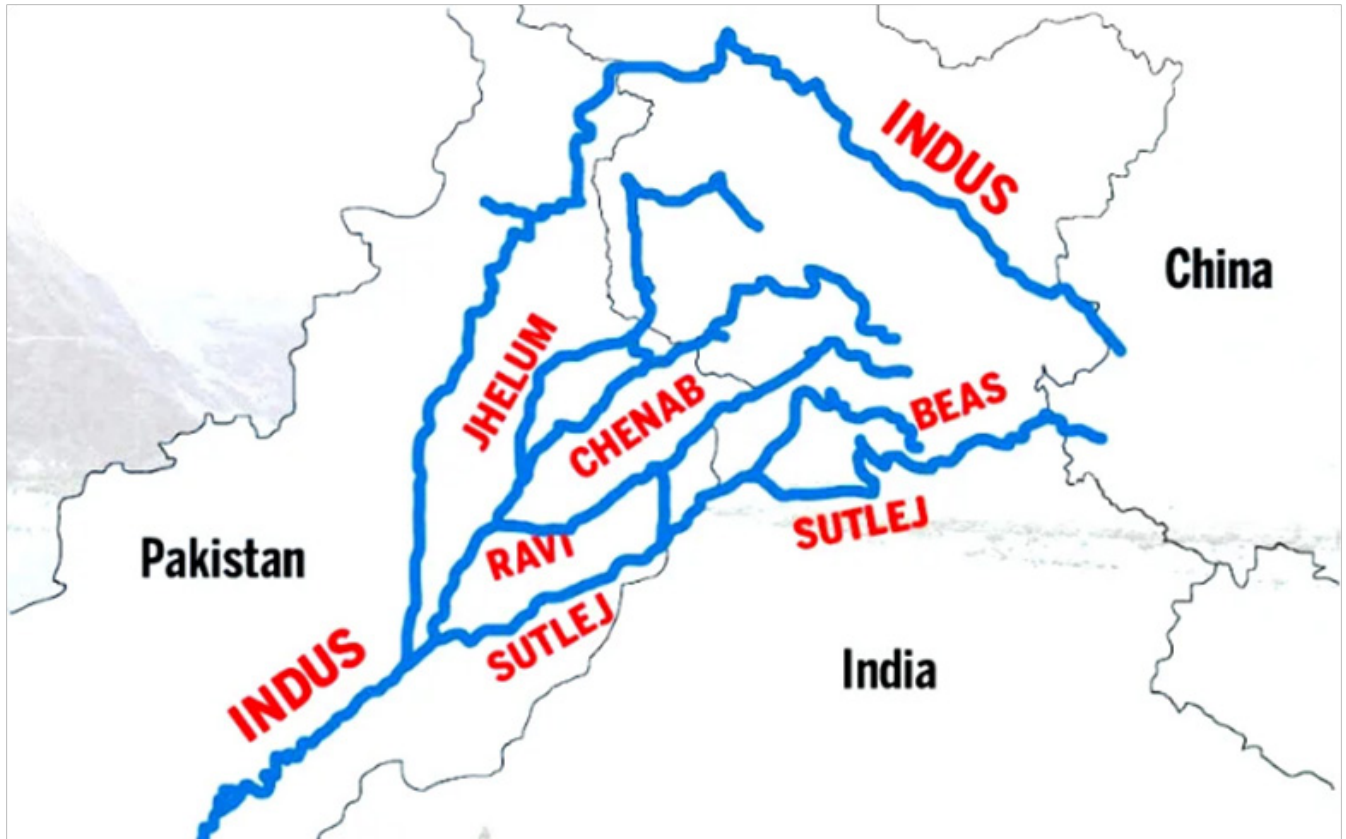
UPSC पाठ्यक्रम से प्रासंगिकता

- GS पेपर 2 (शासन): सरकारी योजनाओं में कार्यान्वयन चुनौतियों और पारदर्शिता के मुद्दों पर चर्चा करता है।
- GS पेपर 3 (कृषि): फसल बीमा, सब्सिडी के दुरुपयोग और कृषि लचीलेपन के लिए सुधारों पर ध्यान केंद्रित करता है।
- नैतिकता और अखंडता: किसानों और प्रशासकों के बीच नैतिक जिम्मेदारी के मुद्दों पर प्रकाश डालता है।

सिंधु जल संधि (आईडब्ल्यूटी), 1960

संदर्भ:

विश्व बैंक द्वारा नियुक्त तटस्थ विशेषज्ञ (एनई) ने घोषणा की है कि वह सिंधु जल संधि (आईडब्ल्यूटी), 1960 के तहत जलविद्युत परियोजनाओं के डिजाइन के संबंध में भारत और पाकिस्तान के बीच मतभेदों को हल करने में सक्षम है।



विश्व बैंक के तटस्थ विशेषज्ञ के बारे में:

तटस्थ विशेषज्ञ (NE)

- आईडब्ल्यूटी के अनुलग्नक एफ के पैराग्राफ 7 के तहत विश्व बैंक द्वारा नियुक्त।
- भूमिका: संधि के तहत उत्पन्न होने वाले तकनीकी विवादों को हल करना जब स्थायी सिंधु आयोग (पीआईसी) आपसी सहमति प्राप्त करने में विफल रहता है।
- वर्तमान फोकस: किशनगंगा और रैटल जलविद्युत परियोजनाओं का तकनीकी मूल्यांकन।

मुद्दे के तहत बांध:

किशनगंगा जलविद्युत परियोजना:

- स्थान: सिंधु की सहायक नदी डेलम नदी, जम्मू और कश्मीर।

रैटल हाइड्रोइलेक्ट्रिक प्रोजेक्ट:

- स्थान: विनाब नदी, सिंधु की सहायक नदी, जम्मू और कश्मीर।

सिंधु जल संधि के बारे में:**स्थापित:**

- 1960 में भारतीय प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू और पाकिस्तान के राष्ट्रपति अयूब खान द्वारा हस्ताक्षरित।
- विश्व बैंक द्वारा मध्यस्थता की गई, जो एक हस्ताक्षरकर्ता के रूप में भी कार्य करता है।

शामिल राष्ट्र:

- भारत: पूर्वी नदियों - ब्यास, रावी और सतलुज से पानी आवंटित किया गया।
- पाकिस्तान: पश्चिमी नदियों - सिंधु, विनाब और झेलम से पानी आवंटित किया गया।

संधि की विशेषताएँ:

- सिंधु नदी प्रणाली के पानी का समान वितरण।
- जलविद्युत परियोजनाओं सहित दोनों देशों द्वारा पानी के कुछ उपयोगों की अनुमति देता है।
- दोनों देशों के आयुक्तों से मिलकर बने स्थायी सिंधु आयोग (PIC) द्वारा निगरानी।

विश्व बैंक की भूमिका:

- तकनीकी मतभेदों को सुलझाने के लिए एक तटस्थ विशेषज्ञ की नियुक्ति करना।
- यदि विवादों का समाधान नहीं हो पाता है तो मध्यस्थता न्यायालय के माध्यम से मध्यस्थता की सुविधा प्रदान करना।
- संधि के कार्यान्वयन और अखंडता को सुनिश्चित करना।

एक राष्ट्र, एक विधायी मंच**संदर्भ:**

85वां अखिल भारतीय पीठासीन अधिकारी सम्मेलन (AIPOC) पटना, बिहार में संपन्न हुआ, जिसमें विधायी कार्यवाही में महत्वपूर्ण मुद्दों, जैसे व्यवधान, शिष्टाचार और विधायी निकायों की भूमिका को बढ़ाने पर चर्चा की गई।

- सम्मेलन में आगामी एक राष्ट्र, एक विधायी मंच पर भी प्रकाश डाला गया, जिसका उद्देश्य सभी विधायी निकायों को एक ही डिजिटल प्लेटफॉर्म पर एकीकृत करना है।

**अखिल भारतीय पीठासीन अधिकारी सम्मेलन (AIPOC) के बारे में:****उत्पत्ति:**

- 1921 में स्थापित, पहला सम्मेलन शिमला में आयोजित किया गया।
- यह भारतीय विधायिकाओं का सर्वोच्च निकाय है, जो संसद और राज्य विधायिकाओं के पीठासीन अधिकारियों को एक साथ लाता है।

2025 सम्मेलन की मुख्य विशेषताएँ:

- पटना, बिहार में ऐतिहासिक बिहार विधानमंडल परिसर में आयोजित किया गया।
- व्यवधानों को रोकने, बहस की गुणवत्ता में सुधार करने और सार्वजनिक भागीदारी पहल के साथ संविधान की 75वीं वर्षगांठ मनाने पर केंद्रित संकल्प।
- उद्देश्य: जवाबदेही, पारदर्शिता और मजबूत विधायी प्रथाओं को बढ़ावा देकर लोकतांत्रिक संस्थाओं को मजबूत करना।

महत्व:

- विधायी निकायों के बीच समन्वय को बढ़ाता है।
- सहकारी संघवाद को बढ़ावा देता है और सुनिश्चित करता है कि विधायिका स्थानीय और राष्ट्रीय मुद्दों को प्रभावी ढंग से संबोधित करे।
- विधायी प्रक्रियाओं में डिजिटलीकरण और सार्वजनिक पहुँच जैसी पहलों को आगे बढ़ाता है।

एक राष्ट्र, एक विधायी मंच के बारे में:

- यह क्या है: भारत के सभी विधायी निकायों - संसद, राज्य विधायिका और स्थानीय निकायों - को एक ही डिजिटल प्लेटफॉर्म पर एकीकृत करने का मिशन।

उद्देश्य:

- विधायी डेटा और प्रथाओं को वास्तविक समय में साझा करना सक्षम करना।
- विधायी प्रक्रियाओं में पारदर्शिता, जवाबदेही और सार्वजनिक भागीदारी को बढ़ावा देना।

एक राष्ट्र, एक विधायी मंच की विशेषताएँ:

- एकीकृत डिजिटल प्लेटफॉर्म: संसद, राज्य विधानसभाओं और स्थानीय निकायों को निर्बाध डेटा साझाकरण और समन्वय के लिए एक ही प्लेटफॉर्म पर एकीकृत करता है।
- वास्तविक समय की जानकारी: पारदर्शिता और पहुँच बढ़ाने के लिए विधायी कार्यवाही, विधेयक और बहस पर लाइव अपडेट प्रदान करता है।
- एआई और प्रौद्योगिकी एकीकरण: विधायी कामकाज को सुव्यवस्थित करने, डेटा का विश्लेषण करने और निर्णय लेने में सुधार करने के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग करता है।
- कागज़ रहित विधानमंडल: विधायी रिकॉर्ड को डिजिटल करके, भौतिक दस्तावेज़ीकरण पर निर्भरता को कम करके पर्यावरण के अनुकूल प्रथाओं को बढ़ावा देता है।
- सार्वजनिक पहुँच: यह सुनिश्चित करता है कि नागरिक विधायी जानकारी तक पहुँच सकें, भागीदारी को प्रोत्साहित करें और जवाबदेही को बढ़ावा दें।

कुलपतियों के चयन और नियुक्ति के लिए मसौदा विनियम**संदर्भ:**

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) ने हाल ही में विश्वविद्यालयों में कुलपतियों (VC) के चयन और नियुक्ति के लिए मसौदा विनियम जारी किए, जिससे विवाद छिड़ गया।

कुलपतियों पर यूजीसी ड्राफ्ट विनियमन की मुख्य विशेषताएँ:**1. खोज-सह-चयन समिति का गठन:**

- कुलाधिपति/विजिटर तीन सदस्यीय खोज-सह-चयन समिति का गठन करेंगे।
- समिति में कुलाधिपति/विजिटर, यूजीसी अध्यक्ष और विश्वविद्यालय के शीर्ष निकाय (सीनेट/सिंडिकेट/कार्यकारी परिषद) के नामित व्यक्ति शामिल होंगे।

2. गैर-शैक्षणिकों का समावेश:

- सार्वजनिक नीति, लोक प्रशासन या उद्योग से 10 वर्ष से अधिक अनुभव वाले पेशेवर अब कुलपति की भूमिका के लिए पात्र हैं।

3. मानकीकृत चयन प्रक्रिया:

- केंद्रीय, राज्य और निजी विश्वविद्यालयों में चयन के लिए समान मानदंड पेश करता है।

4. यूजीसी नामिती को अनिवार्य बनाना:

- राज्य विश्वविद्यालयों के लिए खोज-सह-चयन समिति में यूजीसी नामिती को शामिल करना अनिवार्य बनाता है।

5. एनईपी 2020 के साथ संरेखण:

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के उद्देश्यों के अनुरूप सुधारों का प्रस्ताव, गुणवत्ता, पारदर्शिता और समावेशिता पर जोर।



प्रस्तावित मसौदे के सकारात्मक पहलू:

- मानकीकृत रूपरेखा: चयन प्रक्रिया में एकरूपता सुनिश्चित करता है, विश्वविद्यालयों में गुणवत्ता बढ़ाता है।
उदाहरण के लिए कल्याणी मथिवनन बनाम के.वी. जयरज, 2015 में सुप्रीम कोर्ट द्वारा समर्थित।
- बढ़ी हुई पारदर्शिता: परिभाषित प्रक्रियाएँ और मानदंड विवेकाधीन शक्तियों को कम करते हैं, जिससे नियुक्तियाँ अधिक पारदर्शी होती हैं।
- विस्तृत प्रतिभा पूल: गैर-शैक्षणिक पृष्ठभूमि से पेशेवरों को शामिल करने से उच्च शिक्षा प्रशासन में विविध दृष्टिकोण सामने आते हैं।
- एनईपी 2020 के साथ संरेखण: उच्च शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के उद्देश्य से समग्र सुधारों को बढ़ावा देता है।
- शासन मानकों पर ध्यान केंद्रित: अनुभवी पेशेवरों को शामिल करके प्रशासन में सर्वोत्तम प्रथाओं को प्रोत्साहित करता है।

प्रस्तावित मसौदे से जुड़े मुद्दे:

- राज्य की स्वायत्तता का उल्लंघन: राज्य विश्वविद्यालयों में यूजीसी के प्रतिनिधि को अनिवार्य बनाना राज्य के कानूनों को कमजोर करता है।
उदाहरण के लिए कुलपति नियुक्तियों में यूजीसी की भूमिका पर केरल का रुख इस संघर्ष को रेखांकित करता है।)
- संवैधानिक अतिक्रमण: यूजीसी के नियम अधीनस्थ कानून हैं और वे राज्य विश्वविद्यालय अधिनियमों को दरकिनारा नहीं कर सकते।
उदाहरण के लिए चौ. टीका रामजी बनाम उत्तर प्रदेश राज्य, 1956 में सुप्रीम कोर्ट का फैसला।
- संघीय सिद्धांत दांव पर: राज्यों का तर्क है कि केंद्र की बढ़ती भागीदारी संघीय ढांचे का उल्लंघन करती है।
उदाहरण के लिए तमिलनाडु और केरल ने अपने अधिकार के क्षरण का हवाला देते हुए इसका विरोध किया है।
- गैर-शैक्षणिक योग्यता में अस्पष्टता: स्पष्ट शैक्षणिक अनुभव के बिना लोक प्रशासन और उद्योग से पेशेवरों को शामिल करने से शैक्षणिक मानक कमजोर हो सकते हैं।
- संभावित राजनीतिक हस्तक्षेप: राज्यपालों द्वारा अधिक नियंत्रण, जिन्हें अक्सर केंद्रीय नियुक्तियों के रूप में देखा जाता है, राजनीतिक रूप से प्रभावित नियुक्तियों को जन्म दे सकता है।
उदाहरण के लिए पश्चिम बंगाल और तमिलनाडु में हाल ही में हुए विवाद इस चिंता को दर्शाते हैं।

आगे की राह:

- राज्यों के साथ परामर्श को मजबूत करना: यूजीसी को राज्य सरकारों को शामिल करना चाहिए ताकि वे राज्य-विशिष्ट आवश्यकताओं के साथ विनियमों को संरेखित कर सकें।
- पारदर्शिता को स्पष्ट रूप से परिभाषित करें: गैर-शैक्षणिक उम्मीदवारों के लिए मानदंड में शिक्षा या नीति में प्रदर्शित योगदान शामिल होना चाहिए।
- लचीलापन अपनाएँ: राज्यों को अपने शासन ढाँचे के अनुसार विनियमों को अपनाने या संशोधित करने का विवेक दें।
उदाहरण के लिए पी.जे. धर्मराज बनाम चर्च ऑफ साउथ इंडिया, 2024 में सुप्रीम कोर्ट का फैसला।
- संघीय संतुलन बनाए रखें: सहकारी संघीय ढाँचे को बनाए रखने के लिए विनियमों को राज्य विधानों का सम्मान करना चाहिए।
- न्यायिक स्पष्टीकरण: यूजीसी और राज्य कानूनों के अतिव्यापी अधिकार क्षेत्र में अस्पष्टताओं को दूर करने के लिए एक संवैधानिक पीठ द्वारा एक निश्चित निर्णय की माँग करें।

निष्कर्ष:

यूजीसी के मसौदा विनियमों का उद्देश्य कुलपति नियुक्तियों को मानकीकृत करना और शासन में सुधार करना है, लेकिन वे महत्वपूर्ण संवैधानिक और संघीय चिंताएँ पैदा करते हैं। इन मुद्दों को हल करने के लिए राज्य की स्वायत्तता और केंद्रीय निगरानी के बीच संतुलन की आवश्यकता है, जिससे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का साझा लक्ष्य सुनिश्चित हो सके।

अनुबंध खेती**संदर्भ:**

भारत फ्रोजन फ्रेंच फ्राइज़ (FF) के आयातक से प्रमुख निर्यातक बन गया है, अनुबंध खेती के कारण निर्यात घरेलू खपत से अधिक हो गया है।

अनुबंध खेती के बारे में:**अनुबंध खेती क्या है?**

- अनुबंध खेती में किसानों और खरीदारों (कंपनियों, निर्यातकों, आदि) के बीच समझौते शामिल होते हैं, जहाँ किसान सुनिश्चित खरीद, पूर्व निर्धारित मूल्य निर्धारण और कभी-कभी इनपुट समर्थन के बदले में विशिष्ट फसलों का उत्पादन करने के लिए प्रतिबद्ध होता है।



अनुबंध खेती के सफल उदाहरण

गुजरात में फ्रेंच फ्राइज का निर्यात:

- हाइफ्रन फ्रूड्स जैसी कंपनियाँ किसानों के साथ साझेदारी करती हैं, गारंटीकृत मूल्य, गुणवत्ता वाले बीज और प्रशिक्षण प्रदान करती हैं। किसानों को अनिश्चितता कम होने और मुनाफे में वृद्धि का फायदा मिलता है।
- उदाहरण: हाइफ्रन गुजरात में 7,000 से अधिक किसानों से आलू खरीदता है, जिससे स्थिर आय और उच्च गुणवत्ता वाली उपज सुनिश्चित होती है।

महाराष्ट्र में गन्ना:

- चीनी मिलें गन्ने की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए अनुबंध खेती में संलग्न हैं, किसानों को बीज, उर्वरक और तकनीकी सहायता प्रदान करती हैं।

आईटीसी की ई-चौपाल:

- आईटीसी सोयाबीन किसानों को बाज़ार की जानकारी, गुणवत्ता वाले बीज और इनपुट प्रदान करके सहायता करती है, जिससे बेहतर पैदावार और बेहतर कीमतें मिलती हैं।

डेयरी फार्मिंग:

- अमूल और अन्य डेयरी सहकारी समितियाँ दूध की आपूर्ति के लिए किसानों के साथ अनुबंध करती हैं, जिससे उचित मूल्य और गुणवत्ता मानक सुनिश्चित होते हैं।

अंतर्राष्ट्रीय प्रवासी श्रमिकों पर वैश्विक अनुमान 2022 रिपोर्ट

संदर्भ:

अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) द्वारा जारी अंतर्राष्ट्रीय प्रवासी श्रमिकों पर वैश्विक अनुमान 2022, वैश्विक कार्यबल में अंतर्राष्ट्रीय प्रवासियों (IM) की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डालता है।

अंतर्राष्ट्रीय प्रवासी श्रमिकों पर वैश्विक अनुमान रिपोर्ट के बारे में:

- द्वारा प्रकाशित: अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO)।

मुख्य डेटा अंतर्दृष्टि:

- वैश्विक हिस्सा: 2022 में IM वैश्विक श्रम शक्ति का 4.7% था, जो 167.7 मिलियन श्रमिकों के बराबर था, जो 2013 से 30 मिलियन से अधिक की वृद्धि है।

लिंग गतिशीलता:

- पुरुष श्रमिक: IM का 61.3% (102.7 मिलियन)।
- महिला कर्मचारी: आईएम का 38.7% (64.9 मिलियन)।

आयु वितरण:

- प्राइम-एज वयस्क (25-54 वर्ष): आईएम का 74.9%, जो सबसे बड़ा जनसांख्यिकीय समूह है।
- युवा (15-24 वर्ष): 9.3%।
- वृद्ध वयस्क (55-64 वर्ष): 12.5%।
- वरिष्ठ (65+ वर्ष): 3.4%।

क्षेत्रीय वितरण:

- सेवा क्षेत्र: आईएम के 68.4% के साथ हावी हैं, विशेष रूप से देखभाल से संबंधित भूमिकाओं में (महिलाओं के लिए 80.7% अधिक)।
- उद्योग: 24.3%।
- कृषि: केवल 7.4%, गैर-प्रवासी श्रमिकों (24.3%) की तुलना में काफी कम।

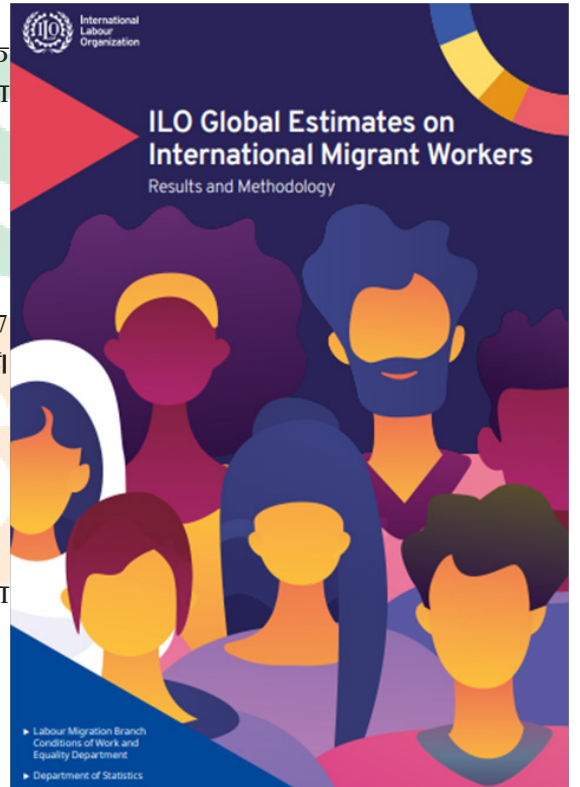
मेज़बान देश:

- उच्च आय वाले देश: 68.4% (114 मिलियन) IM की मेज़बानी करते हैं, खास तौर पर यूरोप और उत्तरी अमेरिका में।
- उच्च-मध्यम आय वाले देश: 17.4% (29.2 मिलियन) को अवशोषित करते हैं।
- अरब राज्य: IM श्रमिकों के 13.3% के लिए ज़िम्मेदार हैं, पिछले दशक में इसमें मामूली गिरावट आई है।

स्वामित्व योजना

संदर्भ:

प्रधानमंत्री वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के ज़रिए स्वामित्व योजना के तहत 65 लाख से ज़्यादा संपत्ति कार्ड वितरित करने वाले हैं।



स्वामित्व योजना के बारे में:

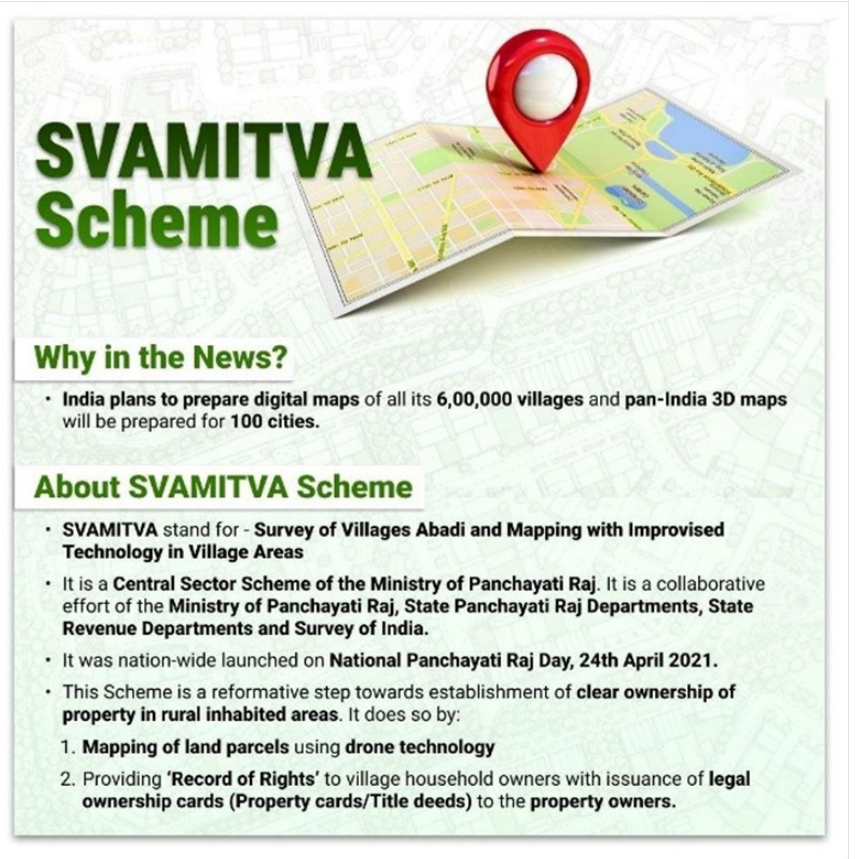
- पूर्ण रूप: गांवों का सर्वेक्षण और ग्रामीण क्षेत्रों में बेहतर तकनीक के साथ मानचित्रण।
- लॉन्च: 2020 में एक केंद्रीय क्षेत्र योजना के रूप में।
- नोडल मंत्रालय: पंचायती राज मंत्रालय (MoPR)।

उद्देश्य:

- संपत्तियों के लिए अधिकारों का रिकॉर्ड प्रदान करके ग्रामीण संपत्ति मालिकों को सशक्त बनाना।
- संपत्ति के मुद्दीकरण और वित्तीय संसाधनों तक पहुँच को सक्षम करके ग्रामीण भारत के आर्थिक विकास को सुगम बनाना।

विशेषताएँ:

- उन्नत प्रौद्योगिकी: ग्रामीण क्षेत्रों के सटीक सर्वेक्षण और मानचित्रण के लिए ड्रोन प्रौद्योगिकी और निरंतर संचालन संदर्भ स्टेशन (सीओआरएस)।
- संपत्ति कार्ड: वित्तीय और कानूनी उपयोगों के लिए संपत्ति मालिकों को प्रदान किए जाने वाले आधिकारिक दस्तावेज़।
- विवादों में कमी: सटीक भूमि रिकॉर्ड बनाकर संपत्ति से संबंधित विवादों को कम करना।
- वित्तीय समावेशन: संपत्ति कार्ड का उपयोग ऋण के लिए संपार्श्विक के रूप में किया जा सकता है, जिससे ग्रामीण वित्तीय स्थिरता को बढ़ावा मिलता है।
- विकास योजना: योजना के तहत तैयार किए गए जीआईएस मानचित्र बेहतर ग्राम पंचायत विकास योजना (जीपीडीपी) तैयार करने में सहायता करते हैं।
- कवरेज: 17 लाख से अधिक गाँवों में ड्रोन सर्वेक्षण पूरा हो चुका है, जिसमें पुडुचेरी और त्रिपुरा सहित छह राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में संतुष्टि प्राप्त हुई है।



SVAMITVA Scheme

Why in the News?

- India plans to prepare digital maps of all its 6,00,000 villages and pan-India 3D maps will be prepared for 100 cities.

About SVAMITVA Scheme

- SVAMITVA stand for - Survey of Villages Abadi and Mapping with Improved Technology in Village Areas
- It is a Central Sector Scheme of the Ministry of Panchayati Raj. It is a collaborative effort of the Ministry of Panchayati Raj, State Panchayati Raj Departments, State Revenue Departments and Survey of India.
- It was nation-wide launched on National Panchayati Raj Day, 24th April 2021.
- This Scheme is a reformative step towards establishment of clear ownership of property in rural inhabited areas. It does so by:
 - Mapping of land parcels using drone technology
 - Providing 'Record of Rights' to village household owners with issuance of legal ownership cards (Property cards/Title deeds) to the property owners.

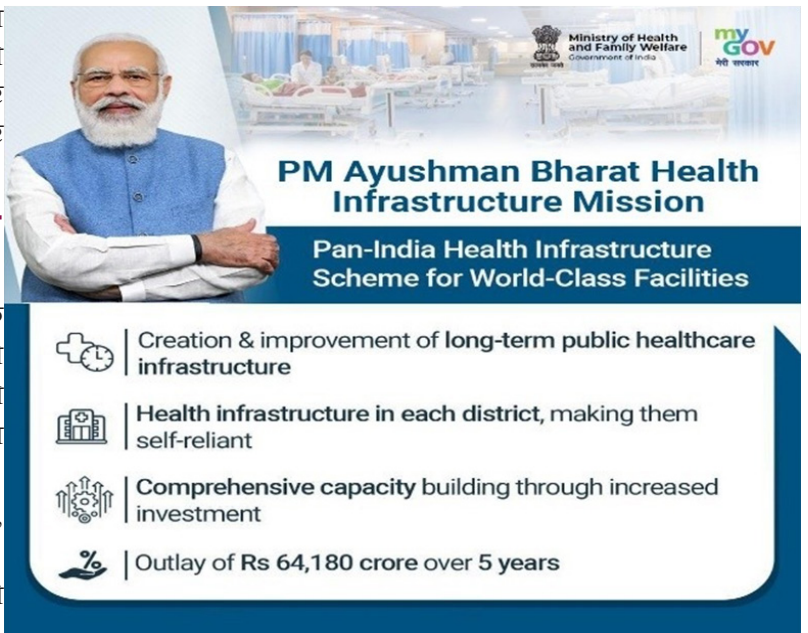
पीएम-आयुष्मान भारत स्वास्थ्य अवसंरचना मिशन (पीएम-एबीएचआईएम)

संदर्भ:

सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली सरकार को पीएम-आयुष्मान भारत स्वास्थ्य अवसंरचना मिशन (पीएम-एबीएचआईएम) को लागू करने के लिए केंद्र के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करने के दिल्ली उच्च न्यायालय के निर्देश पर रोक लगा दी।

पीएम-आयुष्मान भारत स्वास्थ्य अवसंरचना मिशन (पीएम-एबीएचआईएम):

- यह क्या है: कुछ केंद्रीय क्षेत्र घटकों (सीएस) के साथ एक केंद्र प्रायोजित योजना (सीएसएस), जिसे पूरे भारत में स्वास्थ्य सेवा के बुनियादी ढांचे को विकसित और मजबूत करने के लिए शुरू किया गया है।
- मंत्रालय: स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार।
- 2021-22 में शुरू किया गया, 2021-22 से 2025-26 की अवधि के लिए ₹64,180 करोड़ के बजट के साथ।
- उद्देश्य: स्वास्थ्य सेवा के बुनियादी ढांचे में महत्वपूर्ण अंतराल को पाटना, निगरानी प्रणालियों को मजबूत करना और सभी स्तरों पर



PM Ayushman Bharat Health Infrastructure Mission

Pan-India Health Infrastructure Scheme for World-Class Facilities

- Creation & improvement of long-term public healthcare infrastructure
- Health infrastructure in each district, making them self-reliant
- Comprehensive capacity building through increased investment
- Outlay of Rs 64,180 crore over 5 years

स्वास्थ्य अनुसंधान क्षमताओं को बढ़ाना - प्राथमिक, माध्यमिक और तृतीयक देखभाल

मुख्य विशेषताएं:

राष्ट्रीय घटक:

- 150 बिस्तारों वाले क्रिटिकल केयर ब्लॉक के साथ 12 केंद्रीय संस्थानों की स्थापना।
- राष्ट्रीय रोग नियंत्रण केंद्र (एनसीडीसी) को मजबूत करना और क्षेत्रीय एनसीडीसी और महानगरीय स्वास्थ्य निगरानी इकाइयों का निर्माण करना।
- सभी सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रयोगशालाओं को जोड़ने के लिए एकीकृत स्वास्थ्य सूचना पोर्टल का विस्तार करना।
- हवाई अड्डों, बंदरगाहों और भूमि क्रॉसिंग पर 15 स्वास्थ्य आपातकालीन संचालन केंद्र, मोबाइल अस्पताल और विशेष सार्वजनिक स्वास्थ्य इकाइयों स्थापित करना।

राज्य समर्थन:

- ग्रामीण और दुर्गम क्षेत्रों में बेहतर पहुंच के लिए 17,788 ग्रामीण स्वास्थ्य और कल्याण केंद्रों (एचडब्ल्यूसी) का निर्माण।
- झुग्गी-झोपड़ी वाले क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करते हुए 11,024 शहरी एचडब्ल्यूसी की स्थापना।
- 730 जिलों में 3,382 ब्लॉक पब्लिक हेल्थ यूनिट (BPHU) और एकीकृत पब्लिक हेल्थ लैब (IPHL) का विकास।
- 5 लाख से अधिक आबादी वाले 602 जिलों में क्रिटिकल केयर हॉस्पिटल ब्लॉक (CCB) का निर्माण, जिससे मजबूत रेफरल लिंकेज सुनिश्चित हो सके।

महामारी की तैयारी:

- अनुसंधान और आपदा तत्परता के लिए वन हेल्थ इंस्टीट्यूशंस, नए राष्ट्रीय वायरोलॉजी संस्थान और बायोसेप्टी लेवल III लैब का निर्माण।

शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों पर ध्यान:

- झुग्गी-झोपड़ी वाली आबादी और पहुंच से दूर ग्रामीण क्षेत्रों को लक्षित करते हुए विशिष्ट स्वास्थ्य अवसरचना।

भारत रणभूमि दर्शन

संदर्भ:

77वें सेना दिवस पर, रक्षा मंत्री ने भारत रणभूमि दर्शन नामक एक समर्पित वेबसाइट लॉन्च की, जिसका उद्देश्य युद्ध के मैदान और सीमा पर्यटन को बढ़ावा देना है।

भारत रणभूमि दर्शन के बारे में:

- यह क्या है: भारत में महत्वपूर्ण युद्धक्षेत्रों और सीमावर्ती क्षेत्रों के बारे में जानकारी प्रदान करने वाली एक व्यापक वेबसाइट, जो वर्तुअल टूर, ऐतिहासिक कथाएँ और यात्रा सहायता प्रदान करती है।
- मंत्रालय: पर्यटन मंत्रालय के सहयोग से रक्षा मंत्रालय के तहत लॉन्च किया गया।

उद्देश्य:

- युद्धक्षेत्र पर्यटन और सीमा पर्यटन को बढ़ावा देना।
- भारत के सैन्य इतिहास और वीरता के बारे में जागरूकता बढ़ाना।
- सीमावर्ती क्षेत्रों में सामाजिक-आर्थिक विकास को बढ़ावा देना।

शामिल स्थान:

- गलवान घाटी (लद्दाख), 2020 भारत-चीन संघर्ष का स्थल।
- डोकलाम (भारत, भूटान और चीन के बीच त्रिकोणीय जंक्शन)।
- नियंत्रण रेखा (एलओसी) और वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलाएसी) के साथ स्थित स्थल, जिनमें नाथू ला दर्रा, लोंगेवाला और 1962 और 1971 के युद्धों के स्थान शामिल हैं।

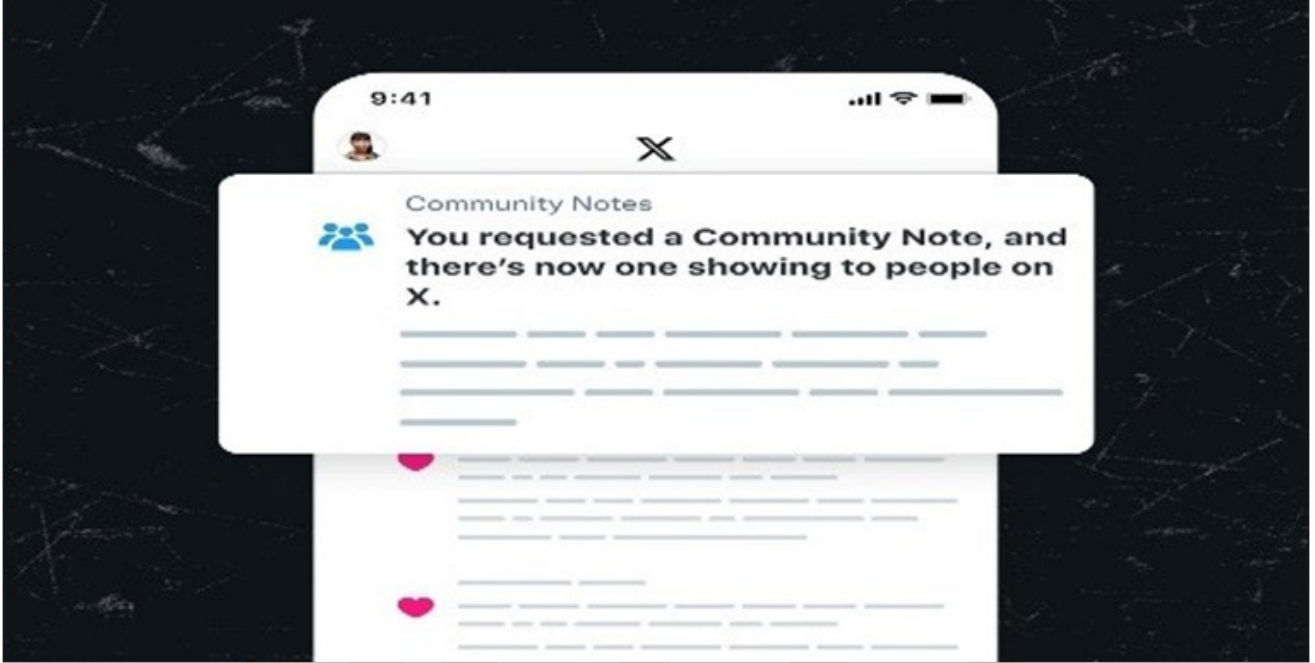


विशेषताएँ:

- वर्चुअल टूर: आगंतुक इंटरैक्टिव अनुभवों के माध्यम से युद्ध के मैदानों का पता लगा सकते हैं।
- यात्रा मार्गदर्शन: इन स्थानों के लिए परमिट और यात्रा व्यवस्थाओं के बारे में जानकारी।
- सहयोगात्मक अवसंरचना: परिचालन तैयारियों को बनाए रखते हुए पहुँच बनाए रखने के लिए भारतीय सेना और नागरिक अधिकारियों द्वारा संयुक्त प्रयास।
- पर्यटन एकीकरण: घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए अतुल्य भारत अभियान में शामिल किया गया।

सामुदायिक नोट्स**संदर्भ:**

मेटा ने हाल ही में कम्युनिटी नोट्स को अपनाने की घोषणा की, जो ट्विटर (अब एक्स) के दृष्टिकोण के समान एक क्राउडसोर्स कंटेंट मॉडरेशन सिस्टम है, जो अमेरिका में अपने तथ्य-जांच कार्यक्रम के प्रतिस्थापन के रूप में है।

**कम्युनिटी नोट्स के बारे में:****यह क्या है?**

- कम्युनिटी नोट्स एक क्राउडसोर्स तथ्य-जांच प्रणाली है जहाँ उपयोगकर्ता विशिष्ट पोस्ट में संदर्भ या तथ्य जोड़ सकते हैं।
- द्वारा लॉन्च किया गया: मूल रूप से 2021 में ट्विटर द्वारा 'बर्डवॉच' के रूप में पायलट किया गया, जिसे एक्स के रूप में रीब्रांड किया गया, अब इसे फेसबुक, इंस्टाग्राम और श्रेड्स में मेटा द्वारा अपनाया जा रहा है।

यह कैसे काम करता है:

- योगदानकर्ता पोस्ट के नीचे अतिरिक्त संदर्भ प्रदान करते हैं।
- नोट्स केवल तभी दिखाई देते हैं जब पर्याप्त उपयोगकर्ता उनकी मददगारता पर सहमत होते हैं, जिससे विविध दृष्टिकोण सुनिश्चित होते हैं।
- डेटा सार्वजनिक है, जिससे कोई भी पारदर्शिता के लिए योगदान का विश्लेषण कर सकता है।

महत्व:

- स्केलेबल कंटेंट मॉडरेशन: केंद्रीकृत तथ्य-जांचकर्ताओं पर निर्भरता कम करता है।
- समुदाय-संचालित पारदर्शिता: उपयोगकर्ताओं को सामूहिक रूप से गलत सूचना का मुकाबला करने के लिए सशक्त बनाता है।
- अनुकूलनीय प्रणाली: उपयोगकर्ता की भागीदारी और एल्गोरिदमिक परिशोधन को बढ़ाने के साथ सटीकता में सुधार करता है।

न्यायपालिका में असहमति**संदर्भ:**

असहमति लोकतंत्र के लिए महत्वपूर्ण है, जिसमें संवैधानिक न्यायालय भी शामिल हैं। भारत के सर्वोच्च न्यायालय और अमेरिकी सर्वोच्च न्यायालय दोनों में ही असहमति के पीछे के कारण अलग-अलग हैं।



न्यायपालिका में असहमति क्या है?

- परिभाषा: असहमति न्यायिक निर्णय में बहुमत की राय से एक या एक से अधिक न्यायाधीशों की असहमति है।
- महत्व: यह कानून की वैकल्पिक व्याख्या को दर्शाता है, लोकतांत्रिक संवाद को मजबूत करता है और भविष्य के कानूनी विकास को प्रभावित करता है।
- न्यायिक असहमति के प्रकार:
 - बौद्धिक असहमति: कानूनों की व्याख्या करने में तार्किक या शाब्दिक मतभेदों पर आधारित।
उदाहरण: न्यायमूर्ति बी.वी. नागरत्ना की लालता प्रसाद वैश (2024) में औद्योगिक शराब पर "नशीली शराब" के तहत कर लगाने पर असहमति।
 - राजनीतिक असहमति: राजनीतिक प्रभावों के प्रति न्यायिक प्रतिरोध से उपजी है।
उदाहरण: एडीएम जबलपुर (1976) में न्यायमूर्ति एच.आर. खन्ना की असहमति ने आपातकाल के दौरान अनुच्छेद 21 की पवित्रता को बरकरार रखा।

सामाजिक असहमति:

- सामाजिक या सांस्कृतिक मुद्दों पर विपरीत विचारों को दर्शाता है।
- उदाहरण: शायरा बानो (2017) में न्यायमूर्ति खेहर और नजीर की असहमति ने ट्रिपल तलाक को सुन्नी पर्सनल लॉ का अभिन्न अंग माना।

भारतीय और अमेरिकी न्यायिक असहमति के बीच अंतर:

पहलू	भारत	यूएसए
नियुक्ति प्रक्रिया	न्यायाधीशों की नियुक्ति कॉलेजियम प्रणाली के माध्यम से की जाती है, जो राजनीति से काफी हद तक स्वतंत्र होती है।	न्यायाधीशों की नियुक्ति सीधे राष्ट्रपति द्वारा की जाती है और सीनेट द्वारा उनकी पुष्टि की जाती है, जो राजनीतिक झुकाव को दर्शाता है।
असहमति का आधार	असहमति अक्सर कानूनी व्याख्या, सामाजिक मुद्दों और बौद्धिक आलोचना पर केंद्रित होती है।	असहमति अक्सर राजनीतिक विचारधाराओं (उदारवादी बनाम रूढ़िवादी) से प्रभावित होती है।
राजनीतिक प्रभाव	फैसले आम तौर पर गैर-राजनीतिक होते हैं, असहमति संस्थागत स्वतंत्रता को दर्शाती है।	असहमति अक्सर नियुक्त व्यक्ति के पक्षपातपूर्ण झुकाव (जैसे, रिपब्लिकन या डेमोक्रेट) के साथ संरेखित होती है।
न्यायिक दर्शन	न्यायाधीश संवैधानिक नैतिकता और विकसित होते सामाजिक मानदंडों पर जोर देते हैं।	न्यायाधीशों की असहमति संविधान की मूलवादी या प्रगतिशील व्याख्याओं को दर्शाती है।
उदाहरण	एडीएम जबलपुर में न्यायमूर्ति एच.आर. खन्ना की असहमति ने राजनीति पर व्यक्तिगत अधिकारों को बरकरार रखा।	ओबर्गेफेल बनाम होजेस में न्यायमूर्ति एलिटो की असहमति समलैंगिक विवाह के प्रति रूढ़िवादी विरोध को दर्शाती है।

असहमति के हालिया भारतीय उदाहरण:

- सीता सोरेन (2023): पी.वी. नरसिम्हा राव (1998) के खिलाफ असहमति जताते हुए संसदीय विशेषाधिकार के तहत रिश्त के लिए प्रतिरक्षा को खारिज कर दिया।
- हिजाब केस (2022): न्यायमूर्ति धूलिया की असहमति ने राज्य द्वारा संचालित स्कूलों में धर्मनिरपेक्षता पर विविधता पर जोर दिया।
- लालता प्रसाद वैश (2024): न्यायमूर्ति नागरत्ना की असहमति राज्यों की औद्योगिक शराब पर कर लगाने में असमर्थता पर।

राजनीतिक असहमति के परिणाम:

- लोकतांत्रिक सुदृढ़ीकरण: न्यायिक स्वतंत्रता को बनाए रखता है, यह सुनिश्चित करता है कि न्यायालय कार्यकारी और विधायी शक्तियों पर नियंत्रण के रूप में कार्य करें।
- सुधार के लिए उत्प्रेरक: बहुमत के निर्णयों में स्वामियों को उजागर करके संवैधानिक संशोधनों और भविष्य के कानून को प्रभावित करता है।
- सार्वजनिक धारणा: न्यायिक निष्पक्षता के बारे में सार्वजनिक समझ को आकार देता है, लेकिन राजनीतिक रूप से आरोपित मामलों में असहमति पक्षपात के बारे में चिंताएँ पैदा कर सकती है।
- न्यायिक अखंडता जोखिम: राजनीतिक असहमति को पक्षपातपूर्ण माना जा सकता है, जिससे न्यायिक तटस्थता में विश्वास कम होता है।
- व्यावसायिक परिणाम: राजनीतिक रूप से संवेदनशील मामलों में असहमति व्यक्त करने वाले न्यायाधीशों को न्यायिक और सार्वजनिक डोमेन में आलोचना या अलगाव का सामना करना पड़ सकता है।

आगे का रास्ता:

- न्यायिक स्वतंत्रता को बढ़ावा देना: राजनीतिक और कार्यकारी दबावों से न्यायपालिका की स्वायत्तता को सुरक्षित करके उसे मजबूत करना।

- खुले विचार-विमर्श को प्रोत्साहित करना: कानूनी तर्क और न्यायशास्त्र को समृद्ध करने के लिए न्यायिक मंचों के भीतर रचनात्मक बहस को बढ़ावा देना।
- प्रशिक्षण और जागरूकता: न्यायाधीशों को व्यक्तिगत अधिकारों और सामाजिक आवश्यकताओं के बीच संतुलन बनाने के लिए वैश्विक न्यायिक प्रथाओं से परिचित कराना।
- संस्थागत सुरक्षा उपाय: असहमति जताने वाले न्यायाधीशों को बाहरी आलोचना या पेशेवर अलगाव से बचाने के लिए तंत्र विकसित करना।
- प्रौद्योगिकी का लाभ उठाना: नागरिकों को वैकल्पिक कानूनी व्याख्याओं के बारे में शिक्षित करने के लिए असहमतिपूर्ण राय की पहुँच बढ़ाना।

निष्कर्ष:

न्यायिक असहमति एक जीवंत लोकतंत्र की आधारशिला है, जो न्यायशास्त्र को परिष्कृत करने और संवैधानिक मूल्यों की रक्षा करने के लिए वैकल्पिक दृष्टिकोणों की अनुमति देती है। भारत में, असहमति ने संवैधानिक व्याख्या को महत्वपूर्ण रूप से आकार दिया है, जिससे न्यायपालिका में जनता का विश्वास बढ़ा है।

भारत में विदेशी मतदाता

संदर्भ:

2024 के लोकसभा चुनावों में प्रवासी भारतीय मतदाताओं की भागीदारी बढ़ती पंजीकरण संख्या के बावजूद कम बनी हुई है, जो चुनौतियों को उजागर करती है और अनिवासी भारतीयों के लिए मतदान सुधारों की मांग को बढ़ावा देती है।

2024 के लोकसभा चुनावों में विदेशी मतदाता:

- परिभाषा: विदेशी मतदाता, जिन्हें आधिकारिक तौर पर विदेशी मतदाता कहा जाता है, वे भारतीय नागरिक हैं जो विदेश में रहते हैं, लेकिन भारत में अपने संबंधित निर्वाचन क्षेत्रों में मतदान करने के लिए पंजीकृत हैं।
- पात्रता: भारतीय पासपोर्ट होना चाहिए और अपने गृह निर्वाचन क्षेत्र की मतदाता सूची में पंजीकृत होना चाहिए।

डेटा (स्रोत: भारत का चुनाव आयोग)

पंजीकरण:

- 2024: 1,19,374 पंजीकृत विदेशी मतदाता (केरल में सबसे अधिक: 89,839)।
- 2019: 99,844 पंजीकरण।
- मतदान: केवल 2,958 विदेशी मतदाताओं ने मतदान किया, जिनमें से 2,670 केरल से थे।
- महत्व: एनआरआई भारत के वैश्विक पदचिह्न का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं, और उनकी भागीदारी भारत की लोकतांत्रिक समावेशिता को मजबूत करती है।

भागीदारी में चुनौतियाँ:

- यात्रा लागत और रोजगार प्रतिबद्धताएँ मतदान को रोकती हैं।
- वर्तमान कानूनों के अनुसार अनिवासी भारतीयों (NRI) को व्यक्तिगत रूप से मतदान करना आवश्यक है, जो प्रतिबंधात्मक है।

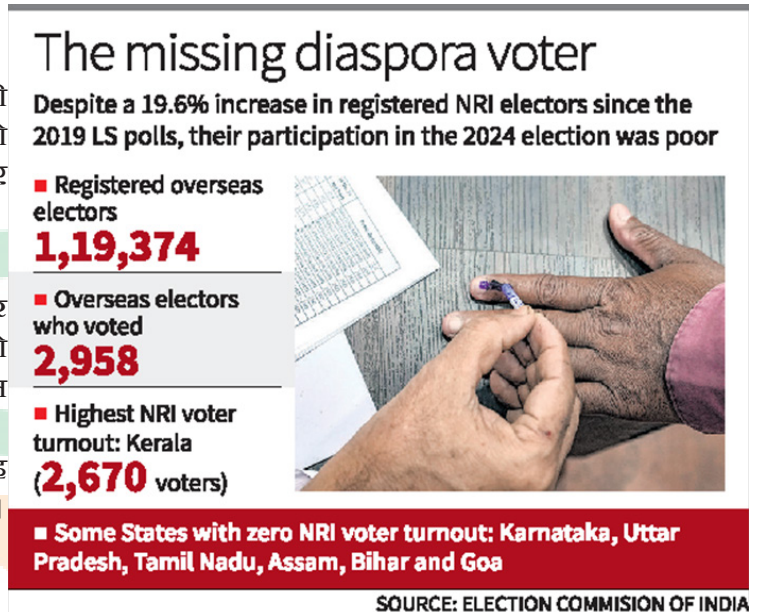
प्रस्तावित सुधार:

- NRI के लिए इलेक्ट्रॉनिक रूप से प्रेषित डाक मतपत्र प्रणाली (ETPBS) की शुरुआत।
- 2018 में प्रस्तावित प्रॉक्सी वोटिंग अधिकार अभी तक लागू नहीं हुए हैं।

निजी सदस्य विधेयक

संदर्भ:

17वीं लोकसभा (2019-2024) के दौरान, लोकसभा में निजी सदस्य विधेयकों पर चर्चा में केवल 9.08 घंटे और राज्यसभा में 27.01 घंटे खर्च किए गए।





निजी सदस्य विधेयक क्या है?

- संसद सदस्य (सांसद) द्वारा पेश किया गया एक विधायी प्रस्ताव जो सरकार का हिस्सा नहीं है।
- आधिकारिक सरकारी एजेंडे के बाहर व्यक्तिगत सांसदों की विधायी प्राथमिकताओं या सार्वजनिक मुद्दों का प्रतिनिधित्व करता है।
- सत्तारूढ़ और विपक्षी दोनों पार्टी के सांसदों द्वारा पेश किया जा सकता है।

विशेषताएँ:

- गैर-बाध्यकारी: अस्वीकृति से सरकार के आत्मविश्वास या स्थिरता पर कोई असर नहीं पड़ता।
- विधायी स्वतंत्रता: सांसदों की स्वतंत्र आवाज़ को दर्शाता है।
- ऐतिहासिक महत्व: केवल 14 निजी सदस्यों के विधेयक कानून बन पाए हैं; अंतिम विधेयक 1970 में पारित हुआ था।
- शेड्यूलिंग: शुक्रवार को चर्चा के लिए आरक्षित, इसके समय और प्राथमिकता को सीमित करता है।

सदन में प्रक्रिया:

- मसौदा तैयार करना और नोटिस: सदस्य विधेयक का मसौदा तैयार करता है और पेश करने से पहले एक महीने का नोटिस देता है।
- परिचय: सदन में पेश किया जाता है, उसके बाद प्रारंभिक चर्चा और समिति को संभावित संदर्भ।
- बहस: यदि चुना जाता है, तो आवंटित शुक्रवार के सत्र के दौरान विधेयक पर बहस की जाती है।
- निर्णय: सदस्य मंत्री के अनुरोध पर इसे वापस ले सकता है या मतदान के लिए आगे बढ़ सकता है।

यूडीआईएसई+ 2023-24 रिपोर्ट

शिक्षा मंत्रालय के तहत डेटा एकीकरण प्लेटफॉर्म, यूनिफाइड डिस्ट्रिक्ट इंफॉर्मेशन सिस्टम फॉर एजुकेशन प्लस (यूडीआईएसई+) ने अपनी 2023-24 रिपोर्ट जारी की है।

UDISE+ के बारे में:

- यह क्या है: भारत में स्कूली शिक्षा के लिए एक व्यापक डेटाबेस, जिसे राष्ट्रीय स्तर पर डेटा एकीकरण करने, उसका विश्लेषण करने और उसे ट्रैक करने के लिए लॉन्च किया गया है।
- मंत्रालय: शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार।
- उद्देश्य: पारदर्शिता सुनिश्चित करना, प्रगति की निगरानी करना और सटीक, छात्र-वार डेटा संग्रह के माध्यम से शिक्षा में अंतराल की पहचान करना।

मुख्य डेटा अंतर्दृष्टि:

नामांकन में गिरावट (कुल मिलाकर):

श्रेणी	2022-23 (करोड़ में)	2023-24 (करोड़ में)
--------	---------------------	---------------------



कुल नामांकन	25.17	24.8
छात्राएं	12.09	11.93
छात्र छात्र	13.08	12.87

श्रेणी के अनुसार नामांकन में गिरावट:

श्रेणी	2022-23 (करोड़ में)	2023-24 (करोड़ में)
अनुसूचित जाति	4.59	4.47
अनुसूचित जनजाति	2.48	2.46
ओबीसी	11.45	11.2
मुस्लिम छात्र	3.93	3.92
अल्पसंख्यक	5.01	4.98

भारतीय शिक्षा में मुद्दे:

- पढ़ाव और प्रतिधारण: उच्च ड्रॉपआउट दरें, विशेष रूप से माध्यमिक स्तर पर, छात्रों की निरंतर प्रगति में बाधा उत्पन्न होती है।
- हाशिए पर पड़े समुदाय: एससी, एसटी, ओबीसी और अल्पसंख्यक समूहों में नामांकन में उल्लेखनीय गिरावट प्रणालीगत असमानताओं को दर्शाती है।
- बुनियादी ढांचे का उपयोग: स्कूल के बुनियादी ढांचे का असमान उपयोग, कुछ राज्यों में संसाधनों का कम उपयोग हो रहा है जबकि अन्य में कमी का सामना करना पड़ रहा है।
- शिक्षा की गुणवत्ता: शिक्षक प्रशिक्षण और उपलब्धता में अंतर सीखने के परिणामों और छात्रों की भागीदारी को कम करता है।
- जीईआर में गिरावट: हाशिए पर पड़े समूहों के लिए सकल नामांकन अनुपात आधारभूत, प्रारंभिक, मध्य और माध्यमिक स्तरों में घट गया है।

आगे की राह:

- नीति कार्यान्वयन: 2030 तक सार्वभौमिक सकल नामांकन अनुपात (जीईआर) प्राप्त करने और कौशल-आधारित शिक्षा को एकीकृत करने के लिए एनईपी 2020 पहलों को मजबूत करना।
- समावेशी शिक्षा: लक्षित कार्यक्रमों के माध्यम से एससी, एसटी, ओबीसी और अल्पसंख्यक छात्रों के लिए शिक्षा तक समान पहुँच सुनिश्चित करना।
- शिक्षक प्रशिक्षण: शिक्षक की गुणवत्ता बढ़ाने और छात्र-शिक्षक अनुपात में अंतर को पाटने पर ध्यान केंद्रित करें।
- बुनियादी ढांचे का अनुकूलन: नामांकन प्रवृत्तियों के साथ संरेखित करने और पहुँच में सुधार करने के लिए स्कूल संसाधनों का अनुकूलन करें।
- निगरानी और डेटा: ड्रॉपआउट की पहचान करने और संसाधनों को कुशलतापूर्वक आवंटित करने के लिए छात्र-वार डेटा ट्रैकिंग का लाभ उठाएँ।

निष्कर्ष:

UDISE+ 2023-24 रिपोर्ट भारत की शिक्षा प्रणाली में महत्वपूर्ण अंतरालों को उजागर करती है, जिसमें नामांकन में गिरावट और पहुँच में असमानताएँ शामिल हैं। समावेशी नीतियों, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और बुनियादी ढाँचे के अनुकूलन पर ध्यान केंद्रित करके, भारत एक अधिक मजबूत और न्यायसंगत शिक्षा प्रणाली की दिशा में काम कर सकता है।

इन-फ़्लाइट इंटरनेट

संदर्भ:

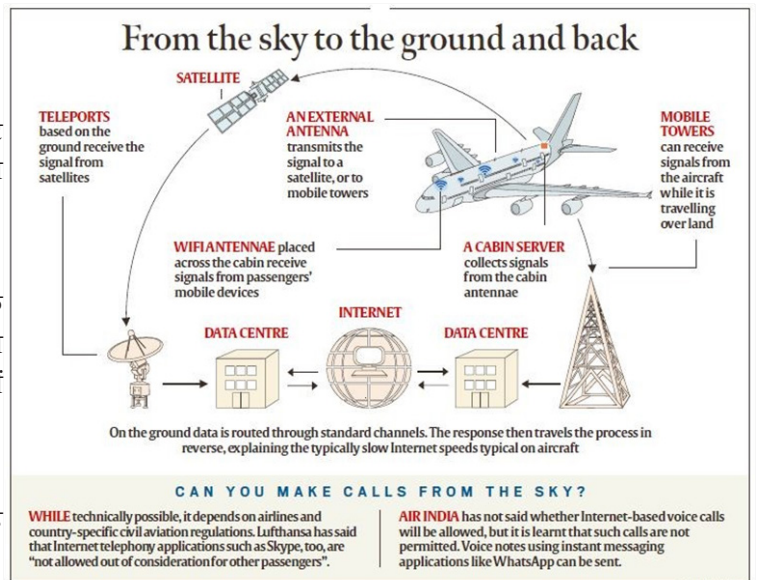
टाटा समूह का हिस्सा एयर इंडिया घरेलू उड़ानों में इन-फ़्लाइट इंटरनेट की पेशकश करने वाली पहली भारतीय एयरलाइन बन गई है।

इन-फ़्लाइट इंटरनेट के बारे में:

- यह क्या है: इन-फ़्लाइट वाई-फ़ाई यात्रियों को उड़ानों के दौरान इंटरनेट कनेक्टिविटी प्रदान करता है, जिससे ब्राउज़िंग, स्ट्रीमिंग और मैसेजिंग जैसी ऑनलाइन सेवाओं तक पहुँच संभव हो पाती है।

यह कैसे काम करता है:

- प्रयुक्त तकनीक: दो प्राथमिक प्रणालियाँ एयर-टू-ग्राउंड (ATG) और सैटेलाइट-आधारित कनेक्टिविटी।
- ATG: ग्राउंड सेलुलर टावरों से जुड़ने के लिए विमान के नीचे एंटीना का उपयोग करता है। घने टावर नेटवर्क वाले क्षेत्रों के लिए उपयुक्त।



- सैटेलाइट-आधारित: उपग्रहों के साथ संचार करने के लिए विमान के शीर्ष पर एंटीना का उपयोग करता है, विशेष रूप से महासागरों और दूरदराज के क्षेत्रों में व्यापक कवरेज सुनिश्चित करता है।

सिग्नल ट्रांसमिशन:

- डिवाइस इन-केबिन वाई-फाई एंटीना से कनेक्ट होते हैं।
- सिग्नल ऑनबोर्ड सर्वर से होकर गुजरते हैं।
- सैटेलाइट सिस्टम के लिए, सिग्नल सर्वर से सैटेलाइट तक, फिर ब्राउंड स्टेशनों तक और उसी मार्ग से वापस आते हैं।
- ATG सिस्टम के लिए, सिग्नल सीधे विमान और ब्राउंड सेलुलर टावरों के बीच यात्रा करते हैं।

सुविधाएँ और लाभ:

- बेहतर यात्री अनुभव: ब्राउज़िंग, स्ट्रीमिंग और हवा में दुनिया से जुड़ना।
- सुविधा: निर्बाध कनेक्टिविटी के लिए मौजूदा एयरलाइन पोर्टल के साथ एकीकरण।
- लचीलापन: कई उपकरणों के साथ संगतता।

इन-फ्लाइट वाई-फ़ाई की सीमाएँ:

- धीमी गति: आमतौर पर, तकनीकी बाधाओं के कारण ब्राउंड-आधारित इंटरनेट से धीमी।
- उच्च लागत: एयरलाइनों के लिए महंगे उपकरण स्थापना और रखरखाव, यात्रियों के लिए संभावित शुल्क के साथ।
- सीमित कवरेज: ATG तकनीक बड़े जल निकायों या दूरदराज के क्षेत्रों में संघर्ष करती है।

यूजीसी ड्राफ्ट रेगुलेशन 2025

संदर्भ:

केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान ने यूजीसी ड्राफ्ट रेगुलेशन 2025 का अनावरण किया, जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के साथ संरेखित कुलपतियों (वीसी) और शैक्षणिक कर्मचारियों की नियुक्ति में महत्वपूर्ण सुधार पेश करता है।

कुलपति नियुक्ति के लिए मसौदा दिशानिर्देश:

- शामिल संगठन: विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी)।

कुलपति नियुक्ति दिशा-निर्देशों की मुख्य विशेषताएँ:

- चयन के लिए प्राधिकार: कुलपतियों या विजिटर्स को कुलपतियों की नियुक्ति के लिए तीन सदस्यीय खोज-सह-चयन समिति बनाने का अधिकार है।

चयन प्रक्रिया:

- अखिल भारतीय समाचार-पत्रों में विज्ञापन या नामांकन/प्रतिभा खोज प्रक्रियाओं के माध्यम से आवेदन आमंत्रित किए जाते हैं।
- विजिटर/कुलपति (अध्यक्ष), यूजीसी अध्यक्ष और विश्वविद्यालय के शीर्ष निकाय (जैसे, सीनेट, सिंडिकेट) के नामांकित व्यक्तियों से मिलकर बनी एक समिति कुलपति का चयन करती है।

पात्रता:

- शिक्षा जगत, उद्योग, लोक प्रशासन या नीति निर्माण क्षेत्र से जुड़े प्रतिष्ठित पेशेवर, जिनका अकादमिक योगदान सिद्ध हो, पात्र हैं।
- समावेशिता: आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों (ईडब्ल्यूएस), एससी, एसटी, ओबीसी और विकलांग व्यक्तियों के प्रतिनिधित्व को प्रोत्साहित करती है।
- पारदर्शिता: सार्वजनिक अधिसूचना और वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन विधियों को अनिवार्य बनाती है।

गैर-अनुपालन के परिणाम:

- इन दिशानिर्देशों का पालन न करने पर संस्थानों को यूजीसी योजनाओं या डिग्री कार्यक्रमों की पेशकश करने से रोका जा सकता है।

NEW FACULTY RECRUITMENT NORMS

Highlights of the latest draft UGC regulations

Subject Flexibility: Candidates can teach based on their highest academic specialization, regardless of prior degree subjects or NET focus

Expanded Vice-Chancellor Eligibility: Professionals from fields like industry and policymaking with academic contributions are now eligible

Inclusivity Focus: Relaxations for EWS and PwD categories alongside SC/ST/OBC, with emphasis on Indian languages in academia

Transparent Recruitment: Teaching candidates will be assessed on practical teaching and research aptitude

Fair Career Advancement: Promotions consider leave for maternity, childcare, or study.

Recognising Innovation: Criteria now include teaching innovations, digital content, and community engagement

Revised Librarian and Sports Roles: Emphasis on digitization, indigenous sports, and public health contributions

Professor of Practice: Industry experts can join HEIs for teaching and research outside sanctioned posts

Improved Leadership Selection: Vice-Chancellor appointments ensure transparency through expert-led committees

Strict Compliance Measures: HEIs violating regulations risk penalties like exclusion from UGC schemes and degree programmes



ज्वारीय बाढ़

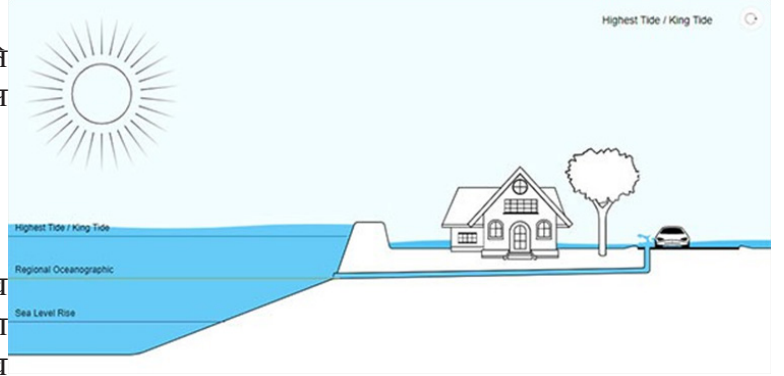
संदर्भ:

एर्नाकुलम जिले में हाल ही में ज्वारीय बाढ़ अक्सर देखने को मिलती है। पानी के लंबे समय तक रहने से, अधिक क्षेत्र प्रभावित हो रहे हैं।

ज्वारीय बाढ़ के बारे में:

ज्वारीय बाढ़ क्या है?

- ज्वारीय बाढ़ का मतलब है पूर्ण और अमावस्या जैसे उच्च ज्वार की घटनाओं के दौरान निचले तटीय क्षेत्रों का अस्थायी जलमग्न होना। इसे अक्सर अत्यधिक उच्च ज्वार के साथ जुड़े होने पर सनी डे फ्लडिंग या किंग टाइड फ्लडिंग कहा जाता है।



यह कैसे होता है?

- ज्वारीय बाढ़ तब होती है जब उच्च ज्वार, अपतटीय तूफान, हवाएँ और पूर्णिमा चक्रों के संयोजन से स्थानीय समुद्र के स्तर में अस्थायी वृद्धि होती है। तटीय जल निकासी प्रणालियाँ अक्सर इस अचानक वृद्धि से निपटने में विफल हो जाती हैं, जिसके परिणामस्वरूप स्थानीय बाढ़ आती है।

ज्वारीय बाढ़ को प्रभावित करने वाले कारक:

- बढ़ते समुद्र स्तर: पिघलते ग्लेशियर, तापीय विस्तार और भूमि अवतलन बेसलाइन समुद्र स्तर को बढ़ाते हैं।
- तूफानी लहरें: तूफान और अपतटीय तूफान उच्च ज्वार के दौरान जल स्तर को बढ़ाते हैं।
- जलवायु परिवर्तन: गर्म महासागर मजबूत तूफानों और अधिक तीव्र ज्वारीय घटनाओं में योगदान करते हैं।
- स्थानीय भूगोल: तटीय कटाव और निचले स्थलाकृति कुछ क्षेत्रों को अधिक संवेदनशील बनाते हैं।

ज्वारीय बाढ़ के प्रभाव:

- बुनियादी ढांचे पर दबाव: बार-बार बाढ़ आने से सड़कें, इमारतें और जल निकासी व्यवस्थाएं क्षतिग्रस्त हो जाती हैं।
- आर्थिक लागत: बाढ़-प्रवण क्षेत्रों में रखरखाव लागत में वृद्धि और संपत्ति के मूल्यों में कमी।
- पर्यावरणीय गिरावट: बाढ़ पारिस्थितिकी तंत्र को बाधित करती है और तटीय कटाव को तेज करती है।
- सुरक्षा जोखिम: आम तौर पर जीवन के लिए खतरा नहीं होने के बावजूद, ज्वारीय बाढ़ बड़े तूफान की घटनाओं के दौरान आपातकालीन प्रतिक्रियाओं को जटिल बनाती है।
- प्रबंधित वापसी की जरूरतें: कमजोर क्षेत्रों को बार-बार होने वाले नुकसान से बचने के लिए अंततः स्थानांतरण की आवश्यकता हो सकती है।

वैगई नदी

संदर्भ:

मद्रास उच्च न्यायालय की मदुरै पीठ ने तमिलनाडु के स्थानीय निकायों को वैगई नदी को पुनर्जीवित करने के लिए एक कार्रवाई योग्य समयरेखा तैयार करने का निर्देश दिया है।

वैगई नदी के बारे में:

- उद्गम: वैगई नदी पश्चिमी घाट में पेरियार पठार पर वरुसनुडु पहाड़ियों से निकलती है।
- अंतिम बिंदु: यह रामनाथपुरम जिले में पंबन ब्रिज के पास पाक जलडमरूमध्य में गिरती है।
- सहायक नदियाँ: प्रमुख सहायक नदियों में सुरुलियारु, मुल्लैयारु, वरगा नाधी, मंजालारु, कोट्टागुडी, कृधुमाल और उप्पारु शामिल हैं।
- राज्यों से होकर बहती है: यह मुख्य रूप से तमिलनाडु राज्य से होकर बहती है।

बांध और विशेषताएँ:

- वैगई बांध: थेनी जिले में अंदीपट्टी के पास स्थित सिंचाई और जल भंडारण के लिए एक महत्वपूर्ण संरचना।
- वट्टापराई जलप्रपात: नदी पर स्थित एक उल्लेखनीय जलप्रपात।



सांस्कृतिक और ऐतिहासिक महत्व:

- संगम साहित्य में इसका उल्लेख किया गया है, जो 300 ईसा पूर्व से है।
- इसे कृतमाला के नाम से जाना जाता है, जो मट्टे के चारों ओर एक माला की तरह बहने का प्रतीक है।
- इसका उल्लेख तिरुविलयादल पुराणम में किया गया है, जो पांड्या साम्राज्य के साथ इसके जुड़ाव पर जोर देता है।

कॉफी**संदर्भ:**

भारत अब वैश्विक स्तर पर सातवाँ सबसे बड़ा कॉफी उत्पादक है, जिसका निर्यात वित्त वर्ष 2023-24 में \$1.29 बिलियन तक पहुँच गया है, जो 2020-21 में \$719.42 मिलियन से लगभग दोगुना है।

**कॉफी के बारे में:**

- उत्पत्ति: कॉफी की शुरुआत भारत में 1600 के दशक में हुई थी, जब बाबा बुदन नामक एक सूफी संत ने कर्नाटक के बाबा बुदन गिरि क्षेत्र में यमन से सात मोचा कॉफी बीन्स लगाए थे। इसने भारत में कॉफी की खेती की शुरुआत की।

कॉफी के प्रकार:

- अरेबिका: अपने हल्के, सुगंधित स्वाद और उच्च बाजार मूल्य के लिए जाना जाता है।
- रोबस्टा: अधिक कठोर, तीखे स्वाद वाला, अक्सर इंस्टेंट कॉफी उत्पादन में उपयोग किया जाता है।

कॉफी की खेती के लिए जलवायु परिस्थितियाँ:

- तापमान: आदर्श सीमा 15°C से 28°C है।
- वर्षा: 150-250 सेमी वार्षिक वर्षा की आवश्यकता होती है।
- मिट्टी: अच्छी तरह से सूखा, दोमट मिट्टी में सबसे अच्छी तरह से बढ़ता है जो ह्यूमस और लौह और कैल्शियम जैसे खनिजों से भरपूर होता है।
- जलवायु: छायादार बागानों के साथ गर्म, आर्द्र जलवायु में पनपता है।
- ऊँचाई: आमतौर पर समुद्र तल से 600-1,600 मीटर की ऊँचाई पर खेती की जाती है।

कॉफी उत्पादन में भारत:

- वैश्विक रैंकिंग: भारत वैश्विक कॉफी उत्पादन में सातवें स्थान पर है।
- निर्यात: कॉफी उत्पादन का 70% से अधिक निर्यात किया जाता है, जिसमें इटली, बेल्जियम और रूस प्रमुख खरीदार हैं।

राज्यवार उत्पादन:

1. कर्नाटक: सबसे बड़ा उत्पादक, भारत की कॉफी में 70% से अधिक का योगदान देता है।
2. केरल: दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक।
3. तमिलनाडु: उत्पादन में तीसरा।
4. अन्य राज्य: आंध्र प्रदेश, ओडिशा और पूर्वोत्तर क्षेत्र मामूली योगदान देते हैं।

आसन वेटलैंड

संदर्भ:

उत्तराखंड में आसन वेटलैंड ने हाल ही में एशियाई जलपक्षी जनगणना की मेजबानी की, जिसमें 117 प्रजातियों के 5,225 पक्षियों का डेटा प्राप्त हुआ



आसन वेटलैंड के बारे में:

- स्थान: उत्तराखंड के देहरादून जिले में आसन नदी और पूर्वी यमुना नहर के संगम पर स्थित है।
- उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश की सीमाओं के पास स्थित है।

नदियाँ और इतिहास:

- 1967 में धालीपुर बिजलीघर के निर्माण के दौरान आसन बैराज (धालीपुर झील) पर आसन नदी पर बांध बनाए जाने के कारण निर्मिता
- 2020 में उत्तराखंड का पहला रामसर स्थल घोषित किया गया, जो इसके वैश्विक पारिस्थितिक महत्व को दर्शाता है।

विशिष्टता और विशेषताएँ:

- जैव विविधता केंद्र: 330 पक्षी प्रजातियों का घर, जिनमें गंभीर रूप से लुप्तप्राय सफेद-पंख वाले गिद्ध, लाल सिर वाले गिद्ध और बेयर के पोचार्ड शामिल हैं।
- प्रवासी पक्षी: मध्य एशिया से प्रवास करने वाले ब्राह्मणी बतख, लाल कलगीदार पोचार्ड, गेडवाल और मैलाई जैसी विश्व स्तर पर लुप्तप्राय प्रजातियों को आश्रय प्रदान करता है।
- मछली प्रजातियाँ: लुप्तप्राय पुट्टर महासीर सहित 49 मछली प्रजातियाँ यहाँ पाई जाती हैं।
- आर्द्रभूमि पारिस्थितिकी तंत्र: पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने, जल विज्ञान व्यवस्था का समर्थन करने और जैव विविधता को सक्षम करने के लिए महत्वपूर्ण है।

एशियाई जलपक्षी जनगणना (AWC) के बारे में:

- द्वारा संचालित: एशियाई जलपक्षी जनगणना (AWC) का समन्वय वैश्विक अंतर्राष्ट्रीय जलपक्षी जनगणना (IWC) के भाग के रूप में वेटलैंड्स इंटरनेशनल द्वारा किया जाता है।
- आवृत्ति: AWC एक वार्षिक नागरिक विज्ञान कार्यक्रम है जो जनवरी के महीनों के दौरान जलपक्षियों के प्रवास के मौसम के साथ मेल खाने के लिए आयोजित किया जाता है।

भरथपुझा नदी

संदर्भ:

एक दुखद घटना में, केरल के चेरुथुरुथी में भरथपुझा नदी में एक परिवार के चार सदस्य डूब गए।

भरतपुड़ा नदी के बारे में:

- स्थान और लंबाई: भरतपुड़ा नदी, जिसे नीला नदी या पोन्नानी नदी भी कहा जाता है।
- उद्गम और प्रवाह: नदी तमिलनाडु में अन्नामलाई पहाड़ियों से निकलती है और अरब सागर में गिरने से पहले पश्चिमी घाट में पलक्कड़ गैप से पश्चिम की ओर बहती है।
- सहायक नदियाँ: कन्नडिपुड़ा, कल्पतिपुड़ा, गायत्रीपुड़ा और शुथापुड़ा, जो इसके बेसिन को समृद्ध करती हैं।
- भौगोलिक विस्तार: नदी केरल और तमिलनाडु राज्यों से होकर बहती है।
- जलाशय और बांध: नदी पर बना मलमपुड़ा बांध, केरल का सबसे बड़ा जलाशय है, जो सिंचाई और जलविद्युत उद्देश्यों के लिए काम करता है।

**भारत मौसम विज्ञान विभाग****संदर्भ:**

भारत मौसम विज्ञान विभाग (IMD) ने अपना 150वां स्थापना दिवस मनाया। 14 जनवरी, 2025 को

भारत मौसम विज्ञान विभाग (IMD) के बारे में:

- स्थापना: 1875
- मंत्रालय: पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय
- मुख्यालय: नई दिल्ली
- उद्देश्य: भारत की सुरक्षा, आर्थिक स्थिरता और समग्र विकास के लिए सटीक मौसम पूर्वानुमान, जलवायु निगरानी और आपदा प्रबंधन सेवाएँ प्रदान करना।

कार्य

- मौसम पूर्वानुमान: चक्रवात, बाढ़, सूखा और अन्य चरम मौसम की घटनाओं के लिए अलर्ट जारी करना।
- जलवायु अनुसंधान: जलवायु परिवर्तन और कृषि और जल संसाधनों पर इसके प्रभावों की निगरानी करना।
- आपदा प्रबंधन: जान-माल के नुकसान को कम करने के लिए प्रारंभिक चेतावनी प्रदान करना।
- क्षेत्रों को सहायता: कृषि, विमानन, शिपिंग और सार्वजनिक सुरक्षा को सहायता।
- जन जागरूकता: नागरिकों को जलवायु और मौसम के पैटर्न के बारे में शिक्षित करना।

इतिहास:

- 1864 के कलकत्ता चक्रवात और 1866 और 1871 में मानसून की विफलता जैसी बड़ी आपदाओं के बाद स्थापित किया गया।
- भारतीय उपमहाद्वीप की अनूठी मौसम संबंधी आवश्यकताओं का समर्थन करने के लिए एक प्राधिकरण के तहत एकीकृत मौसम संबंधी सेवाएँ।

प्रमुख पहल:

- मिशन मौसम (2025): मौसम के अनुकूल और जलवायु-स्मार्ट भारत के लिए उन्नत प्रौद्योगिकियाँ।
- IMD विज़न-2047: लचीलापन और जलवायु परिवर्तन अनुकूलन के लिए एक रोडमैप।
- डॉपलर मौसम रडार का विस्तार: 2014 में 15 रडार से 2023 में 39 तक, कवरेज में 35% सुधार।
- चक्रवात पूर्वानुमान: फानी (2019), अम्फान (2020), और बिपरजॉय (2023) जैसे चक्रवातों का सटीक पूर्वानुमान, जिससे हज़ारों लोगों की जान बच गई।
- मेक इन इंडिया पहल: स्वदेशी रडार (1958), उपग्रहों के लिए इसरो के साथ सहयोग (1983), और गतिशील समग्र जोखिम एटलस (2022)।



क्यूबा

संदर्भ:

भारत ने तूफान राफेल के महेनजर क्यूबा को मानवीय सहायता प्रदान की है, जिसमें एंटीबायोटिक्स, दर्द निवारक, ओआरएस और मांसपेशियों को आराम देने वाली दवाएं जैसी आवश्यक दवाएं प्रदान की गई हैं।



क्यूबा के बारे में:

- स्थान: क्यूबा कैरेबियन सागर, मैक्सिको की खाड़ी और अटलांटिक महासागर के संगम पर स्थित है।

पड़ोसी:

- पूर्व: हिस्पानियोला (हैती/डोमिनिकन गणराज्य)।
- पश्चिम: युकाटन प्रायद्वीप (मेक्सिको)।
- उत्तर: फ्लोरिडा (यूएसए) और बहामासा।
- दक्षिण: जमैका और केमैन द्वीप।
- राजधानी: हवाना।

भौगोलिक विशेषताएँ:

- प्रमुख नदियाँ: काउटो (सबसे लंबी नदी) और टोआ।
- खनिज: निकेल, कोबाल्ट, लौह अयस्क, तांबा और पेट्रोलियम से भरपूर।
- जलवायु: उष्णकटिबंधीय, मौसमी रूप से आर्द्र और समुद्री प्रभाव।

मेक्सिको की खाड़ी

संदर्भ:

हाल ही में, अमेरिका के नव-निर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने मेक्सिको की खाड़ी का नाम बदलकर अमेरिका की खाड़ी करने का प्रस्ताव रखा, जिससे इस तरह के नाम परिवर्तन के भू-राजनीतिक और ऐतिहासिक महत्व पर बहस छिड़ गई।



मेक्सिको की खाड़ी के बारे में:

- स्थान: अटलांटिक महासागर का एक सीमांत समुद्र, जिसकी सीमा संयुक्त राज्य अमेरिका, मेक्सिको और क्यूबा से लगती है।

पड़ोसी देश:

- उत्तर और उत्तर-पश्चिम: संयुक्त राज्य अमेरिका
- दक्षिण और दक्षिण-पश्चिम: मेक्सिको
- दक्षिण-पूर्व: क्यूबा

खाड़ी में बहने वाली नदियाँ:

- मिसिसिपी नदी (सबसे बड़ी योगदानकर्ता)।
- अन्य नदियाँ: ब्राज़ोस, रियो ग्रांडे और मोबाइला।

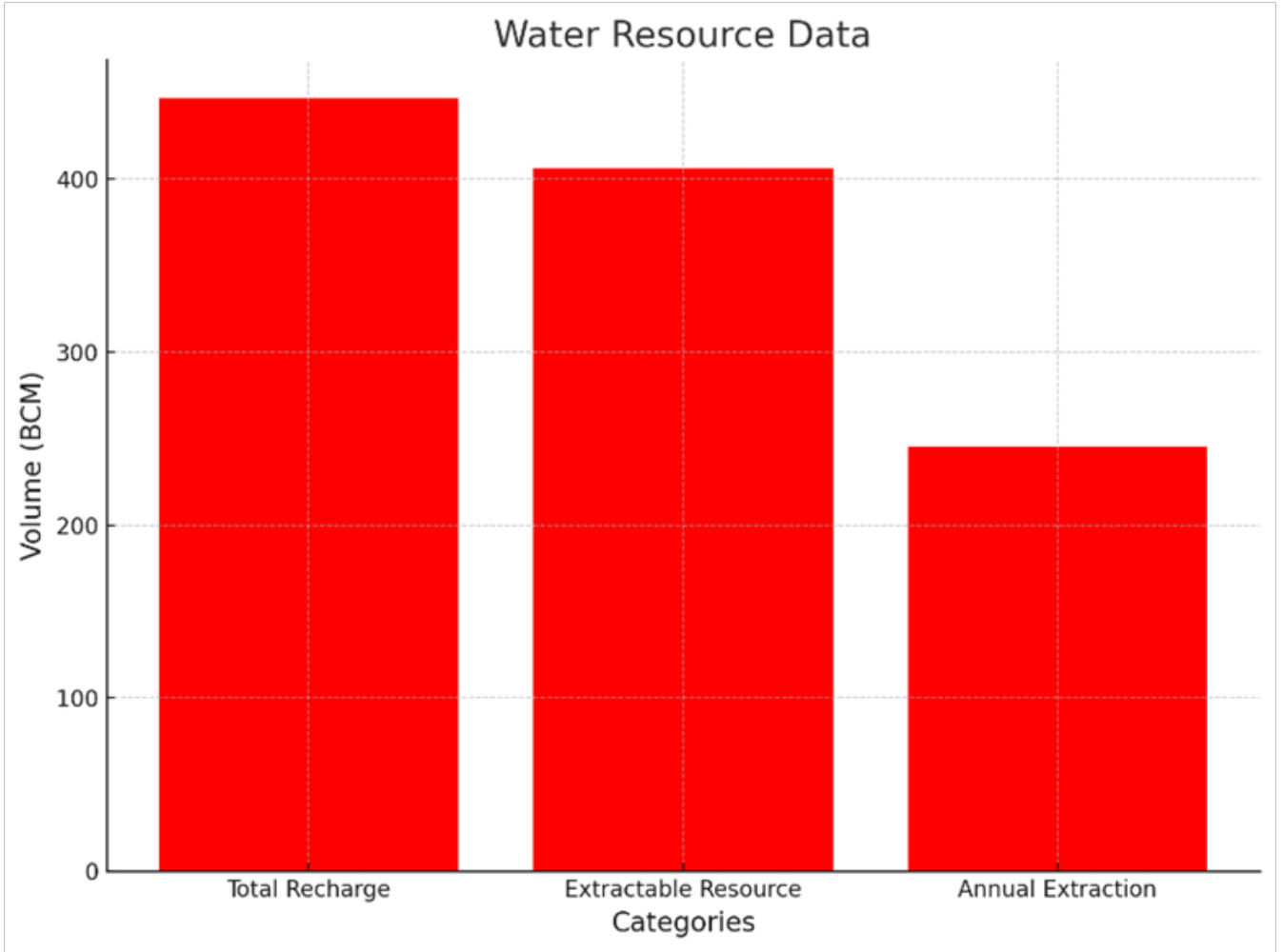
भौगोलिक विशेषताएँ:

- आकार और माप: अंडाकार आकार का बेसिन, क्षेत्रफल लगभग 1.6 मिलियन वर्ग किमी।
- तल संरचना: अवसादी चट्टानें और हाल ही में जमा तलछट।
- ऊर्जा संसाधन: एक प्रमुख अपतटीय पेट्रोलियम उत्पादन केंद्र, जो अमेरिका के कच्चे तेल उत्पादन में 14% का योगदान देता है।

भूजल संरक्षण

संदर्भ:

केंद्रीय भूजल बोर्ड (CGWB) की हालिया रिपोर्ट भूजल पुनर्भरण और कम निकासी में सकारात्मक रुझानों को उजागर करती है, जो सहयोगी प्रयासों और नवीन नीतियों की क्षमता को प्रदर्शित करती है।



- सुधार (2017-2024): (स्रोत: भारत के गतिशील भूजल संसाधनों पर राष्ट्रीय संकलन, 2024)
- भूजल पुनर्भरण में 15 बीसीएम की वृद्धि हुई।
- निष्कर्षण में 3 बीसीएम की कमी आई।
- सुरक्षित मूल्यांकन इकाइयाँ 62.6% (2017) से बढ़कर 73.4% (2024) हो गईं।
- अति-शोषित इकाइयाँ 17.24% से घटकर 11.13% हो गईं।

भूजल संरक्षण के लिए सरकारी पहल

- जल शक्ति अभियान: "कैच द रेन" अभियान के तहत वर्षा जल संचयन और जल संरक्षण पर ध्यान केंद्रित करता है।
- अटल भूजल योजना (2020): सात राज्यों में जल-तनाव वाले क्षेत्रों में भूजल प्रबंधन को लक्षित करता है।
- मिशन अमृत सरोवर (2022): जल संचयन के लिए प्रत्येक जिले में 75 अमृत सरोवर बनाने/कायाकल्प करने की योजना है।
- प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना (पीएमकेएसवाई): सिंचाई कवरेज का विस्तार करता है और जल-उपयोग दक्षता में सुधार करता है।
- राष्ट्रीय जलभृत मानचित्रण (एनएक्यूआईएम): 25 लाख वर्ग किलोमीटर को कवर करता है, जो भूजल पुनर्भरण के लिए बेहतर योजना बनाने में सहायता करता है।
- कृत्रिम पुनर्भरण के लिए मास्टर प्लान (2020): 185 बीसीएम वर्षा का दोहन करने के लिए 42 करोड़ वर्षा जल संचयन संरचनाओं का प्रस्ताव करता है।
- पीएमकेएसवाई (डब्ल्यूडीसी-पीएमकेएसवाई) का वाटरशेड विकास घटक: मृदा संरक्षण और वर्षा जल संचयन को बढ़ावा देता है।
- राष्ट्रीय जल नीति (2012): वर्षा जल संचयन और कुशल जल उपयोग की वकालत करती है।

भूजल के सामने चुनौतियाँ:

- अत्यधिक निष्कर्षण: सिंचाई और घरेलू जरूरतों के लिए भूजल का अत्यधिक उपयोग भंडार को रिचार्ज करने की तुलना में तेजी से कम कर रहा है।
- प्रदूषण: भूजल आर्सेनिक, फ्लोराइड, नाइट्रेट्स और औद्योगिक प्रदूषकों से तेजी से दूषित हो रहा है, जिसका स्वास्थ्य और कृषि पर असर पड़ रहा है।

- घटता जल स्तर: शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में गैर-संवहनीय प्रथाओं के कारण भूजल स्तर में खतरनाक रूप से गिरावट आ रही है।
- जलवायु परिवर्तन: वर्षा के बदलते पैटर्न भूजल पुनर्भरण चक्रों को बाधित कर रहे हैं, जिससे पानी की कमी बढ़ रही है।
- शहरीकरण: शहरों का विस्तार पुनर्भरण क्षेत्रों को कम करता है और घुसपैठ को सीमित करता है, जिससे भूजल की कमी और भी बढ़ती हो जाती है।

आगे का रास्ता:

- नीतिगत दृष्टिकोण: संधारणीय भूजल उपयोग कानूनों को लागू करें और संरक्षण तकनीकों को अपनाने के लिए प्रोत्साहन दें।
- प्रौद्योगिकी एकीकरण: वास्तविक समय भूजल निगरानी और अनुकूलित जल संसाधन प्रबंधन के लिए AI और IoT का लाभ उठाएँ।
- सामुदायिक जुड़ाव: जागरूकता अभियान को बढ़ावा दें और भूजल संरक्षण पहलों में स्थानीय समुदायों को शामिल करें।
- एकीकृत जल प्रबंधन: भूजल के पूरक के रूप में सतही और वर्षा जल के उपयोग को प्रोत्साहित करें और निर्भरता को कम करें।

निष्कर्ष:

भूजल पुनर्भरण और संरक्षण में भारत की महत्वपूर्ण प्रगति सहयोगी प्रयासों के महत्व को रेखांकित करती है। सतत् प्रथाओं, तकनीकी नवाचारों और सामुदायिक भागीदारी को जारी रखते हुए, भारत अपने जल भविष्य को सुरक्षित कर सकता है और वैश्विक जल प्रबंधन में अग्रणी बन सकता है।



ऑलिव रिडले कछुए

संदर्भ:

पिछले दो दशकों में, तमिलनाडु, खास तौर पर चेन्नई में कई मृत ऑलिव रिडले कछुए समुद्र तट पर बहकर आए हैं।



ऑलिव रिडले कछुओं के बारे में:

- यह क्या है: ऑलिव रिडले कछुए (लेपिडोचेलिस ओलिवेसिया) सबसे छोटे और सबसे प्रचुर समुद्री कछुओं में से एक हैं, जो अपने समकालिक सामूहिक घोंसले के लिए जाने जाते हैं, जिन्हें एरिबैंडास कहा जाता है।
- निवास स्थान: प्रशांत, भारतीय और अटलांटिक महासागरों के उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में पाए जाने वाले, ऑलिव रिडले पेलजिक और तटीय दोनों हैं, जो भारत, मैक्सिको और कोस्टा रिका जैसे देशों में अक्सर घोंसले के शिकार होते हैं।

विशेषताएँ:

- उनके जैतून-हरे, दिल के आकार के खोल के लिए नामिता
- सर्वाहारी, केकड़ों, जेलीफ़िश और शैवाल पर भोजन करते हैं।
- समुद्र तल पर चारा खोजने के लिए 500 फ़ीट तक गोता लगाने में सक्षम।
- प्रजनन काल: उनके घोंसले बनाने का मौसम क्षेत्र के अनुसार अलग-अलग होता है। भारत में, यह नवंबर से मार्च तक होता है, जिसमें ओडिशा के गहिरमाथा और रुशिकुल्या जैसे समुद्र तटों पर बड़े पैमाने पर घोंसले बनाए जाते हैं।

संरक्षण स्थिति:

- वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972 की अनुसूची I
- CITES का परिशिष्ट I

मृत्यु के हाल के कारण:

- मछली पकड़ने के जाल में फंसना: ओलिव रिडले कछुए वाणिज्यिक ट्रॉलर जाल में फंस जाते हैं, हवा की कमी के कारण दम घुट जाता है, और अपने प्रजनन काल के दौरान मर जाते हैं।
- उलझाव और टकराव: छोड़े गए मछली पकड़ने के उपकरण और समुद्री मलबे, साथ ही घोंसले के मैदानों के पास जहाज की टक्कर, गंभीर चोटों और मौतों का कारण बनते हैं।
- पर्यावरण और अत्यधिक मछली पकड़ने का प्रभाव: कछुओं के जमावड़े वाले क्षेत्रों के पास अत्यधिक मछली पकड़ने से अधिक ट्रॉलर आकर्षित होते हैं, जिससे आकस्मिक मौतों और आवास में गड़बड़ी बढ़ जाती है।

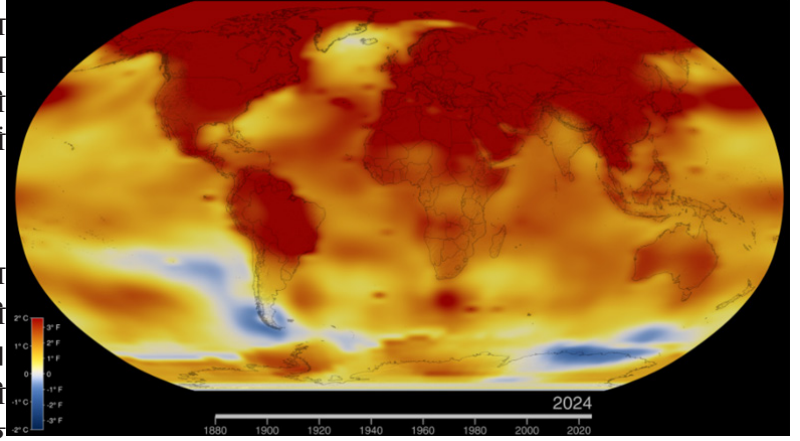
ग्लोबल वार्मिंग और भारत

संदर्भ:

वर्ष 2024 को वैश्विक स्तर पर सबसे गर्म वर्ष घोषित किया गया है, जो पूर्व-औद्योगिक स्तरों से ऊपर 1.5 डिग्री सेल्सियस की महत्वपूर्ण सीमा को पार कर गया है। जबकि भारत ने भी अपना सबसे गर्म वर्ष दर्ज किया, वैश्विक औसत की तुलना में वार्मिंग की सीमा अपेक्षाकृत कम थी।

2024 में ग्लोबल वार्मिंग के रुझान:

- तापमान रिकॉर्ड: 2024 में वैश्विक तापमान नासा की बेसलाइन (1951-1980) की तुलना में 1.28 डिग्री सेल्सियस अधिक था, जिसने पिछले रिकॉर्ड तोड़ दिए।
- वार्मिंग दरें: भूमि पर तापमान में वृद्धि 1.6 डिग्री सेल्सियस से अधिक हो गई, जबकि महासागर लगभग 0.9 डिग्री सेल्सियस गर्म हो गए।
- अल नीनो प्रभाव: एक मजबूत अल नीनो घटना ने तापमान वृद्धि में और योगदान दिया।
- दशकीय गर्मी: पिछला दशक रिकॉर्ड किए गए इतिहास में सबसे गर्म रहा है, जिसमें हर साल पिछले तापमान औसत से अधिक रहा है।
- क्षेत्रीय विविधताएँ: आर्कटिक और उच्च-ऊंचाई वाले क्षेत्रों में ध्रुवीय प्रवर्धन और एल्बेडो प्रभाव के कारण तापमान में सबसे अधिक वृद्धि देखी गई।



2024 को सबसे गर्म वर्ष बनाने वाले कारक:

- ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन: जीवाश्म ईंधन के उपयोग से रिकॉर्ड-उच्च CO2 और मीथेन उत्सर्जन ने वैश्विक तापमान में वृद्धि की।
- अल नीनो प्रभाव: एक मजबूत अल नीनो घटना ने समुद्र के तापमान को बढ़ा दिया, जिससे वैश्विक औसत ऊपर की ओर बढ़ गया।
- ज्वालामुखी विस्फोट के प्रभाव: 2022 टोंगा विस्फोट ने संभवतः वायुमंडलीय परिसंचरण को बदल दिया, जिससे बाद के वर्षों में गर्मी में वृद्धि हुई।
- एरोसोल प्रदूषण में कमी: प्रदूषण में कमी के कारण बादल कम हुए, जिससे पृथ्वी द्वारा अधिक सौर विकिरण को अवशोषित किया जा सका।
- आर्कटिक बर्फ का नुकसान: आर्कटिक में तेजी से पिघलने से एल्बेडो कम हो गया, जिससे अधिक गर्मी अवशोषण हुआ और तापमान में वृद्धि हुई।

भारत में तुलनात्मक रूप से कम गर्मी क्यों हुई?

- उष्णकटिबंधीय स्थान: भूमध्य रेखा से भारत की निकटता के कारण ध्रुवीय और समशीतोष्ण क्षेत्रों की तुलना में गर्मी में कम परिवर्तनशीलता होती है।
- एरोसोल और पार्टिकुलेट मैटर: एरोसोल की उच्च सांद्रता सूर्य के प्रकाश को बिखेरती है, जिससे भारत पर ठंडा प्रभाव पड़ता है।
- मानसून की गतिशीलता: भारतीय मानसून प्रणाली मौसमी वर्षा के माध्यम से सतह के तापमान को नियंत्रित करने में मदद करती है।
- महासागर का प्रभाव: आस-पास के महासागर भारत के तापमान को मध्यम करते हैं, जो उष्ण सिंक के रूप में कार्य करते हैं।
- भूभाग का अनुपात: वैश्विक भूमि सतहों की तुलना में भारत का छोटा भूभाग कम स्पष्ट गर्मी का परिणाम है।

ग्लोबल वार्मिंग को नियंत्रित करने में चुनौतियाँ:

- उत्सर्जन में वृद्धि: वैश्विक प्रयासों के बावजूद, जीवाश्म ईंधन की खपत और ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन उच्च स्तर पर बना हुआ है।
- आर्थिक निर्भरता: भारत सहित कई देश ऊर्जा के लिए कोयले और तेल पर बहुत अधिक निर्भर हैं।
- वैश्विक असमानता: जिम्मेदारियों और क्षमताओं में असमानताएँ एकीकृत जलवायु कार्रवाई में बाधा डालती हैं।
- अपर्याप्त वित्तपोषण: विकासशील देशों में जलवायु अनुकूलन और शमन प्रयासों को वित्तीय बाधाओं का सामना करना पड़ता है।
- जलवायु अस्वीकृति: हित समूहों और गलत सूचना अभियानों का प्रतिरोध अंतर्राष्ट्रीय समझौतों पर प्रगति को धीमा कर देता है।

ग्लोबल वार्मिंग को नियंत्रित करने के समाधान:

- नवीकरणीय ऊर्जा संक्रमण: जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता को कम करने के लिए सौर, पवन और जल विद्युत को अपनाने में तेजी लाएं।
- वनरोपण: बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण की पहल कार्बन सिंक के रूप में कार्य कर सकती है और वनों की कटाई का मुकाबला कर सकती है।
- जलवायु नीतियाँ: उत्सर्जन में कमी को लागू करने के लिए पेरिस समझौते जैसे अंतर्राष्ट्रीय समझौतों को मजबूत करें।
- प्रौद्योगिकी एकीकरण: कार्बन कैप्चर, भंडारण और अन्य हरित प्रौद्योगिकियों में निवेश करें।
- सार्वजनिक जागरूकता: जमीनी स्तर पर कार्रवाई और नीति समर्थन को बढ़ावा देने के लिए समुदायों को जलवायु परिवर्तन के बारे में शिक्षित करें।

निष्कर्ष:

2024 का रिकॉर्ड तोड़ तापमान जलवायु परिवर्तन से निपटने की तत्काल आवश्यकता को रेखांकित करता है। जबकि भारत में सापेक्षिक गर्मी कम है, इसकी कमजोरियाँ केंद्रित शमन और अनुकूलन प्रयासों की मांग करती हैं। मजबूत नीतियों और सार्वजनिक भागीदारी द्वारा समर्थित वैश्विक सहयोग इस अस्तित्वगत संकट से निपटने के लिए महत्वपूर्ण है।

भारतीय द्विवार्षिक अद्यतन रिपोर्ट**संदर्भ:**

हाल ही में, भारत ने अपनी द्विवार्षिक अद्यतन रिपोर्ट (BUR-4) प्रस्तुत की, जिसमें अपने ग्रीनहाउस गैस (GHG सूची), लक्ष्यों पर प्रगति और जलवायु परिवर्तन से निपटने के उपायों का विस्तृत विवरण दिया गया।

द्विवार्षिक अद्यतन रिपोर्ट (BUR) क्या है?

BUR विकासशील देशों द्वारा पेरिस समझौते के तहत दायित्वों के अनुसार UNFCCC को प्रस्तुत की गई रिपोर्ट हैं। इनमें शामिल हैं:

- राष्ट्रीय GHG सूची: विस्तृत उत्सर्जन स्रोत, सिंक और रुझान।
- जलवायु कार्य योजनाएँ: उत्सर्जन को कम करने के लिए नीतियों और कार्यक्रमों पर अपडेट।
- प्राप्त समर्थन: वित्तीय, तकनीकी और क्षमता निर्माण सहायता।
- सामाजिक-आर्थिक और वानिकी डेटा: उत्सर्जन को प्रभावित करने वाली राष्ट्रीय परिस्थितियों की जानकारी।

**भारत के BUR-4 की मुख्य बातें:****1. 2020 के लिए GHG सूची:**

- कुल GHG उत्सर्जन: 2,959 मिलियन टन CO₂ समतुल्य।
- शुद्ध GHG उत्सर्जन (वानिकी अवशोषण के बाद): 2,437 मिलियन टन CO₂ समतुल्य।
- सकल घरेलू उत्पाद की उत्सर्जन तीव्रता 2005 के स्तर से 36% कम हुई।

2. उत्सर्जन में क्षेत्रीय योगदान:

- ऊर्जा: 75.66% (केवल बिजली उत्पादन: 39%)।
- कृषि: 13.72%।
- उद्योग और अपशिष्ट: 10.62%।

3. प्रतिबद्धताओं पर प्रगति:

- 2030 तक 45% उत्सर्जन तीव्रता में कमी का लक्ष्य पटरी पर है।
- गैर-जीवाश्म ईंधन आधारित बिजली उत्पादन क्षमता: 2024 तक 46.52%।
- अतिरिक्त कार्बन सिंक निर्माण: 2.29 बिलियन टन CO₂ समतुल्य (2005-2021)।

4. ऊर्जा दक्षता योजनाएँ:

- प्रदर्शन, उपलब्धि और व्यापार (PAT): 7.72 Mtoe की बचत हुई और 28.74 मिलियन टन CO₂ उत्सर्जन में कमी आई।

5. विकास के लिए तकनीकी आवश्यकताएँ:

- औद्योगिक क्षेत्रों के लिए अल्ट्रा-कुशल फोटोवोल्टिकस, फ्लोटिंग विंड टर्बाइन और कार्बन कैप्चर जैसी उन्नत तकनीकों की आवश्यकताओं पर प्रकाश डाला गया।

भारत की जलवायु प्रतिबद्धताएँ और स्थिति:

प्रतिबद्धता	स्थिति
2030 तक सकल घरेलू उत्पाद उत्सर्जन तीव्रता में 45% की कमी लाना	36% कमी हासिल की (2005-2020)
गैर-जीवाश्म ईंधन से 50% स्थापित बिजली क्षमता	46.52% हासिल की (अक्टूबर 2024 तक)
2030 तक 2.5-3 बिलियन टन CO ₂ सिंक बनाना	2.29 बिलियन टन का उत्पादन किया (2005-2021)
2070 तक शुद्ध-शून्य उत्सर्जन	नवीकरणीय अपनाने और ऊर्जा बचत में वृद्धिशील प्रगति के साथ ट्रैक पर।

प्रतिबद्धताओं को प्राप्त करने में चुनौतियाँ:

- प्रौद्योगिकी बाधाएँ: उच्च लागत और बौद्धिक संपदा प्रतिबंधों के कारण उन्नत, कम कार्बन प्रौद्योगिकियों तक सीमित पहुँच।
- वित्तीय बाधाएँ: बड़े पैमाने पर नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाओं और कार्बन सिंक पहलों के लिए अपर्याप्त धन।
- जीवाश्म ईंधन पर उच्च निर्भरता: परिवहन और उद्योग जैसे क्षेत्रों में बदलाव एक महत्वपूर्ण चुनौती बनी हुई है।
- कृषि उत्सर्जन: पशुधन और चावल की खेती से निकलने वाली मीथेन एक सतत समस्या बनी हुई है।
- शहरीकरण और जनसंख्या वृद्धि: ऊर्जा की बढ़ती मांग और अपशिष्ट उत्पादन मौजूदा संसाधनों पर दबाव डाल रहे हैं।

आगे की राह:

- प्रौद्योगिकी हस्तांतरण को मजबूत करें: उन्नत जलवायु प्रौद्योगिकियों तक सस्ती पहुंच की सुविधा प्रदान करें।
- नवीकरणीय ऊर्जा का विस्तार करें: सौर, पवन और अन्य गैर-जीवाश्म ऊर्जा संसाधनों में निवेश में तेजी लाएं।
- वन क्षेत्र को बढ़ाएं: कार्बन सिंक लक्ष्यों को पूरा करने के लिए मजबूत वनीकरण कार्यक्रमों को लागू करें।
- परिपत्र अर्थव्यवस्था को बढ़ावा दें: उद्योगों और अपशिष्ट प्रबंधन में संधारणीय प्रथाओं को प्रोत्साहित करें।
- वैश्विक स्तर पर सहयोग करें: वित्त, प्रौद्योगिकी और क्षमता निर्माण के लिए अंतर्राष्ट्रीय समर्थन प्राप्त करें।

निष्कर्ष:

भारत का BUR-4 जलवायु लक्ष्यों की दिशा में इसकी प्रगति को रेखांकित करता है, विशेष रूप से उत्सर्जन तीव्रता को कम करने और नवीकरणीय ऊर्जा में बदलाव करने में। चुनौतियों के बावजूद, एक सहयोगात्मक, प्रौद्योगिकी-संचालित और संसाधन-कुशल दृष्टिकोण भारत को अपनी प्रतिबद्धताओं को प्राप्त करने और वैश्विक जलवायु कार्रवाई को प्रेरित करने में मदद कर सकता है।

2024 के पर्यावरण शिखर सम्मेलन**संदर्भ:**

2024 में, वैश्विक पर्यावरण प्रयासों को कई असफलताओं का सामना करना पड़ा क्योंकि प्रमुख संयुक्त राष्ट्र जलवायु शिखर सम्मेलन प्रभावशाली समाधान देने में विफल रहे।

**2024 जलवायु शिखर सम्मेलन:**

- जैव विविधता (कोलंबिया): स्थायी भूमि-उपयोग प्रथाओं के लिए वित्तपोषण तंत्र को अंतिम रूप देने में विफल, \$700 बिलियन वार्षिक लक्ष्य से कम।
- जलवायु परिवर्तन (अज़रबैजान): जीवाश्म ईंधन संक्रमण और विकासशील देशों के लिए अपर्याप्त वित्तपोषण प्रतिज्ञाओं पर मतभेद।
- भूमि क्षरण (सऊदी अरब): कानूनी रूप से बाध्यकारी सूखा प्रोटोकॉल पर आम सहमति का अभाव।
- प्लास्टिक प्रदूषण (दक्षिण कोरिया): प्लास्टिक-आधारित अर्थव्यवस्थाओं पर निर्भर देशों के विरोध के कारण कोई समझौता नहीं हुआ, जो कमी के बजाय पुनर्वर्तन का पक्ष लेते हैं।

पर्यावरण समझौतों में युवाओं की भूमिका:

- युवाओं के नेतृत्व में मुकदमेबाजी: अमेरिका में हेल्ड बनाम मोंटाना और भारत में रिधिमा पांडे की याचिका जैसे मामले युवाओं को अपर्याप्त जलवायु नीतियों को चुनौती देने हुए दिखाते हैं।
- मानवाधिकारों की वकालत: जलवायु निष्क्रियता को अधिकारों का उल्लंघन बताते हुए प्रणालीगत, विज्ञान-आधारित सुधारों की मांग करना।

- वैश्विक आंदोलन: युवा कार्यकर्ता अंतर-पीढ़ीगत समानता पर प्रकाश डालते हैं, सरकारों और समुदायों को स्थायी नीतियों को प्राथमिकता देने के लिए प्रेरित करते हैं।
- न्यायालय की सफलता: कनाडा, नीदरलैंड और जर्मनी में ऐतिहासिक फैसले नीतियों को आकार देने के लिए युवा वकालत की क्षमता को उजागर करते हैं।

शिखर सम्मेलन की विफलताओं के कारण:

- भिन्न प्राथमिकताएँ: विकासशील राष्ट्र अधिक वित्तीय और तकनीकी सहायता की माँग करते हैं, जबकि विकसित राष्ट्र घरेलू बाधाओं का हवाला देते हैं।
- आर्थिक दबाव: मुद्रास्फीति, भू-राजनीतिक संघर्ष और महामारी के बाद की रिकवरी जैसे वैश्विक संकट ध्यान और संसाधनों को भटकाते हैं।
- आम सहमति का अभाव: जवाबदेही ढँचे और परिचालन तंत्र पर असहमति ने प्रगति को रोक दिया।
- असमान प्रतिबद्धताएँ: धनी राष्ट्र वित्तीय और उत्सर्जन में कमी के लक्ष्यों को पूरा करने में विफल रहे।

आगे की राह:

- जलवायु वित्त: धनी राष्ट्रों को विकासशील देशों को वित्तपोषित करने और उनका समर्थन करने की प्रतिबद्धताओं का सम्मान करना चाहिए।
- एकीकृत रणनीतियाँ: जलवायु कार्रवाई के साथ-साथ जैव विविधता हानि, भूमि क्षरण और प्रदूषण जैसे परस्पर जुड़े मुद्दों को संबोधित करना।
- जवाबदेही तंत्र: प्रतिबद्धताओं को ट्रैक करने और समझौतों को लागू करने के लिए मजबूत ढांचे।
- युवा समावेशन: समाधानों में समानता और नवाचार सुनिश्चित करने के लिए नीति निर्माण में युवाओं की आवाज़ को बढ़ावा देना।
- कार्यान्वयन पर ध्यान केंद्रित करना: प्रतिज्ञाओं से हटकर कार्रवाई योग्य और मापने योग्य परिणामों की ओर बढ़ना।

निष्कर्ष:

2024 की विफलताएँ पर्यावरण के मुद्दों पर तत्काल, एकीकृत वैश्विक कार्रवाई की आवश्यकता को उजागर करती हैं। युवाओं को सशक्त बनाना, न्यायसंगत वित्तीय प्रतिबद्धता सुनिश्चित करना और सहयोगी रणनीतियों को प्राथमिकता देना सार्थक प्रगति का मार्ग प्रशस्त कर सकता है।

भस्मीकरण

संदर्भ:

भोपाल गैस त्रासदी से 337 टन रासायनिक अपशिष्ट ले जाने वाले स्पिल-फ्री ट्रक पीथमपुर पहुँचने वाले हैं, जहाँ तीन से नौ महीनों के भीतर अपशिष्ट को भस्म कर दिया जाएगा।

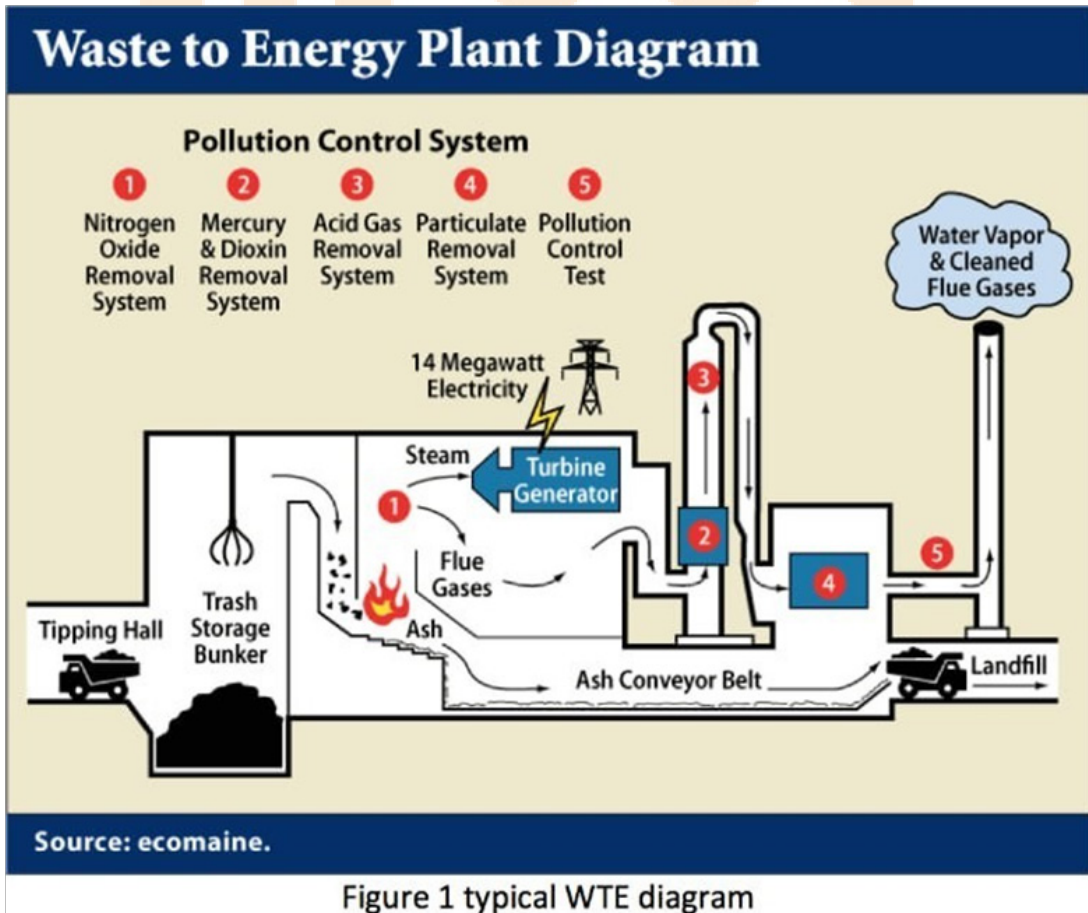


Figure 1 typical WTE diagram

भस्मीकरण के बारे में:

- यह क्या है: भस्मीकरण उच्च तापमान वाली भट्टियों में अपशिष्ट का नियंत्रित दहन है, जिससे मात्रा कम हो जाती है, खतरनाक पदार्थों को बेअसर किया जाता है और ऊर्जा प्राप्त होती है।

प्रक्रिया:

- दहन: विषाक्त पदार्थों के पूर्ण विनाश के लिए अपशिष्ट को 850°C से अधिक तापमान पर जलाया जाता है।
- ऊर्जा पुनर्प्राप्ति: दहन से निकलने वाली गर्मी भाप उत्पन्न करती है, जो बिजली उत्पादन के लिए टर्बाइनों को शक्ति प्रदान करती है।
- निकास गैस सफाई: स्क्रबर और बैग हाउस फ़िल्टर जैसी उन्नत प्रणालियाँ उत्सर्जन से हानिकारक प्रदूषकों को हटाती हैं।
- राख अवशेषों से निपटना: नीचे की राख को पुनर्चक्रित किया जाता है या लैंडफिल किया जाता है, जबकि प्लाई ऐश को निपटान से पहले रसायनों से उपचारित किया जाता है।

लाभ:

- ऊर्जा उत्पादन: अपशिष्ट दहन से बिजली और गर्मी पैदा होती है।
- जगह की बचत: घनी आबादी वाले क्षेत्रों में लैंडफिल पर निर्भरता कम होती है।
- प्रदूषण नियंत्रण: आधुनिक प्रणालियाँ उत्सर्जन को कैप्चर करके न्यूनतम पर्यावरणीय प्रभाव सुनिश्चित करती हैं।
- संसाधन पुनर्प्राप्ति: फ़र्श ईटों और सक्रिय कार्बन जैसी सामग्री का उत्पादन करती है।
- सुरक्षित निपटान: खतरनाक सामग्रियों को प्रभावी ढंग से बेअसर करता है।

सीमाएँ:

- हानिकारक उत्सर्जन: यदि उचित रूप से रखरखाव न किया जाए तो डाइऑक्साइड, फ़्यूरोन और अन्य विषाक्त पदार्थ निकलते हैं।
- स्वास्थ्य जोखिम: खराब तरीके से प्रबंधित संयंत्रों के पास श्वसन संबंधी समस्याओं और कार्सिनोजेनिक प्रभावों से जुड़ा हुआ है।
- वायु और जल प्रदूषण: अपशिष्ट राख और प्लू गैसों से पर्यावरण को दूषित कर सकती हैं।
- उच्च लागत: उन्नत भस्मक के लिए महत्वपूर्ण निवेश और रखरखाव की आवश्यकता होती है।
- नमी के साथ अकुशलता: भारत में गीला अपशिष्ट कैलोरी दक्षता को कम करता है।

नाइट्रेट संदूषण**संदर्भ:**

भूजल में अत्यधिक नाइट्रेट संदूषण एक गंभीर स्वास्थ्य खतरा पैदा करता है, विशेष रूप से भारत में, जहाँ 2023 तक 440 से अधिक जिलों में असुरक्षित नाइट्रेट स्तर की रिपोर्ट की गई है।

नाइट्रेट के बारे में:

- यह क्या है: जैविक प्रक्रियाओं के लिए आवश्यक एक प्राकृतिक रूप से पाया जाने वाला नाइट्रोजन यौगिक, लेकिन अधिक मात्रा में हानिकारक।

स्रोत:

- प्राकृतिक स्रोत: मिट्टी के कार्बनिक पदार्थों का अपघटन।
- मानवजनित स्रोत: सिंथेटिक नाइट्रोजन उर्वरकों का अत्यधिक उपयोग, अनुचित सीवेज निपटान और पशुधन अपशिष्ट।

नाइट्रेट संदूषण के कारण:

- कृषि: भूजल में उर्वरकों का रिसाव।
- खराब अपशिष्ट प्रबंधन: मानव और पशु अपशिष्ट का अनुचित निपटान।
- औद्योगिक अपशिष्ट: अनुपचारित नाइट्रोजन युक्त अपशिष्ट जल का निर्वहन।

नाइट्रेट संदूषण के प्रभाव:**स्वास्थ्य संबंधी खतरे:**

- शिशुओं में मेथेमोग्लोबिनेमिया (ब्लू बेबी सिंड्रोम) का कारण बनता है।
- कैंसर, प्रजनन संबंधी समस्याओं और अंतःस्त्रावी विकारों से जुड़ा हुआ है।

पर्यावरण विषाक्तता:

- यूट्रोफिकेशन के माध्यम से जलीय पारिस्थितिकी तंत्र को बाधित करता है।
- मिट्टी के क्षरण और जल विषाक्तता में योगदान देता है।
- राज्यवार संदूषण: राजस्थान (49%), कर्नाटक (48%), तमिलनाडु (37%)।

साल्मोनेला प्रकोप**संदर्भ:**

सरे विश्वविद्यालय के एक अध्ययन ने मौसम की स्थिति और साल्मोनेला प्रकोप में वृद्धि के बीच संबंध को उजागर किया है, जो संक्रामक रोगों के प्रसार में जलवायु परिवर्तन की भूमिका पर जोर देता है।

**साल्मोनेला के बारे में:****साल्मोनेला क्या है?**

- साल्मोनेला एक प्रकार का बैक्टीरिया है जो खाद्य जनित बीमारियों का कारण बनता है, जिसे आमतौर पर साल्मोनेलोसिस कहा जाता है।
- प्रजाति: दो मुख्य प्रजातियाँ साल्मोनेला एंटरिका और साल्मोनेला बॉगोरी हैं।
- स्रोत: दूषित भोजन, विशेष रूप से कच्चा या अधपका पोल्ट्री, अंडे, मांस और डेयरी उत्पाद।

संक्रमण के कारण:

- दूषित भोजन का सेवन: कच्चे या अधपके पशु उत्पादों को खाना।
- खराब स्वच्छता: कच्चे भोजन या जानवरों को संभालने के बाद अपर्याप्त हाथ धोना।
- क्रॉस-संदूषण: कच्चे और पके हुए खाद्य पदार्थों के लिए एक ही बर्तन या सतह का उपयोग करना।
- पर्यावरणीय कारक: सरे विश्वविद्यालय के अध्ययन में उजागर किए गए गर्म और आर्द्र मौसम की स्थिति, साल्मोनेला के प्रसार को बढ़ा सकती है।

लक्षण:

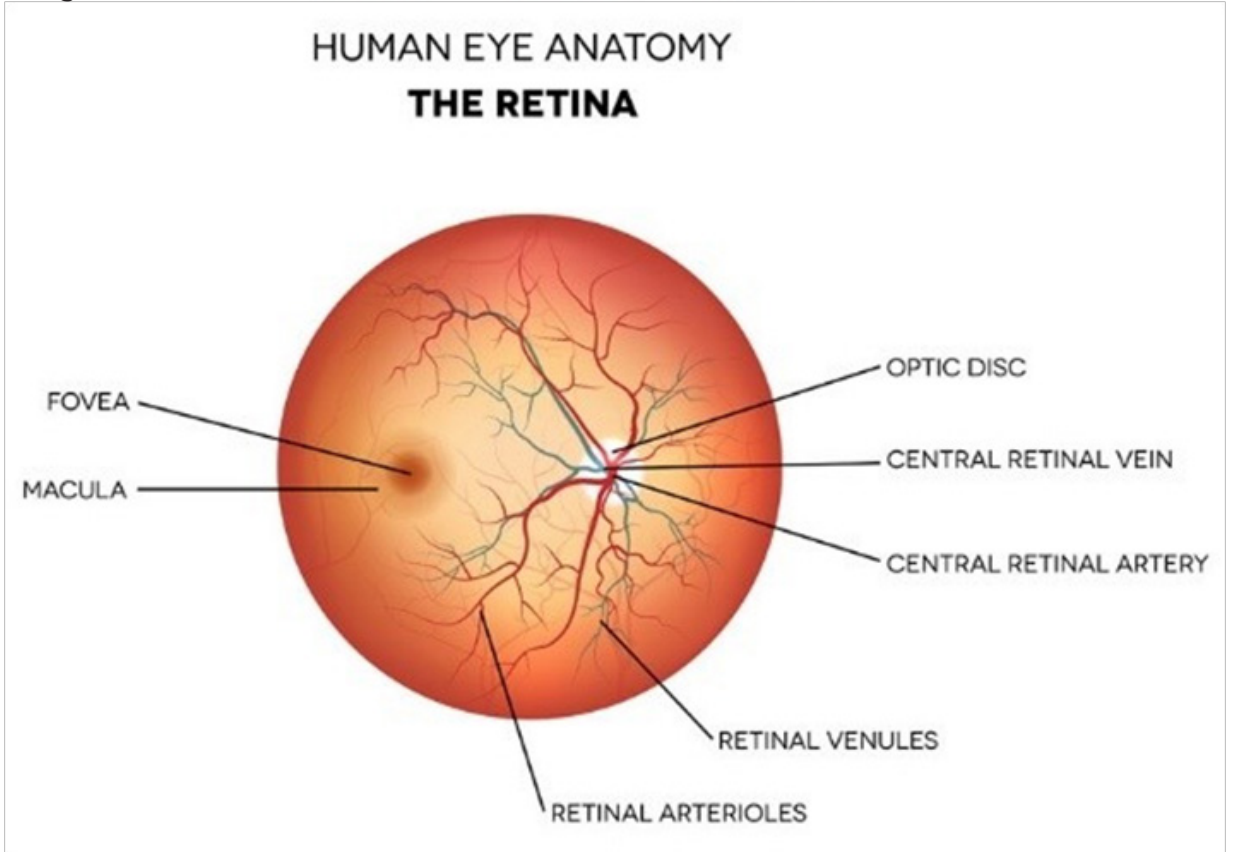
- सामान्य लक्षण: दस्त, बुखार, पेट में ऐंठन, मतली, उल्टी और सिरदर्द।
- गंभीर मामले: निर्जलीकरण, बैक्टीरिया (रक्तप्रवाह में बैक्टीरिया) और प्रतिक्रियाशील गठिया का कारण बन सकते हैं।

उपचार:

- हाइड्रेशन: निर्जलीकरण को रोकने के लिए बहुत सारे तरल पदार्थ पीना।
- एंटीबायोटिक्स: गंभीर मामलों में या उच्च जोखिम वाले व्यक्तियों (जैसे, शिशु, बुजुर्ग, या प्रतिरक्षाविहीन रोगी) के लिए उपयोग किया जाता है।

रेटिनल रोग**संदर्भ:**

रेटिना रोग, विशेष रूप से वंशानुगत रेटिनल रोग (IRD), RNA-आधारित चिकित्सा विज्ञान में प्रगति के कारण ध्यान आकर्षित कर रहे हैं जो अंधेपन के आनुवंशिक कारणों के उपचार की आशा प्रदान करते हैं।

**रेटिनल रोगों के बारे में:****रेटिनल रोग क्या हैं?**

- रेटिना संबंधी रोग ऐसे विकार हैं जो रेटिना को प्रभावित करते हैं, जो आंख के पीछे स्थित प्रकाश के प्रति संवेदनशील ऊतक है।
- ये रोग प्रगतिशील दृष्टि हानि और गंभीर मामलों में अंधापन का कारण बन सकते हैं। वे आनुवंशिक उत्परिवर्तन, उम्र बढ़ने या अन्य अंतर्निहित स्वास्थ्य स्थितियों के कारण हो सकते हैं।

दृष्टि में रेटिना की भूमिका:

- रेटिना प्रकाश को तंत्रिका संकेतों में परिवर्तित करने के लिए जिम्मेदार है, जो ऑप्टिक तंत्रिका के माध्यम से मस्तिष्क को भेजे जाते हैं।
- इसमें फोटोरिसेप्टर (रॉड और कोन) नामक विशेष कोशिकाएँ होती हैं जो प्रकाश और रंग का पता लगाती हैं, जिससे हम देख पाते हैं।
- रेटिना को नुकसान इस प्रक्रिया को बाधित करता है, जिससे दृष्टि हानि या अंधापन होता है।

रेटिना रोगों के प्रकार:

- वंशानुगत रेटिना रोग (IRD): 300 से अधिक जीनों में आनुवंशिक उत्परिवर्तन के कारण होता है। उदाहरण: रेटिनाइटिस पिगमेंटोसा, लेबर कॉन्जेनिटल एमोरोसिस, स्टारगार्ड रोग।
- आयु-संबंधित मैक्यूलर डिजनरेशन (AMD): रेटिना के मध्य भाग (मैक्युला) को प्रभावित करता है, जिससे केंद्रीय दृष्टि की हानि होती है।
- मधुमेह संबंधी रेटिनोपैथी: मधुमेह के कारण रेटिना में रक्त वाहिकाओं को नुकसान होने के कारण।
- रेटिनल डिटैचमेंट: तब होता है जब रेटिना अपनी सामान्य स्थिति से दूर हो जाता है।
- रेटिनोब्लास्टोमा: रेटिना का एक दुर्लभ कैंसर, जो मुख्य रूप से बच्चों को प्रभावित करता है।

RNA-आधारित चिकित्सा रेटिना रोगों को ठीक कर सकती है:**RNA थेरेपी क्या है?**

- आरएनए-आधारित चिकित्सा में आनुवंशिक दोषों को ठीक करने या जीन अभिव्यक्ति को संशोधित करने के लिए राइबोन्यूक्लिक एसिड (RNA) का उपयोग करना शामिल है। डीएनए-आधारित चिकित्सा के विपरीत, आरएनए चिकित्सा अस्थायी होती है और रोगी के जीनोम को नहीं बदलती है, जिससे दीर्घकालिक दुष्प्रभावों का जोखिम कम हो जाता है।

रेटिना रोगों के लिए आरएनए थेरेपी के प्रकार:**एंटीसेंस ऑलिगोन्यूक्लियोटाइड्स (ASO):**

- छोटे आरएनए अणु जो आनुवंशिक त्रुटियों को ठीक करने के लिए विशिष्ट आरएनए अनुक्रमों से जुड़ते हैं।
- स्पाइनल मस्कुलर एट्रोफी जैसी स्थितियों के इलाज के लिए उपयोग किया जाता है और स्टारगार्ड रोग और रेटिनाइटिस पिगमेंटोसा के लिए खोजा जा रहा है।

ADAR एंजाइमों के साथ RNA संपादन:

- डीएनए में बदलाव किए बिना आरएनए स्तर पर विशिष्ट उत्परिवर्तन को ठीक करता है।
- एकल-बिंदु उत्परिवर्तन के कारण होने वाले आईआरडी के इलाज के लिए आशाजनक।

सप्रेसर टीआरएनए:

- प्रोटीन संश्लेषण को समय से पहले रोकने वाले स्टॉप-कोडन उत्परिवर्तन को बायपास करें, रेटिना कोशिकाओं में पूर्ण लंबाई वाले प्रोटीन उत्पादन को बहाल करें।

छोटे अणु आरएनए थेरेपी (जैसे, PTC124/Ataluren):

- सिस्टिक फाइब्रोसिस और डचेन मस्कुलर डिस्ट्रॉफी के इलाज के लिए इस्तेमाल किया जाता है, अब इसका परीक्षण एनीरिडिया जैसी दुर्लभ नेत्र रोगों के लिए किया जा रहा है।

RNA थेरेपी के लाभ:

- सटीकता: विशिष्ट आनुवंशिक उत्परिवर्तन को लक्षित करता है।
- सुरक्षा: अस्थायी परिवर्तन अनपेक्षित प्रभावों के जोखिम को कम करते हैं।
- बहुमुखी प्रतिभा: आनुवंशिक दोषों की एक विस्तृत श्रृंखला को संबोधित कर सकता है।

परमाणु संलयन**संदर्भ:**

चीन के प्रायोगिक उन्नत सुपरकंडक्टिंग टोकामक (EAST) रिएक्टर ने 1,000 सेकंड (17 मिनट) से अधिक समय तक प्लाज्मा अवस्था को बनाए रखकर एक नया मील का पत्थर स्थापित किया।

परमाणु संलयन के बारे में:**परमाणु संलयन क्या है?**

- नाभिकीय संलयन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें दो हल्के परमाणु नाभिक मिलकर एक भारी नाभिक बनाते हैं, जिससे अपार ऊर्जा निकलती है - वही प्रक्रिया जो सूर्य और अन्य तारों को शक्ति प्रदान करती है।

यह कैसे काम करता है?

- उच्च तापमान और प्लाज्मा निर्माण: संलयन के लिए 100 मिलियन डिग्री सेल्सियस से अधिक तापमान की आवश्यकता होती है, जिससे प्लाज्मा अवस्था बनती है, जहाँ परमाणु आवेशित कणों में विभाजित हो जाते हैं।
- चुंबकीय परियोध: रिएक्टर की दीवारों के संपर्क को रोकने के लिए प्लाज्मा को मजबूत चुंबकीय क्षेत्रों का उपयोग करके परियोधित किया जाता है।

- संलयन अभिक्रिया: हाइड्रोजन समस्थानिक (ड्यूटेरियम और ट्रिटियम) संलयित होते हैं, जिससे हीलियम और ऊष्मा के रूप में ऊर्जा उत्पन्न होती है।
- ऊर्जा संग्रहण एवं रूपांतरण: भविष्य के रिएक्टरों का लक्ष्य इस ऊष्मा का उपयोग भाप उत्पन्न करने के लिए करना है, जिससे टर्बाइनों को चलाकर बिजली का उत्पादन किया जा सके।

दुनिया भर में प्रमुख परमाणु संलयन प्रयोग:

चीन का ईस्ट रिएक्टर (प्रायोगिक उन्नत सुपरकंडक्टिंग टोकामक):

- उपलब्धि: 1,000+ सेकंड के लिए निरंतर प्लाज्मा, 2023 के 400+ सेकंड के अपने रिकॉर्ड को पार कर गया।
- महत्व: पूर्ण पैमाने पर संलयन बिजली संयंत्र के निर्माण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम।
- स्थान: प्लाज्मा भौतिकी संस्थान, अन्हुई प्रांत, चीन।
- ITER (अंतर्राष्ट्रीय थर्मोन्यूक्लियर प्रायोगिक रिएक्टर, फ्रांस):

ITER क्या है?

- दुनिया का सबसे बड़ा संलयन प्रयोग, जिसमें भारत, अमेरिका, चीन और यूरोपीय संघ सहित 35 देश शामिल हैं।
- स्थान: दक्षिणी फ्रांस।

मुख्य विशेषताएँ:

- 2039 तक 500 मेगावाट फ्यूजन बिजली उत्पादन की योजना बनाई गई है।
- सूर्य जैसी परिस्थितियों को दोहराने के लिए ड्यूटेरियम-ट्रिटियम ईंधन का उपयोग किया जाता है।
- वाणिज्यिक फ्यूजन बिजली संयंत्रों के लिए मार्ग प्रशस्त करता है।

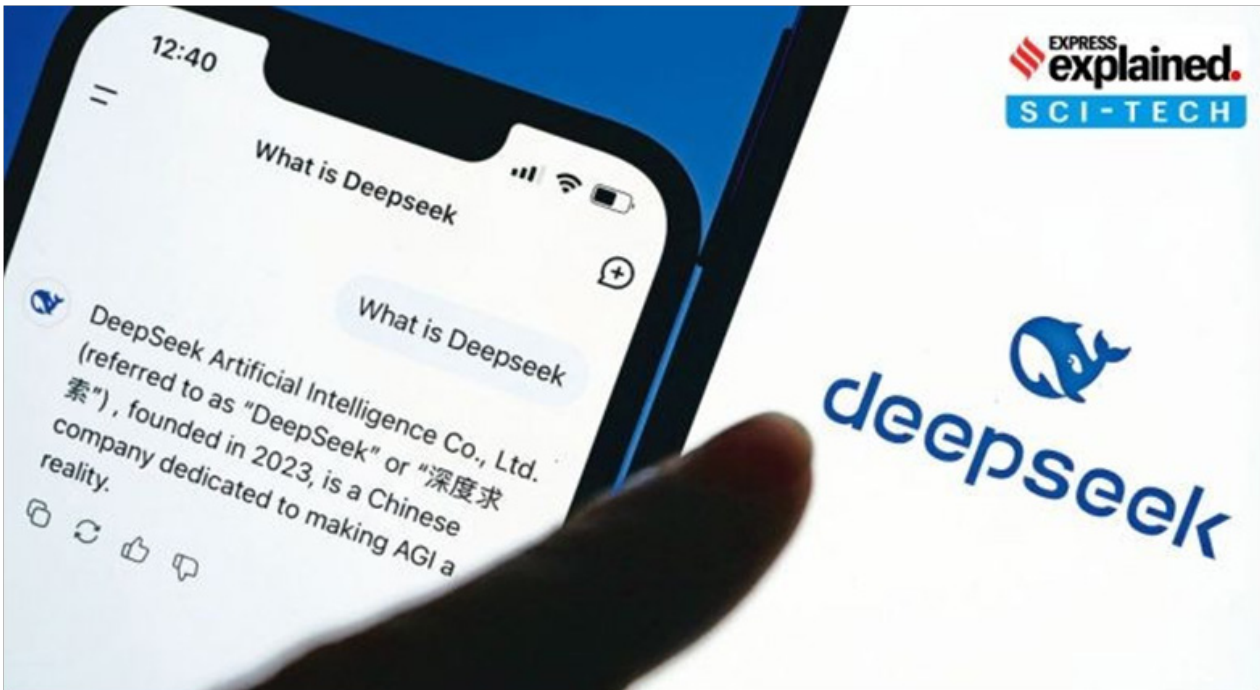
परमाणु संलयन और परमाणु विखंडन के बीच अंतर:

पहलू	परमाणु संलयन	परमाणु विखंडन
प्रक्रिया	परमाणु नाभिकों को जोड़ता है	भारी परमाणु नाभिक को विभाजित करता है
प्रयुक्त ईंधन	हाइड्रोजन समस्थानिक (ड्यूटेरियम और ट्रिटियम)	यूरेनियम-235 या प्लूटोनियम-239
ऊर्जा उत्पादन	अत्यधिक उच्च (1 ग्राम ईंधन = 8 टन कोयला)	उच्च लेकिन संलयन से कम
परमाणु अपशिष्ट	न्यूनतम, कोई दीर्घकालिक रेडियोधर्मी अपशिष्ट नहीं	खतरनाक रेडियोधर्मी अपशिष्ट उत्पन्न करता है
सुरक्षा	पिघलने का कोई जोखिम नहीं, स्व-विनियमन प्रक्रिया	रिएक्टर पिघलने का जोखिम (जैसे, चेर्नोबिल, फुकुशिमा)

एआई क्रांति

संदर्भ:

डीपसीक, एक चीनी एआई स्टार्टअप, ने अपने कम लागत वाले, उच्च दक्षता वाले एआई मॉडल, डीपसीक-वी3 और डीपसीक-आर1 के साथ अमेरिकी एआई प्रभुत्व को चुनौती देकर वैश्विक ध्यान आकर्षित किया है।



AI काम करता है: बुनियादी बातें

1. डेटा प्रोसेसिंग और लर्निंग: AI मॉडल मानव संज्ञान की नकल करते हुए पैटर्न और रिश्तों का पता लगाने के लिए बड़े डेटासेट को प्रोसेस करते हैं।
उदाहरण के लिए, Google सर्च में AI परिणामों को बेहतर बनाने के लिए उपयोगकर्ता के व्यवहार का विश्लेषण करता है।
1. न्यूरल नेटवर्क और डीप लर्निंग: AI जटिल पैटर्न सीखने के लिए मल्टी-लेयर्ड न्यूरल नेटवर्क का उपयोग करता है, जो समय के साथ बेहतर होता जाता है।
उदाहरण के लिए, ChatGPT मानव जैसी प्रतिक्रियाएँ उत्पन्न करने के लिए विशाल इंटरनेट टेक्स्ट से सीखता है।
1. मशीन लर्निंग एल्गोरिदम: AI मॉडल सटीकता बढ़ाने के लिए पर्यवेक्षित, अप्रशिक्षित और सुदृढीकरण सीखने पर निर्भर करते हैं।
उदाहरण के लिए, टेस्ला का ऑटोपायलट ML का उपयोग करके ड्राइविंग निर्णयों को परिष्कृत करता है।
1. प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण (NLP): AI मानव भाषा को समझता है और उसे प्रोसेस करता है, जिससे चैटबॉट और अनुवाद उपकरण सक्षम होते हैं।
उदाहरण के लिए, OpenAI का ChatGPT और DeepSeek-V3 वास्तविक समय में भाषा अनुवाद को बेहतर बनाता है।
1. एज कंप्यूटिंग और AI ऑप्टिमाइज़ेशन: AI तेज़ प्रोसेसिंग के लिए एज कंप्यूटिंग की ओर बढ़ रहा है, जिससे क्लाउड पर निर्भरता कम हो रही है।
उदाहरण के लिए, Apple का Siri iPhone पर स्थानीय रूप से कुछ वॉयस कमांड प्रोसेस करता है।

AI मॉडल के कुछ प्रकार:

1. लार्ज लैंग्वेज मॉडल (LLM): DeepSeek-V3, GPT-4o और Claude 3.5 जैसे AI मॉडल टेक्स्ट जनरेशन, प्रश्नों का उत्तर देने और कार्यों को स्वचालित करने में उत्कृष्ट हैं।
2. जनरेटिव AI: AI मॉडल इमेज, वीडियो और टेक्स्ट बनाते हैं, जिससे कंटेंट निर्माण में क्रांति आती है।
उदाहरण के लिए, MidJourney यथार्थवादी AI-जनरेटेड आर्टवर्क बनाता है।
1. स्वायत्त सिस्टम: AI ऑटोमेशन के लिए सेल्फ-ड्राइविंग कार, ड्रोन और रोबोट को शक्ति प्रदान करता है।
उदाहरण के लिए, Tesla का फुल सेल्फ-ड्राइविंग (FSD) वाहन की स्वायत्तता में सुधार करता है।

AI प्रमुख क्षेत्रों में क्रांति ला रहा है:**कृषि**

- सटीक खेती: AI-संचालित ड्रोन और सेंसर सिंचाई को अनुकूलित करते हैं, जिससे पानी की बर्बादी कम होती है।
उदाहरण के लिए, IBM का वाटसन उपग्रह डेटा का उपयोग करके फसल रोगों की भविष्यवाणी करता है।
- स्वचालित कटाई: AI-संचालित रोबोटिक भुजाएँ फल और सब्जियाँ चुनती हैं, जिससे दक्षता में सुधार होता है।
उदाहरण के लिए, जॉन डीरे के AI-संचालित ट्रैक्टर फ़िल्ड ऑपरेशन को अनुकूलित करते हैं।

स्वास्थ्य सेवा और शिक्षा

- AI डायग्नोस्टिक्स: AI कैंसर और COVID-19 जैसी बीमारियों का मनुष्यों की तुलना में अधिक सटीकता से पता लगाता है।
उदाहरण के लिए, Google का DeepMind 94% सटीकता के साथ नेत्र रोगों का निदान करता है।
- स्मार्ट शिक्षा: AI छात्रों के लिए सीखने के अनुभवों को वैयक्तिकृत करता है।
उदाहरण के लिए, Byju's AI-आधारित शिक्षण छात्रों की ज़रूरतों के अनुकूल होता है।

रक्षा और सुरक्षा

- AI-संचालित युद्ध: AI स्वायत्त ड्रोन, साइबर युद्ध और युद्धक्षेत्र रणनीति को बढ़ाता है।
उदाहरण के लिए, रूस यूक्रेन में AI-संचालित सैन्य ड्रोन का उपयोग करता है।
- खतरों का पता लगाना और निगरानी: AI वास्तविक समय में संभावित खतरों की पहचान करता है।
उदाहरण के लिए, भारत की AI-संचालित सीमा निगरानी राष्ट्रीय सुरक्षा में सुधार करती है।

अर्थव्यवस्था और वित्त

- शेयर बाजार की भविष्यवाणियाँ: AI उच्च आवृत्ति व्यापार के लिए वित्तीय रुझानों का विश्लेषण करता है।
उदाहरण के लिए, गोल्डमैन सैक्स जोखिम मूल्यांकन के लिए AI का उपयोग करता है।
- धोखाधड़ी का पता लगाना: AI बैंकिंग में विसंगतियों की पहचान करके लेनदेन को सुरक्षित करता है।
उदाहरण के लिए, मास्टरकार्ड का AI वास्तविक समय में क्रेडिट कार्ड धोखाधड़ी को रोकता है।

शासन और सार्वजनिक सेवाएँ

- स्मार्ट शहर: AI शहरी क्षेत्रों में यातायात, अपशिष्ट और ऊर्जा खपत का प्रबंधन करता है।
उदाहरण के लिए, सिंगापुर की AI-संचालित स्मार्ट ट्रैफ़िक प्रणाली भीड़भाड़ को कम करती है।
- नीति निर्माण में AI: AI डेटा-संचालित नीतियों को तैयार करने में सरकारों की सहायता करता है।
उदाहरण के लिए, एस्टोनिया की AI प्रणाली नीति निर्माण के लिए कानूनी दस्तावेज़ों का मसौदा तैयार करती है।

AI क्रांति के कारण चुनौतियाँ:

1. नौकरी विस्थापन: AI विनिर्माण, वित्त और ग्राहक सेवा में पारंपरिक रोजगार को खतरे में डालता है।
2. नैतिक एवं पूर्वाग्रह संबंधी मुद्दे: एआई मॉडल प्रशिक्षण डेटा से पूर्वाग्रह ग्रहण करते हैं, जिसके कारण भेदभाव होता है।
3. डेटा गोपनीयता और साइबर सुरक्षा जोखिम: एआई-संचालित डीपफेक और हैकिंग सुरक्षा संबंधी चिंताएं बढ़ाते हैं।
4. भू-राजनीतिक AI शस्त्र दौड़: देश AI वर्तस्व के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं, जिससे तकनीकी शीत युद्ध होता है।
5. विनियामक और कानूनी चुनौतियाँ: AI कानून तेज़ी से हो रही प्रगति के साथ तालमेल बिठाने में संघर्ष करते हैं।

AI विकास में भारत की स्थिति:

1. AI अनुसंधान और विकास: भारत में IIT, IISc और NITI Aayog के नेतृत्व वाले AI कार्यक्रमों में AI हब हैं। उदाहरण के लिए, भाषिणी परियोजना AI-संचालित भारतीय भाषा अनुवाद को बढ़ावा देती है।
1. स्टार्टअप इकोसिस्टम: भारत में 4,500 से ज़्यादा AI स्टार्टअप हैं, जो स्वास्थ्य सेवा, फिनटेक और शासन में नवाचार को बढ़ावा देते हैं। उदाहरण के लिए, टेलीकॉम में रिलायंस जियो की AI पहल।
1. सरकारी AI नीति: भारत का AI मिशन शासन में डेटा सुरक्षा और AI अपनाने पर केंद्रित है। उदाहरण के लिए, ग्रामीण विकास के लिए AI-संचालित ग्राम पंचायतों।
1. रक्षा और साइबर सुरक्षा में एआई: भारत एआई-संचालित निगरानी, यूएवी और साइबर रक्षा में निवेश करता है। उदाहरण के लिए, डीआरडीओ सीमा सुरक्षा के लिए एआई-संचालित ड्रोन विकसित कर रहा है।
1. वैश्विक एआई नेताओं के साथ सहयोग: भारत एआई उन्नति के लिए Google, Microsoft और NVIDIA के साथ साझेदारी करता है। उदाहरण के लिए, क्वांटम कंप्यूटिंग के लिए भारत-अमेरिका एआई साझेदारी।

आगे की राह:

1. एआई विनियमन को मजबूत करना: गोपनीयता, सुरक्षा और पूर्वाग्रह शमन के लिए नैतिक एआई रूपरेखा विकसित करना।
2. एआई कौशल विकास: नई अर्थव्यवस्था में एआई-संचालित नौकरियों के अनुकूल होने के लिए कार्यबल को अपस्किल करना।
3. एआई इन्फ्रास्ट्रक्चर को बढ़ावा देना: एआई स्टार्टअप के लिए क्लाउड कंप्यूटिंग और जीपीयू एक्सेस को बढ़ाना।
4. सार्वजनिक-निजी एआई सहयोग: शिक्षा और उद्योग के बीच संयुक्त एआई अनुसंधान को प्रोत्साहित करना।
5. सामाजिक प्रभाव के लिए एआई: गरीबी में कमी, स्वास्थ्य सेवा तक पहुंच और ग्रामीण विकास के लिए एआई का उपयोग करें।

निष्कर्ष:

डीपसीक की सफलता बड़ी तकनीक के एआई एकाधिकार को चुनौती देती है और एआई दौड़ में भू-राजनीतिक तनाव बढ़ाती है। जबकि एआई उद्योगों में क्रांति ला रहा है, इसकी नैतिक, कानूनी और सुरक्षा चुनौतियों के लिए तत्काल नीतिगत हस्तक्षेप की आवश्यकता है। भारत के लिए, आर्थिक विकास और वैश्विक नेतृत्व के लिए एआई का लाभ उठाना भविष्य के तकनीकी प्रभुत्व की कुंजी है।

WASP-127b**संदर्भ:**

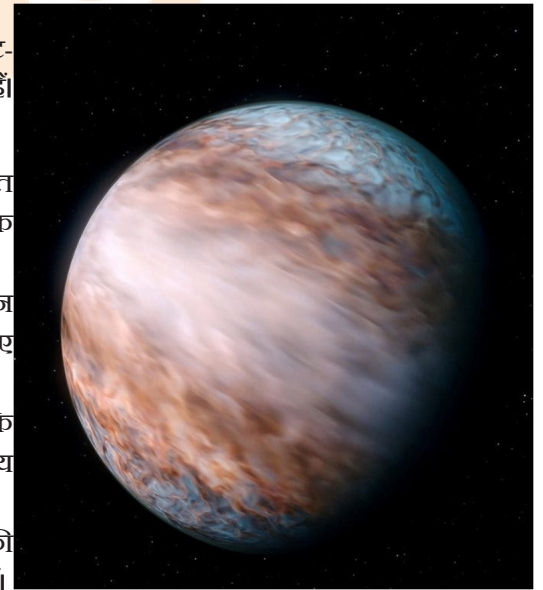
खगोलविदों ने एक्सोप्लैनेट WASP-127b पर 33,000 किमी/घंटा तक पहुँचने वाली जेट-स्ट्रीम हवाओं को देखा है, जो उन्हें अब तक दर्ज की गई सबसे तेज़ ग्रहीय हवाएँ बनाती हैं।

WASP-127b के बारे में:

- एक्सोप्लैनेट का प्रकार: WASP-127b को एक गर्म बृहस्पति के रूप में वर्गीकृत किया गया है, जो अपने मेजबान तारे के बेहद करीब परिक्रमा करने वाला एक गैस विशालकाय ग्रह है।
- आकार और द्रव्यमान: यह बृहस्पति से 30% बड़ा है, लेकिन इसका द्रव्यमान बृहस्पति के द्रव्यमान का केवल 16% है, जो इसे अब तक देखे गए सबसे फूले हुए ग्रहों में से एक बनाता है।
- वायुमंडल और संरचना: मुख्य रूप से हाइड्रोजन और हीलियम से बना, इसके वायुमंडल में कार्बन मोनोऑक्साइड और पानी भी हैं, जो इसे वायुमंडलीय अध्ययन के लिए एक मूल्यवान विषय बनाता है।
- सुपरसोनिक हवाएँ: ग्रह पर भूमध्यरेखीय जेट-स्ट्रीम हवाएँ 33,000 किमी/घंटा की रफ़्तार से चलती हैं, जो किसी भी ग्रह पर अब तक देखी गई सबसे तेज़ हवाएँ हैं।
- ज्वारीय लॉकिंग: चंद्रमा-पृथ्वी प्रणाली की तरह, एक पक्ष हमेशा अपने तारे का सामना करता है, जिससे दिन-रात के तापमान में अत्यधिक अंतर पैदा होता है।

महत्व:

- वायुमंडलीय गतिशीलता: WASP-127b का अध्ययन एक्सोप्लैनेट वायु परिसंचरण और चरम मौसम की स्थिति को समझने में मदद करता है।

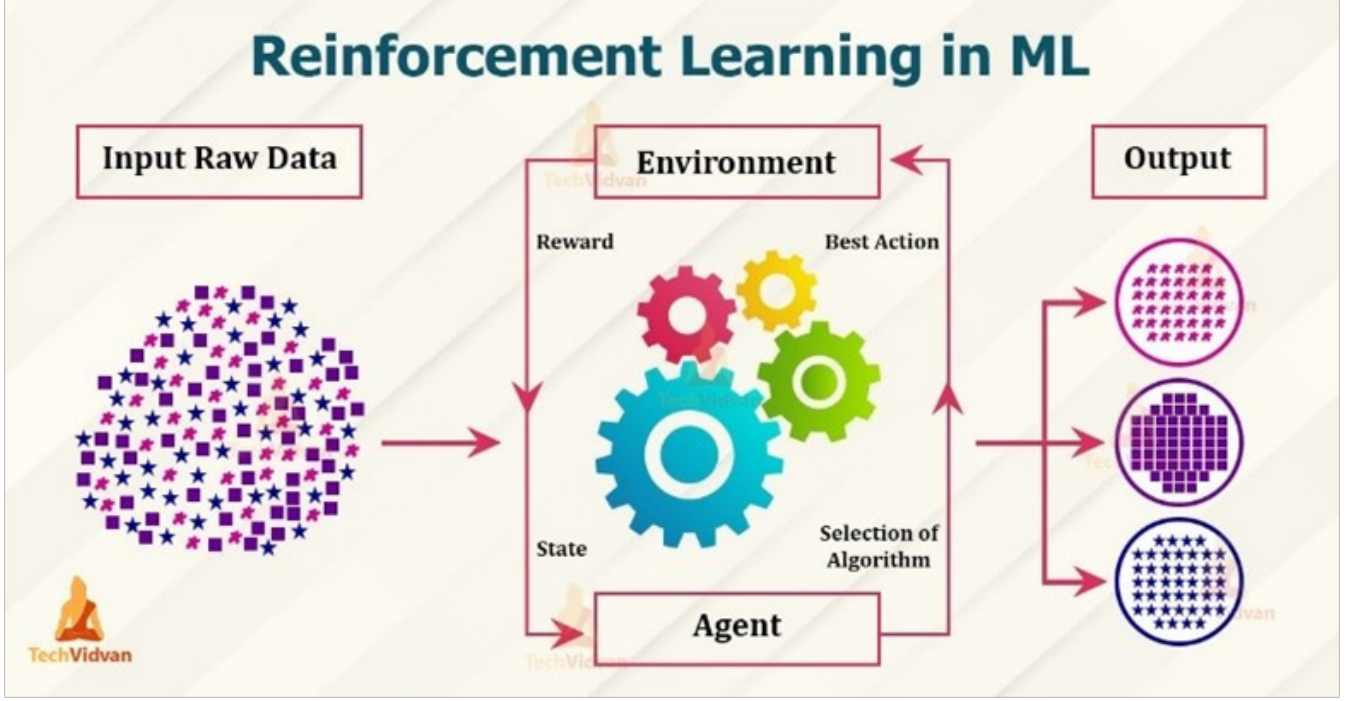


- एक्सोप्लैनेट वर्गीकरण: यह गर्म बृहस्पति के गठन और संरचना के बारे में जानकारी प्रदान करता है।
- भविष्य के अंतरिक्ष अन्वेषण: ऐसी वायुमंडलीय स्थितियों को समझना दूर के सौर प्रणालियों में ग्रहों की जलवायु को मॉडलिंग करने में सहायता करता है।

सुदृढीकरण सीखने का मॉडल

संदर्भ:

डीपसीक, एक चीनी एआई स्टार्ट-अप, ने अपने अभिनव सुदृढीकरण सीखने के मॉडल, आर। के लिए वैश्विक ध्यान आकर्षित किया है, जो ओपनएआई जैसी अमेरिकी कंपनियों के समान मॉडल की लागत के एक अंश पर उन्नत तर्क क्षमताओं को प्रदर्शित करता है।



एआई में सुदृढीकरण सीखने के मॉडल के बारे में:

- यह क्या है: सुदृढीकरण सीखना (आरएल) एक प्रकार की मशीन लर्निंग है जहाँ एक एआई मॉडल पर्यावरण के साथ बातचीत करके और पुरस्कार या दंड के रूप में प्रतिक्रिया प्राप्त करके निर्णय लेना सीखता है। लक्ष्य समय के साथ संचयी पुरस्कारों को अधिकतम करना है।

यह कैसे काम करता है:

- एआई मॉडल, या "एजेंट," एक वातावरण में कार्रवाई करता है।
- इन क्रियाओं के आधार पर, यह प्रतिक्रिया (पुरस्कार या दंड) प्राप्त करता है।
- मॉडल समय के साथ अपने निर्णय लेने में सुधार करते हुए पुरस्कारों को अधिकतम करने के लिए अपनी रणनीति को समायोजित करता है।
- डीपसीक का R1 मॉडल "मानव प्रतिक्रिया से सुदृढीकरण सीखने" (RLHF) प्रक्रिया को स्वचालित करने के लिए RL का उपयोग करता है, जिससे व्यापक मानवीय हस्तक्षेप की आवश्यकता कम हो जाती है।

यह मौजूदा AI मॉडल से कैसे बेहतर है:

- लागत-प्रभावशीलता: डीपसीक का R1 मॉडल OpenAI के o1 जैसे मॉडल की तुलना में काफी कम लागत पर उन्नत तर्क क्षमता प्राप्त करता है।
- स्वायत्तता: RLHF प्रक्रिया को स्वचालित करके, डीपसीक मानव एनोटेटर पर निर्भरता को कम करता है, जिससे प्रशिक्षण प्रक्रिया तेज़ और अधिक स्केलेबल हो जाती है।
- दक्षता: मॉडल समस्याओं के प्रति अपने दृष्टिकोण पर "पुनर्विचार" कर सकता है, जिससे अधिक सटीक और अनुकूली प्रतिक्रियाएँ मिलती हैं।
- मापनीयता: डीपसीक की तकनीकें छोटे, कुशल मॉडल बनाने की अनुमति देती हैं जो स्मार्टफोन जैसे उपकरणों पर चल सकते हैं, जिससे AI अधिक सुलभ हो जाता है।

पैराक्वाट विषाक्तता

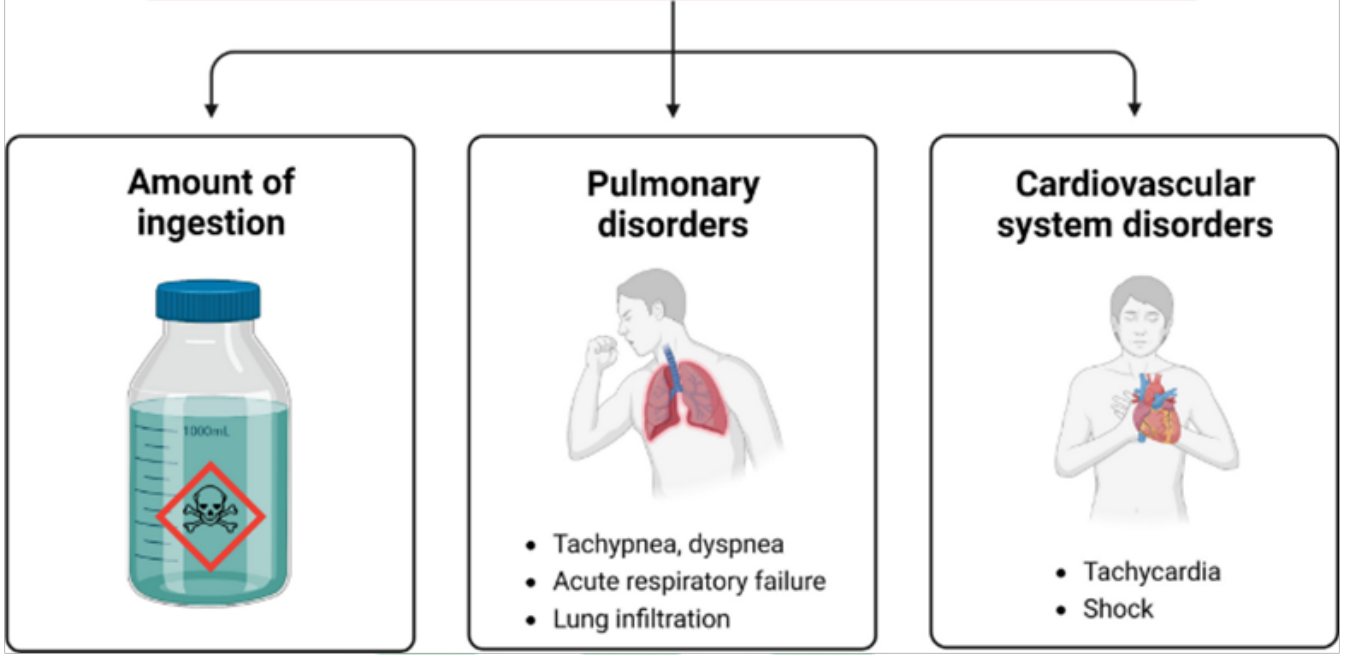
संदर्भ:

पैराक्वाट विषाक्तता ने हाल ही में केरल में एक हाई-प्रोफाइल हत्या मामले के बाद ध्यान आकर्षित किया, जहां इस रसायन का इस्तेमाल अपराध करने के लिए किया गया था।

- पैराक्वाट, एक व्यापक रूप से प्रयुक्त शाकनाशी है, जो अत्यधिक विषैला है तथा अपनी घातक प्रकृति के कारण 70 से अधिक देशों में प्रतिबंधित है।

Predicting Mortality in Paraquat Poisoning

A cross-sectional retrospective review over a 5-year period (n=148)



पैराक्वाट विषाक्तता के बारे में:

पैराक्वाट विषाक्तता क्या है?

- पैराक्वाट विषाक्तता तब होती है जब विषैला रसायन पैराक्वाट, जिसे आमतौर पर शाकनाशी के रूप में इस्तेमाल किया जाता है, मानव शरीर में प्रवेश करता है। यह कम मात्रा में भी बेहद घातक है और WHO द्वारा इसे श्रेणी 2 (मध्यम रूप से खतरनाक) रसायन के रूप में वर्गीकृत किया गया है।

पैराक्वाट विषाक्तता कैसे होती है?

- निगलना: पैराक्वाट को गलती से या जानबूझकर निगलना सबसे आम तरीका है।
- त्वचा का संपर्क: तरल पैराक्वाट के लंबे समय तक संपर्क में रहने से अवशोषण और विषाक्तता हो सकती है।
- साँस लेना: पैराक्वाट के धुं को साँस लेने से श्वसन क्षति हो सकती है।

पैराक्वाट विषाक्तता के लक्षण:

- प्रारंभिक लक्षण: पेट में दर्द, सूजन, मुँह और गले में जलन, मतली और खूनी दस्ता।
- गंभीर लक्षण: तीव्र किडनी विफलता, यकृत क्षति, तेज़ हृदय गति, दौरे और श्वसन विफलता। लक्षण निगली गई मात्रा या एक्सपोज़र अवधि के आधार पर खराब हो सकते हैं।

पैराक्वाट विषाक्तता के लिए उपचार:

- तत्काल कार्रवाई: अवशोषण को कम करने के लिए सक्रिय चारकोल या फुलर की पृथ्वी (मुलतानी मिट्टी) दी जा सकती है।
- चिकित्सा उपचार: अस्पताल में देखभाल आवश्यक है, जिसमें इन्सुलिनोसप्रेशन या चारकोल हेमोपरय्यूजन जैसे विकल्प शामिल हैं, हालाँकि कोई मारक मौजूद नहीं है।
- सुरक्षा उपाय: दूषित कपड़ों को हटा दिया जाना चाहिए, और खुली त्वचा को साबुन और पानी से अच्छी तरह से धोना चाहिए।

ग्रह परेड

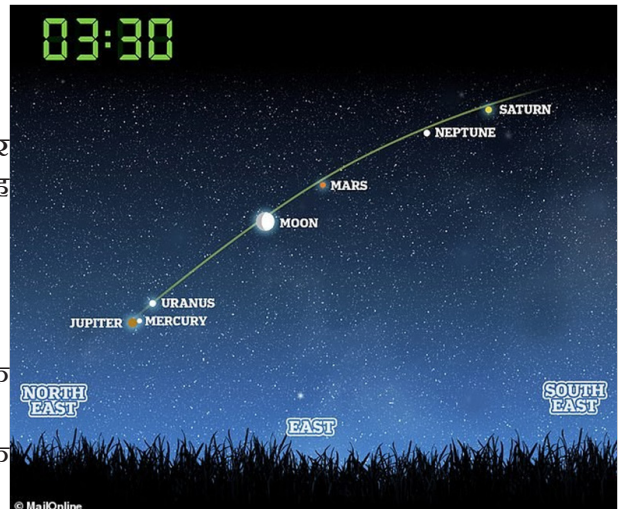
संदर्भ:

जनवरी 2025 में, शुक्र, शनि, बृहस्पति और मंगल रात के आकाश में शानदार ढंग से संरेखित हुए हैं, जिससे एक दुर्लभ खगोलीय घटना हुई है जिसे "ग्रह परेड" के रूप में जाना जाता है।

ग्रह परेड के बारे में:

ग्रह परेड क्या है?

- ग्रह परेड तब होती है जब सौर मंडल के कई ग्रह रात के आकाश में एक साथ दिखाई देते हैं।
- यह कोई आधिकारिक खगोलीय शब्द नहीं है, लेकिन सौर मंडल के समतल पर ग्रहों के संरेखण का वर्णन करता है।



- ये संरेखण सुबह या शाम के आकाश में हो सकते हैं।

ग्रह परेड कैसे होती है?

- ग्रह लगभग एक ही समतल पर सूर्य की परिक्रमा करते हैं, जिसे क्रांतिवृत्त तल के रूप में जाना जाता है, जिससे वे आकाश में संरेखित दिखाई देते हैं।
- उनकी अलग-अलग कक्षीय गति और दूरी के कारण, यह संरेखण अस्थायी है और केवल विशिष्ट अवधि के लिए दिखाई देता है।
- वर्तमान संरेखण में शुक्र, शनि, बृहस्पति, मंगल, यूरेनस और नेपच्यून शामिल हैं, जो आकाश में एक घुमावदार चाप बनाते हैं।

ग्रह परेड का महत्व:

- खगोलीय शिक्षा: खगोल विज्ञान और खगोलीय यांत्रिकी में सार्वजनिक रुचि को प्रोत्साहित करता है।
- सांस्कृतिक प्रासंगिकता: ऐतिहासिक रूप से इसे आकाशीय शत्रु या लोककथाओं के लिए प्रेरणा के रूप में व्याख्यायित किया जाता है।
- ग्रहों की दृश्यता: यूरेनस और नेपच्यून जैसे दूर के ग्रहों सहित कई ग्रहों को देखने का एक अनूठा अवसर प्रदान करता है।
- वैज्ञानिक अन्वेषण: संरेखण शोधकर्ताओं को ग्रहों के प्रकाश उत्सर्जन और प्रक्षेप पथ का अध्ययन करने के बेहतर अवसर प्रदान करते हैं।
- सार्वजनिक जुड़ाव: जिज्ञासा जगाता है, खगोलविद इसे अंतरिक्ष विज्ञान को बढ़ावा देने के लिए एक आउटरीच टूल के रूप में उपयोग करते हैं।

सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र

संदर्भ:

केंद्रीय मंत्रिमंडल ने हाल ही में आंध्र प्रदेश के श्रीहरिकोटा में सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र (एसडीएससी) में तीसरे लॉन्च पैड की स्थापना को मंजूरी दी है।

सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र लॉन्च पैड के बारे में:

स्थापित:

- सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र (एसडीएससी) 9 अक्टूबर, 1971 को साउंडिंग रॉकेट 'रोहिणी-125' के प्रक्षेपण के साथ चालू हुआ।
- इसे शुरू में श्रीहरिकोटा रेंज (एसएचएआर) के नाम से जाना जाता था।

स्थित:

- श्रीहरिकोटा बंगाल की खाड़ी से दूर एक बैरियर द्वीप है, जो भारत के आंध्र प्रदेश के तिरुपति जिले में स्थित है।
- यह पुलिकट झील को बंगाल की खाड़ी से अलग करता है, जिससे रॉकेट प्रक्षेपण के लिए समुद्र के ऊपर एक सुरक्षित उड़ान मार्ग सुनिश्चित होता है।

स्थान चयन के कारण

- पूर्वी तट का लाभ: रॉकेट को पूर्व की ओर प्रक्षेपित करने से पृथ्वी के घूमने का लाभ मिलता है, जिससे रॉकेट में वेग बढ़ता है और पेलोड क्षमता बढ़ती है।
- भूमध्य रेखा से निकटता: भूस्थिर उपग्रहों को भूमध्यरेखीय तल की आवश्यकता होती है। भूमध्य रेखा के निकट होने के कारण श्रीहरिकोटा ऐसे प्रक्षेपणों के लिए आदर्श है।
- अधिकांशतः निर्जन क्षेत्र: यह स्थल विरल आबादी वाला था, जिससे प्रक्षेपणों के दौरान मानव बस्तियों के लिए जोखिम कम हो गया।
- तटीय स्थान: समुद्र से निकटता सुनिश्चित करती है कि रॉकेट मलबे का प्रभाव पानी के ऊपर हो, जिससे बाधाएँ कम हो जाती हैं।

नाम बदला गया:

- 2002 में, अग्रणी रॉकेट वैज्ञानिक और इसरो के पूर्व अध्यक्ष सतीश धवन के सम्मान में इस सुविधा का नाम बदलकर सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र (एसडीएससी) कर दिया गया।

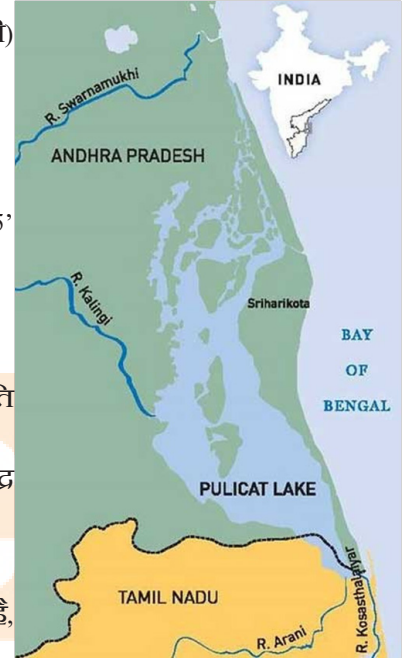
ऐतिहासिक महत्व:

- विक्रम साराभाई के नेतृत्व में, इस स्थान की पहचान 1968 में आबिद हुसैन के समर्थन और व्यापक सर्वेक्षणों के साथ की गई थी।
- इस स्थल की स्थापना के लिए अक्टूबर 1968 तक लगभग 40,000 एकड़ भूमि अधिग्रहित की गई थी।
- SDSC ने PSLV, GSLV, चंद्रयान और मंगलयान सहित प्रमुख मिशनों की मेजबानी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

स्पेस डॉकिंग एक्सपेरिमेंट (SpaDeX)

संदर्भ:

भारत ने 16 जनवरी, 2025 को ISRO के स्पेस डॉकिंग एक्सपेरिमेंट (SpaDeX) के सफल निष्पादन के साथ अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की।



On track

On December 30, ISRO's SpaDeX mission launched into orbit two satellites, SDX01 (Chaser) and SDX02 (Target). Two weeks on, the mission proved a success but it was not without a few hiccups. Here's a timeline of events:

Jan. 7

The space agency had initially scheduled the docking for this day but postponed it to Jan. 9

Jan. 8

ISRO observed a more-than-desired drift between the two satellites and postponed the docking again

Jan. 12

The satellites were moved within 3 metres of each other in a trial attempt and then returned to a safe distance

Jan. 16

Inter-satellite distance was reduced to 3 metres from 15 metres and both satellites were successfully docked

SIGNIFICANCE

Demonstration of this technology is vital for futuristic missions such as manned craft to the moon and building and operating an Indian space station

SDX01

SDX02

ISRO के स्पेस डॉकिंग एक्सपेरिमेंट (SpaDeX) के बारे में:

- यह क्या है: स्पेसडेक्स उपग्रह डॉकिंग तकनीक का प्रदर्शन करने के लिए एक मिशन है, जो अंतरिक्ष स्टेशन संचालन, अंतरग्रहीय मिशन और उपग्रह सर्विसिंग जैसे उन्नत अंतरिक्ष मिशनों के लिए एक महत्वपूर्ण क्षमता है।
- मिशन के तहत: यह प्रयोग अगली पीढ़ी की अंतरिक्ष प्रौद्योगिकियों को विकसित करने के लिए इसरो की व्यापक रणनीति का हिस्सा था और इसे PSLV C60 मिशन के तहत लॉन्च किया गया था।

उद्देश्य:

- कक्षा में दो उपग्रहों की डॉकिंग और अनडॉकिंग का प्रदर्शन करना।
- डॉक किए गए उपग्रहों के बीच शक्ति और नियंत्रण का हस्तांतरण सक्षम करना।
- भविष्य के मानव अंतरिक्ष उड़ान मिशन, चंद्रमा लैंडिंग और अंतरिक्ष स्टेशन असेंबली का समर्थन करना।

विशेषताएं:

- शामिल उपग्रह: SDX01 (वेज़र) और SDX02 (लक्ष्य), प्रत्येक का वजन 220 किलोग्राम है।
- स्थिरता के लिए डॉकिंग के बाद कठोरता।
- परिचालन तत्परता सुनिश्चित करने के लिए डॉक किए गए उपग्रहों के बीच विद्युत शक्ति का हस्तांतरण।
- अपेक्षित मिशन जीवन: दो वर्ष।

यह कैसे किया जाता है:

- सटीक डॉकिंग के लिए उपग्रहों को 15 मीटर से 3 मीटर होल्ड पॉइंट तक ले जाया जाता है।
- सेंसर, संरचना प्रणाली और थ्रस्टर्स का उपयोग करके स्वचालित डॉकिंग।
- डॉकिंग के बाद के संचालन में पावर चेक और पेलोड सक्रियण शामिल हैं।

वे राष्ट्र जिन्होंने यह उपलब्धि हासिल की:

- संयुक्त राज्य अमेरिका: 1966 में जेमिनी कार्यक्रम में पहली बार हासिल किया।
- रूस: सोयुज मिशन के दौरान डॉकिंग का प्रदर्शन किया।
- चीन: तियांगोंग अंतरिक्ष स्टेशन के लिए मॉड्यूल को सफलतापूर्वक डॉक किया।
- भारत: 2025 में स्पेसडेक्स के साथ यह उपलब्धि हासिल करने वाला चौथा राष्ट्र।

अंतरिक्ष में लोबिया के बीजों का अंकुरण

संदर्भ:

हाल ही में, इसरो ने अपने कॉम्पैक्ट रिसर्च मॉड्यूल फॉर ऑर्बिटल प्लांट स्टडीज (CROPS) पर माइक्रोग्रैविटी में लोबिया (ब्लैक-आइड पी) के बीजों को सफलतापूर्वक अंकुरित करके एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की।



अंतरिक्ष में लोबिया के बीजों के अंकुरण के बारे में:

यह क्या है:

- इसरो के प्रयोग में माइक्रोग्रैविटी स्थितियों में पौधों की वृद्धि का अध्ययन करने के लिए CROPS मॉड्यूल पर लोबिया के बीजों को अंकुरित करना शामिल था।
- चौथे दिन बीज सफलतापूर्वक अंकुरित हो गए, पाँचवें दिन तक पत्तियाँ दिखाई देने लगीं, जो भारत के अंतरिक्ष अनुसंधान में एक मील का पत्थर साबित हुआ।
- मिशन का नाम: कॉम्पैक्ट रिसर्च मॉड्यूल फॉर ऑर्बिटल प्लांट स्टडीज (CROPS)।
- उपयोग किया गया बीज/पौधा: लोबिया (ब्लैक-आइड पी), एक पोषक तत्व-सघन पौधा जो अंतरिक्ष खेती प्रयोगों के लिए आदर्श है।

उद्देश्य:

- दीर्घकालिक अंतरिक्ष मिशनों के लिए स्थायी खाद्य स्रोत विकसित करना।
- सूक्ष्म गुरुत्वाकर्षण और नियंत्रित वायुमंडलीय स्थितियों सहित बाह्य अंतरिक्ष वातावरण की नकल करने वाली स्थितियों में पौधों की वृद्धि का परीक्षण करना।

सफलता का महत्व:

अंतरिक्ष मिशनों के लिए समर्थन:

- अंतरिक्ष यात्रियों को भोजन उगाने में सक्षम बनाता है, जिससे पहले से पैक की गई आपूर्ति पर निर्भरता कम होती है।
- अंतरिक्ष यान में ऑक्सीजन उत्पादन और CO2 पुनर्वक्रण में योगदान देता है।

तकनीकी उन्नति:

- अंतरिक्ष में जटिल जीवन-सहायक प्रणालियों का प्रबंधन करने की भारत की क्षमता को प्रदर्शित करता है।
- एकीकृत कृषि के साथ अंतरिक्ष आवासों को डिजाइन करने में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।
- मनोवैज्ञानिक लाभ: पौधों की देखभाल करने से तनाव से राहत मिलती है और अंतरिक्ष यात्रियों के मानसिक स्वास्थ्य में सुधार होता है।
- वैश्विक योगदान: अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (ISS) जैसी वैश्विक अंतरिक्ष खेती पहलों में भारत के सहयोग का मार्ग प्रशस्त करता है।

तीन जहाज कमीशन किए गए

संदर्भ:

भारत ने एक ऐतिहासिक मील का पत्थर मनाया जब तीन फ्रंटलाइन नौसैनिक प्लेटफॉर्म आईएनएस नीलगिरि, आईएनएस सूरत और आईएनएस वाघशीर को भारतीय नौसेना में कमीशन किया गया।



कमीशन किए गए जहाजों के बारे में:

जहाज का नाम	निर्माणकर्ता	परियोजना का नाम	विशेषताएँ	महत्व
आईएनएस नीलगिरि	मझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड (एमडीएल), मुंबई, और गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एंड इंजीनियर्स (जीआरएसई), कोलकाता	प्रोजेक्ट 17A (नीलगिरि श्रेणी के स्टील्थ फ्रिगेट)	<ul style="list-style-type: none"> - "ब्लू वॉटर" ऑपरेशन के लिए मल्टी-मिशन स्टील्थ फ्रिगेट - सुपरसोनिक सतह से सतह पर मार करने वाली मिसाइलों, मध्यम दूरी की सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइलों (MRSAMs) और उन्नत वलोज-इन हथियार प्रणालियों से लैस 	प्रोजेक्ट 17A के तहत सात फ्रिगेट में से पहला, जो एंटी-एयर, एंटी-सरफेस और एंटी-सबमरीन युद्ध में बहुमुखी क्षमता सुनिश्चित करता है
आईएनएस सूरत	मझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड (एमडीएल), मुंबई	प्रोजेक्ट 15B (विशाखापत्तनम श्रेणी के स्टील्थ गाइडेड मिसाइल विध्वंसक)	<ul style="list-style-type: none"> - भारत का पहला AI-सक्षम युद्धपोत - सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइलों, जहाज-रोधी मिसाइलों और टॉरपीडो से लैस - संयुक्त गैस और गैस (COGAG) प्रणोदन प्रणाली द्वारा संचालित, 30 नॉट से अधिक की गति प्राप्त करता है - "नेटवर्क-केंद्रित" युद्ध के लिए डिज़ाइन किया गया 	प्रोजेक्ट 15B का चौथा और अंतिम विध्वंसक, जो भारत की आक्रामक और रक्षात्मक नौसैनिक क्षमताओं को बढ़ाता है

आईएनएस वाघशीर	मझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड (एमडीएल), मुंबई	प्रोजेक्ट 75 (कलवरी श्रेणी की पनडुब्बियाँ)	- फ्रांसीसी स्कॉर्पिन-क्लास डिज़ाइन पर आधारित डीजल-इलेक्ट्रिक अटैक पनडुब्बी - वायर-गाइडेड टॉरपीडो, एंटी-शिप मिसाइलों और उन्नत सोनार सिस्टम से लैस - एयर इंडिपेंडेंट प्रोपल्शन (AIP) तकनीक के लिए भविष्य में अपग्रेड की क्षमता के साथ मॉड्यूलर निर्माण की सुविधा	प्रोजेक्ट 75 के तहत छठी और अंतिम पनडुब्बी, जो भारत की पानी के नीचे की लड़ाई और खुफिया जानकारी जुटाने की क्षमताओं को मजबूत करती है
---------------	--	--	--	---

एक साथ कमीशनिंग:

- ऐतिहासिक पहली बार: पहली बार, एक विध्वंसक (आईएनएस सूरत), एक फ्रिगेट (आईएनएस नीलगिरी), और एक पनडुब्बी (आईएनएस वाघशीर) को एक ही दिन कमीशन किया गया।
- “मेड इन इंडिया” मील का पत्थर: सभी तीन प्लेटफार्मों का निर्माण स्वदेशी रूप से किया गया था, जो भारत के जहाज निर्माण कौशल और आत्मनिर्भर भारत के प्रति प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करता है।
- रणनीतिक प्रभाव: ये अतिरिक्त सुविधाएँ भारत की समुद्री रक्षा को मजबूत करती हैं, निवारक क्षमताओं को बढ़ाती हैं, और हिंद महासागर क्षेत्र (IOR) में इसके रणनीतिक प्रभाव का समर्थन करती हैं।

Google विलो चिप

संदर्भ:

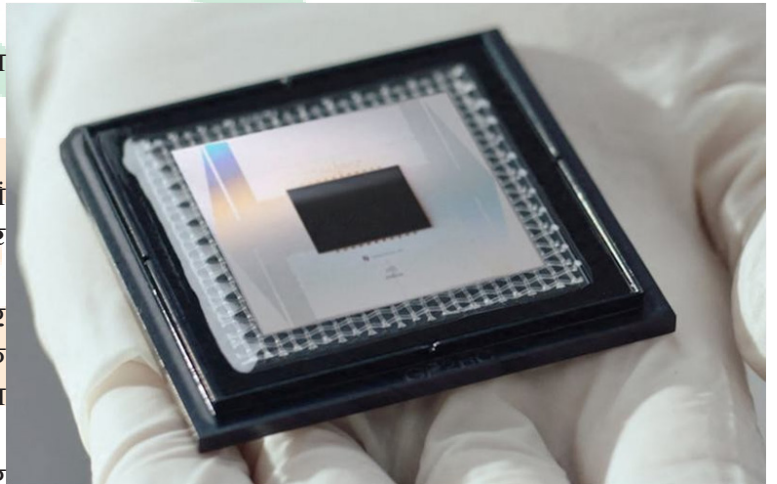
Google ने हाल ही में अपने नवीनतम क्वांटम प्रोसेसर का अनावरण किया, जिसका नाम 'विलो' है।

विलो क्वांटम AI के बारे में:

- विलो Google का नवीनतम क्वांटम प्रोसेसर है जिसमें 105 भौतिक क्यूबिट हैं जो क्वांटम त्रुटि सुधार और मापनीयता को बढ़ाने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं।
- त्रुटि सुधार प्रोटोकॉल: क्यूबिट अवस्थाओं को बहाए बिना त्रुटियों का पता लगाने और उन्हें कम करने के लिए डेटा और माप क्यूबिट के साथ सतह कोड का उपयोग करता है।
- सुपरकंडक्टिंग क्यूबिट: अधिकतम स्थिरता के लिए लगभग शून्य तापमान (-273.15 डिग्री सेल्सियस) पर संचालित होता है।
- बेहतर सुसंगति समय: सुसंगति समय के 100 माइक्रोसेकंड प्राप्त करता है, जिससे क्यूबिट्स को गणना के दौरान अधिक समय तक जानकारी रखने की अनुमति मिलती है।
- रिसाव त्रुटि प्रबंधन: रिसाव त्रुटियों को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने के लिए अतिरिक्त माप क्यूबिट शामिल हैं।

विलो का महत्व:

- कम्प्यूटेशनल ब्रेकथ्रू: रैंडम सर्किट सैमप्लिंग (RCS) कार्य को मिनटों में सफलतापूर्वक पूरा किया, एक ऐसा कार्य जिसे करने में क्लासिकल कंप्यूटर को 10 सेप्टिलियन वर्ष लगते।
- सीमा से नीचे त्रुटि में कमी: क्यूबिट्स में वृद्धि के साथ त्रुटि दरों में गिरावट को दर्शाता है, जो व्यावहारिक क्वांटम कंप्यूटिंग के लिए एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है।
- जटिल समस्याओं में अनुप्रयोग: दवा खोज, जलवायु मॉडलिंग, सामग्री विज्ञान और अनुकूलन समस्याओं में चुनौतियों को हल करने का मार्ग प्रशस्त करता है।
- स्केलेबिलिटी के लिए आधार: प्रमुख बाधाओं को संबोधित करता है, यह सुनिश्चित करता है कि क्वांटम कंप्यूटर बड़े हो सकें और विश्वसनीय बने रहें।
- सामाजिक प्रभाव: उद्योगों में क्रांति लाने और वैश्विक महत्व की समस्याओं को हल करने की क्षमता।



ग्रीन बैंक

संदर्भ:

भारत सहित वैश्विक दक्षिण, COP29 प्रतिबद्धताओं के बावजूद पर्याप्त जलवायु वित्त को सुरक्षित करने के लिए संघर्ष करता है। भारत में ग्रीन बैंक की स्थापना सतत विकास और डीकार्बोनाइजेशन का समर्थन करने के लिए एक बाजार संचालित समाधान प्रदान करती है।

ग्रीन बैंक क्या हैं?

ग्रीन बैंक मिशन-संचालित वित्तीय संस्थान हैं जिन्हें स्वच्छ ऊर्जा अपनाने और जलवायु परिवर्तन से लड़ने के लिए डिज़ाइन किया गया है। पारंपरिक बैंकों के विपरीत, वे पुनर्निवेश के लिए पूंजी वसूली सुनिश्चित करते हुए सिद्ध, पर्यावरण के अनुकूल परियोजनाओं के वित्तपोषण पर ध्यान केंद्रित करते हैं।



भारत में ग्रीन बैंक की आवश्यकता:

- ग्रीन परियोजनाओं के लिए किफायती ऋण: वाणिज्यिक बैंकों से उच्च-ब्याज वाले ऋण ग्रीन फाइनेंसिंग को दुर्गम बनाते हैं, जिसके लिए किफायती समाधानों की आवश्यकता होती है।
- स्थानीयकृत जलवायु वित्त: एक भारतीय ग्रीन बैंक स्थानीय डीकार्बोनाइजेशन प्रयासों को वित्तपोषित करते हुए घरेलू स्तर पर पूंजी बनाए रख सकता है।
- नेट-जीरो लक्ष्य प्राप्त करना: भारत का 2070 नेट-जीरो लक्ष्य बड़े पैमाने पर जलवायु वित्त जुटाने के लिए मजबूत तंत्र की मांग करता है।
- कमज़ोर समुदायों के लिए सहायता: ग्रीन बैंक किसानों और एमएसएमई को किफायती ऋण के माध्यम से पर्यावरण के अनुकूल प्रथाओं को अपनाने के लिए सशक्त बना सकते हैं।

ग्रीन बैंक कैसे काम करते हैं:

- पूंजी जुटाना: सरकारी अनुदान, पर्यावरण उपकर और ग्रीन बॉन्ड जारी करने के माध्यम से धन जुटाया जाता है।
- लक्षित ऋण: ऋण व्यवहार्य स्वच्छ ऊर्जा परियोजनाओं पर केंद्रित होते हैं, जिनमें पुनर्भुगतान की संभावना सुनिश्चित होती है।
- बाज़ार विकास: ग्रीन बैंक पर्यावरणीय और आर्थिक रिटर्न को अधिकतम करने के लिए अवसरों की पहचान करते हैं और उन्हें वित्तपोषित करते हैं।
- परिपत्र निवेश: वापस की गई पूंजी को नई ग्रीन परियोजनाओं में फिर से निवेश किया जाता है, जिससे एक आत्मनिर्भर वित्तपोषण लूप बनता है।

ग्रीन बैंकों की सीमाएँ:

- प्रारंभिक पूंजी आवश्यकता: ग्रीन बैंक की स्थापना के लिए महत्वपूर्ण सरकारी और संस्थागत वित्तपोषण की आवश्यकता होती है।
- सीमित सार्वजनिक जागरूकता: हितधारकों के बीच जागरूकता की कमी ग्रीन फाइनेंसिंग पहलों को अपनाने को सीमित कर सकती है।
- ऋण चूक का जोखिम: ग्रीन परियोजनाओं में वित्तीय जोखिम होते हैं, जो संभावित रूप से ग्रीन बैंक की स्थिरता को प्रभावित करते हैं।
- नीति और विनियामक अंतराल: स्पष्ट विनियामक ढांचे की अनुपस्थिति प्रभावी ग्रीन बैंक संचालन को बाधित कर सकती है।

आगे की राह:

- नीतिगत ढांचा: ग्रीन बैंकों के कुशल कामकाज को बढ़ावा देने के लिए मजबूत दिशानिर्देश और प्रोत्साहन विकसित करें।
- सार्वजनिक-निजी भागीदारी: संसाधनों में विविधता लाने और पूंजी जुटाने को बढ़ाने के लिए निजी संस्थानों के साथ भागीदारी करें।
- जागरूकता अभियान: ग्रीन फाइनेंसिंग के लाभों के बारे में हितधारकों को शिक्षित करने के लिए लक्षित अभियान शुरू करें।
- नवाचार पर ध्यान दें: वित्तपोषण के लिए पात्र स्वच्छ ऊर्जा परियोजनाओं के दायरे को व्यापक बनाने के लिए अनुसंधान और विकास का समर्थन करें।

निष्कर्ष:

भारत को डीकार्बोनाइजेशन का समर्थन करने के लिए ग्रीन बैंक की स्थापना करके जलवायु वित्त में नेतृत्व की भूमिका निभानी चाहिए। चुनौतियों का समाधान करके और नवाचार को बढ़ावा देकर, राष्ट्र सतत विकास प्राप्त कर सकता है और वैश्विक दक्षिण के लिए एक उदाहरण स्थापित कर सकता है।

ओपन डेटा किट प्लेटफॉर्म

संदर्भ:

भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (CAG) ने सार्वजनिक व्यय में पारदर्शिता सुनिश्चित करने और सरकारी योजनाओं की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करने के लिए ओपन डेटा किट (ODK) प्लेटफॉर्म का उपयोग करके एक क्रांतिकारी टूलकिट पेश किया है।

CAG टूलकिट के बारे में:

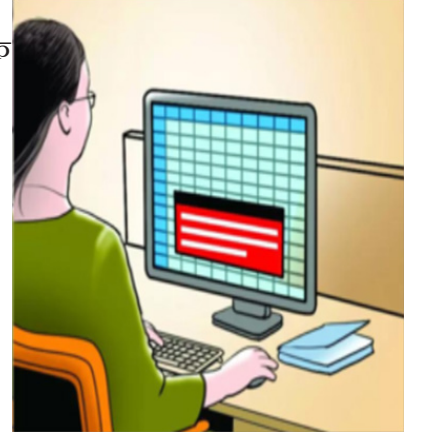
- यह क्या है: ऑडिट से संबंधित डेटा को डिज़ाइन करने, एकत्र करने और प्रबंधित करने के लिए ओपन डेटा किट (ODK) तकनीक पर आधारित एक डिजिटल प्लेटफॉर्म।
- भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (CAG) द्वारा लॉन्च किया गया।

उद्देश्य:

1. सार्वजनिक व्यय में पारदर्शिता बढ़ाना।
2. सरकारी योजनाओं के वितरण में जवाबदेही में सुधार।
3. सूचित ऑडिट योजना के लिए वास्तविक समय लाभार्थी प्रतिक्रिया एकत्र करें।

मुख्य विशेषताएं:

- CAG के अपने ऑपरेटिंग सिस्टम (OIOS) के साथ एकीकृत।
- सुरक्षित डेटा प्रबंधन के लिए एंड-टू-एंड एन्क्रिप्शन।
- लाभार्थी सर्वेक्षणों के लिए बहुभाषी समर्थन।
- डेटा संग्रह प्रक्रियाओं को डिज़ाइन करने और प्रबंधित करने के लिए उपयोगकर्ता के अनुकूल इंटरफ़ेस।

**यह कैसे काम करता है:**

- सर्वेक्षण ODK प्लेटफॉर्म पर डिज़ाइन किए गए हैं और लाभार्थियों को तैनात किए गए हैं।
- डेटा वास्तविक समय में एकत्र किया जाता है, OIOS सिस्टम का उपयोग करके विश्लेषण किया जाता है, और ऑडिट साक्ष्य के रूप में उपयोग किया जाता है।
- लाभार्थी प्रतिक्रिया समस्या क्षेत्रों की पहचान करने और योजना वितरण में सुधार करने में मदद करती है।

महत्व:

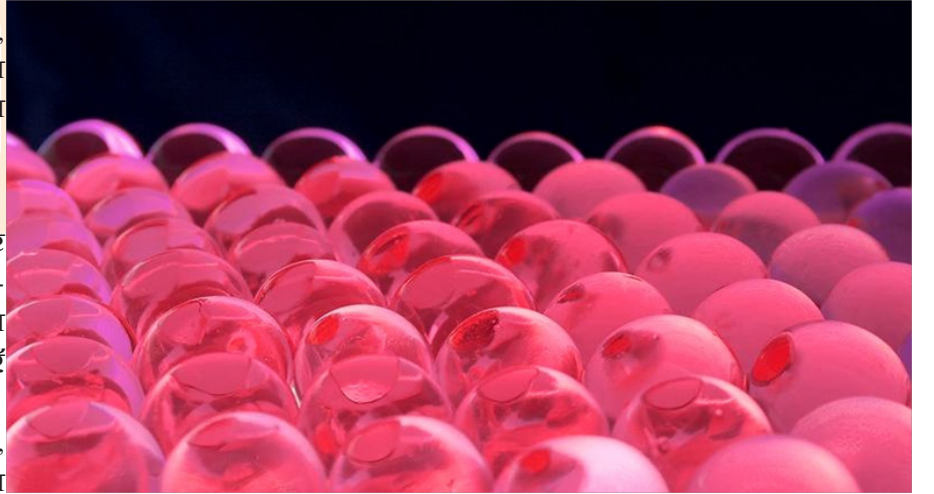
- ऑडिट में डेटा-संचालित निर्णय लेने में सक्षम बनाता है।
- सरकारी योजनाओं का नागरिक-केंद्रित मूल्यांकन सुनिश्चित करता है।
- एम्स जैसे संस्थानों की कार्य-निष्पादन समीक्षा को सुगम बनाता है, जिससे सेवा वितरण में सुधार होता है।

इंजेक्टबल हाइड्रोजेल**संदर्भ:**

आईआईटी-गुवाहाटी और बोस इंस्टीट्यूट, कोलकाता के शोधकर्ताओं ने स्थानीयकृत कैंसर उपचार के लिए एक उन्नत इंजेक्टबल हाइड्रोजेल विकसित किया है।

हाइड्रोजेल के बारे में:

- यह क्या है: एक जल-आधारित पॉलीमर नेटवर्क जिसे ट्यूमर साइट पर कैंसर-रोधी दवाओं को छोड़ने के लिए डिज़ाइन किया गया है, जिससे स्वस्थ कोशिकाएँ प्रभावित नहीं होती हैं।
- आईआईटी-गुवाहाटी और बोस इंस्टीट्यूट, कोलकाता के शोधकर्ताओं द्वारा विकसित।

**विशेषताएँ:**

- स्थानीयकृत दवा वितरण: स्वस्थ कोशिकाओं को प्रभावित किए बिना कैंसर कोशिकाओं को सटीक रूप से लक्षित करता है।
- प्रतिक्रियाशील डिज़ाइन: ट्यूमर कोशिकाओं में प्रचुर मात्रा में ग्लूटाथियोन (GSH) के उच्च स्तर पर प्रतिक्रिया करता है।
- जैव-संगतता: जैविक वातावरण के साथ सहज एकीकरण के लिए जीवित ऊतकों की नकल करता है।
- स्थिरता: जैविक तरल पदार्थों में अघुलनशील रहता है, जिससे इंजेक्शन स्थल पर स्थानीयकरण सुनिश्चित होता है।

महत्व:

- पारंपरिक कीमोथेरेपी से जुड़े हानिकारक दुष्प्रभावों को कम करता है।
- कैंसर थेरेपी में सटीकता को बढ़ाता है, विशेष रूप से स्तन कैंसर के लिए।
- व्यक्तिगत और स्थानीयकृत कैंसर उपचार में एक कदम आगे का प्रतिनिधित्व करता है।

भुगतान और निपटान प्रणाली अधिनियम, 2007

संदर्भ:

भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) ने भुगतान और निपटान प्रणाली अधिनियम, 2007 (PSS अधिनियम) के तहत मौद्रिक दंड लगाने और अपराधों को कम करने के मानदंडों को कड़ा कर दिया है।



भुगतान और निपटान प्रणाली अधिनियम, 2007 (PSS अधिनियम) के बारे में:

PSS अधिनियम क्या है?

- भुगतान और निपटान प्रणाली अधिनियम, 2007 (PSS अधिनियम) एक कानून है जो भारत में भुगतान प्रणालियों को विनियमित और पर्यवेक्षण करता है।
- यह भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) को भुगतान प्रणालियों की देखरेख और उनके सुचारू संचालन को सुनिश्चित करने के लिए जिम्मेदार प्राधिकरण के रूप में नामित करता है।

उद्देश्य:

- भारत में भुगतान प्रणालियों के विनियमन और पर्यवेक्षण के लिए एक कानूनी ढांचा प्रदान करना।
- भुगतान प्रणालियों में वित्तीय स्थिरता, दक्षता और उपभोक्ता संरक्षण सुनिश्चित करना।
- कानूनी रूप से लागू करने योग्य अवधारणाओं के रूप में नेटिंग और निपटान अंतिमता स्थापित करना।

महत्वपूर्ण विशेषताएँ:

- प्राधिकरण की आवश्यकता: कोई भी इकाई RBI से प्राधिकरण के बिना भुगतान प्रणाली संचालित नहीं कर सकती है।
- परिभाषाएँ: अधिनियम भुगतान प्रणाली, भुगतान दायित्व, भुगतान निर्देश और निपटान जैसे प्रमुख शब्दों को परिभाषित करता है।
- विनियामक शक्तियाँ: RBI मौद्रिक दंड लगा सकता है, अपराधों को कम कर सकता है और उल्लंघनकर्ताओं के खिलाफ प्रवर्तन कार्रवाई कर सकता है।
- विनियमन और पर्यवेक्षण बोर्ड (BPSS): RBI के केंद्रीय बोर्ड की एक समिति जो भुगतान प्रणालियों की देखरेख करती है।

PSS अधिनियम के तहत RBI की शक्तियाँ:

- प्राधिकरण: RBI भुगतान प्रणाली संचालित करने की इच्छुक संस्थाओं को प्राधिकरण प्रदान करता है या अस्वीकार करता है।
- दंड: RBI ₹10 लाख या उल्लंघन में शामिल राशि का दोगुना, जो भी अधिक हो, तक का जुर्माना लगा सकता है।
- अपराधों का शमन: RBI गैर-कारावासीय अपराधों के लिए अपराधों का शमन (अदालती कार्यवाही के बिना उल्लंघनों का निपटारा) कर सकता है।
- निरीक्षण और पर्यवेक्षण: RBI भुगतान प्रणालियों का निरीक्षण कर सकता है और अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए सुधारात्मक कार्रवाई कर सकता है।

PSS अधिनियम क्या कवर करता है?

- भुगतान प्रणाली: इसमें क्रेडिट कार्ड संचालन, डेबिट कार्ड संचालन, धन हस्तांतरण और इसी तरह के संचालन को सक्षम करने वाली प्रणालियाँ शामिल हैं।
- निपटान प्रणाली: निधियों, प्रतिभूतियों, विदेशी मुद्रा और डेरिवेटिव्स को समाशोधन और निपटान करने की प्रणालियों को शामिल करता है।
- वित्तीय बाजार अवसंरचना (FMI): इसमें केंद्रीय प्रतिपक्ष (CCP), प्रतिभूति निपटान प्रणाली (SSS) और व्यापार भंडार (TR) शामिल हैं।
- छूट: PSS अधिनियम स्टॉक एक्सचेंजों या स्टॉक एक्सचेंजों (धारा 34) के तहत स्थापित समाशोधन निगमों पर लागू नहीं होता है।

“जब-सूचीबद्ध” प्लेटफॉर्म**संदर्भ:**

SEBI प्री-लिस्टिंग शेयर ट्रेडिंग को विनियमित करने के लिए एक “जब-सूचीबद्ध” प्लेटफॉर्म शुरू करने की योजना बना रहा है, जिसका उद्देश्य ब्रे मार्केट गतिविधियों पर अंकुश लगाना और निवेशकों के हितों की रक्षा करना है।

**'व्हेन-लिस्टेड' प्लेटफॉर्म के बारे में:**

- यह क्या है: IPO आवंटन और आधिकारिक लिस्टिंग के बीच गैर-सूचीबद्ध शेयरों के व्यापार के लिए एक विनियमित प्लेटफॉर्म।
- द्वारा विकसित: स्टॉक एक्सचेंजों के सहयोग से भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (SEBI)।
- उद्देश्य: ब्रे मार्केट ट्रेडिंग को कम करना, पारदर्शिता सुनिश्चित करना और प्री-लिस्टिंग शेयर लेनदेन के लिए एक विनियमित मार्ग प्रदान करना।

विशेषताएँ:

- आधिकारिक लिस्टिंग से पहले IPO-आवंटित शेयरों के व्यापार की अनुमति देता है।
- T+3 समयरेखा (आवंटन से लिस्टिंग तक) के भीतर संचालित होता है।
- अनौपचारिक ब्रे मार्केट ट्रेडिंग को एक औपचारिक, विनियमित तंत्र से बदल देता है।

महत्व:

- बाजार की पारदर्शिता और निवेशक सुरक्षा को बढ़ाता है।

- ब्रे मार्केट में अस्थिरता और सट्टा गतिविधियों पर अंकुश लगाता है।
- प्री-लिस्टिंग ट्रेडिंग को औपचारिक बनाता है, खुदरा निवेशकों के लिए जोखिम कम करता है।

ग्रे मार्केट क्या है?

- ब्रे मार्केट का तात्पर्य प्रतिभूतियों, विशेष रूप से शेयरों के अनौपचारिक व्यापार से है, इससे पहले कि वे आधिकारिक रूप से स्टॉक एक्सचेंजों में सूचीबद्ध हों।
- यह मांग और आपूर्ति की गतिशीलता पर निर्भर करते हुए विनियामक ढांचे के बाहर काम करता है।
- लेन-देन काल्पनिक कीमतों पर आधारित होते हैं, और शेयरों की कोई भौतिक डिलीवरी नहीं होती है।

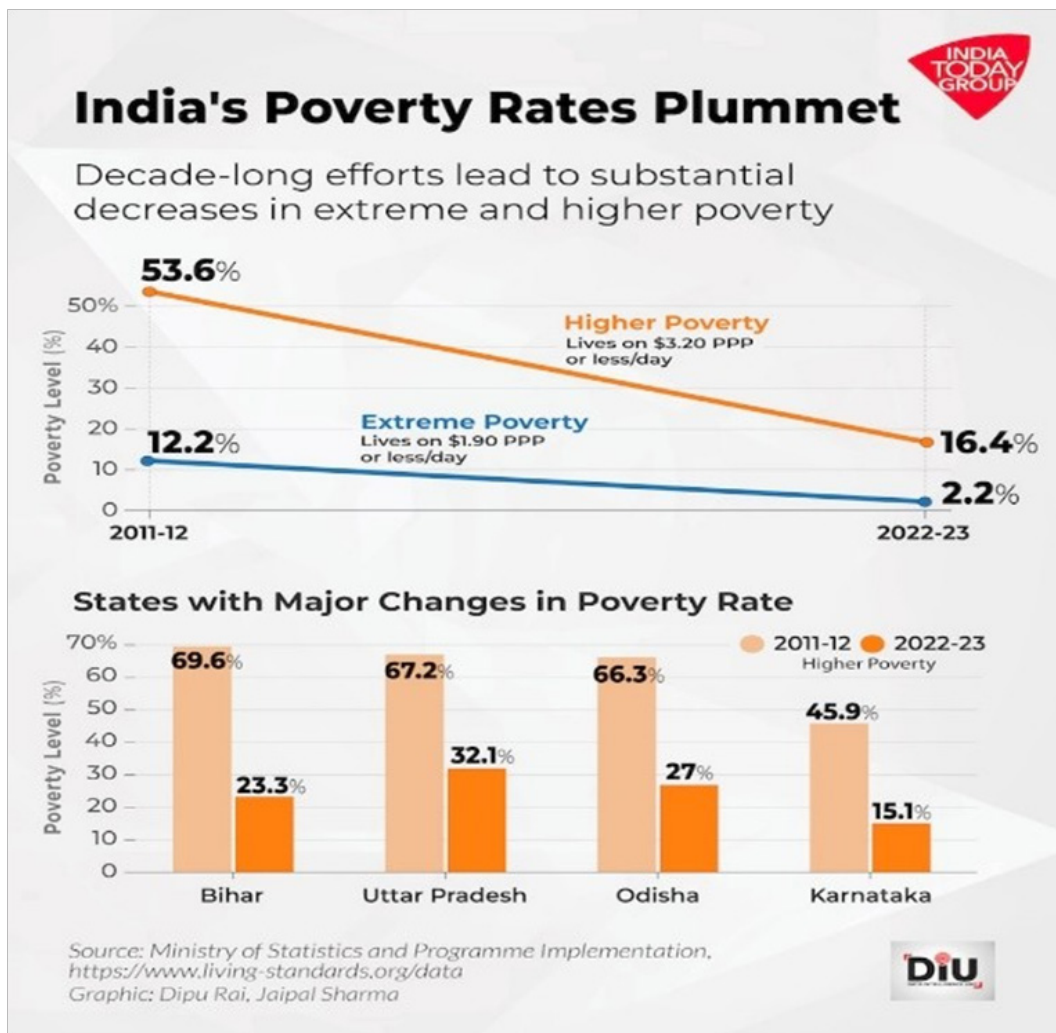
मौजूदा तंत्र:

- वर्तमान में, सेबी ने अनिवार्य किया है कि आईपीओ बोली प्रक्रिया बंद होने के बाद शेयरों को तीन कार्य दिवसों (टी + 3) के भीतर स्टॉक एक्सचेंजों में सूचीबद्ध किया जाना चाहिए।
- शेयरों का आवंटन टी + 1 पर पूरा होता है, और व्यापार टी + 3 पर शुरू होता है।

गरीबी के कम आंकलन का मुद्दा

संदर्भ:

2023-24 के घरेलू उपभोग व्यय सर्वेक्षण (HCES) ने डेटा तुलना, उपलब्धता और गरीबी रेखा के लिए पर्याप्त उपभोग टोकरी को परिभाषित करने पर चर्चा कर रही बहस के बीच शहरी और ग्रामीण गरीबी में गिरावट का खुलासा किया।



भारत में गरीबी के आंकड़ों के बारे में:

1. HCES 2023-24: रिपोर्ट बताती है कि ग्रामीण गरीबी 2011-12 में क्रमशः 25.7% और 13.7% की तुलना में 7.2% और शहरी गरीबी 4.6% तक कम हो गई है।
2. बहुआयामी गरीबी सूचकांक (MPI):
 - नीति आयोग (2022-23): बहुआयामी गरीबी 2013-14 में 29.17% से घटकर 11.28% हो गई।
 - वैश्विक MPI (2019-21): भारत ने अपने MPI मूल्य को आधा कर दिया, जिसमें 135.5 मिलियन लोग गरीबी से बाहर निकल आए।
3. विश्व बैंक का अनुमान: 2.15 डॉलर प्रतिदिन को गरीबी रेखा के रूप में इस्तेमाल करते हुए, 2019 में भारत में अत्यधिक गरीबी 11.9% थी।
4. अन्य रिपोर्ट: रंगराजन समिति (2014) ने 2011-12 में गरीबी को 29.5% आंका, जो तेंदुलकर समिति के 21.9% से अधिक है।

क्या भारत में गरीबी को कम करके आंका गया है?

हां, गरीबी को कम करके आंका गया है

- दिनांकित गरीबी रेखाएँ: तेंदुलकर (₹33/दिन शहरी, ₹27/दिन ग्रामीण) और रंगराजन (₹47/दिन शहरी, ₹30/दिन ग्रामीण) द्वारा निर्धारित गरीबी रेखा बढ़ती जीवन लागत को प्रतिबिंबित करने में विफल रहती है।
उदाहरण के लिए 74% भारतीयों के लिए पौष्टिक आहार वहनीय नहीं है (विश्व बैंक)।
- बहुआयामी अभाव: जबकि बहुआयामी सूचकांक बिजली और स्वच्छता तक बेहतर पहुँच को उजागर करते हैं, आय-आधारित गरीबी बनी रहती है।
उदाहरण के लिए बुनियादी सुविधाओं के बावजूद अनौपचारिक क्षेत्र के श्रमिकों के पास वित्तीय सुरक्षा का अभाव है।
- डेटा अंतराल: जनगणना 2021 की अनुपस्थिति सटीक ग्रामीण-शहरी गरीबी भेदभाव को सीमित करती है।
उदाहरण के लिए ग्रामीण क्षेत्र पेरी-शहरी क्षेत्रों में परिवर्तित हो रहे हैं, जिससे गरीबी के आँकड़े विकृत हो रहे हैं।
- असंगत पद्धतियाँ: सर्वेक्षणों में रि कॉल अवधि बदलने से उपभोग व्यय बढ़ जाता है, जिससे गरीबी का अनुमान कृत्रिम रूप से कम हो जाता है।
उदाहरण के लिए एमएमआरपी (संशोधित मिश्रित संदर्भ अवधि) में बदलाव व्यय के आंकड़ों को बढ़ाकर गरीबी के अनुमान को कम करता है।
- कल्याणकारी योजनाओं में बहिष्करण त्रुटियाँ: प्रमुख कार्यक्रमों के बावजूद, कार्यान्वयन अंतराल सबसे कमजोर लोगों को बाहर कर देते हैं।
उदाहरण के लिए, मनरेगा और प्रधानमंत्री आवास योजना में लीकेज।

नहीं, गरीबी को कम करके नहीं आंका गया है:

- गरीबी में पर्याप्त कमी: नीति आयोग की एमपीआई और एचसीईएस जैसी रिपोर्ट दशकों से लगातार गरीबी में कमी को दर्शाती हैं।
उदाहरण के लिए, 2013-14 और 2022-23 के बीच 24.82 करोड़ से अधिक लोग बहुआयामी गरीबी से बाहर निकले।
- बेहतर कल्याणकारी कार्यक्रम: पीएमजेडीवाई, एसबीएम और पीएमयूवाई जैसी पहलों ने जीवन स्तर में सुधार किया है।
उदाहरण के लिए, बैंक खातों तक सार्वभौमिक पहुँच (पीएमजेडीवाई) वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देती है।
- कैंटोरी-आधारित गरीबी में कमी: विविध ग्रामीण स्वपत निर्वाह से परे बेहतर जीवन स्थितियों का संकेत देती है।
उदाहरण के लिए, सेवाओं पर ग्रामीण व्यय में वृद्धि हुई, जो जीवन की बेहतर गुणवत्ता को दर्शाता है।
- वैश्विक तुलना प्रगति को प्रमाणित करती है: भारत की एमपीआई और गरीबी में कमी की दरें संयुक्त राष्ट्र और विश्व बैंक के आकलन के अनुरूप हैं।
उदाहरण के लिए, यूएनडीपी के एमपीआई ने 2015-16 से गरीबी में आधी कमी को उजागर किया है।
- आर्थिक विकास में योगदान: उच्च जीडीपी वृद्धि और कम मुद्रास्फीति गरीबी उन्मूलन का समर्थन करती है।
उदाहरण के लिए, पोषण अभियान जैसे प्रमुख कार्यक्रमों ने कमजोर आबादी में कुपोषण को कम किया।

आगे की राह:

- गरीबी के अद्यतन मेट्रिक्स: बढ़ती जीवन लागत और क्षेत्रीय असमानताओं को शामिल करने के लिए गरीबी रेखाओं पर फिर से विचार करें।
- डेटा संग्रह को मजबूत करें: 2021 की जनगणना आयोजित करें और विश्वसनीय उपभोग सर्वेक्षण सुनिश्चित करें।
- आय गरीबी पर ध्यान दें: बहुआयामी मेट्रिक्स के साथ-साथ आय भेद्यता को शामिल करें।
- कल्याण वितरण में सुधार: कल्याण कार्यक्रमों में लक्ष्यीकरण और पारदर्शिता बढ़ाएँ।
- आजीविका को बढ़ावा देना: कौशल विकास और एमएसएमई सहायता के माध्यम से ग्रामीण रोजगार को बढ़ावा देना।

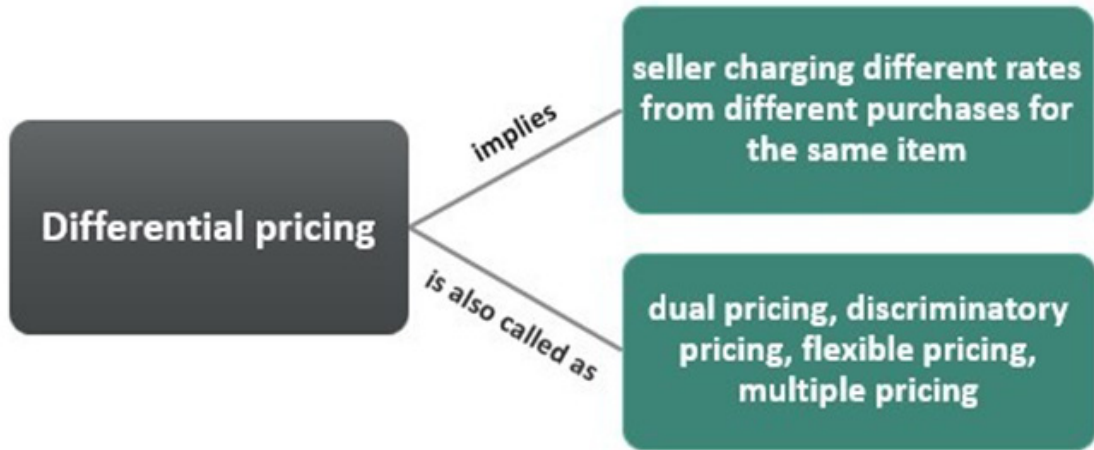
निष्कर्ष:

भारत ने गरीबी कम करने में उल्लेखनीय प्रगति की है, लेकिन कम आंकलन पर बहस अद्यतन पद्धतियों और मजबूत डेटा सिस्टम की आवश्यकता को उजागर करती है। प्रणालीगत अंतराल को संबोधित करके और समावेशी विकास को प्राथमिकता देकर, भारत स्थायी गरीबी उन्मूलन और न्यायसंगत विकास सुनिश्चित कर सकता है।

विभेदक मूल्य निर्धारण

संदर्भ:

केंद्रीय उपभोक्ता संरक्षण प्राधिकरण (CCPA) ने उपभोक्ताओं द्वारा उपयोग किए जाने वाले स्मार्टफोन के प्रकार के आधार पर कथित विभेदक मूल्य निर्धारण पर ओला और उबर को नोटिस जारी किया है।



विभेदक मूल्य निर्धारण के बारे में:

विभेदक मूल्य निर्धारण क्या है?

- विभेदक मूल्य निर्धारण एक ऐसी रणनीति है, जिसमें व्यवसाय स्थान, मांग, ग्राहक जनसांख्यिकी या क्रय व्यवहार जैसे कारकों के आधार पर एक ही उत्पाद या सेवा के लिए अलग-अलग मूल्य निर्धारित करते हैं। यह गतिशील दृष्टिकोण व्यवसायों को विभिन्न बाजार खंडों की सेवा करते हुए राजस्व को अनुकूलित करने की अनुमति देता है।

विभेदक मूल्य निर्धारण के प्रकार:

- मूल्य स्थानीयकरण: स्थानीय क्रय शक्ति या प्रतिस्पर्धा को प्रतिबिंबित करने के लिए कीमतों को अनुकूलित करना।
- वास्तविक समय मूल्य निर्धारण: मांग, प्रतिस्पर्धा और उपलब्धता के आधार पर कीमतों को समायोजित करना।
- सदस्यता-आधारित मूल्य निर्धारण: दीर्घकालिक प्रतिबद्धताओं के लिए छूट प्रदान करना।
- मौसमी छूट: छुट्टियों जैसी विशिष्ट अवधि के दौरान कीमतों को कम करना।
- मात्रा छूट: प्रति इकाई कम लागत के साथ थोक खरीद को प्रोत्साहित करना।

विभेदक मूल्य निर्धारण के लिए अग्रणी कारक:

- उपभोक्ता जनसांख्यिकी: आयु, आय स्तर और क्रय व्यवहार मूल्य निर्धारण रणनीतियों को प्रभावित करते हैं।
- भौगोलिक स्थान: स्थानीय प्रतिस्पर्धा और लागत संरचना क्षेत्रीय मूल्य निर्धारण को निर्धारित करती है।
- बाजार की मांग: उच्च मांग व्यवसायों को कीमतें बढ़ाने की अनुमति देती है (उदाहरण के लिए, त्यौहारी सीज़न)।
- प्रौद्योगिकी एकीकरण: AI-संचालित गतिशील मूल्य निर्धारण व्यक्तिगत ग्राहकों के लिए लागत को अनुकूलित करता है।
- आर्थिक स्थितियाँ: मुद्रास्फीति, मुद्रा विनिमय दरें और टैरिफ मूल्य निर्धारण को प्रभावित करते हैं।

कंपनियाँ विभेदक मूल्य निर्धारण का उपयोग क्यों करती हैं:

- राजस्व को अधिकतम करें: अनुकूलित मूल्य निर्धारण अधिकतम उपभोक्ता भुगतान करने की इच्छा को पकड़ने में मदद करता है। उदाहरण के लिए एयरलाइन्स अंतिम समय की बुकिंग के लिए अधिक शुल्क लेती हैं।
- बाजार में पैठ को बढ़ावा दें: कम शुरुआती कीमतें नए बाजारों में ग्राहकों को आकर्षित करती हैं। उदाहरण के लिए, नए उत्पाद लॉन्च के लिए परिचयात्मक ऑफ़र।
- थोक खरीद को प्रोत्साहित करें: वॉल्यूम-आधारित मूल्य निर्धारण इन्वेंट्री को तेज़ी से साफ़ करता है। उदाहरण के लिए, कॉम्बो डील पर छूट।
- लाभ मार्जिन बढ़ाएँ: पीक डिमांड के दौरान उच्च कीमतें लाभप्रदता को अधिकतम करती हैं। उदाहरण के लिए, प्रमुख आयोजनों के दौरान होटल की दरें।
- स्थानीय स्तर पर प्रतिस्पर्धा करें: स्थानीय क्रय शक्ति से मेल खाने के लिए कीमतों को समायोजित करें। उदाहरण के लिए, क्षेत्र-विशिष्ट मूल्य निर्धारण की पेशकश करने वाले मोबाइल ऐप।

रुपया अवमूल्यन

संदर्भ:

सापेक्ष स्थिरता की अवधि के बाद हाल ही में भारतीय रुपये ने अमेरिकी डॉलर के मुकाबले मूल्य में तेज गिरावट का अनुभव किया।

अवमूल्यन क्या है?

अवमूल्यन से तात्पर्य किसी देश की मुद्रा के मूल्य को विदेशी मुद्राओं के मुकाबले जानबूझकर नीचे की ओर समायोजित करने से है, जो आमतौर पर केंद्रीय बैंक द्वारा किया जाता है। इसका उपयोग निर्यात प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाने और व्यापार घाटे को कम करने के लिए किया जाता है, लेकिन इससे आयात की लागत और घरेलू मुद्रास्फीति बढ़ सकती है।



रुपये का अवमूल्यन क्या है?

- रुपये का अवमूल्यन तब होता है जब खुले बाजार में विदेशी मुद्राओं के सापेक्ष इसका मूल्य घटता है। अवमूल्यन के विपरीत, जो एक नीति-संचालित कदम है, अवमूल्यन बाजार की शक्तियों जैसे आपूर्ति-मांग की गतिशीलता, पूंजी प्रवाह और वैश्विक आर्थिक स्थितियों से प्रभावित होता है।

रुपये के मूल्य में हाल ही में गिरावट के पीछे कारण:

आंतरिक कारक:

- बढ़ती मुद्रास्फीति: उच्च घरेलू कीमतों ने रुपये के वास्तविक मूल्य को कम कर दिया। और मुद्रास्फीति से प्रेरित उत्पादन लागत ने भारतीय निर्यात को कम प्रतिस्पर्धी बना दिया।
- व्यापार घाटा बढ़ना: आयात में वृद्धि, विशेष रूप से कच्चे तेल के आयात में वृद्धि के कारण विदेशी मुद्राओं की मांग में वृद्धि हुई।
- राजकोषीय घाटा: लगातार राजकोषीय असंतुलन ने रुपये पर दबाव डाला।
- नीतिगत अस्पष्टता: RBI की विनिमय दर नीति में लगातार बदलाव के कारण बाजार में अनिश्चितता पैदा हुई।

बाहरी कारक:

- पूंजी बहिर्वाह: वैश्विक आर्थिक अनिश्चितताओं और बढ़ती अमेरिकी ब्याज दरों के बीच विदेशी निवेशकों ने धन वापस ले लिया।
- भू-राजनीतिक तनाव: रूस-यूक्रेन युद्ध जैसे संघर्षों ने वैश्विक ऊर्जा कीमतों को प्रभावित किया, जिससे भारत का आयात बिल बढ़ गया।
- वैश्विक आर्थिक मंदी: निर्यात के लिए कम वैश्विक मांग ने रुपये की परेशानी को और बढ़ा दिया।
- अमेरिकी डॉलर की मजबूती: अमेरिकी फेडरल रिजर्व द्वारा दरों में आक्रामक वृद्धि ने डॉलर को मजबूत किया, जिससे रुपया कमजोर हुआ।

रुपये में गिरावट के परिणाम:

- आयात लागत में वृद्धि: कमजोर होते रुपये के कारण कच्चा तेल, इलेक्ट्रॉनिक्स और कच्चे माल महंगे हो जाते हैं, जिससे भारत का चालू खाता घाटा और भी खराब हो जाता है।
- मुद्रास्फीति का दबाव: बढ़ती आयात लागत घरेलू मुद्रास्फीति को बढ़ाती है, क्योंकि व्यवसाय बढ़ी हुई इनपुट लागत का बोझ उपभोक्ताओं पर डालते हैं।
- निर्यात प्रतिस्पर्धात्मकता: जबकि सस्ता रुपया शुरू में निर्यात को लाभ पहुँचाता है, मुद्रास्फीति के कारण उच्च इनपुट लागत समय के साथ इन लाभों को नकार देती है।
- पूंजी पलायन: कमजोर रुपया निवेशकों के विश्वास को कम करता है, जिससे विदेशी निवेशक भारतीय बाजारों से पूंजी निकालने के लिए प्रेरित होते हैं।
- उधार पर प्रभाव: विदेशी मुद्राओं में मूल्यवर्धित बाहरी ऋण अधिक महंगा हो जाता है, जिससे सरकार और व्यवसायों पर पुनर्भुगतान का बोझ बढ़ जाता है।

रुपये के मूल्य को बहाल करने के उपाय

मौद्रिक नीति उपाय:

- विदेशी मुद्रा हस्तक्षेप: आरबीआई मांग-आपूर्ति असंतुलन को प्रबंधित करने और रुपये को स्थिर करने के लिए बाजार में विदेशी मुद्रा भंडार बेच सकता है।
- ब्याज दरों में बढ़ोतरी: उच्च रेपो दरें भारतीय निवेश को आकर्षक बनाती हैं, विदेशी निवेश को प्रोत्साहित करती हैं और रुपये को मजबूत बनाती हैं।

- मुद्रा विनिमय समझौते: अन्य देशों के साथ द्विपक्षीय समझौते डॉलर पर निर्भरता को कम कर सकते हैं और विदेशी मुद्रा प्रवाह को स्थिर कर सकते हैं।

राजकोषीय नीति उपाय

- आयात निर्भरता को कम करना: आयात बिलों को कम करने के लिए कच्चे तेल के विकल्प जैसे उच्च मांग वाले आयातित सामानों के घरेलू उत्पादन को बढ़ाना।
- निर्यात को बढ़ावा देना: विदेशी मुद्रा आय बढ़ाने और व्यापार संतुलन में सुधार करने के लिए निर्यातकों को प्रोत्साहन और सब्सिडी प्रदान करना।
- बुनियादी ढांचे का विकास: उत्पादन लागत को कम करने, समग्र प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ाने के लिए कुशल रसद और आपूर्ति श्रृंखला विकसित करना।
- विदेशी निवेश को प्रोत्साहित करना: निवेशकों के लिए एक स्थिर वातावरण बनाते हुए दीर्घकालिक एफडीआई को आकर्षित करने के लिए नीतियों को लागू करना।

आगे का रास्ता:

- व्यापक नीति ढांचा: अस्थिरता को कम करने और निवेशकों का विश्वास बनाने के लिए एक अच्छी तरह से परिभाषित और स्थिर विनिमय दर नीति पेश करना।
- घरेलू उत्पादन को मजबूत करना: आयात पर निर्भरता कम करने और आत्मनिर्भरता में सुधार करने के लिए 'मेक इन इंडिया' जैसे कार्यक्रमों का समर्थन करें।
- मुद्रास्फीति का प्रबंधन: मूल्य स्थिरता बनाए रखने और मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने के लिए लक्षित राजकोषीय और मौद्रिक उपकरणों का उपयोग करें।
- विविध विदेशी मुद्रा भंडार: अमेरिकी डॉलर पर निर्भरता को कम करने और कमजोरियों को कम करने के लिए विदेशी मुद्रा भंडार में विभिन्न मुद्राओं को जमा करें।

निष्कर्ष:

आर्थिक विकास, राजकोषीय स्थिरता और वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता के लिए स्थिर रुपया महत्वपूर्ण है। जबकि तत्काल हस्तक्षेप आवश्यक हैं, घरेलू उत्पादन, निर्यात वृद्धि और मजबूत नीति ढांचे पर ध्यान केंद्रित करने वाली दीर्घकालिक रणनीतियाँ निरंतर आर्थिक लचीलापन सुनिश्चित करेंगी।

विश्व आर्थिक मंच की रिपोर्ट

संदर्भ:

विश्व आर्थिक मंच ने हाल ही में "ग्लोबल साइबरसिक्यूरिटी आउटलुक 2025" और "ग्लोबल रिस्क रिपोर्ट 2025" नामक दो रिपोर्ट जारी की हैं।

ग्लोबल साइबरसिक्यूरिटी आउटलुक 2025 के बारे में:

- द्वारा प्रकाशित: विश्व आर्थिक मंच (एक्सेंचर के सहयोग से)।
- उद्देश्य: अर्थव्यवस्थाओं, समाजों और संगठनों को प्रभावित करने वाले साइबर सुरक्षा रुझानों की जांच करना।

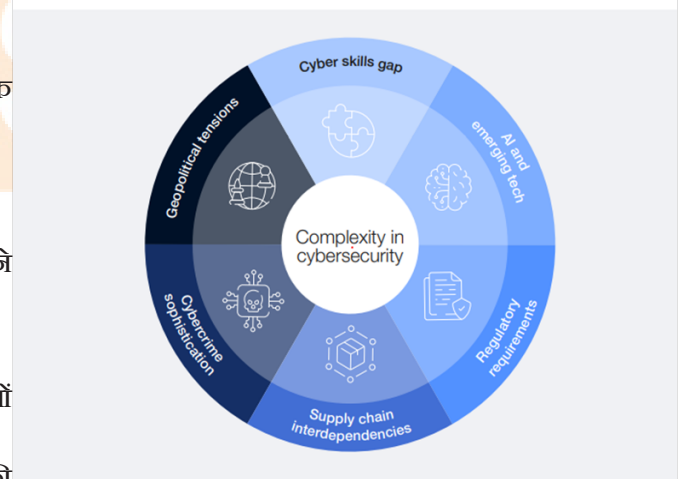
मुख्य विशेषताएं:

- बढ़ते साइबर खतरे: भू-राजनीतिक तनावों और उभरती प्रौद्योगिकियों के बीच साइबर अपराध की जटिलता पर प्रकाश डालता है।
- साइबर लचीलेपन में बढ़ती खाई: छोटे संगठनों को 2022 की तुलना में सात गुना अधिक संघर्ष का सामना करना पड़ रहा है, जबकि बड़े संगठनों में सुधार दिख रहा है।
- क्षेत्रीय असमानताएँ: लैटिन अमेरिका में 42% और अफ्रीका में 36% लोगों में साइबर सुरक्षा तैयारियों में आत्मविश्वास की कमी है, जबकि यूरोप और उत्तरी अमेरिका में यह 15% है।
- सार्वजनिक बनाम निजी क्षेत्र: सार्वजनिक क्षेत्र की 38% संस्थाएँ अपर्याप्त लचीलेपन की रिपोर्ट करती हैं, जबकि निजी संगठनों में यह 10% है।
- कार्यबल अंतर: सार्वजनिक क्षेत्र के लगभग 49% संगठनों में पर्याप्त साइबर सुरक्षा प्रतिभा की कमी है।

वैश्विक जोखिम रिपोर्ट 2025 के बारे में:

- द्वारा प्रकाशित: विश्व आर्थिक मंच।
- उद्देश्य: सूचित निर्णय लेने के लिए तत्काल, लघु-से-मध्यम और दीर्घकालिक क्षितिज में वैश्विक जोखिमों का विश्लेषण और प्राथमिकता देना।

Factors compounding the complex nature of cybersecurity



मुख्य विशेषताएँ:

- वैश्विक जोखिम धारणा सर्वेक्षण (GRPS): 900 से अधिक वैश्विक विशेषज्ञों की अंतर्दृष्टि।

समय-सीमा विश्लेषण:

- तत्काल (2025): साइबर खतरों और भू-राजनीतिक अस्थिरता जैसे तत्काल जोखिमों पर ध्यान केंद्रित करता है।
- लघु-से-मध्यम अवधि (2027): तकनीकी अपनाने और संसाधनों की कमी से जुड़े जोखिमों की जांच करता है।
- दीर्घकालिक (2035): जलवायु लचीलापन और जनसांख्यिकीय बदलाव जैसे उभरते जोखिमों पर विचार करता है।
- क्षेत्रीय प्रभाव: सार्वजनिक बुनियादी ढांचे, आपूर्ति श्रृंखलाओं और महत्वपूर्ण सेवाओं की कमजोरियों पर प्रकाश डालता है।
- क्षेत्रीय भिन्नताएँ: महाद्वीपों में तैयारियों में अंतर की पहचान करता है, स्थानीय रणनीतियों की आवश्यकता पर बल देता है।
- गहन जोखिम विषय: वयनित उच्च-प्राथमिकता वाले जोखिम श्रेणियों पर केंद्रित विश्लेषण प्रदान करता है।

लंबे समय तक काम करने की बहस**संदर्भ:**

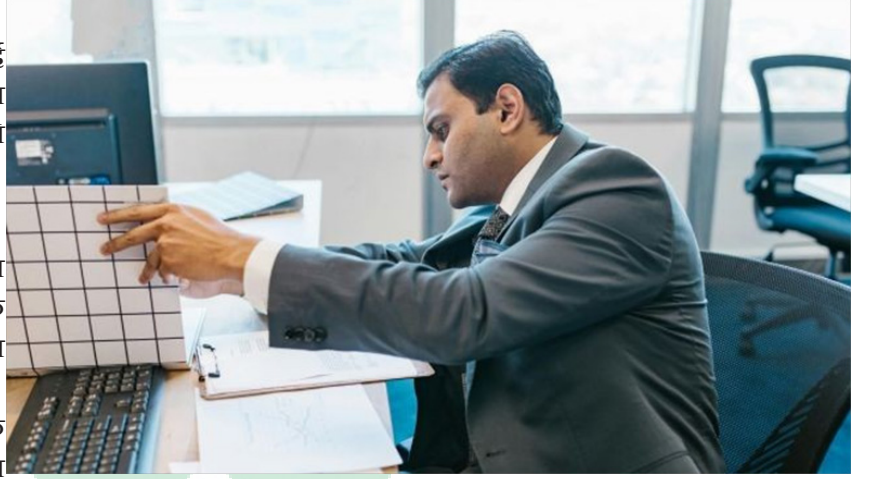
एलएंडटी के अध्यक्ष एस.एन. सुब्रह्मण्यन जैसे कई विशेषज्ञों ने कार्यस्थल संस्कृति, कर्मचारी कल्याण और उत्पादकता के बारे में विताओं को उजागर करते हुए विवाद को जन्म दिया है।

लंबे समय तक काम करने का प्रस्ताव:

- नारायण मूर्ति, एस.एन. सुब्रह्मण्यन और भाविश अग्रवाल सहित भारत के प्रमुख व्यापारिक नेताओं ने काम के घंटे बढ़ाने का आह्वान किया है।
- उनका तर्क है कि कार्य सप्ताह बढ़ाने से आर्थिक विकास को बढ़ावा मिल सकता है और जापान और जर्मनी जैसे देशों में देखी गई युद्ध-पश्चात पुनर्प्राप्ति रणनीतियों का अनुकरण किया जा सकता है।
- प्रस्ताव उत्पादकता और वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ाने के लिए प्रति सप्ताह 70-90 घंटे के मॉडल का सुझाव देते हैं।

लंबे समय तक काम करने के सकारात्मक पहलू:

- आउटपुट बढ़ाता है: विस्तारित घंटे काम की मात्रा और परियोजना को पूरा करने की गति बढ़ा सकते हैं।
उदाहरण के लिए, भारत में विनिर्माण उद्योग ओवरटाइम काम के साथ पीक सीजन के दौरान उच्च आउटपुट दिखाते हैं।
- आर्थिक विकास: लंबे समय तक काम करने से कार्यबल की भागीदारी और उत्पादकता में वृद्धि करके उच्च जीडीपी में योगदान होता है।
उदाहरण के लिए, भारत का आईटी क्षेत्र वैश्विक क्लाइंट की मांगों को पूरा करने के लिए उच्च दबाव वाली समयसीमाओं पर फलता-फूलता है।
- कौशल विकास: विस्तारित कार्य अवधि कर्मचारियों को कौशल हासिल करने और उसे निखारने के अवसर प्रदान करती है।
उदाहरण के लिए, बेंगलुरु में स्टार्टअप अक्सर तेजी से कौशल बढ़ाने के लिए विस्तारित कार्य घंटों का उपयोग करते हैं।
- नौकरी की सुरक्षा: जो कर्मचारी लंबे समय तक काम करने के लिए प्रतिबद्ध होते हैं, वे प्रतिस्पर्धी उद्योगों में बेहतर नौकरी स्थिरता प्राप्त कर सकते हैं।
उदाहरण के लिए, निर्माण परियोजनाओं में अनुबंध श्रमिकों को विस्तारित कार्य शेड्यूल से लाभ होता है।
- कार्यस्थल लचीलापन: कड़ी मेहनत की संस्कृति लचीलापन और अनुकूलनशीलता का निर्माण करती है।
उदाहरण के लिए, महत्वपूर्ण परियोजनाओं के दौरान अतिरिक्त घंटे काम करने वाले इंफोसिस कर्मचारियों ने क्लाइंट को बनाए रखा।
- लंबे समय तक काम करने की सीमाएँ: स्वास्थ्य जोखिम: विस्तारित घंटे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं जैसे बर्नआउट और तनाव का कारण बनते हैं।
उदाहरण के लिए, पुणे स्थित अर्स्ट एंड यंग के एक कर्मचारी की 2024 में कार्यस्थल पर तनाव से मृत्यु हो गई।
- उत्पादकता में गिरावट: अधिक काम से थकान फोकस, रचनात्मकता और समग्र दक्षता को कम करती है।
उदाहरण के लिए, ILO की रिपोर्ट दक्षिण कोरिया में लंबे समय तक काम करने को कम उत्पादकता से जोड़ती है।
- खराब कार्य-जीवन संतुलन: अत्यधिक कार्य घंटे व्यक्तिगत संबंधों को प्रभावित करते हैं और सामाजिक जुड़ाव को कम करते हैं।
उदाहरण के लिए जापान की "करोशी" संस्कृति में कर्मचारी अकेलेपन और अवसाद का सामना कर रहे हैं।
- उच्च एट्रिशन दरें: लंबे घंटे काम करने से टर्नओवर दरें बढ़ जाती हैं क्योंकि कर्मचारी संतुलित कार्य वातावरण चाहते हैं।
उदाहरण के लिए भारत के आईटी क्षेत्र ने लचीले घंटे देने वाली कंपनियों में प्रतिभाओं के पलायन का अनुभव किया।
- नकारात्मक सामाजिक प्रभाव: अत्यधिक कार्य संस्कृति परिवार निर्माण और सामुदायिक भागीदारी को हतोत्साहित करती है।
उदाहरण के लिए जापान की वृद्ध आबादी आंशिक रूप से इसकी मांग वाली कार्य संस्कृति के कारण है।



आगे का रास्ता:

- संतुलित कार्य घंटे: लचीले कार्य मॉडल पेश करें जो व्यक्तिगत कल्याण के साथ आउटपुट को संतुलित करते हैं। उदाहरण के लिए हाइब्रिड कार्य शेड्यूल लागू करने वाले भारतीय स्टार्टअप उत्पादकता बढ़ाते हैं।
- कर्मचारी कल्याण पहल: कार्यस्थलों में मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य कार्यक्रमों को बढ़ावा दें। उदाहरण के लिए TCS कर्मचारियों के लिए तनाव प्रबंधन कार्यशालाएँ प्रदान करता है।
- बढ़ी हुई दक्षता: कार्य प्रक्रियाओं को अनुकूलित करने के लिए उपकरणों और तकनीकों को प्रोत्साहित करें। उदाहरण के लिए एआई-संचालित परियोजना प्रबंधन उपकरण भारत के आईटी क्षेत्र में कार्यभार कम करते हैं।
- सांस्कृतिक बदलाव: काम की मात्रा से ज़्यादा गुणवत्ता को महत्व देने वाली मानसिकता को बढ़ावा देना। उदाहरण के लिए, जापान में माइक्रोसॉफ्ट के चार दिवसीय कार्य सप्ताह प्रयोग ने उत्पादकता को बढ़ावा दिया।
- विधायी सुरक्षा उपाय: अधिकतम कार्य घंटों को विनियमित करने के लिए श्रम कानून लागू करना। उदाहरण के लिए, कारखाना अधिनियम के तहत भारत के मौजूदा कानून सीमित कार्य घंटों का प्रावधान करते हैं।

निष्कर्ष:

काम के घंटों के प्रति संतुलित दृष्टिकोण, मात्रा के बजाय दक्षता पर ध्यान केंद्रित करना, सतत विकास के लिए महत्वपूर्ण है। संगठनों को रचनात्मकता और नवाचार को बढ़ावा देने के लिए कर्मचारियों की भलाई को महत्व देना चाहिए। जैसे-जैसे भारतीय कार्यबल विकसित होता है, बेहतर कार्य पद्धतियों को बढ़ावा देने से स्वस्थ कार्यस्थल बनेंगे और दीर्घकालिक सफलता मिलेगी।

वेतन आयोग**संदर्भ:**

प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने 8वें वेतन आयोग की स्थापना को मंजूरी दे दी है, जिसका उद्देश्य लगभग 50 लाख केंद्रीय सरकारी कर्मचारियों के वेतन और 65 लाख पेंशनभोगियों के भत्ते को संशोधित करना है।

वेतन आयोग के बारे में:

- यह क्या है: केंद्र सरकार द्वारा केंद्रीय सरकारी कर्मचारियों और पेंशनभोगियों के वेतन, भत्ते और पेंशन संरचनाओं में बदलावों की समीक्षा और सिफारिश करने के लिए स्थापित एक निकाय।
- द्वारा स्थापित: व्यय विभाग, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार।

उद्देश्य:

- सरकारी कर्मचारियों के लिए उचित मुआवजा सुनिश्चित करना।
- मुद्रास्फीति के प्रभावों को कम करने के लिए महंगाई भत्ते (डीए) और महंगाई राहत (डीआर) को संशोधित करने के लिए सूत्र सुझाना।

कार्य:

- केंद्र सरकार के कर्मचारियों के वेतन और भत्तों की समीक्षा करना।
- शासन को बढ़ाने के लिए संरचनात्मक परिवर्तनों का सुझाव देना।
- वेतन संशोधनों की वित्तीय स्थिरता सुनिश्चित करना।

वेतन आयोगों का इतिहास:**पहला वेतन आयोग:**

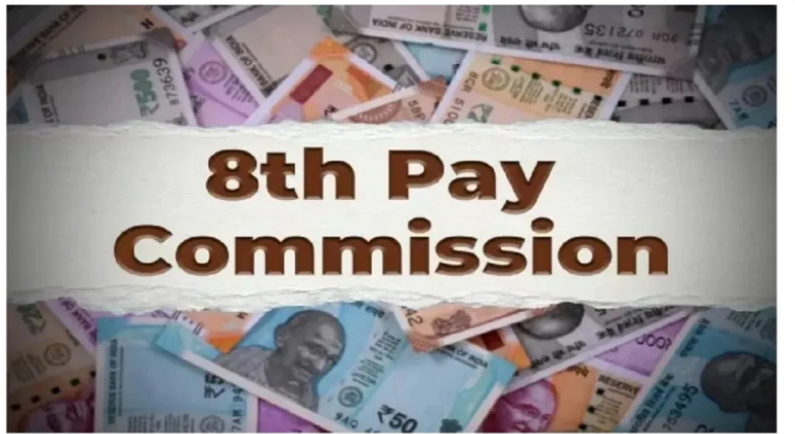
- वर्ष: 1946
- अध्यक्षता: श्रीनिवास वरदाचारी

सातवाँ वेतन आयोग:

- स्थापना वर्ष: 2014
- क्रियान्वयन: 1 जनवरी, 2016

प्रमुख परिवर्तन:

- फिटमेंट फैक्टर 57 पर सेट किया गया, जिससे न्यूनतम मूल वेतन ₹7,000 से बढ़कर ₹18,000 हो गया।
- अधिकतम वेतन संशोधित कर ₹2,50,000 किया गया।
- वित्त वर्ष 2016-17 के लिए व्यय में ₹1 लाख करोड़ की वृद्धि।



क्यूएस वर्ल्ड फ्यूचर स्किल्स इंडेक्स 2025

संदर्भ:

भारत ने क्यूएस वर्ल्ड फ्यूचर स्किल्स इंडेक्स 2025 में कुल मिलाकर 25वां स्थान प्राप्त किया है, जिसमें "भविष्य के काम" श्रेणी में शानदार प्रदर्शन किया गया है, जहां यह संयुक्त राज्य अमेरिका के ठीक पीछे वैश्विक स्तर पर दूसरे स्थान पर रहा।

QS World Future Skills Index 2025					
Transforming Higher Education for the Skills Economy					
INDIA					
Indicator	Skills Fit	Academic Readiness	Future of Work	Economic Transformation	Overall
Score	59.1	89.9	99.1	58.3	76.6
Global position	37th	26th	2nd	40th	25th

क्यूएस वर्ल्ड फ्यूचर स्किल्स इंडेक्स के बारे में:

- यह क्या है: एक वैश्विक रैंकिंग प्रणाली जो कौशल विकास, शिक्षा और आर्थिक परिवर्तन के माध्यम से उभरती हुई नौकरी बाजार की मांगों को पूरा करने के लिए देशों की तत्परता का मूल्यांकन करती है।
- लंदन स्थित क्वाकवैरेली साइमंड्स (क्यूएस) द्वारा जारी किया गया, जो अपनी शिक्षा और कौशल-संबंधी रैंकिंग के लिए जाना जाता है।
- उद्देश्य: यह आकलन करना कि देश अपने कार्यबल को डिजिटल दक्षताओं, एआई, हरित प्रौद्योगिकियों और स्थिरता जैसे भविष्य के कौशल के लिए कितनी अच्छी तरह तैयार कर रहे हैं।

भारत की रैंक:

- वैश्विक स्तर पर कुल मिलाकर 25वां।
- "भविष्य के काम" श्रेणी में दूसरा स्थान, जो तकनीक-संचालित भूमिकाओं के लिए उच्च तैयारी को दर्शाता है।

क्यूएस फ्यूचर स्किल्स इंडेक्स में मुख्य मानदंड:

- स्किल्स फिट: मापता है कि स्नातकों के कौशल वर्तमान नियोजन की मांगों के साथ कितने संरेखित हैं।
- अकादमिक तत्परता: छात्रों को उभरते नौकरी बाजारों के लिए तैयार करने की उच्च शिक्षा प्रणालियों की क्षमता का आकलन करता है।
- कार्य का भविष्य: एआई, डिजिटल और हरित प्रौद्योगिकियों जैसे भविष्य-केंद्रित कौशल की आवश्यकता वाली भूमिकाओं के लिए तैयारी का मूल्यांकन करता है।
- आर्थिक परिवर्तन: सतत विकास, नवाचार और कार्यबल दक्षता की क्षमता का विश्लेषण करता है।

रिपोर्ट से मुख्य अंतर्दृष्टि:

Skills Fit		Academic Readiness		Future of Work		Economic Transformation	
Country	Score	Country	Score	Country	Score	Country	Score
UK	100.00	UK	100.0	United States	100.0	South Korea	100.0
US	94.4	Germany	99.6	India	99.1	Israel	98.9
Canada	90.9	Netherlands	99.3	Mexico	98.2	United States	97.9
Germany	89.2	Australia	98.9	Canada	97.4	Switzerland	96.8
Netherlands	88.6	United States	98.6	Australia	96.5	Japan	95.8

ताकत:

- एआई को एकीकृत करने और उद्यम पूंजी को आकर्षित करने में उच्च तत्परता।
- मजबूत युवा आबादी और गतिशील स्टार्टअप संस्कृति, भारत को वैश्विक स्तर पर एक प्रमुख दावेदार के रूप में स्थापित करती है।

कमज़ोरियाँ:

- स्थिरता-उन्मुख नवाचार और उच्च शिक्षा संरक्षण में खराब स्कोर।
- रचनात्मकता, समस्या-समाधान और उद्यमशीलता की सोच को बढ़ावा देने में अंतराल।

अवसर:

- कौशल अंतराल को दूर करने और पाठ्यक्रम को उद्योग की मांगों के अनुरूप बनाने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का लाभ उठाना।
- नवाचार को बढ़ावा देने के लिए शिक्षा और उद्योग के बीच सहयोग का विस्तार करना।

स्टार्ट अप इंडिया के नौ साल**संदर्भ:**

16 जनवरी, 2025 को भारत में स्टार्टअप इंडिया के नौ साल पूरे हो रहे हैं, जो 2016 में शुरू हुई एक परिवर्तनकारी यात्रा है। राष्ट्रीय स्टार्टअप दिवस के रूप में नामित, यह अवसर एक मजबूत और समावेशी उद्यमशीलता पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा देने में राष्ट्र की प्रगति का जश्न मनाता है।

स्टार्टअप इंडिया क्या है?

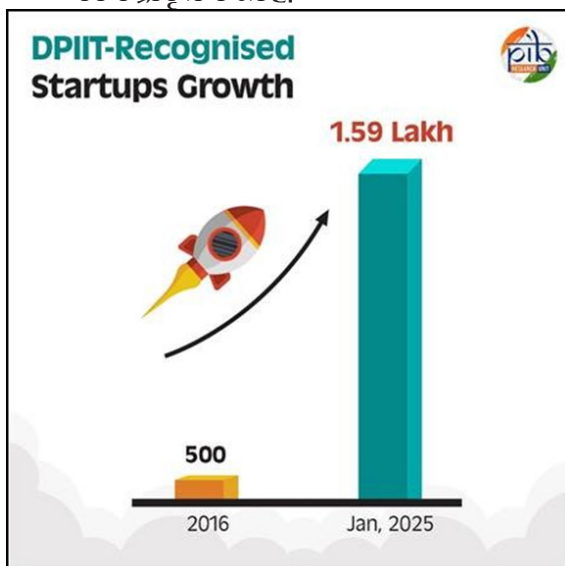
- स्टार्टअप इंडिया भारत सरकार की एक प्रमुख पहल है, जिसे 16 जनवरी, 2016 को एक मजबूत उद्यमशीलता संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए लॉन्च किया गया था। इसका उद्देश्य प्रक्रियाओं को सरल बनाना, वित्त पोषण सहायता प्रदान करना और स्टार्टअप को बढ़ने और रोजगार के अवसर पैदा करने में मदद करने के लिए नवाचार को बढ़ावा देना है।

स्टार्टअप इंडिया की विशेषताएँ:

- व्यवसाय करने में आसानी: सरलीकृत अनुपालन प्रक्रियाएँ और सिंगल-विंडो क्लियरेंस स्टार्टअप पंजीकरण और संचालन को सुव्यवस्थित करते हैं। विभिन्न श्रम और पर्यावरण कानूनों के तहत स्व-प्रमाणन की अनुमति है।
- कर लाभ: पान स्टार्टअप वित्तीय बोझ को कम करने के लिए लगातार तीन वित्तीय वर्षों के लिए कर छूट का आनंद लेते हैं।
- वित्तपोषण सहायता: स्टार्टअप के लिए ₹10,000 करोड़ का फंड ऑफ फंड्स (FFS) महत्वपूर्ण प्रारंभिक चरण का वित्तपोषण प्रदान करता है।
- क्षेत्र-विशिष्ट नीतियाँ: प्रमुख उद्योगों में विकास को बढ़ावा देने के लिए जैव प्रौद्योगिकी, नवीकरणीय ऊर्जा और कृषि पर विशेष ध्यान दिया जाता है।
- क्षमता निर्माण: iGOT कर्मयोगी और कार्यशालाओं जैसे कार्यक्रम कौशल वृद्धि का समर्थन करते हैं, खासकर गैर-मेट्रो क्षेत्रों में।

स्टार्टअप इंडिया के मील के पथर:

- जनवरी 2025 तक DPIIT द्वारा मान्यता प्राप्त 1.59 लाख से अधिक स्टार्टअप, पारिस्थितिकी तंत्र में तेजी से विकास को दर्शाते हैं।
- स्टार्टअप ने विभिन्न क्षेत्रों में 16.6 लाख नौकरियाँ पैदा की हैं, जिससे रोजगार में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।
- कम से कम एक महिला निदेशक वाले 73,151 स्टार्टअप उद्यमिता में बढ़ती लैंगिक विविधता को दर्शाते हैं।
- भास्कर प्लेटफॉर्म जैसे प्रमुख कार्यक्रम पारिस्थितिकी तंत्र के हितधारकों को जोड़ने और उनका समर्थन करने के लिए संसाधनों को केंद्रीकृत करते हैं।



स्टार्टअप का समर्थन करने वाली अन्य सरकारी योजनाएँ:

- स्टार्टअप इंडिया सीड फंड स्कीम (SISFS): अवधारणा के प्रमाण, प्रोटोटाइप विकास और बाजार में प्रवेश के लिए वित्तीय सहायता।
- स्टार्टअप के लिए क्रेडिट गारंटी योजना (CGSS): स्टार्टअप के लिए वित्तीय स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए संपार्श्विक-मुक्त ऋण प्रदान करती है।
- निधि: फंडिंग और इनक्यूबेशन सहायता के साथ छात्र-नेतृत्व वाली उद्यमिता को बढ़ावा देती है।
- मेक इन इंडिया: विनिर्माण स्टार्टअप के लिए अनुपालन को आसान बनाता है और नवाचार को बढ़ावा देता है।
- डिजिटल इंडिया: स्टार्टअप के लिए डिजिटल बुनियादी ढाँचा तैयार करता है ताकि वे फल-फूल सकें और संचालन को बढ़ा सकें।

स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र के लिए चुनौतियाँ:

- पूंजी तक पहुँच: सीमित धरोरू निवेश स्रोतों के साथ विदेशी फंडिंग पर भारी निर्भरता।
- विनियामक अड़चनें: नौकरशाही की देरी और अस्पष्ट अनुपालन ढाँचे सुचारू संचालन में बाधा डालते हैं।
- कौशल अंतराल: एआई, डेटा विज्ञान और उत्पाद विकास में पेशेवरों की कमी विकास को प्रभावित करती है।
- असमान क्षेत्रीय विकास: टियर II और III शहरों में मजबूत स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र और बुनियादी ढाँचे का अभाव है।
- कॉर्पोरेट कुप्रबंधन: स्टार्टअप में शासन के मुद्दे और वित्तीय कुप्रबंधन स्थिरता की चिंताओं को बढ़ाते हैं।

आगे की राह:

- धरोरू निवेश को प्रोत्साहित करें: बीमा कंपनियों, पेंशन फंड और पारिवारिक कार्यालयों से धन का लाभ उठाएं।
- नवाचार को बढ़ावा दें: अनुसंधान और विकास के लिए प्रोत्साहन को मजबूत करें और बौद्धिक संपदा संरक्षण ढाँचे में सुधार करें।
- क्षमता निर्माण: महत्वपूर्ण क्षेत्रों में कौशल की कमी को दूर करने के लिए उद्योग-अकादमिक सहयोग को बढ़ावा दें।
- क्षेत्रीय समावेशन: बुनियादी ढाँचे का विकास करें और छोटे शहरों और ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल पहुंच सुनिश्चित करें।
- विनियामक निरीक्षण: अनुपालन प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करें और नैतिक व्यावसायिक प्रथाओं के ढाँचे की स्थापना करें।

निष्कर्ष:

स्टार्टअप इंडिया एक परिवर्तनकारी शक्ति रही है, जिसने पूरे भारत में नवाचार, रोजगार सृजन और आर्थिक विकास को बढ़ावा दिया है। अनुकूल नीतियों, बढ़ी हुई धरोरू फंडिंग, कौशल वृद्धि और समावेशिता पर ध्यान देने के साथ, भारत उद्यमिता और नवाचार के लिए एक वैश्विक केंद्र बनने की अच्छी स्थिति में है।

नकद हस्तांतरण**संदर्भ:**

दिल्ली में महिला सम्मान योजना जैसे नकद हस्तांतरण ने उनकी प्रभावशीलता के बारे में बहस छेड़ दी है। आलोचक उन्हें लोकलुभावन उपाय मानते हैं जो राज्य के वित्त पर दबाव डालते हैं, जबकि समर्थकों का तर्क है कि वे हाशिए पर पड़े समुदायों, खासकर महिलाओं को सशक्त बनाते हैं।

नकद हस्तांतरण क्या है?

नकद हस्तांतरण सरकारों द्वारा व्यक्तियों या परिवारों को सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने या विशिष्ट कार्यों को प्रोत्साहित करने के लिए किए गए प्रत्यक्ष भुगतान हैं।

नकद हस्तांतरण के प्रकार:

- बिना शर्त हस्तांतरण: कोई शर्त नहीं; प्राप्तकर्ता आवश्यकतानुसार धन का उपयोग कर सकते हैं (उदाहरण के लिए, पीएम-किसान)।
- सशर्त हस्तांतरण: स्कूल में उपस्थिति या टीकाकरण (उदाहरण के लिए, मातृत्व लाभ कार्यक्रम) जैसी विशिष्ट कार्रवाइयों से जुड़ा हुआ।
- सार्वभौमिक हस्तांतरण: आय या स्थिति की परवाह किए बिना सभी नागरिकों को प्रदान किया जाता है।
- लक्षित स्थानान्तरण: एनएसईपी के तहत बुजुर्ग पेंशन जैसे विशिष्ट कमज़ोर समूहों पर ध्यान केंद्रित किया गया।

नकद स्थानान्तरण के विरुद्ध तर्क:

- राजकोषीय बोझ: नकद स्थानान्तरण में वह धन खर्च होता है जिसे स्वास्थ्य, शिक्षा और बुनियादी ढाँचे जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आवंटित किया जा सकता है।
- लोकलुभावन उपाय: इन्हें अक्सर चुनावी लाभ के लिए घोषित किया जाता है, जो गहरी जड़ वाली प्रणालीगत चुनौतियों का समाधान करने में विफल रहता है।
- निर्भरता का जोखिम: प्राप्तकर्ता स्थानान्तरण पर निर्भर हो सकते हैं, जिससे रोजगार की तलाश करने की उनकी प्रेरणा कम हो सकती है।



- सीमित प्रभाव: अध्ययन अनिर्णायक परिणामों का संकेत देते हैं, विशेष रूप से महिला सशक्तीकरण और कृषि आय जैसे क्षेत्रों में।
- प्रतिस्पर्धी लोकलुभावनवाद: राजनीतिक दल बड़ी योजनाएँ शुरू करने की होड़ में रहते हैं, जिससे राज्य के वित्त पर काफ़ी दबाव पड़ता है।

नकद स्थानान्तरण के पक्ष में तर्क:

- महिलाओं को सशक्त बनाना: प्रत्यक्ष भुगतान स्वायत्तता को बढ़ाता है और महिलाओं को शिक्षा और नौकरियों तक पहुँचने में मदद करता है।
- प्रत्यक्ष लाभ वितरण: वे नौकरशाही की अक्षमताओं और बिचौलियों को दरकिनार करते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि लाभ प्राप्तकर्ताओं तक पहुँचे।
- गरीबी उन्मूलन: गरीबों को तत्काल वित्तीय राहत प्रदान करना, उनके जीवन की गुणवत्ता में सुधार करना।
- आर्थिक प्रोत्साहन: लाभार्थियों की बढ़ी हुई क्रय शक्ति मांग को बढ़ाती है और स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं का समर्थन करती है।
- सामाजिक समानता: हाशिए पर पड़े समूहों को लक्षित करती है, जिससे समाज में सामाजिक-आर्थिक असमानताओं को पाटने में मदद मिलती है।

नकद हस्तांतरण के विकल्प:

- सार्वजनिक सेवाओं को मजबूत करना: स्वास्थ्य, शिक्षा और पोषण संबंधी बुनियादी ढांचे की गुणवत्ता और पहुँच को बढ़ाना।
- सार्वभौमिक बुनियादी सेवाएँ (UBS): सीधे नकद भुगतान के बजाय कम या बिना किसी लागत के आवश्यक सेवाएँ प्रदान करना।
- रोज़गार सृजन कार्यक्रम: MGNREGA और कौशल-आधारित योजनाओं जैसी पहलों के माध्यम से रोज़गार के अवसर विकसित करना।
- कौशल विकास: रोज़गार और आत्मनिर्भरता बढ़ाने के लिए व्यक्तियों को व्यावसायिक कौशल से लैस करना।
- समुदाय-आधारित कार्यक्रम: स्थानीय ज़रूरतों को पूरा करने और समुदायों को स्थायी रूप से सशक्त बनाने के लिए हस्तक्षेप करना।

आगे का रास्ता:

- संतुलित दृष्टिकोण: अधिकतम प्रभाव के लिए सार्वजनिक सेवाओं में दीर्घकालिक निवेश के साथ नकद हस्तांतरण को संयोजित करें।
- साक्ष्य-आधारित नीतियाँ: डेटा-संचालित आकलन और मापनीय परिणामों के आधार पर योजनाओं को लागू करें।
- लक्षित कार्यान्वयन: लक्षित और प्रभावी हस्तक्षेपों के लिए सबसे कमज़ोर आबादी को प्राथमिकता दें।
- निगरानी और मूल्यांकन: अंतराल की पहचान करने और दक्षता में सुधार करने के लिए नियमित रूप से कार्यक्रम के प्रदर्शन को ट्रैक करें।
- राजकोषीय विवेक: सुनिश्चित करें कि योजनाएँ विकासात्मक लक्ष्यों या राजकोषीय स्थिरता से समझौता न करें।

निष्कर्ष:

नकद हस्तांतरण कोई रामबाण उपाय नहीं है, लेकिन जब जिम्मेदारी से डिज़ाइन और कार्यान्वित किया जाता है तो यह सामाजिक सुरक्षा जाल को पूरक बना सकता है। नकद हस्तांतरण को मजबूत सार्वजनिक निवेश के साथ एकीकृत करने वाला एक संतुलित दृष्टिकोण तत्काल राहत और दीर्घकालिक प्रगति दोनों सुनिश्चित कर सकता है।

भारत की आर्थिक वृद्धि

संदर्भ:

पिछले एक दशक में भारत की अर्थव्यवस्था ने एक परिवर्तनकारी यात्रा की है, जो मजबूत नीतिगत उपायों, बढ़ते वैश्विक एकीकरण और पर्याप्त आर्थिक विकास द्वारा चिह्नित है।

भारत के आर्थिक प्रभुत्व पर डेटा अंतर्दृष्टि:

जीडीपी वृद्धि:

- नाममात्र जीडीपी: \$2.04 ट्रिलियन (2014) से बढ़कर \$3.57 ट्रिलियन (2023) हो गई। (स्रोत: विश्व बैंक)
- प्रति व्यक्ति आय: इसी अवधि के दौरान \$1,554 से बढ़कर \$2,481 हो गई।
- अनुमानित वृद्धि: 2027 तक \$5 ट्रिलियन और 2047 तक \$30 ट्रिलियन तक पहुँचने की उम्मीद है।

FDI प्रवाह:

- कुल एफडीआई प्रवाह (2014-24): \$709.84 बिलियन, पिछले दशक की तुलना में 69% की वृद्धि। (स्रोत: वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय)



वैश्विक रैंकिंग:

- व्यापार करने में आसानी: 142 (2014) से बढ़कर 63 (2019) हो गई। (स्रोत: विश्व बैंक)
- वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता सूचकांक: 71वें (2015) से बढ़कर वर्तमान में 40वें स्थान पर पहुँच गया। (स्रोत: WEF)

पूँजी बाजार वृद्धि:

- बीएसई सेंसेक्स 27,507 अंक (2015) से बढ़कर 78,507 अंक (2025) हो गया, जो 185% की वृद्धि दर्शाता है।
- बाजार पूँजीकरण बढ़कर \$5 ट्रिलियन (2024) हो गया।

सरकारी पहल आर्थिक विकास को बढ़ावा दे रही हैं:

- मेक इन इंडिया: घरेलू विनिर्माण को बढ़ावा दिया, जिससे भारत दुनिया भर में दूसरा सबसे बड़ा मोबाइल फोन उत्पादक बन गया, जिससे आयात निर्भरता कम हुई।
- स्टार्टअप इंडिया: 100 से अधिक यूनिकॉर्न और 1.5 लाख स्टार्टअप को बढ़ावा दिया, जिससे पारिस्थितिकी तंत्र का मूल्य \$349.67 बिलियन हो गया, जिससे उद्यमिता को बढ़ावा मिला।
- पीएलआई योजना: उत्पादन को प्रोत्साहित करके, महत्वपूर्ण विदेशी निवेश को आकर्षित करके क्षेत्रीय प्रतिस्पर्धा में सुधार हुआ।
- गति शक्ति मास्टर प्लान: क्षेत्रों में औद्योगिक और आर्थिक विकास को गति देने के लिए बुनियादी ढांचे की कनेक्टिविटी को बढ़ाया।
- डिजिटल इंडिया: डिजिटल भुगतान और वित्तीय समावेशन को बढ़ावा दिया, जिससे अधिक लोग औपचारिक अर्थव्यवस्था में शामिल हुए।

भारत की आर्थिक वृद्धि के सकारात्मक पहलू:

- रोजगार सृजन: विनिर्माण और सेवा क्षेत्र के विस्तार के माध्यम से रोजगार के अवसरों में वृद्धि।
- इनोवेशन हब: ग्लोबल इनोवेशन इंडेक्स पर 76वें (2014) से 39वें (2024) स्थान पर सुधार, अनुसंधान और विकास को बढ़ावा।
- वित्तीय स्थिरता: 2024 में सकल एनपीए को घटाकर 2.6% किया गया, जो बैंकिंग क्षेत्र के मजबूत स्वास्थ्य का संकेत है।
- वैश्विक उपस्थिति: पीपीपी के संदर्भ में तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में स्थान दिया गया, जिससे भारत का वैश्विक आर्थिक प्रभाव बढ़ा।

भारत की आर्थिक वृद्धि की सीमाएँ:

- असमान वितरण: आर्थिक विकास के लाभ अक्सर हाशिए पर पड़े और निम्न आय वर्ग तक नहीं पहुँच पाते।
- उच्च मुद्रास्फीति: लगातार खाद्य मुद्रास्फीति सामर्थ्य को प्रभावित करती है और क्रय शक्ति को कम करती है।
- बेरोजगारी: उच्च गुणवत्ता वाले रोजगार के अवसरों के अपर्याप्त सृजन के साथ बेरोजगारी बढ़ रही है।
- शासन संबंधी मुद्दे: कमजोर विनियामक ढांचे और पक्षपात के आरोप न्यायसंगत आर्थिक प्रगति में बाधा डालते हैं।

आगे की राह:

- समावेशी विकास: असमानता को दूर करने और आर्थिक लाभों का उचित वितरण सुनिश्चित करने के लिए नीतियां विकसित करें।
- हरित अर्थव्यवस्था: दीर्घकालिक विकास का समर्थन करने के लिए नवीकरणीय ऊर्जा और टिकाऊ प्रथाओं में निवेश करें।
- एमएसएमई पर ध्यान केंद्रित करें: स्थानीय रोजगार सृजित करने के लिए सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों को मजबूत करें।
- कौशल पहल: उभरते वैश्विक अवसरों के लिए युवाओं को प्रशिक्षित करें और कार्यबल में कौशल बेमेल को संबोधित करें।

निष्कर्ष:

भारत की आर्थिक प्रगति मजबूत नीतियों और वैश्विक एकीकरण द्वारा संचालित महत्वपूर्ण प्रगति को उजागर करती है। हालांकि, समावेशी विकास को बनाए रखने और 2047 तक 30 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए असमानता और बेरोजगारी जैसी सीमाओं को संबोधित करना आवश्यक है।

न्यूनतम समर्थन मूल्य**संदर्भ:**

किसान नेता जगजीत सिंह दल्लेवाल का अनिश्चितकालीन अनशन अपने 43वें दिन में प्रवेश कर गया, क्योंकि कृषि पर संसदीय स्थायी समिति ने "कानूनी रूप से बाध्यकारी" एमएसपी की सिफारिश की है।

MSP क्या है?

- परिभाषा: एमएसपी वह मूल्य है जिस पर सरकार किसानों से फसल खरीदती है ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि उन्हें नुकसान न हो।



- द्वारा स्थापित: कृषि मंत्रालय के तहत कृषि लागत और मूल्य आयोग (सीएसीपी) द्वारा अनुशंसित, आर्थिक मामलों की कैबिनेट समिति (सीसीईए) द्वारा अंतिम अनुमोदन।
- कवर की गई फसलें: एमएसपी 23 फसलों के लिए घोषित की जाती है, जिसमें अनाज, दालें, तिलहन और कपास और जूट जैसी वाणिज्यिक फसलें शामिल हैं।
- उद्देश्य: किसानों को मूल्य में उतार-चढ़ाव से बचाना, आय स्थिरता प्रदान करना और कृषि विकास सुनिश्चित करना।

किसानों के लिए एमएसपी की आवश्यकता:

- आय स्थिरता: एमएसपी किसानों को अधिक उत्पादन या कम मांग के कारण बाजार मूल्य में गिरावट के कारण होने वाले नुकसान से बचाता है।
उदाहरण के लिए, 2024 में राजस्थान में मूंग की कीमतें ₹6,467 प्रति विंटल थीं, जो ₹8,682 के एमएसपी से काफी कम थीं (इंडियन एक्सप्रेस)।
- असमान बाजार गतिशीलता: व्यापारियों की तुलना में किसानों के पास सौदेबाजी की शक्ति की कमी है, जिससे कम कीमत वसूली जाती है।
उदाहरण के लिए, CACP डेटा से पता चलता है कि 80% से अधिक किसान स्थानीय बाजारों पर निर्भर हैं, जहाँ कीमतें अक्सर MSP से नीचे होती हैं।
- उत्पादन की लागत: बढ़ती इनपुट लागत और स्थिर पैदावार के कारण लाभप्रदता सुनिश्चित करने के लिए MSP की आवश्यकता होती है।
उदाहरण के लिए, 2020 और 2024 के बीच उर्वरक और डीजल की कीमतों में 15-20% की वृद्धि हुई (कृषि मंत्रालय)।
- ग्रामीण गरीबी को संबोधित करना: 86% किसान छोटे किसान हैं, MSP संकटकालीन बिक्री को रोकता है, जिससे स्थायी आजीविका सुनिश्चित होती है।

MSP को वैध बनाने की व्यवहार्यता:

- उच्च राजकोषीय लागत: सभी एमएसपी फसलों की खरीद पर सालाना 7.5 लाख करोड़ रुपये खर्च हो सकते हैं, जो केंद्रीय बजट का 17% हिस्सा ले लेगा, जिससे अन्य विकासात्मक पहलों के लिए संसाधन सीमित हो जाएंगे।
- प्रत्यक्ष मुआवजा मॉडल: मूल्य अंतर के लिए मुआवजा तंत्र को लागू करने के लिए सालाना 30,000-50,000 करोड़ रुपये की आवश्यकता होगी, जो वित्तीय रूप से अधिक व्यवहार्य है।
- बाजार हस्तक्षेप: APMC नीलामी में न्यूनतम मूल्य स्थापित करने से बाजार की कीमतें स्थिर हो सकती हैं और सरकारी खरीद पर बोझ कम हो सकता है।
- निजी क्षेत्र की भूमिका: निजी खरीदारों को एमएसपी पर या उससे अधिक पर खरीद सुनिश्चित करने के लिए अनिवार्य करना वित्तीय जिम्मेदारी को हितधारकों में वितरित कर सकता है, जिससे राजकोष पर बोझ कम हो सकता है।
- घाटा भुगतान योजना: बाजार मूल्य और एमएसपी के बीच के अंतर के लिए किसानों को मुआवजा देने से सभी फसलों की प्रत्यक्ष खरीद की आवश्यकता के बिना मूल्य आश्वासन सुनिश्चित हो सकता है।

MSP को वैध बनाने की सीमाएँ:

- बजटीय तनाव: एमएसपी के लिए बजट का 17% आवंटित करने से राजकोषीय संसाधनों पर दबाव पड़ेगा, जिससे स्वास्थ्य, शिक्षा और बुनियादी ढाँचे में निवेश प्रभावित होगा।
- बाजार में व्यवधान: एमएसपी लागू करने से निजी क्षेत्र की भागीदारी कम हो सकती है, जिससे कृषि बाजारों में दक्षता और प्रतिस्पर्धा कम हो सकती है।
- प्रशासनिक चुनौतियाँ: विभिन्न फसलों के लाखों किसानों के लिए एमएसपी लेन-देन की निगरानी और कार्यान्वयन के लिए महत्वपूर्ण बुनियादी ढाँचे और मानव संसाधनों की आवश्यकता होगी।
- क्षेत्रीय असमानता: वर्तमान एमएसपी खरीद पंजाब, हरियाणा और यूपी जैसे राज्यों को अनुपातहीन रूप से लाभ पहुँचाती है, जिससे कम विकसित क्षेत्रों के किसान हाशिए पर चले जाते हैं।
- अधिक उत्पादन का जोखिम: गारंटीकृत एमएसपी से कुछ फसलों की अधिक खेती हो सकती है, जिससे पर्यावरण क्षरण और पानी की कमी जैसी समस्याएँ बढ़ सकती हैं।

आगे की राह:

- लक्षित खरीद: समावेशिता सुनिश्चित करने के लिए दालों, तिलहन और बाजरा तक एमएसपी समर्थित खरीद का विस्तार करें।
- एफपीओ को मजबूत बनाना: सामूहिक सौदेबाजी और बाजार तक पहुंच के लिए किसान उत्पादक संगठनों को सशक्त बनाना।
- डिजिटल प्लेटफॉर्म: पारदर्शी मूल्य निर्धारण और कुशल निगरानी के लिए ई-एनएएम और ब्लॉकचेन का उपयोग करना।
- बाजार सुधार: एपीएमसी की दक्षता बढ़ाना और कीमतों को स्थिर करने के लिए वैश्विक बाजारों के साथ एकीकरण करना।
- जागरूकता अभियान: किसानों को एमएसपी तंत्र और कृषि प्रसंस्करण जैसे वैकल्पिक आय स्रोतों के बारे में शिक्षित करना।

निष्कर्ष:

कानूनी रूप से बाध्यकारी एमएसपी किसानों की आय असुरक्षा को दूर कर सकता है, लेकिन इसके लिए राजकोषीय विवेक, बाजार दक्षता और समावेशिता को संतुलित करने की आवश्यकता है। प्रौद्योगिकी, लक्षित हस्तक्षेप और हितधारक सहयोग का लाभ उठाकर भारत के लिए एक स्थायी कृषि भविष्य सुनिश्चित किया जा सकता है।

आर्थिक सर्वेक्षण नवीनतम समाचार

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा संसद में प्रस्तुत आर्थिक सर्वेक्षण 2024-25 में विनियमन, रणनीतिक निवेश, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), जलवायु अनुकूलन और समावेशी नीतियों को आर्थिक विकास के प्रमुख स्तंभों के रूप में रेखांकित किया गया है। रिपोर्ट में भारत की अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाने के लिए निजी क्षेत्र के नेतृत्व वाले नवाचार, व्यापार करने में आसानी और नियामक मानसिकता में बदलाव की आवश्यकता पर जोर दिया गया है।

विकास प्रोत्साहन के रूप में विनियमन

सर्वेक्षण "विनियमन प्रोत्साहन" की वकालत करता है, जिसमें सरकार से नौकरशाही लालफीताशाही को कम करने और व्यवसायों को नवाचार पर ध्यान केंद्रित करने की अनुमति देने का आग्रह किया गया है।

इसमें निम्न की मांग की गई है:

- "निर्दोष साबित होने तक दोषी" नियामक दृष्टिकोण से हटकर विश्वास-आधारित प्रणाली की ओर बढ़ना।
- नीतियों को अधिक पारदर्शी और सुलभ बनाने के लिए सरल बनाना।
- अत्यधिक अनुपालन बोझ के बिना व्यवसायों को आगे बढ़ने में सक्षम बनाना।
- सर्वेक्षण में भविष्यवाणी की गई है कि विनियमन-संचालित आर्थिक वातावरण भारत के जनसांख्यिकीय लाभांश को अनलॉक करने और अगले दो दशकों में विकास को बनाए रखने में मदद करेगा।

आर्थिक प्रतिस्पर्धा के लिए रणनीतिक निवेश को बढ़ावा देना

- वैश्विक व्यापार वृद्धि में मंटी के साथ, सर्वेक्षण भारत की आर्थिक गति को बनाए रखने के लिए घरेलू और विदेशी निवेश पर जोर देता है।

यह इस बात पर प्रकाश डालता है:

- घरेलू आपूर्ति श्रृंखलाओं को मजबूत करने के लिए निजी क्षेत्र के निवेश को प्रोत्साहित करना।
- प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाने के लिए विदेशी पूंजी को आकर्षित करना।
- दीर्घकालिक विकास का समर्थन करने के लिए बुनियादी ढाँचे और औद्योगिक पारिस्थितिकी तंत्र का विकास करना।
- सर्वेक्षण इस बात पर जोर देता है कि आने वाले वर्षों में घरेलू विकास लीवर बाहरी व्यापार की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।

जलवायु परिवर्तन: शमन पर अनुकूलन पर ध्यान दें

- सर्वेक्षण के अनुसार, भारत की ऊर्जा संक्रमण रणनीति को केवल उत्सर्जन में कमी के बजाय अनुकूलन को प्राथमिकता देनी चाहिए। प्रमुख सिफारिशों में शामिल हैं:
- आर्थिक और पर्यावरणीय स्थिरता को संतुलित करते हुए ऊर्जा स्रोतों में विविधता लाना।
- निजी इलेक्ट्रिक मोबिलिटी के लिए एक कुशल विकल्प के रूप में सार्वजनिक परिवहन का विस्तार करना।
- ऊर्जा सुरक्षा के लिए आयातित संसाधनों पर अत्यधिक निर्भरता से बचना।
- भारत के विशाल भूगोल और संसाधन की कमी के कारण, सर्वेक्षण का तर्क है कि स्थानीय अनुकूलन रणनीतियाँ वैश्विक जलवायु नीतियों की तुलना में अधिक प्रभावी होंगी।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता: भारत के तकनीकी नवाचार को बढ़ावा देना

AI की क्षमता को पहचानते हुए, सर्वेक्षण सुझाव देता है:

- शीर्ष शैक्षणिक संस्थानों में AI उत्कृष्टता केंद्र (CoE) स्थापित करना।
- AI अनुसंधान और निजी क्षेत्र के नवाचार का समर्थन करने के लिए ₹1 लाख करोड़ का वित्तपोषण कोष बनाना।
- यह स्वीकार करना कि भारत जैसी श्रम-प्रधान अर्थव्यवस्था के लिए AI एक सार्वभौमिक समाधान नहीं हो सकता है।
- सर्वेक्षण AI अपनाने के लिए एक संतुलित दृष्टिकोण को बढ़ावा देता है, जो आर्थिक लाभ के लिए स्वचालन का लाभ उठाते हुए रोजगार संरक्षण सुनिश्चित करता है।

स्वास्थ्य और पोषण: प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों की खपत से निपटना

- रिपोर्ट भारतीय युवाओं के बीच अल्ट्रा-प्रोसेस्ड खाद्य पदार्थों (वसा, नमक और चीनी में उच्च - HFSS) की बढ़ती खपत के बारे में चिंता जताती है।

यह अनुशंसा करता है:

- उपभोक्ताओं को सूचित करने के लिए सख्त फ्रंट-ऑफ-पैक लेबलिंग।

- खाद्य मानकों में स्व-नियमन पर सरकारी विनियमन।
- स्वस्थ खान-पान की आदतों और शारीरिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए नीतियाँ।
- सर्वेक्षण इस बात पर जोर देता है कि स्वस्थ कार्यबल सुनिश्चित करने के लिए सार्वजनिक स्वास्थ्य नीतियों को आर्थिक विकास रणनीतियों के साथ संरेखित किया जाना चाहिए।

समावेशी विकास: महिलाएँ, किसान और युवा सशक्तीकरण

- समावेशी विकास के लिए, सर्वेक्षण में निम्नलिखित पर प्रकाश डाला गया है:
- महिलाओं की भागीदारी: श्रम शक्ति भागीदारी बढ़ाने के लिए कानूनी और नियामक बाधाओं को हटाना।
- किसानों का कल्याण: आय वृद्धि और कृषि आधुनिकीकरण का समर्थन करना।
- युवा विकास: शिक्षा, कौशल निर्माण और मानसिक स्वास्थ्य में निवेश करना।
- गरीबी में कमी: लक्षित कल्याण कार्यक्रमों के माध्यम से आर्थिक समावेशन को आगे बढ़ाना।
- सर्वेक्षण समावेशी भागीदारी को प्रभावी आर्थिक नीतियों का लिटमस टेस्ट कहता है।

औद्योगिक विकास और व्यापार करने में आसानी

- सर्वेक्षण औद्योगिक गतिविधि और व्यापार-अनुकूल नीतियों के बीच एक सीधा संबंध पहचानता है। यह नोट करता है:
- उच्च "व्यापार करने में आसानी" स्कोर वाले राज्यों में औद्योगिक विकास अधिक मजबूत है।
- महत्वाकांक्षी राज्यों को निवेश आकर्षित करने के लिए औद्योगिक नीतियों में सुधार करना चाहिए।
- एयर-कंडीशनर विनिर्माण जैसे क्षेत्रों में उत्पादन-लिंक प्रोत्साहन (पीएलआई) योजना की सफलता सरकारी हस्तक्षेप के प्रभाव को साबित करती है।
- सर्वेक्षण में अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्रों में पीएलआई प्रोत्साहनों का विस्तार करने का सुझाव दिया गया है।

बाहरी व्यापार और आर्थिक चुनौतियाँ

- सर्वेक्षण में संभावित व्यापार प्रतिबंधों की चेतावनी दी गई है जो भारत के निर्यात विकास को प्रभावित कर सकते हैं। प्रमुख जोखिमों में शामिल हैं:
- वैश्विक संरक्षणवाद का बढ़ना जो बाजार पहुंच को प्रभावित कर रहा है।
- आयात निर्भरता के कारण चालू खाता घाटा बढ़ रहा है।
- भू-राजनीतिक अनिश्चितताएं व्यापार समझौतों को प्रभावित कर रही हैं।
- इन जोखिमों को कम करने के लिए, भारत को रणनीतिक क्षेत्रों में आत्मनिर्भरता और घरेलू खपत बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

अर्थव्यवस्था की स्थिति

- सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी): आर्थिक सर्वेक्षण ने 2025-26 में वास्तविक जीडीपी वृद्धि 6.3% से 6.8% के बीच रहने का अनुमान लगाया है। 2024-25 में, भारत की वास्तविक जीडीपी में 6.4% की वृद्धि होने का अनुमान है। 2047 तक विकसित राष्ट्र बनने के लिए, भारत को कम से कम एक दशक तक हर साल लगभग 8% की निरंतर आर्थिक वृद्धि की आवश्यकता होगी। निरंतर निवेश, उपभोक्ता विश्वास में सुधार और कॉर्पोरेट वेतन में वृद्धि विकास को समर्थन देने के लिए महत्वपूर्ण होगी। ग्रामीण मांग और खाद्य मुद्रास्फीति में अनुमानित कमी से निकट अवधि में वृद्धि को बढ़ावा मिलने की उम्मीद है। विकास के लिए जोखिमों में संभावित कमोडिटी मूल्य झटके और ऊंचा व्यापार और भू-राजनीतिक अनिश्चितताएं शामिल हैं। मध्यम अवधि की विकास क्षमता को मजबूत करने के लिए, भारत को संरचनात्मक सुधारों और विनियमन के माध्यम से अपनी वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता में सुधार करने की आवश्यकता होगी।
- मुद्रास्फीति: खुदरा मुद्रास्फीति 2023-24 में 5.4% से घटकर 2024-25 (अप्रैल-दिसंबर) में 4.9% हो गई। इनपुट कीमतों में कमी के कारण ऐसा हुआ है। भारत की खाद्य मुद्रास्फीति स्थिर बनी हुई है, जो स्थिर या घटती खाद्य मुद्रास्फीति के वैश्विक रुझानों के अनुरूप नहीं है। खाद्य मुद्रास्फीति 2023-24 में 7.5% से बढ़कर 2024-25 (अप्रैल-दिसंबर) में 8.4% हो गई, जो मुख्य रूप से सब्जियों और दालों जैसी वस्तुओं से प्रेरित है। इसका कारण आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान और कुछ खाद्य पदार्थों की कम फसल हो सकती है। खाद्यान्नों की तुलना में सब्जियां असमान मौसम के प्रति अधिक संवेदनशील होती हैं।

दीर्घकालिक मूल्य स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए कुछ उपायों में शामिल हैं:

- जलवायु-लचीली फसल किस्मों का विकास करना,
- किसानों को सर्वोत्तम प्रथाओं और उच्च उपज और रोग प्रतिरोधी बीजों के उपयोग के बारे में प्रशिक्षण देना, और
- कीमतों और स्टॉक की निगरानी के लिए मजबूत डेटा संग्रह और विश्लेषण।

सर्वेक्षण में कहा गया है कि आयातित वस्तुओं की घटती कीमतें भारत की घरेलू मुद्रास्फीति के लिए अनुकूल हैं।

- चालू खाता शेष: 2024-25 की दूसरी तिमाही में भारत का चालू खाता घाटा (CAD) सकल घरेलू उत्पाद का 1.2% था, जबकि 2023-24 की इसी तिमाही में यह सकल घरेलू उत्पाद का 1.3% था। CAD में हालिया वृद्धि का श्रेय व्यापारिक व्यापार घाटे में वृद्धि को दिया जा सकता है। यह घाटा 2023-24 की इसी तिमाही के 65 बिलियन अमरीकी डॉलर से बढ़कर 2024-25 की दूसरी तिमाही में 75 बिलियन अमरीकी डॉलर हो गया। शुद्ध सेवा प्राप्ति और निजी हस्तांतरण में वृद्धि से इसकी भरपाई हुई। सर्वेक्षण में कहा गया है कि ब्राजील और ऑस्ट्रेलिया जैसे अन्य देशों की तुलना में भारत का CAD अपेक्षाकृत नियंत्रित रहा है। प्रतिस्पर्धी बने रहने और वैश्विक आपूर्ति

श्रृंखलाओं में भागीदारी में सुधार करने के लिए, भारत को व्यापार लागत को कम करना और निर्यात प्रतिस्पर्धात्मकता में सुधार करना जारी रखना चाहिए।

- सार्वजनिक वित्त: राजकोषीय अनुशासन के केंद्र सरकार के संकेतकों में उत्तरोत्तर सुधार हुआ है। केंद्र सरकार के कुल व्यय में पूंजीगत व्यय की हिस्सेदारी 2020-21 से सुधरी है और 2023-24 में 21% थी। सर्वेक्षण में कहा गया है कि पिछले चार वर्षों में राजकोषीय प्रबंधन ने समग्र बचत-निवेश अंतर को बढ़ाने से रोका है। इसने घरेलू बचत में कमी के बावजूद CAD का आरामदायक वित्तपोषण सुनिश्चित किया है।

कृषि और संबद्ध गतिविधियाँ

- कृषि क्षेत्र ने 2016-17 और 2022-23 के बीच 5% की वार्षिक औसत वृद्धि दर दर्ज की है। 2024-25 की दूसरी तिमाही में इस क्षेत्र में 3.5% की वृद्धि हुई। इस क्षेत्र में निरंतर वृद्धि को लाभकारी कीमतों, संस्थागत ऋण तक बेहतर पहुँच, उत्पादकता में वृद्धि और फसल विविधीकरण द्वारा समर्थित किया गया है। पिछले एक दशक में कृषि आय में 5.2% की वार्षिक वृद्धि हुई है, जबकि गैर-कृषि आय में 6.2% की वृद्धि हुई है।
- भारत में फसल की पैदावार अन्य देशों की तुलना में काफी कम है। यह उत्पादकता में सुधार की आवश्यकता को उजागर करता है। फसल उत्पादकता खेत पर और कटाई के बाद की इनपुट से जुड़ी है, जिसमें गुणवत्तापूर्ण बीजों तक पहुँच, बेहतर सिंचाई सुविधाएँ और मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार शामिल हैं।
- पशुपालन, डेयरी और मत्स्य पालन जैसे संबद्ध क्षेत्रों का बढ़ता महत्व इस क्षेत्र में विविधीकरण के महत्व को रेखांकित करता है। इन क्षेत्रों में निवेश करके, किसान अतिरिक्त राजस्व धाराएँ बना सकते हैं जो पारंपरिक फसल उत्पादन में अस्थिरता के विरुद्ध बफर के रूप में कार्य कर सकती हैं। इस क्षेत्र के लिए चुनौतियों में जलवायु परिवर्तन और पानी की कमी शामिल हैं।

उद्योग

- बिजली और निर्माण क्षेत्रों में मजबूत वृद्धि के कारण 2024-25 में औद्योगिक क्षेत्र में 6.2% की वृद्धि हुई। 2024-25 की दूसरी तिमाही में औद्योगिक विकास में 3.6% की गिरावट आई, जिसके कारण निम्नलिखित कारक हैं:
 - तीव्र व्यापार प्रतिस्पर्धा और प्रमुख व्यापारिक देशों की औद्योगिक नीतियों के कारण विनिर्माण निर्यात में मंदी
 - मानसून का अभूतपूर्व स्तर जिसने खनन और निर्माण जैसी गतिविधियों को धीमा कर दिया।
- गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक और तमिलनाडु कुल औद्योगिक सकल राज्य मूल्य वर्धन का लगभग 43% हिस्सा हैं। दूसरी ओर, छह पूर्वोत्तर राज्य (सिक्किम और असम को छोड़कर) औद्योगिक सकल मूल्य वर्धन का केवल 0.7% हिस्सा हैं। सर्वेक्षण में कहा गया है कि पूर्वोत्तर क्षेत्र जैसे अद्वितीय भौगोलिक क्षेत्रों के लिए औद्योगिक रणनीतियों पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है। राज्यों को व्यवसाय संचालन शुरू करना और बढ़ाना आसान बनाना चाहिए।
- भारत अनुसंधान एवं विकास (आरएंडडी) में पिछड़ा हुआ है और प्रमुख क्षेत्रों में काफी अंतर है। आरएंडडी पर वर्तमान व्यय जीडीपी का केवल 0.64% है जो अपर्याप्त है और कई देशों की तुलना में कम है। सर्वेक्षण में उद्योग-अकादमिक सहयोग को बढ़ावा देने, निजी क्षेत्र की भागीदारी बढ़ाने और अनुपयुक्त अनुसंधान को प्राथमिकता देने की सिफारिश की गई है।

सेवा क्षेत्र

- सेवा क्षेत्र 2022-23 और 2024-25 के बीच औसतन 8.3% की दर से बढ़ा है। कुल सकल मूल्य वर्धन में इसका योगदान 2013-14 में 51% से बढ़कर 2024-25 में लगभग 55% हो गया है। 2024-25 में अब तक, सेवा क्षेत्र ने सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि का समर्थन किया है, जब विनिर्माण वैश्विक व्यापारिक व्यापार में मंदी से प्रभावित हुआ है।
- सर्वेक्षण में कहा गया है कि क्षेत्रीय विकास के लिए श्रम शक्ति के उचित कौशल की आवश्यकता है। इसके लिए सरकार, निजी क्षेत्र और कौशल संस्थानों के सभी स्तरों पर प्रयासों की आवश्यकता है। इसके अलावा, जमीनी स्तर पर जटिल प्रक्रियाओं, विनियमों और नियमों की समीक्षा और संशोधन करने की आवश्यकता है जो इस क्षेत्र के विकास में बाधा डालते हैं।

बुनियादी ढांचा

- विकास लक्ष्यों को पूरा करने के लिए भारत के मौजूदा बुनियादी ढांचे के खर्च को बढ़ाने की जरूरत है। प्रमुख बुनियादी ढांचा क्षेत्रों पर केंद्र सरकार द्वारा पूंजीगत व्यय 2019-20 से 2023-24 तक 39% की दर से बढ़ा है। राज्यों और सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों के साथ केंद्र सरकार द्वारा किए गए उपायों के बावजूद, बुनियादी ढांचे के विकास के लिए अभी भी एक महत्वपूर्ण अप्राप्ति मांग है। इसे वित्तपोषण के अभिनव तरीकों और अधिक निजी भागीदारी से पूरा करने की आवश्यकता है।
- उच्च विकास दर को बनाए रखने के लिए अगले 20 वर्षों में बुनियादी ढांचे के निवेश में तेजी लाने की आवश्यकता है। इन्हें अकेले सार्वजनिक क्षेत्र द्वारा पूरा नहीं किया जा सकता क्योंकि सरकार के विभिन्न स्तरों पर बजट की बाधयताएँ हैं। कार्यक्रम और परियोजना नियोजन, वित्तपोषण, निर्माण, रखरखाव और मुद्राकरण में निजी भागीदारी में तेजी आनी चाहिए।

रोजगार

- 15 वर्ष और उससे अधिक आयु के व्यक्तियों के लिए वार्षिक बेरोजगारी दर 2017-18 में 6% से घटकर 2023-24 में 3.2% हो गई है। इस सुधार के साथ श्रम बल भागीदारी दर और श्रमिक-से-जनसंख्या अनुपात में वृद्धि हुई है। स्व-नियोजित श्रमिकों का अनुपात 2017-18 में 52% से बढ़कर 2023-24 में 58% हो गया, जो बढ़ती उद्यमशीलता गतिविधि और लचीली कार्य स्थितियों के लिए प्राथमिकता को दर्शाता है। हालांकि, नियमित/वैतनभोगी नौकरियों में श्रमिकों की हिस्सेदारी 23% से घटकर 22% हो गई है।

- श्रम बाजार में लचीलापन बढ़ाने से व्यवसायों के विकास के लिए सक्षम वातावरण तैयार होगा। भारत के श्रम नियम व्यवसायों पर व्यापक अनुपालन आवश्यकताएँ लागू करते हैं। माइक्रोमैनेजिंग नियम अनावश्यक प्रशासनिक बोझ पैदा करते हैं जो व्यवसाय के विकास में बाधा डालते हैं।
- सीखने के परिणामों और रोजगार क्षमता में सुधार पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

सुधार की आवश्यकता हो सकती है:

- बुनियादी भाषा, गणित और विज्ञान दक्षता के लिए स्कूल स्तर पर,
- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग जैसी नई पीढ़ी की तकनीकों के लिए कौशल को शामिल करके उच्च शिक्षा स्तर पर।

विनियमन हटाना

- भारतीय फर्मों में छोटी बनी रहने की प्रवृत्ति है। ऐसा करने से, वे संस्थागत पूंजी, कुशल प्रतिभा और प्रौद्योगिकी संचार तक पहुँच खो देते हैं। विस्तार न करने का कारण विनियामक रडार से बाहर रहना और श्रम और सुरक्षा कानूनों से दूर रहना है। सर्वेक्षण में कहा गया है कि विनियमन हटाना बड़े उद्यमों के बजाय एमएसएमई के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि बाद वाले आमतौर पर अनुपालन के आसपास एक रास्ता खोज लेते हैं। विनियमन व्यवसायों की समय के साथ शुरू करने और बढ़ने की क्षमता को नुकसान पहुँचाते हैं, और परिचालन निर्णयों की लागत बढ़ाते हैं।
- भारतीय फर्म विकास, निवेश और रोजगार सृजन में बाधा डाले बिना लागू विनियमों का पालन नहीं कर सकती हैं। उदाहरण के लिए, निर्यात करने वाली फर्मों के पास ऑर्डर में वृद्धि के साथ महीनों में अधिक श्रम घंटे लगाने की लचीलापन होनी चाहिए। तेज़ आर्थिक विकास के लिए केंद्र और राज्य सरकारों को ऐसे सुधारों को लागू करने की आवश्यकता होगी जो छोटे और मध्यम उद्यमों को कुशलतापूर्वक संचालित करने की अनुमति दें।

विनियमन के लिए क्षेत्रों में शामिल हैं:

- भूमि,
- श्रम,
- परिवहन,
- रसद।

निष्कर्ष: "विकसित भारत 2047" की ओर

आर्थिक सर्वेक्षण 2025 भारत के विकास के लिए एक साहसिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है, जो विनियमन, निवेश-संचालित विस्तार, एआई नवाचार, जलवायु अनुकूलन और समावेशी विकास पर ध्यान केंद्रित करता है।

विश्वास-आधारित कारोबारी माहौल को बढ़ावा देने, निजी क्षेत्र के नेतृत्व वाली वृद्धि को बढ़ावा देने और जलवायु और सामाजिक चुनौतियों का समाधान करने के माध्यम से, भारत का लक्ष्य "विकसित भारत 2047" के अपने रास्ते पर एक प्रतिस्पर्धी और लचीली अर्थव्यवस्था का निर्माण करना है।

देवी अहिल्याबाई होल्कर

संदर्भ:

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (IGNCA) ने लोकमाता अहिल्याबाई त्रिशाताब्दी समारोह समिति के सहयोग से देवी अहिल्याबाई होल्कर की 300वीं जयंती के उपलक्ष्य में 'देवी अहिल्या-महारानी त्यागी' नामक विशेष व्याख्यान का आयोजन किया।

देवी अहिल्याबाई होल्कर के बारे में:

जन्म और प्रारंभिक जीवन:

- जन्म: 31 मई, 1725, महाराष्ट्र के चोंडी गांव में
- परिवार: चोंडी के पाटिल मनकोजी शिंदे की बेटी।
- विवाह: 8 वर्ष की आयु में 1733 में खंडेराव होल्कर से विवाह किया।
- गुरु: अपने असुर मल्हार राव होल्कर से प्रशासन, युद्ध और कूटनीति में प्रशिक्षित।



संबंधित राज्य:

- 1767 से 1795 तक मराठा संघ के भीतर इंदौर के होल्कर राजवंश पर शासन किया।
- होल्कर राजवंश की राजधानी के रूप में महेश्वर (मध्य प्रदेश) की स्थापना की।

इतिहास और सत्ता में उनका उदय:

- 1754: कुंभेर की लड़ाई में पति खंडेराव होल्कर की मृत्यु हो गई।
- 1766: असुर मल्हार राव होल्कर का निधन हो गया।
- 1767: बेटे माले राव होल्कर, जिन्होंने कुछ समय तक शासन किया, की मृत्यु हो गई, जिसके बाद अहिल्याबाई ने सत्ता संभाली।
- न्याय, प्रशासन और कल्याण नीतियों पर ध्यान केंद्रित करते हुए 28 वर्षों तक शासन किया।

उनका शासनकाल और प्रशासन:

सुशासन और लोक कल्याण:

- लोगों की शिकायतों को हल करने के लिए दैनिक सार्वजनिक सुनवाई आयोजित की।
- निष्पक्ष न्याय सुनिश्चित किया, एक बार अपने ही बेटे को मृत्युदंड की सजा सुनाई।
- निःसंतान विधवाओं की संपत्ति जब्त करने वाले कानूनों को हटाया, उनके अधिकारों को सुनिश्चित किया।

आर्थिक और औद्योगिक सुधार:

- महेश्वर में कपड़ा उद्योग की स्थापना की, जो अब महेश्वरी साड़ियों के लिए प्रसिद्ध है।
- वित्तीय स्थिरता बनाए रखते हुए औद्योगीकरण और व्यापार को बढ़ावा दिया।

धार्मिक और सांस्कृतिक योगदान:

- 1780 में काशी विश्वनाथ मंदिर का पुनर्निर्माण और जीर्णोद्धार किया।
- दशाश्वमेध घाट (वाराणसी) सहित पूरे भारत में मंदिरों, घाटों और धर्मशालाओं का निर्माण किया।
- दूर-दराज के मंदिरों में गंगा जल की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित की।

सैन्य योगदान:

- इंदौर को बाहरी आक्रमणों से बचाने के लिए व्यक्तिगत रूप से सैनिकों की कमान संभाली।
- सैन्य सुरक्षा को मजबूत करने के लिए तुकोजी राव होल्कर को सेना प्रमुख नियुक्त किया।
- मालवा की स्थिरता को बनाए रखते हुए हमलों को सफलतापूर्वक विफल किया।

भाषिनी

संदर्भ:

त्रिपुरा, बहुभाषी शासन को बढ़ावा देने और क्षेत्रीय भाषाओं में डिजिटल सेवाओं तक पहुँच को सक्षम करके डिजिटल विभाजन को पाटने के लिए डिजिटल इंडिया पहल, भाषिनी के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करने वाला पहला पूर्वोत्तर राज्य बन गया है।

भाषिनी प्लेटफॉर्म के बारे में:

- यह क्या है: भाषिनी भारत का AI-संचालित भाषा अनुवाद प्लेटफॉर्म है जिसे 22 भारतीय भाषाओं में सहज संचार और इंटरनेट पहुँच की सुविधा के लिए डिज़ाइन किया गया है। यह भाषा की बाधाओं को दूर करने और डिजिटल समावेशिता को बढ़ावा देने के लिए आवाज़-आधारित तकनीक का उपयोग करता है।
- भारत सरकार के इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (MeitY) के तहत डिजिटल इंडिया भाषिनी डिवीजन (DIBD) द्वारा विकसित।
- मंत्रालय: इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (MeitY)।



उद्देश्य:

- भारतीय भाषाओं में डिजिटल सेवाओं तक आसान पहुँच को सक्षम करना।
- बहुभाषी इंटरनेट उपयोग को बढ़ावा देकर डिजिटल और साक्षरता के बीच की खाई को पाटना।
- भारतीय भाषाओं में नवाचार के लिए AI और प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण (NLP) संसाधनों के लिए एक पारिस्थितिकी तंत्र बनाना।

विशेषताएँ:

- वास्तविक समय अनुवाद, भाषण से पाठ, पाठ से भाषण और आवाज़ से आवाज़ अनुवाद।
- CM हेल्पलाइन, ई-विधान और ई-डिस्ट्रिक्ट जैसे सरकारी प्लेटफॉर्म के साथ एकीकरण।
- सार्वजनिक योगदान के लिए क्राउडसोर्सिंग पहल (सुनो इंडिया, लिखो इंडिया, बोलो इंडिया, देखो इंडिया)।
- डेवलपर्स, स्टार्टअप और MSME के लिए ओपन-सोर्स AI और प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण (NLP) संसाधन।
- आसान पहुँच और भागीदारी के लिए मोबाइल ऐप (एंड्रॉइड और iOS)।

उन्नत मूल प्रमाण पत्र (eCoO) 2.0 प्रणाली

संदर्भ:

विदेश व्यापार महानिदेशालय (DGFT) ने उन्नत मूल प्रमाण पत्र (eCoO) 2.0 प्रणाली शुरू की, जो एक डिजिटल प्लेटफॉर्म है जिसका उद्देश्य निर्यात प्रमाणन को सरल बनाना और व्यापार दक्षता को बढ़ावा देना है।



उन्नत eCoO 2.0 प्रणाली के बारे में:**eCoO 2.0 क्या है?**

- eCoO 2.0 प्रणाली मूल प्रमाण पत्र (CoO) जारी करने के लिए एक उन्नत डिजिटल प्लेटफॉर्म है, जो निर्यात किए गए सामानों की उत्पत्ति को प्रमाणित करता है। यह निर्यातकों को तरजीही और गैर-तरजीही दोनों तरह के CoO तक सहज पहुँच प्रदान करता है, जिससे वैश्विक व्यापार अनुपालन सुनिश्चित होता है।
- प्रशासनिक मंत्रालय/विभाग: विदेश व्यापार महानिदेशालय (DGFT), वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार।

eCoO 2.0 के उद्देश्य:

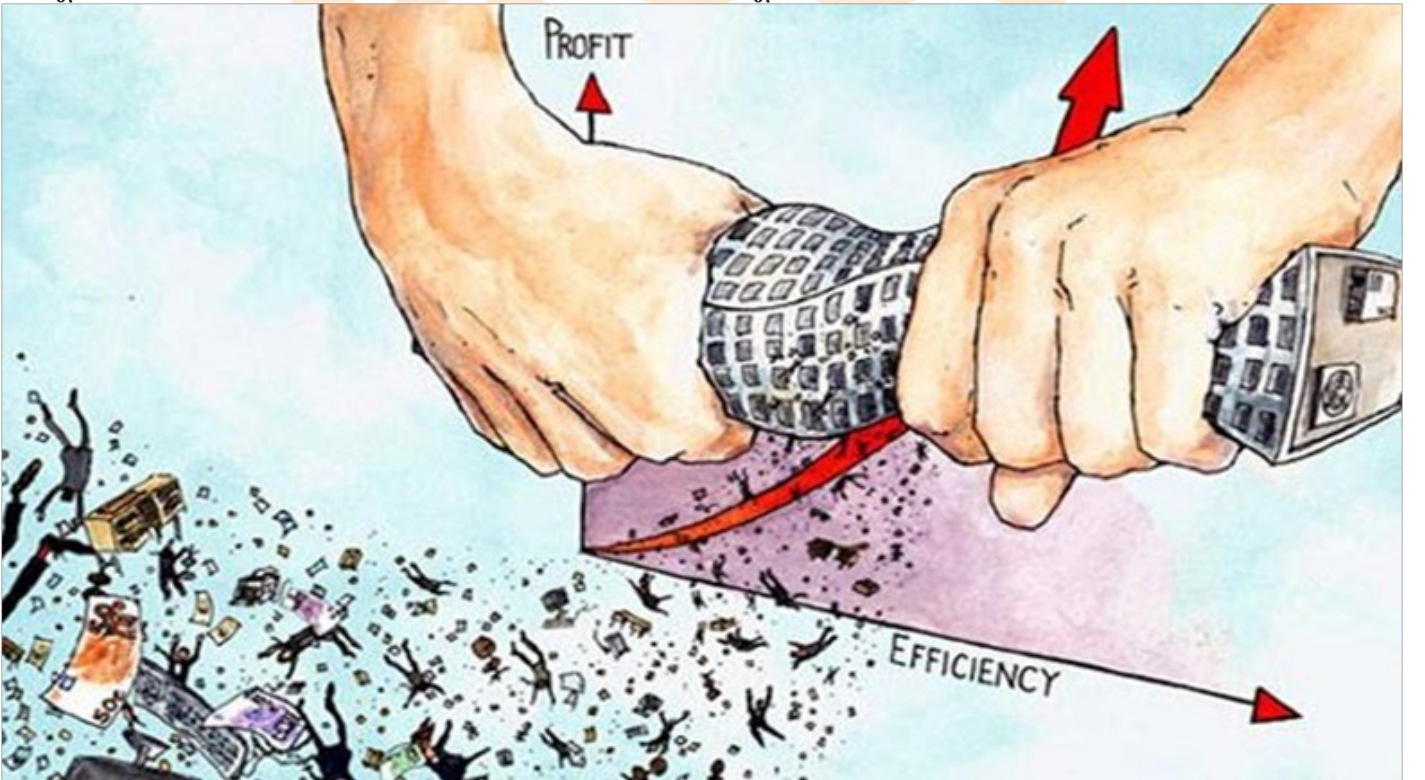
- निर्यात प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करना: निर्यातकों के लिए CoO प्रमाणन प्रक्रिया को सरल बनाना।
- व्यापार दक्षता को बढ़ाना: प्रसंस्करण समय को कम करना और व्यापार दस्तावेज़ीकरण सटीकता में सुधार करना।
- वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं का समर्थन करना: मध्यस्थ और पुनः निर्यात व्यापार के लिए पारदर्शिता प्रदान करना।

eCoO 2.0 की मुख्य विशेषताएं:

- बहु-उपयोगकर्ता पहुँच: निर्यातकों को एक ही आयातक निर्यातक कोड (IEC) के तहत कई उपयोगकर्ताओं को अधिकृत करने की अनुमति देता है।
- आधार-आधारित ई-हस्ताक्षर: दस्तावेज़ प्रमाणीकरण के लिए डिजिटल हस्ताक्षर टोकन के साथ लचीलापन जोड़ता है।
- बैंक-टू-बैंक सर्टिफिकेट ऑफ ओरिजिन: सत्यापित दस्तावेज़ों के आधार पर गैर-भारतीय मूल के सामानों के लिए पुनः निर्यात और ट्रांसशिपमेंट प्रमाणपत्र सक्षम करता है।
- अनिवार्य इलेक्ट्रॉनिक फाइलिंग: गैर-तरजीही सीओओ अब 1 जनवरी 2025 से अनिवार्य रूप से ऑनलाइन संसाधित किए जाते हैं।
- इन-लियू सर्टिफिकेट ऑफ ओरिजिन: एक आसान ऑनलाइन आवेदन के माध्यम से पहले जारी किए गए सीओओ के लिए सुधार विकल्प प्रदान करता है।

बाहरी वाणिज्यिक उधार**संदर्भ:**

भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) की एक हालिया रिपोर्ट में निजी क्षेत्र के निवेश के बढ़ते योगदान और कॉर्पोरेट वित्तपोषण, आधुनिकीकरण और पूंजी विस्तार को आगे बढ़ाने में बाहरी वाणिज्यिक उधार (ईसीबी) की भूमिका पर प्रकाश डाला गया है।



- बाहरी वाणिज्यिक उधार (ईसीबी) क्या है? बाह्य वाणिज्यिक उधार (ईसीबी) का तात्पर्य भारतीय संस्थाओं द्वारा वाणिज्यिक बैंकों, निर्यात ऋण एजेंसियों और अंतर्राष्ट्रीय बाजारों सहित विदेशी स्रोतों से जुटाए गए ऋण या धन से है। ईसीबी का उपयोग आम तौर पर पूंजी विस्तार, आधुनिकीकरण और बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के लिए किया जाता है और यह भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के दिशा-निर्देशों द्वारा शासित होते हैं।

पैरामीटर डेटा

कुल बकाया ईसीबी	\$190.4 बिलियन (सितंबर 2024 तक)
निजी क्षेत्र का हिस्सा	63% (\$97.58 बिलियन)
सार्वजनिक क्षेत्र का हिस्सा	37% (\$55.5 बिलियन)
हेजिंग (निजी क्षेत्र)	हेज्ड कॉर्पस का 74%
पंजीकृत ईसीबी (अप्रैल-नवंबर 2024)	\$33.8 बिलियन
ईसीबी लागत में कमी	6.6% (अप्रैल-नवंबर 2024 औसत)
	5.8% (नवंबर 2024)

ईसीबी की आवश्यकता और महत्व:

- पूंजी विस्तार: ईसीबी बुनियादी ढांचे और औद्योगिक विकास को वित्तपोषित करने के लिए दीर्घकालिक वित्तपोषण प्रदान करते हैं।
- लागत प्रभावी वित्तपोषण: ईसीबी घरेलू ऋणों की तुलना में प्रतिस्पर्धी ब्याज दरों की पेशकश करते हैं, जिससे उधार लेने की लागत कम हो जाती है।
- पूंजीगत वस्तुओं का आधुनिकीकरण और आयात: कॉर्पोरेट संचालन को आधुनिक बनाने और उन्नत मशीनरी आयात करने के लिए ईसीबी का उपयोग करते हैं।
- विदेशी मुद्रा तक पहुँच: ईसीबी भारतीय फर्मों को विदेशी मुद्रा तक पहुँच प्रदान करते हैं, जिससे व्यापार और अंतर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा में मदद मिलती है।
- निजी क्षेत्र का विकास: 63% ईसीबी निजी कंपनियों के हैं, जो निजी क्षेत्र के विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

ईसीबी की चुनौतियाँ और सीमाएँ:

- विनिमय दर जोखिम: ईसीबी उधारकर्ताओं को मुद्रा में उतार-चढ़ाव के प्रति संवेदनशील बनाते हैं, जिससे अस्थिर बाजारों में पुनर्भुगतान लागत बढ़ जाती है।
- उच्च हेजिंग लागत: विनिमय दर जोखिम को कम करने के लिए हेजिंग अक्सर उधार लेने की लागत को बढ़ा देती है।
- वैश्विक बाजार पर निर्भरता: ईसीबी भारतीय कॉर्पोरेट्स को वैश्विक वित्तीय स्थितियों पर निर्भर बनाते हैं, जो अप्रत्याशित हो सकती हैं।
- अधिक उधार लेने की संभावना: ईसीबी के कुप्रबंधन से कॉर्पोरेट ऋण बढ़ सकता है, जिससे वित्तीय स्थिरता प्रभावित हो सकती है।
- नीति प्रतिबंध: विनियामक सीमाएँ निधि उपयोग में लचीलेपन में बाधा डाल सकती हैं।

आगे की राह:

- नीति में सुधार: उत्पादक क्षेत्रों के लिए रणनीतिक उधारी को प्रोत्साहित करने के लिए ईसीबी विनियमों को सरल बनाना।
- हेजिंग पर ध्यान केंद्रित करना: विनिमय दर जोखिमों को कम करने के लिए किफायती और सुलभ हेजिंग तंत्र को बढ़ावा देना।
- सतत उधारी: सुनिश्चित करें कि ईसीबी का उपयोग दीर्घकालिक बुनियादी ढाँचे और आधुनिकीकरण परियोजनाओं के लिए किया जाए ताकि अस्थिर ऋण से बचा जा सके।
- बेहतर निगरानी: निधियों के कुप्रबंधन और अति-लीवरेजिंग को रोकने के लिए निगरानी तंत्र को मजबूत बनाना।

निष्कर्ष:

ईसीबी भारत के औद्योगिक और अवसंरचना विकास के वित्तपोषण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहे हैं। जबकि विनिमय दर जोखिम जैसी चुनौतियाँ बनी हुई हैं, ठोस नीतियों और विवेकपूर्ण उधार प्रथाओं के साथ, ईसीबी भारत के आर्थिक विकास के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण बने रह सकते हैं।

राजकोषीय स्वास्थ्य सूचकांक (एफएचआई) 2025

संदर्भ:

नीति आयोग द्वारा शुरू किया गया राजकोषीय स्वास्थ्य सूचकांक (एफएचआई) 2025 18 प्रमुख भारतीय राज्यों के राजकोषीय स्वास्थ्य का गहन विश्लेषण प्रदान करता है।



वित्तीय स्वास्थ्य सूचकांक 2025 के बारे में:

- नीति आयोग द्वारा विकसित, नियंत्रक और महालेखा परीक्षक (सीएजी) से प्राप्त डेटा के साथ।
- आधार वर्ष: 2022-23 वित्तीय डेटा रैंकिंग और विश्लेषण के लिए संदर्भ वर्ष है।
- उद्देश्य: वित्तीय स्वास्थ्य का मूल्यांकन करना, अंतरराज्यीय असमानताओं को उजागर करना और वित्तीय प्रदर्शन और शासन में सुधार के लिए लक्षित हस्तक्षेपों को प्रोत्साहित करना।
- उपयोग किए गए मानदंड: एफएचआई पांच उप-सूचकांकों के आधार पर राज्यों का मूल्यांकन करता है:
- व्यय की गुणवत्ता: पूंजी और सामाजिक क्षेत्र के खर्च में दक्षता।
- राजस्व जुटाना: करों और अन्य स्रोतों से राजस्व उत्पन्न करने की राज्यों की क्षमता।
- राजकोषीय विवेक: राजकोषीय घाटे के लक्ष्यों और वित्तीय प्रबंधन का पालन।
- ऋण सूचकांक: राज्यों का कुल ऋण बोझ।
- ऋण स्थिरता: ऋण-से-जीएसडीपी अनुपात और राजस्व पर ब्याज का बोझ।

मुख्य विशेषताएं:

- 2014-15 से 2022-23 तक के राजकोषीय रुझानों को ट्रैक करता है।
- भारत की अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाने वाले 18 प्रमुख राज्यों पर ध्यान केंद्रित करता है।
- नीतिगत हस्तक्षेपों के लिए राज्य-विशिष्ट अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।
- स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देने के लिए शीर्ष उपलब्धि और आकांक्षी राज्यों पर प्रकाश डालता है।
- 2047 तक भारत के विकासशील भारत के विजन के साथ संरेखित।

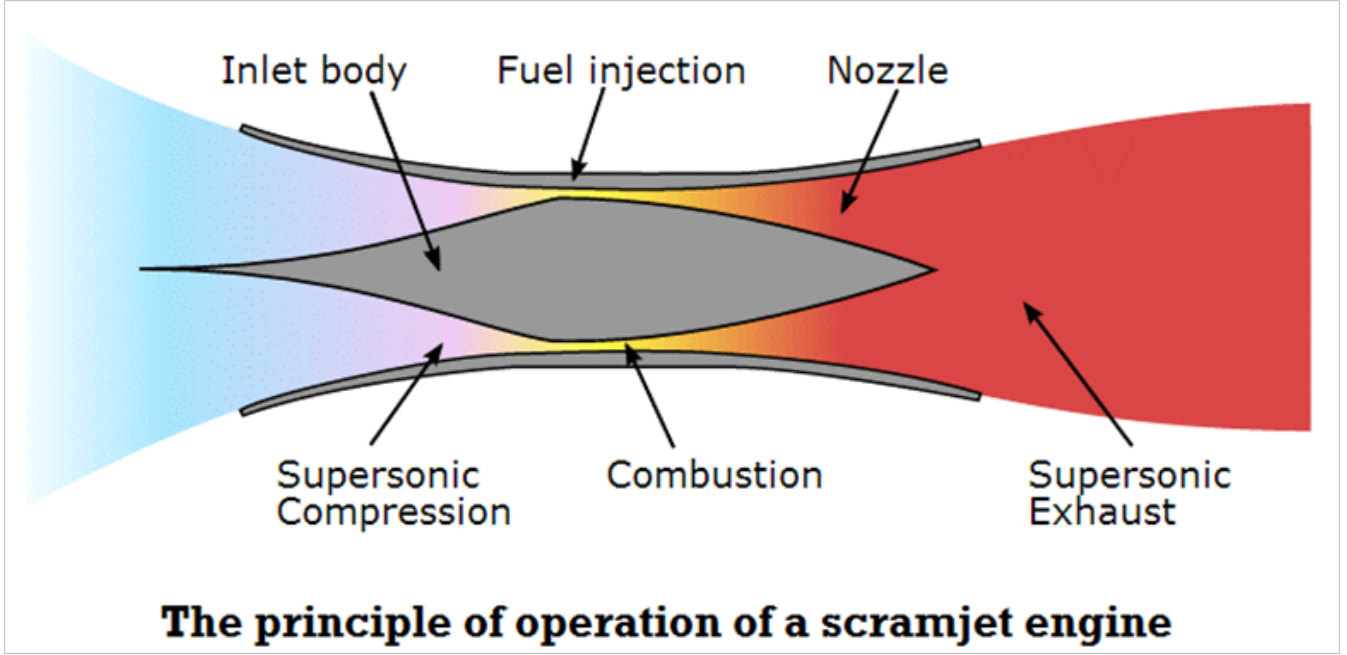
शीर्ष 3 अचीवर्स (2022-23):

रैंक	राज्य	श्रेणी	FHI स्कोर
1	ओडिशा	अचीवर्स	67.8
2	छत्तीसगढ़	अचीवर्स	55.2
3	गोवा	अचीवर्स	53.6

सुपरसोनिक कम्बशन रैमजेट (स्क्रेमजेट) इंजन

संदर्भ:

भारत ने हाइपरसोनिक तकनीक में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है, जब रक्षा अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशाला (DRDL) ने सुपरसोनिक कम्बशन रैमजेट (स्क्रेमजेट) इंजन का 120 सेकंड का ग्राउंड टेस्ट सफलतापूर्वक किया।



सुपरसोनिक कम्बर्शन रैमजेट (स्क्रेमजेट) के बारे में:

स्क्रेमजेट तकनीक क्या है?

- स्क्रेमजेट एक एयर-ब्रीदिंग इंजन है जिसे सुपरसोनिक गति पर दहन को बनाए रखने के लिए डिज़ाइन किया गया है, जो हाइपरसोनिक गति (मच 5+) पर कुशलतापूर्वक संचालित होता है।
- उद्योग भागीदारों के सहयोग से DRDL (DRDO) द्वारा स्वदेशी प्रयासों द्वारा विकसित।

यह कैसे काम करता है:

- दहन के लिए वायुमंडलीय ऑक्सीजन को संपीड़ित करने के लिए वाहन की आगे की गति का उपयोग करता है, जिससे ऑक्सीडाइज़र ले जाने की आवश्यकता समाप्त हो जाती है।
- दहन कक्ष में संपीड़ित हवा के साथ ईंधन मिश्रित होता है, जो उच्च गति पर जोर पैदा करने के लिए प्रज्वलित होता है।
- अभिनव लौ स्थिरीकरण तकनीक चरम स्थितियों में प्रज्वलन सुनिश्चित करती है।

मुख्य विशेषताएं:

- एयर-ब्रीदिंग इंजन: वायुमंडलीय ऑक्सीजन का उपयोग करता है, प्रणोदक वजन को कम करता है।
- उन्नत थर्मल बैरियर कोटिंग (TBC): उच्च तापमान प्रतिरोध, इंजन के प्रदर्शन को बढ़ाता है।
- एंडोथर्मिक स्क्रेमजेट ईंधन: स्वदेशी रूप से विकसित, यह शीतलन और प्रज्वलन दक्षता में सुधार करता है।
- कोई हिलता हुआ भाग नहीं: यांत्रिक जटिलताओं को कम करता है, विश्वसनीयता बढ़ाता है।

स्क्रेमजेट प्रौद्योगिकी का महत्व:

- हाइपरसोनिक मिसाइलें: उन्नत मिसाइलों के विकास को सक्षम बनाती हैं जो वायु रक्षा प्रणालियों को बायपास कर सकती हैं और तेज़, उच्च-प्रभाव वाले हमले कर सकती हैं।
- पुनः प्रयोज्य प्रक्षेपण वाहन: वायु-श्वास प्रणोदन प्रणालियों का उपयोग करके उपग्रह प्रक्षेपण की लागत को कम करता है।
- सामरिक बढ़त: हाइपरसोनिक क्षमताओं वाले चुनिंदा देशों (यूएसए, रूस, चीन) के समूह में भारत को स्थान देता है।
- कम प्रक्षेपण लागत: ईंधन के भार को कम करके सस्ते, पुनः प्रयोज्य उपग्रह प्रक्षेपण प्रणालियों की संभावना।
- तकनीकी सफलता: कम्प्यूटेशनल द्रव गतिकी (सीएफडी) और सामग्री विज्ञान में प्रगति, एयरोस्पेस नवाचारों में योगदान।

नेताजी सुभाष चंद्र बोस

संदर्भ:

भारत हर साल 23 जनवरी को नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती के उपलक्ष्य में पराक्रम दिवस मनाता है, जो एक दूरदर्शी नेता और भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में एक प्रमुख व्यक्ति थे।

पराक्रम दिवस के बारे में:

- कब से मनाया जा रहा है: नेताजी सुभाष चंद्र बोस की विरासत को याद करने के लिए भारत सरकार द्वारा 2021 में शुरू किया गया।
- उद्देश्य: नागरिकों, विशेषकर युवाओं में देशभक्ति और साहस का संचार करना और उन्हें दृढ़ संकल्प के साथ चुनौतियों का सामना करने के लिए प्रेरित करना।



महत्त्व:

- भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में नेताजी की महत्वपूर्ण भूमिका का सम्मान करता है।
- राष्ट्र के लिए निडरता और बलिदान के उनके दर्शन पर प्रकाश डालता है।
- नागरिकों को आत्मनिर्भर और एकजुट भारत के उनके दृष्टिकोण को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करता है।

सुभाष चंद्र बोस के बारे में:**जन्म और शिक्षा:**

- 23 जनवरी, 1897 को ओडिशा के कटक में जन्मे।
- रेवेनशॉ कॉलेजिएट स्कूल, प्रेसीडेंसी कॉलेज और केंब्रिज विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त की।
- 1920 में भारतीय सिविल सेवा (ICS) परीक्षा उत्तीर्ण की, लेकिन स्वतंत्रता संग्राम में शामिल होने के लिए 1921 में इस्तीफा दे दिया।

स्वतंत्रता आंदोलन में भूमिका:

- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC) में सक्रिय; 1938 (हरिपुरा) और 1939 (त्रिपुरी) में इसके अध्यक्ष बने।
- महात्मा गांधी के साथ वैचारिक मतभेदों के कारण इस्तीफा दे दिया और 1939 में फॉरवर्ड ब्लॉक का गठन किया।
- जापानी समर्थन से भारतीय राष्ट्रीय सेना (आईएनए) की स्थापना की, और हथियार उठाने का आह्वान किया: "तुम मुझे खून दो, और मैं तुम्हें आज़ादी दूंगा।"
- ब्रिटिश शासन के खिलाफ भारतीयों को एकजुट करने के लिए 1943 में आज़ाद हिंद सरकार की स्थापना की।

साहित्य और मीडिया:

- स्वराज की वकालत करते हुए अखबार फॉरवर्ड का संपादन किया।
- 1920 से 1934 तक भारत की आज़ादी की लड़ाई का विवरण देते हुए द इंडियन स्ट्रगल लिखा।

सहयोगी दल:

- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC): पूर्ण स्वतंत्रता और औद्योगीकरण की वकालत की।
- फॉरवर्ड ब्लॉक: समाजवादी आदर्शों के साथ ब्रिटिश विरोधी ताकतों को एकजुट करने के लिए स्थापित किया गया।
- भारतीय राष्ट्रीय सेना (INA): ब्रिटिश सेना के खिलाफ लड़ने के लिए प्रवासी भारतीयों और युद्धबंदियों को संगठित किया।

खो-खो विश्व कप 2025**संदर्भ:**

भारत खो-खो विश्व कप 2025 में पुरुष और महिला दोनों स्पर्धाओं में उद्घाटन चैंपियन के रूप में उभरा।

**खो-खो विश्व कप 2025 के बारे में:**

- मेजबानी: टूर्नामेंट इंदिरा गांधी इंडोर स्टेडियम, नई दिल्ली, भारत में हुआ।
- यह पहला खो खो विश्व कप है।
- इसका आयोजन: भारतीय खो खो महासंघ (केकेएफआई) द्वारा अंतर्राष्ट्रीय खो खो महासंघ (आईकेकेएफ) के सहयोग से किया गया।

शुभंकर:

- तेजस (पुरुष टीम): एक नीला गजल जो प्रतिभा और ऊर्जा का प्रतीक है।
- तारा (महिला टीम): एक नारंगी गजल जो मार्गदर्शन और आकांक्षा का प्रतिनिधित्व करती है।

टूर्नामेंट प्रक्रिया:

- समूह चरण: टीमों को चार समूहों में विभाजित किया गया था, जो राउंड-रॉबिन प्रारूप में खेल रहे थे।
- नॉकआउट चरण: प्रत्येक समूह से शीर्ष दो टीमों वार्टर फाइनल, सेमीफाइनल और फाइनल में पहुंचीं।
- मैच सेवन-ए-साइड फास्ट प्रारूप के तहत खेले गए, जैसा कि अल्टीमेट खो खो में देखा गया था।

विजेता और उपविजेता:

श्रेणी	विजेता	उपविजेता	स्कोर
पुरुष	भारत	नेपाल	54-36
महिला	भारत	नेपाल	78-40

अंतर्राष्ट्रीय खो खो महासंघ (IKKF) के बारे में:

- स्थापना: 2018 में खो खो को वैश्विक स्तर पर बढ़ावा देने के लिए।
- मुख्यालय: नई दिल्ली, भारत।
- उद्देश्य: खो खो को एक पारंपरिक भारतीय खेल से एक मान्यता प्राप्त अंतरराष्ट्रीय खेल में बदलना और वैश्विक भागीदारी को बढ़ावा देना।

कार्य:

- खो खो विश्व कप जैसे अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंट आयोजित करता है।
- खेल के नियमों और विनियमों को मानकीकृत करता है।
- खो खो की पहुंच का विस्तार करने के लिए राष्ट्रीय संघों के साथ समन्वय करता है।
- वैश्विक प्लेटफॉर्मों के माध्यम से खेल के सांस्कृतिक और प्रतिस्पर्धी मूल्य को बढ़ावा देता है।

मेजर ध्यानचंद खेल रत्न 2024**संदर्भ:**

भारत का सर्वोच्च खेल सम्मान मेजर ध्यानचंद खेल रत्न पुरस्कार, राष्ट्रपति भवन में राष्ट्र को गौरवान्वित करने वाले उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल करने वालों को प्रदान किया गया।

मेजर ध्यानचंद खेल रत्न पुरस्कार के बारे में:

- 1991-1992 में शुरू हुआ (राजीव गांधी खेल रत्न पुरस्कार के रूप में)।
- 2021 में नाम बदला गया, महान हॉकी खिलाड़ी मेजर ध्यानचंद को सम्मानित करने के लिए।
- उद्देश्य: अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर खेलों में उत्कृष्ट प्रदर्शन को मान्यता देना, एथलीटों को प्रेरित करना और भावी पीढ़ियों को प्रेरित करना।
- मंत्रालय: युवा मामले और खेल मंत्रालय, भारत सरकार।

पात्रता मानदंड:

- चार वर्षों में असाधारण अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शन।
- स्वच्छ एंटी-डोपिंग रिकॉर्ड।
- ओलंपिक, राष्ट्रमंडल खेल और विश्व चैंपियनशिप जैसी प्रमुख प्रतियोगिताओं में उपलब्धियाँ।

नामांकन और चयन प्रक्रिया:**नामांकन करने वाले अधिकारी:**

- राष्ट्रीय खेल महासंघ, भारतीय खेल प्राधिकरण (SAI), राज्य सरकारें और भारतीय ओलंपिक संघ।
- यदि कोई नामांकन प्राप्त नहीं होता है तो सरकार अधिकतम दो खिलाड़ियों को नामांकित कर सकती है।

चयन समिति:

- इसमें सरकारी अधिकारी, ओलंपियन, पत्रकार और विशेषज्ञ शामिल होते हैं।
- प्रमुख आयोजनों (ओलंपिक, राष्ट्रमंडल, एशियाई खेल आदि) में पदकों पर विचार करते हुए अंक-आधारित प्रणाली।
- केंद्रीय युवा मामले और खेल मंत्री द्वारा सिफारिशों को अंतिम रूप दिया गया।



मेजर ध्यानचंद खेल रत्न पुरस्कार के 2024 विजेता:

प्राप्तकर्ता खेल

मनु भाकर	शूटिंग
डी गुकेश	शतरंज
हरमनप्रीत सिंह	हॉकी
प्रवीण कुमार	पैरालंपिक हाई जंप

ग्लोबल साउथ और भारत

संदर्भ:

केंद्रीय वाणिज्य और उद्योग मंत्री ने आपदा प्रबंधन पर विश्व कांग्रेस के दौरान वैक्सीन मैत्री जैसी पहलों के माध्यम से पड़ोसी और ग्लोबल साउथ देशों की सहायता करने में भारत के प्रयासों पर प्रकाश डाला।



ग्लोबल साउथ क्या है?

- ग्लोबल साउथ शब्द का व्यापक रूप से एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका में मुख्य रूप से विकासशील और कम विकसित देशों से तात्पर्य है। इन देशों को अक्सर गरीबी, आय असमानता और ग्लोबल नॉर्थ की तुलना में सीमित संसाधनों जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है - अमीर, औद्योगिक राष्ट्र जो ज्यादातर उत्तरी अमेरिका, यूरोप और ओशिनिया के कुछ हिस्सों में स्थित हैं।
- इस अवधारणा ने पुराने शब्द "थर्ड वर्ल्ड" के तटस्थ विकल्प के रूप में कर्षण प्राप्त किया, जो उपनिवेशवाद और आर्थिक हाशिए के साझा इतिहास को उजागर करता है।

ग्लोबल साउथ का महत्व:

- आर्थिक विकास की संभावना: ग्लोबल साउथ ने एशिया-प्रशांत जैसे क्षेत्रों की ओर धन का स्थानांतरण देखा है, जहाँ भारत और चीन जैसे राष्ट्र आर्थिक विकास को गति दे रहे हैं।
उदाहरण के लिए, ब्रिक्स राष्ट्र अब संयुक्त सकल घरेलू उत्पाद में जी7 देशों से आगे निकल गए हैं।
- जनसांख्यिकीय लाभ: ग्लोबल नॉर्थ में वृद्ध समाजों की तुलना में युवा आबादी के साथ, इन देशों के पास भविष्य के वैश्विक आर्थिक योगदान के लिए तैयार कार्यबल है।
उदाहरण के लिए, स्किल इंडिया जैसी भारत की युवा-उन्मुख नीतियाँ इस जनसांख्यिकीय लाभ का उपयोग करती हैं।
- भू-राजनीतिक प्रभाव: वैश्विक दक्षिण के देश अंतरराष्ट्रीय संबंधों को आकार दे रहे हैं, एक बहुध्रुवीय दुनिया की ओर बढ़ रहे हैं।
उदाहरण के लिए, वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ समिट 2023 में भारत के नेतृत्व ने इसके भू-राजनीतिक महत्व को प्रदर्शित किया।
- नवाचार केंद्र: वैश्विक दक्षिण के राष्ट्र तेजी से एआई, नवीकरणीय ऊर्जा और डिजिटल समाधानों में प्रौद्योगिकियों को अपना रहे हैं, जो नवाचार के वैश्विक केंद्र बन रहे हैं।
उदाहरण के लिए, चंद्रयान-3 जैसी भारत की अंतरिक्ष पहल और यूपीआई जैसी डिजिटल भुगतान प्रणाली।
- वैश्विक चुनौतियों का समाधान: ये देश जलवायु परिवर्तन, गरीबी और सतत विकास जैसे वैश्विक मुद्दों से निपटने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
उदाहरण के लिए, भारत का अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन नवीकरणीय ऊर्जा अपनाने को बढ़ावा देता है।

वैश्विक दक्षिण के लिए चुनौतियाँ:

- हरित ऊर्जा निधि अंतर: विकसित राष्ट्र हरित पहलों के लिए पर्याप्त निधि प्रदान करने में विफल रहते हैं, जिससे विकासशील देशों को जलवायु परिवर्तन का खामियाजा भुगतना पड़ता है।
उदाहरण के लिए, भारत लगातार वैश्विक उत्तर से वादा किए गए जलवायु वित्त की कमी को दर्शाता है।
- आर्थिक निर्भरता: कई राष्ट्र बाहरी सहायता, ऋण या व्यापार संबंधों पर निर्भर रहते हैं जो धनी अर्थव्यवस्थाओं के पक्ष में होते हैं।
उदाहरण के लिए चीन की बेल्ट एंड रोड पहल अक्सर छोटे देशों को कर्ज में डुबो देती है।
- संसाधनों तक सीमित पहुँच: संसाधन आवंटन में ऐतिहासिक असमानताएँ विकास में बाधा डालती हैं।
उदाहरण के लिए अफ्रीकी देशों को संकट के दौरान स्वास्थ्य सेवा और टीकों तक पहुँचने में चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।
- वैश्विक संघर्षों का प्रभाव: रूस-यूक्रेन संघर्ष जैसे युद्ध खाद्य और ऊर्जा असुरक्षा को बढ़ाते हैं।
उदाहरण के लिए संघर्ष के बाद गेहूँ की बढ़ती कीमतों ने कई अफ्रीकी और दक्षिण एशियाई देशों को प्रभावित किया।
- कोविड-19 के झटके: महामारी ने आर्थिक विभाजन को और बढ़ा दिया, श्रीलंका और पाकिस्तान जैसी कमज़ोर अर्थव्यवस्थाएँ उबरने के लिए संघर्ष कर रही हैं।
उदाहरण के लिए भारत की वैक्सीन मंत्री ने महामारी के दौरान वैक्सीन असमानता को कम किया।

आगे की राह:

- सहयोगी ढाँचे: व्यापार, स्वास्थ्य सेवा और प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में आपसी विकास के लिए दक्षिण-दक्षिण सहयोग को मज़बूत करना।
उदाहरण के लिए भारत का ग्लोबल साउथ सेंटर ऑफ़ एक्सीलेंस साझा सर्वोत्तम प्रथाओं को बढ़ावा देता है।
- सतत विकास: हरित प्रौद्योगिकियों और जलवायु-लचीले बुनियादी ढाँचे में निवेश करें।
उदाहरण के लिए भारत का राष्ट्रीय हरित हाइड्रोजन मिशन एक वैश्विक उदाहरण स्थापित करता है।
- समान संसाधन वितरण: वैश्विक संसाधनों और वित्तपोषण तंत्रों तक उचित पहुँच सुनिश्चित करें।
उदाहरण के लिए पर्याप्त जलवायु वित्तपोषण के लिए COP28 में वकालत।
- आर्थिक विविधीकरण: बाहरी शक्तियों पर निर्भरता कम करने के लिए अर्थव्यवस्थाओं में विविधता लाने पर ध्यान केंद्रित करें।
उदाहरण के लिए आत्मनिर्भर भारत के तहत भारत का आत्मनिर्भरता के लिए प्रयास।
- क्षमता निर्माण: जनसांख्यिकीय लाभांश का पूरी तरह से उपयोग करने के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और कौशल विकास को बढ़ाएँ।
उदाहरण के लिए NEP 2020 और स्किल इंडिया जैसी पहलों का उद्देश्य कौशल अंतराल को दूर करना है।

निष्कर्ष:

ग्लोबल साउथ एक अधिक समावेशी और बहुध्रुवीय वैश्विक व्यवस्था के वादे का प्रतिनिधित्व करता है। भारत जैसे राष्ट्र समानता और लचीलेपन में अंतराल को पाटने, भू-राजनीति और वैश्विक विकास ढाँचे को नया रूप देने के प्रयासों का नेतृत्व कर रहे हैं। जैसे-जैसे ये राष्ट्र आगे बढ़ेंगे, उनका प्रभाव अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को फिर से परिभाषित करना जारी रखेगा, जिससे एक संतुलित और टिकाऊ भविष्य सुनिश्चित होगा।

तीसरा लॉन्च पैड**संदर्भ:**

प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में भारत के केंद्रीय मंत्रिमंडल ने आंध्र प्रदेश के श्रीहरिकोटा में सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र में तीसरे लॉन्च पैड (टीएलपी) की स्थापना को मंजूरी दी।



तीसरे लॉन्च पैड (TLP) के बारे में:

- यह क्या है: अगली पीढ़ी के लॉन्च वाहनों (एनजीएलवी) का समर्थन करने और दूसरे लॉन्च पैड (एसएलपी) के लिए स्टैंडबाय के रूप में एक अत्याधुनिक लॉन्च इंफ्रास्ट्रक्चर
- स्थान: सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र (एसडीएससी), श्रीहरिकोटा, आंध्र प्रदेश

उद्देश्य:

- एनजीएलवी, एलवीएम 3 वाहनों और गगनयान जैसे मानव अंतरिक्ष उड़ान मिशनों के प्रक्षेपण का समर्थन करना।
- अगले 25-30 वर्षों के लिए भारत की अंतरिक्ष अन्वेषण क्षमताओं को बढ़ाना।

पहला लॉन्च पैड (FLP)

- प्राथमिक उद्देश्य: पोलर सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल (PSLV) के लिए डिज़ाइन किया गया और छोटे सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल (SSLV) को सपोर्ट करता है

महत्व:

- भारत के अंतरिक्ष परिवहन की नींव
- भारत के शुरुआती सैटेलाइट लॉन्च में अहम भूमिका निभाई

दूसरा लॉन्च पैड (SLP):

- प्राथमिक उद्देश्य: जियोसिंक्रोनस सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल (GSLV) और LVM3 को समर्पित

उल्लेखनीय योगदान:

- चंद्रयान-3 और अन्य राष्ट्रीय और वाणिज्यिक मिशनों का समर्थन किया।
- गगनयान के लिए मानव-रेटेड लॉन्च की तैयारी

सुधारों का वर्ष**संदर्भ:**

रक्षा मंत्रालय (MoD) ने भारत के सशस्त्र बलों को तकनीकी रूप से उन्नत, युद्ध के लिए तैयार बल में बदलने के लिए 2025 को 'सुधारों का वर्ष' घोषित किया है।

**सुधारों के वर्ष के बारे में:**

- यह क्या है: भारत के रक्षा क्षेत्र में परिवर्तनकारी सुधारों को लागू करने के लिए रक्षा मंत्रालय द्वारा एक साल की पहला
- उद्देश्य: बहु-क्षेत्रीय संचालन, बढ़ी हुई संयुक्तता और बेहतर रक्षा तैयारियों के लिए सशस्त्र बलों का आधुनिकीकरण

द्वारा घोषित: रक्षा मंत्रालय।**मुख्य विशेषताएं:**

1. एकीकरण और संयुक्तता: परिचालन दक्षता के लिए एकीकृत थिएटर कमांड की स्थापना पर ध्यान केंद्रित करना।

- उभरती हुई प्रौद्योगिकियाँ: भविष्य की क्षमताओं के लिए AI, रोबोटिक्स, हाइपरसोनिक, साइबर और अंतरिक्ष डोमेन को प्राथमिकता देना।
- सरलीकृत अधिग्रहण: तेजी से क्षमता विकास के लिए खरीद प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करना।
- रक्षा निर्यात पर ध्यान: अनुसंधान एवं विकास तथा सार्वजनिक-निजी भागीदारी को बढ़ावा देकर भारत को वैश्विक रक्षा निर्यातक के रूप में स्थापित करना।
- दिग्गजों का कल्याण: दिग्गजों की विशेषज्ञता का लाभ उठाते हुए उनके लिए कल्याणकारी उपायों का अनुकूलन करना।
- सहयोग: नागरिक-सैन्य समन्वय को बढ़ाना और रक्षा और नागरिक उद्योगों के बीच प्रौद्योगिकी हस्तांतरण को सुविधाजनक बनाना।

LEADS 2024 रिपोर्ट

संदर्भ:

केंद्रीय वाणिज्य और उद्योग मंत्री ने भारतीय राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में रसद दक्षता का मूल्यांकन करने के लिए विभिन्न राज्यों में रसद आसानी (LEADS) 2024 रिपोर्ट लॉन्च की।

LEADS के बारे में:

- पूर्ण रूप: विभिन्न राज्यों में रसद आसानी।
- लॉन्च किया गया: 2018.
- मंत्रालय: उद्योग और आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग (DPIIT), वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय।

उद्देश्य:

- राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों में रसद बुनियादी ढांचे और सेवाओं का आकलन करना।
- रसद सुधारों के लिए कार्यवाई योग्य जानकारी प्रदान करना।
- रसद दक्षता बढ़ाने के लिए प्रतिस्पर्धी संघवाद को बढ़ावा देना।

मापदंड:

- रसद अवसंरचना।
- रसद सेवाएँ।
- परिचालन और विनियामक वातावरण।

कार्यप्रणाली:

- पूरे भारत में किए गए सर्वेक्षण से 7,300 से अधिक प्रतिक्रियाओं पर आधारित।
- इसमें 750 से अधिक हितधारक परामर्श और संघों से इनपुट शामिल हैं।

LEADS रिपोर्ट 2024 प्रदर्शन हाइलाइट्स:

श्रेणी	एचीवर्स	फास्ट मूवर्स	आकांक्षी
तटीय राज्य	गुजरात, कर्नाटक, महाराष्ट्र, ओडिशा, तमिलनाडु	आंध्र प्रदेश, गोवा	केरल, पश्चिम बंगाल
भूमि से घिरे राज्य	हरियाणा, तेलंगाना, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड	बिहार, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, पंजाब, राजस्थान	छत्तीसगढ़, झारखंड
उत्तर-पूर्वी	असम, अरुणाचल प्रदेश	मेघालय, मिजोरम, नागालैंड, सिक्किम, त्रिपुरा	मणिपुर
केंद्र शासित प्रदेश	चंडीगढ़, दिल्ली	दादरा और नगर हवेली और दमन और दीव, जम्मू और कश्मीर, लक्षद्वीप, पुडुचेरी	अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, लद्दाख



UPSC

मसौदा डिजिटल व्यक्तिगत डेटा सुरक्षा नियम

संदर्भ:

मसौदा डिजिटल व्यक्तिगत डेटा सुरक्षा नियम डिजिटल व्यक्तिगत डेटा सुरक्षा अधिनियम, 2023 (डीपीडीपी अधिनियम) को लागू करते हैं, जिसका उद्देश्य भारत में व्यक्तिगत डेटा की सुरक्षा के लिए एक मजबूत ढांचा स्थापित करना है।

ड्राफ्ट डिजिटल पर्सनल डेटा प्रोटेक्शन रूल्स के बारे में:

- यह क्या है: DPDP अधिनियम, 2023 को लागू करने के लिए एक रूपरेखा, जो भारतीय नागरिकों के लिए व्यापक डिजिटल डेटा सुरक्षा सुनिश्चित करती है।
- उद्देश्य: नागरिकों को सशक्त बनाना, व्यक्तिगत डेटा की सुरक्षा करना, डेटा के दुरुपयोग को संबोधित करना और डिजिटल प्लेटफॉर्म में विश्वास को बढ़ावा देना।
- शामिल मंत्रालय: इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (MeitY)।

ड्राफ्ट नियमों की विशेषताएँ:

- नागरिक-केंद्रित रूपरेखा: सूचित सहमति, डेटा मिटाने का अधिकार और उपयोगकर्ता के अनुकूल शिकायत तंत्र।
- विनियमन और नवाचार का संतुलन: स्टार्टअप और एमएसएमई के लिए कम अनुपालन के साथ नागरिक कल्याण को बनाए रखते हुए विकास को प्रोत्साहित करता है।
- डिजिटल-प्रथम दृष्टिकोण: पारदर्शिता और दक्षता के लिए डिजिटल शिकायत निवारण और न्यायनिर्णयन।
- जवाबदेही: महत्वपूर्ण डेटा फ़िड्युशरीज़ के लिए वार्षिक ऑडिट और डेटा सुरक्षा प्रभाव आकलन।
- समावेशी और व्यावहारिक: MyGov प्लेटफॉर्म के माध्यम से हितधारकों से प्रतिक्रिया आमंत्रित की जाती है, जो वैश्विक सर्वोत्तम प्रथाओं को दर्शाती है।
- जागरूकता अभियान: नागरिकों को उनके डिजिटल अधिकारों और जिम्मेदारियों के बारे में शिक्षित करने की योजना।



UPSC

पेरिस एआई शिखर सम्मेलन, 2025

संदर्भ:

भारतीय प्रधानमंत्री 10-11 फरवरी, 2025 को फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों के साथ पेरिस एआई शिखर सम्मेलन की सह-अध्यक्षता करेंगे।

पेरिस एआई शिखर सम्मेलन 2025 के बारे में:

पेरिस एआई शिखर सम्मेलन क्या है?

- पेरिस एआई शिखर सम्मेलन 2025 एक उच्च स्तरीय वैश्विक सम्मेलन है जो एआई विनियमन, नवाचार और नैतिक शासन पर केंद्रित है।
- यह 2023 में ब्लेचली पार्क (यूके) और 2024 में सियोल (दक्षिण कोरिया) में आयोजित पिछले एआई सुरक्षा शिखर सम्मेलनों पर आधारित है, जिसका उद्देश्य एआई नीतियों पर वैश्विक सहमति बनाना है।



पेरिस एआई शिखर सम्मेलन 2025 के मुख्य विवरण:

- मेज़बान: फ्रांस
- अध्यक्ष और सह-अध्यक्ष: इमैनुएल मैक्रों (अध्यक्ष) और पीएम नरेंद्र मोदी (सह-अध्यक्ष)
- प्रतिभागी: राष्ट्राध्यक्ष, एआई शोधकर्ता, नीति निर्माता, व्यवसाय और नागरिक समाज के नेता

पेरिस एआई शिखर सम्मेलन के उद्देश्य:

- वैश्विक एआई शासन: एआई विनियमन और नैतिक उपयोग के लिए रूपरेखाएँ स्थापित करना।
- नवाचार और विनियमन को संतुलित करना: विकास को बाधित किए बिना एआई विकास को बढ़ावा देना।
- एआई बाज़ार संकेन्द्रण को संबोधित करना: आधारभूत एआई मॉडल में Microsoft, Google, Amazon और Meta जैसी बड़ी तकनीकी कंपनियों के प्रभुत्व की जाँच करना।
- सार्वजनिक हित और एआई सुरक्षा: सुनिश्चित करें कि एआई उपकरण सुरक्षा, विश्वास और जिम्मेदार उपयोग के साथ संरेखित हों।
- वैश्विक सहयोग: एआई से संबंधित चुनौतियों से निपटने के लिए देशों के बीच सहयोग को मज़बूत करना।

पेरिस एआई शिखर सम्मेलन का महत्व:

- यूरोपीय एआई रणनीति: यह शिखर सम्मेलन यूरोप के लिए अमेरिकी तकनीकी दिग्गजों और चीन के एआई नेतृत्व के साथ प्रतिस्पर्धा करने के लिए महत्वपूर्ण है।
- एआई इंफ्रास्ट्रक्चर में निवेश: प्रमुख एआई परियोजनाओं पर चर्चा, जैसे कि \$500 बिलियन यूएस स्टारगेट प्रोजेक्ट।
- एआई एक्सेसिबिलिटी और एथिक्स: किफायती एआई मॉडल और एआई विकास लागत को कम करने पर ध्यान केंद्रित करता है।
- भारत की भूमिका: पीएम मोदी की सह-अध्यक्षता वैश्विक एआई नीति और डिजिटल शासन में भारत के बढ़ते प्रभाव को उजागर करती है।

भारत - इंडोनेशिया

संदर्भ:

इंडोनेशिया के राष्ट्रपति प्रबोवो सुबियांटो 26 जनवरी, 2025 को 76वें गणतंत्र दिवस समारोह के लिए भारत का दौरा करेंगे, उनकी आधिकारिक यात्रा का उद्देश्य आर्थिक, रक्षा, सांस्कृतिक और रणनीतिक क्षेत्रों में सहयोग को गहरा करना है।



ऐतिहासिक पृष्ठभूमि:

- प्रारंभिक सभ्यतागत संबंध: भारत और इंडोनेशिया के बीच सहस्राब्दी पुराने सांस्कृतिक और व्यापारिक संबंध हैं, जो हिंदू धर्म और बौद्ध धर्म की साझा धार्मिक परंपराओं और बाली यात्रा जैसे त्योहारों की समुद्री विरासत में परिलक्षित होते हैं।
- आधुनिक राजनयिक संबंध: औपचारिक राजनयिक संबंध 1950 में स्थापित किए गए, उसके बाद 1951 में मैत्री संधि और 1955 के बांडुंग सम्मेलन में संयुक्त भागीदारी ने गुटनिरपेक्ष आंदोलन की नींव रखी।
- रणनीतिक साझेदारी: इस संबंध को 2005 में रणनीतिक साझेदारी में बदल दिया गया, जिसे 2018 में व्यापक रणनीतिक साझेदारी में बढ़ाया गया, जिसमें आर्थिक और सुरक्षा सहयोग पर ध्यान केंद्रित किया गया।
- एक्ट ईस्ट पॉलिसी: भारत की एक्ट ईस्ट पॉलिसी (2014) में इंडोनेशिया को शामिल करना भारत की क्षेत्रीय जुड़ाव रणनीति में इसके महत्व को दर्शाता है।

भारत-इंडोनेशिया संबंधों में सकारात्मकता:

- आर्थिक सहयोग: वित्त वर्ष 2023-24 में द्विपक्षीय व्यापार 29.4 बिलियन डॉलर तक पहुँच गया, जिसे 2025 तक 50 बिलियन डॉलर तक बढ़ाने की योजना है। भारत इंडोनेशियाई कोयले और पाम ऑयल का एक प्रमुख आयातक है।
- उदाहरण: भारत ने इंडोनेशियाई क्षेत्रों जैसे कि बुनियादी ढांचे और वस्त्रों में 1.56 बिलियन डॉलर का निवेश किया है।
- सामरिक और रक्षा सहयोग: समुद्र शक्ति और IND-INDO CORPAT जैसे संयुक्त सैन्य अभ्यास हिंद महासागर में समुद्री सुरक्षा को बढ़ाते हैं।
- उदाहरण: रक्षा सहयोग समझौता (2018) नियमित सैन्य आदान-प्रदान और संयुक्त गश्त की सुविधा प्रदान करता है।
- सांस्कृतिक संबंध: हिंदू धर्म और बौद्ध धर्म की साझा परंपराएँ सांस्कृतिक कूटनीति को बढ़ावा देती हैं, जबकि भारत के गणतंत्र दिवस परेड में इंडोनेशियाई दल की भागीदारी जैसी घटनाएँ लोगों के बीच संबंधों को मजबूत करती हैं।
- कनेक्टिविटी और पर्यटन: 2023 में शुरू की गई सीधी उड़ानों ने पर्यटन को बढ़ावा दिया है, जिससे भारत बाली में अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों का दूसरा सबसे बड़ा स्रोत बन गया है।
- अंतरिक्ष और स्वास्थ्य सेवा सहयोग: इसरो इंडोनेशिया के उपग्रह मिशनों का समर्थन करता है, और अपोलो जैसे भारतीय अस्पताल इंडोनेशिया के स्वास्थ्य सेवा बुनियादी ढांचे में निवेश कर रहे हैं।

द्विपक्षीय संबंधों में चुनौतियाँ:

- व्यापार असंतुलन: चीन के साथ इंडोनेशिया का व्यापार (2023 में \$139 बिलियन) भारत के साथ उसके व्यापार से कहीं ज़्यादा है, जो कम उपयोग की गई क्षमता को दर्शाता है।
- उदाहरण: पाम ऑयल और कोयले जैसे सीमित आयातों पर भारत की निर्भरता में विविधता का अभाव है।
- भू-राजनीतिक प्रतिस्पर्धा: इंडो-पैसिफिक में क्षेत्रीय तनाव और अन्य देशों के साथ इंडोनेशिया की साझेदारी रणनीतिक चुनौतियाँ पेश करती हैं।
- समुद्री सुरक्षा खतरे: साझा समुद्री क्षेत्र में समुद्री डकैती, अवैध मछली पकड़ने और भू-राजनीतिक तनाव जैसे खतरे हैं, जिसके लिए बेहतर सहयोग की आवश्यकता है।
- सीमित निवेश: आर्थिक संबंधों में सुधार के बावजूद, इंडोनेशिया में भारत का निवेश अन्य क्षेत्रीय खिलाड़ियों की तुलना में मामूली बना हुआ है।
- नौकरशाही बाधाएँ: दोनों देशों में विनियामक चुनौतियाँ संयुक्त बुनियादी ढाँचे और व्यापार परियोजनाओं को धीमा कर देती हैं।

आगे की राह:

- आर्थिक विविधीकरण को बढ़ावा दें: प्रौद्योगिकी, नवीकरणीय ऊर्जा और कृषि को शामिल करने के लिए द्विपक्षीय व्यापार का विस्तार करें।
- रक्षा सहयोग बढ़ाना: भारत के SAGAR ढांचे के तहत संयुक्त समुद्री सुरक्षा पहल को मजबूत करना और सैन्य अभ्यास का विस्तार करना।
- कनेक्टिविटी का लाभ उठाना: विस्तारित उड़ान नेटवर्क और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के माध्यम से व्यापार और पर्यटन को बढ़ावा देना।
- हरित ऊर्जा पर ध्यान केंद्रित करना: जलवायु लक्ष्यों और ऊर्जा सुरक्षा को संबोधित करने के लिए अक्षय ऊर्जा परियोजनाओं पर सहयोग करना।
- लोगों के बीच संबंधों को गहरा करना: ITEC जैसी छात्रवृत्तियों के माध्यम से शैक्षिक आदान-प्रदान को मजबूत करना और द्विपक्षीय सहयोग में भारतीय प्रवासियों के योगदान को बढ़ावा देना।

निष्कर्ष:

भारत और इंडोनेशिया की बहुआयामी साझेदारी क्षेत्रीय सुरक्षा, आर्थिक विकास और सांस्कृतिक कूटनीति की आधारशिला है। साझा सभ्यतागत संबंधों और रणनीतिक संरेखण के साथ, दोनों देश अपने वैश्विक और क्षेत्रीय प्रभाव को बढ़ाने के लिए तैयार हैं। मजबूत सहयोग न केवल द्विपक्षीय संबंधों को बढ़ावा देगा बल्कि इंडो-पैसिफिक स्थिरता में भी महत्वपूर्ण योगदान देगा।

WHO से अमेरिका का बाहर होना**संदर्भ:**

हाल ही में, राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के नेतृत्व में संयुक्त राज्य अमेरिका ने COVID-19 महामारी से निपटने में लापरवाही और संगठन के भीतर सुधारों की कमी जैसे कारणों का हवाला देते हुए WHO से बाहर निकलने के लिए एक कार्यकारी आदेश पर हस्ताक्षर किए हैं।

WHO के बारे में: उद्देश्य और कार्य**1. उद्देश्य**

- सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज सुनिश्चित करना और स्वास्थ्य समानता को बढ़ावा देना।
- दुनिया भर में बीमारी की रोकथाम और नियंत्रण को मजबूत करना।
- स्वास्थ्य आपात स्थितियों के लिए वैश्विक तैयारी और प्रतिक्रिया को बढ़ाना।

कार्य

- वैश्विक स्वास्थ्य मानक और दिशानिर्देश निर्धारित करना।
- उभरते स्वास्थ्य मुद्दों की निगरानी करना और प्रतिक्रियाओं का समन्वय करना।
- क्षमता निर्माण के लिए देशों को तकनीकी सहायता प्रदान करना।
- स्वास्थ्य अनुसंधान और नीति विकास को सुविधाजनक बनाना।

वैश्विक स्वास्थ्य में WHO की भूमिका:**वैश्विक समन्वय:**

- COVID-19 और इबोला जैसी महामारियों से निपटने में अंतर्राष्ट्रीय प्रयासों का नेतृत्व करना।
- स्वास्थ्य सेवा प्रणालियों को मजबूत करने के लिए सरकारों, गैर सरकारी संगठनों और निजी संस्थाओं के साथ सहयोग करना।
- रोग उन्मूलन: चैचक के उन्मूलन और पोलियो के मामलों को 99% तक कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- क्षमता निर्माण: निम्न और मध्यम आय वाले देशों को स्वास्थ्य अवसंरचना में सुधार, दवाओं तक पहुँच और स्वास्थ्य सेवा कर्मियों को प्रशिक्षित करने में सहायता करता है।
- स्वास्थ्य नीति विकास: गैर-संचारी रोगों, मानसिक स्वास्थ्य और पोषण सुधार को संबोधित करने वाले वित्तपोषण और नीतियों की विकास करता है।

डब्ल्यूएचओ छोड़ने का यूएसए का निर्णय:**उद्धृत कारण:**

- कोविड-19 महामारी को ठीक से संभालना।
- संगठन के भीतर राजनीतिक पूर्वाग्रह का अनुभव।
- अन्य देशों, विशेष रूप से चीन की तुलना में अमेरिका पर असमान वित्तीय बोझ।



कार्यकारी आदेश में मुख्य प्रावधान:

- डब्ल्यूएचओ को वित्तपोषण और संसाधन देना बंद करना।
- संगठन के साथ काम करने वाले सभी अमेरिकी कर्मियों को वापस बुलाना।
- स्वास्थ्य पहलों के लिए वैकल्पिक अंतर्राष्ट्रीय भागीदारी की तलाश करना।

डब्ल्यूएचओ छोड़ने की प्रक्रिया:

- डब्ल्यूएचओ संविधान में स्पष्ट रूप से वापसी की प्रक्रिया का उल्लेख नहीं किया गया है।
- हालांकि, अमेरिकी कांग्रेस ने 1948 में एक साल के नोटिस और किसी भी बकाया वित्तीय प्रतिबद्धताओं के भुगतान के साथ वापसी की अनुमति देने वाली शर्तें स्थापित कीं।

अमेरिका के बाहर निकलने का प्रभाव:**WHO पर:**

- वित्तीय तनाव
- अमेरिका के बाहर निकलने से डब्ल्यूएचओ के लगभग 20% वित्त पोषण का नुकसान हो सकता है।
- वैश्विक स्तर पर चल रहे स्वास्थ्य कार्यक्रमों को प्रभावित करता है, विशेष रूप से रोग उन्मूलन और महामारी की तैयारी में।

विशेषज्ञता का अंतर

- सीडीसी जैसी अमेरिकी एजेंसियों के साथ सहयोग का नुकसान स्वास्थ्य निगरानी में डब्ल्यूएचओ की प्रभावशीलता को कम करता है।

वैश्विक स्वास्थ्य पर:**महामारी की तैयारी**

- महामारी और स्वास्थ्य आपात स्थितियों के प्रबंधन के लिए वैश्विक ढांचे में व्यवधान।
- समान वैक्सीन वितरण और उपचार पहलों के लिए संसाधनों में कमी।

वैश्विक असमानता में वृद्धि

- अमेरिका द्वारा बनाया गया शून्य परोपकार या चीन जैसे देशों पर अधिक निर्भरता का कारण बन सकता है, जो संभावित रूप से वैश्विक स्वास्थ्य शासन में प्रभाव के संतुलन को बदल सकता है।

भारत के बारे में:**स्वास्थ्य कार्यक्रम**

- तपेदिक, मलेरिया, एचआईवी और मातृ स्वास्थ्य पर भारत के कार्यक्रमों के लिए WHO का समर्थन कम हो गया है।
- वैक्सीन कवरेज और बीमारी की रोकथाम के लिए WHO के दिशा-निर्देशों को लागू करने में चुनौतियाँ।

सहयोगात्मक अनुसंधान

- विशेषज्ञता का नुकसान WHO के साथ भारत की क्षमता-निर्माण साझेदारी को प्रभावित करता है।

आगे की राह:

- वैश्विक भागीदारी को मजबूत करें: भारत जैसे देशों को, वैश्विक दक्षिण के देशों के साथ, WHO की पहलों में अपने योगदान और नेतृत्व की भूमिका को बढ़ाना चाहिए।
- फंडिंग में विविधता लाना: WHO को एकल-सदस्यीय योगदान पर निर्भरता कम करनी चाहिए और परोपकारी संगठनों और क्षेत्रीय गठबंधनों से स्वैच्छिक फंडिंग बढ़ानी चाहिए।
- पारदर्शिता और सुधार: निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में शासन, जवाबदेही और सदस्य राज्यों के न्यायसंगत प्रतिनिधित्व के बारे में चिंताओं का समाधान करना चाहिए।

निष्कर्ष:

WHO से अमेरिका का बाहर होना वैश्विक स्वास्थ्य प्रशासन और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के लिए महत्वपूर्ण चुनौतियाँ प्रस्तुत करता है। हालाँकि, यह दक्षता, पारदर्शिता और न्यायसंगत संसाधन आवंटन को बढ़ाने के लिए WHO के भीतर संरचनात्मक सुधारों की आवश्यकता को भी उजागर करता है। सामूहिक नेतृत्व और सतत वित्तपोषण का लाभ उठाकर, राष्ट्र वैश्विक स्वास्थ्य संकटों से निपटने में डब्ल्यूएचओ की महत्वपूर्ण भूमिका की रक्षा कर सकते हैं।

विश्व आर्थिक मंच**संदर्भ:**

स्विट्जरलैंड के दावोस में आयोजित विश्व आर्थिक मंच (WEF) की वार्षिक बैठक 2025, महत्वपूर्ण वैश्विक मुद्दों पर चर्चा करने के लिए व्यापार, राजनीति और नागरिक समाज के वैश्विक नेताओं को एक साथ लाती है।

विश्व आर्थिक मंच (WEF) के बारे में:

- स्थापना: WEF की स्थापना 1971 में यूरोपीय प्रबंधन मंच के रूप में की गई थी, जिसे बाद में 1987 में विश्व आर्थिक मंच का नाम दिया गया।



- मुख्यालय: WEF का मुख्यालय कोलोग्नी, स्विट्ज़रलैंड में है।
- स्थापना: जर्मन अर्थशास्त्री क्लॉस श्वाब, जिन्होंने "हितधारक पूंजीवाद" की अवधारणा पेश की।

उद्देश्य:

- सार्वजनिक-निजी सहयोग को बढ़ावा देकर दुनिया की स्थिति में सुधार करना।
- हितधारकों के बीच सहयोग के माध्यम से वैश्विक आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय चुनौतियों का समाधान करना।
- 2025 थीम: "बुद्धिमान युग के लिए सहयोग"

कार्य:

- वैश्विक संवाद: दावोस में वार्षिक बैठक आयोजित करता है, जहाँ नेता वैश्विक मुद्दों पर दबाव डालने के समाधान पर विचार-विमर्श करते हैं।
- प्रकाशन और रैंकिंग: वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता रिपोर्ट, वैश्विक लैंगिक अंतर रिपोर्ट, नौकरियों के भविष्य की रिपोर्ट और ऊर्जा संक्रमण सूचकांक जैसी रिपोर्ट नियमित रूप से जारी करता है।
- नीति वकालत: स्थिरता, समावेशी विकास और तकनीकी नवाचार को बढ़ावा देता है।
- कूटनीतिक पहल: नेल्सन मंडेला और दक्षिण अफ्रीकी राष्ट्रपति डी क्लाक के बीच 1992 की ऐतिहासिक बैठक जैसे संवादों को सुविधाजनक बनाता है।

जयशंकर का 5-सूत्री एजेंडा

संदर्भ:

जैसे-जैसे अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प अपने दूसरे कार्यकाल की तैयारी कर रहे हैं, भारत एक महत्वपूर्ण कूटनीतिक मिशन के लिए कमर कस रहा है जो विदेश मंत्री जयशंकर द्वारा प्रस्तावित 5-सूत्री एजेंडे पर आधारित है।

उत्पत्ति:

- भारत के विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने 24 अक्टूबर, 2024 को रूस के कज़ान में ब्रिक्स आउटरीच सत्र के दौरान पाँच सूत्री एजेंडे का अनावरण किया।
- एजेंडे का उद्देश्य वैश्विक शासन, अर्थव्यवस्था और बुनियादी ढाँचे में असंतुलन को दूर करके दक्षिण के अनुकूल, न्यायसंगत और बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था को बढ़ावा देना है।



जयशंकर का 5 सूत्री एजेंडा क्या है?

1. स्वतंत्र प्लेटफॉर्म का विस्तार: विकासशील देशों को असमान रूप से प्रभावशाली शक्तियों के वर्चस्व वाली प्रणालियों के विकल्प प्रदान करने के लिए ब्रिक्स जैसे मंचों को मज़बूत करना।
2. वैश्विक संस्थानों में सुधार: समकालीन वैश्विक चुनौतियों का समाधान करने के लिए संयुक्त राष्ट्र और बहुपक्षीय विकास बैंकों में सुधारों की वकालत करना, जिसमें संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद का विस्तार भी शामिल है।
3. वैश्विक अर्थव्यवस्था का लोकतंत्रीकरण: COVID-19 महामारी के दौरान उजागर हुई कमज़ोरियों को कम करने के लिए क्षेत्रीय उत्पादन केंद्रों और लचीली आपूर्ति श्रृंखलाओं के निर्माण को बढ़ावा देना।
4. औपनिवेशिक युग के बुनियादी ढाँचे को दुरुस्त करना: समावेशी और विविधतापूर्ण कनेक्टिविटी विकल्प विकसित करना जो क्षेत्रीय अखंडता और संप्रभुता का सम्मान करते हों, पुरानी प्रणालियों द्वारा छोड़ी गई असमानताओं को संबोधित करते हों।
5. स्केलेबल समाधान साझा करना: डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना, एकीकृत भुगतान इंटरफ़ेस (UPI) और अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन जैसी भारत की पहलों को साझा करें ताकि आम वैश्विक चुनौतियों से निपटा जा सके।

एजेंडे की आवश्यकता:

- वैश्विक असंतुलन: वैश्वीकरण के लाभों के वितरण में लगातार असमानताएँ, विशेष रूप से स्वास्थ्य, खाद्य और ऊर्जा सुरक्षा में।
- वैश्विक दक्षिण का हाशिए पर होना: विकासशील देशों को वैश्विक निर्णय लेने वाली संस्थाओं में अपर्याप्त प्रतिनिधित्व का सामना करना पड़ता है।
- आपूर्ति श्रृंखला की कमज़ोरियाँ: COVID-19 महामारी ने वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं की कमज़ोरी को उजागर किया, जिसने क्षेत्रीय केंद्रों की आवश्यकता पर बल दिया।
- भू-राजनीतिक अस्थिरता: संघर्ष, जैसे कि पश्चिम एशिया में, वैश्विक सुरक्षा और आर्थिक स्थिरता को खतरा पैदा करते हैं।
- सतत विकास लक्ष्य (एसडीजी): अपर्याप्त सहयोग और पुराने ढाँचे के कारण दुनिया एसडीजी को पूरा करने के लिए संघर्ष कर रही है।

आधुनिक दुनिया में पाँच सूत्री एजेंडे के लिए चुनौतियाँ:

- संस्थागत प्रतिरोध: संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद जैसी सुधार संस्थाओं को मौजूदा स्थायी सदस्यों से विरोध का सामना करना पड़ता है।
- भू-राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता: प्रमुख शक्तियों के बीच प्रतिस्पर्धा करने वाले राष्ट्रीय हित बहुध्रुवीयता पर वैश्विक सहमति में बाधा डालते हैं।

- आर्थिक संरक्षणवाद: व्यापार युद्धों और संरक्षणवादी नीतियों का उदय वैश्विक अर्थव्यवस्था को लोकतांत्रिक बनाने के प्रयासों को बाधित करता है।
- तकनीकी अंतराल: विकासशील देशों में उन्नत तकनीकों तक सीमित पहुँच उनके सार्थक योगदान करने की क्षमता को बाधित करती है।
- वैश्विक संघर्ष: चल रहे क्षेत्रीय संघर्ष और राजनीतिक अस्थिरता सामूहिक कार्रवाई से संसाधनों और ध्यान को हटाते हैं।

आगे की राह:

- गठबंधनों को मजबूत करना: ब्रिक्स, जी20 और क्षेत्रीय भागीदारी जैसे प्लेटफार्मों के माध्यम से दक्षिण-दक्षिण सहयोग को बढ़ावा देना।
- सुधार की वकालत करना: वैश्विक शासन संस्थानों और विकास बैंकों में सुधारों के लिए दबाव बनाने के लिए गठबंधन बनाएँ।
- लचीलापन बढ़ाना: आर्थिक कमज़ोरियों को कम करने के लिए क्षेत्रीय उत्पादन क्षमताओं और टिकाऊ बुनियादी ढाँचे में निवेश करें।
- डिजिटल समाधानों का विस्तार: भारत के डिजिटल सार्वजनिक बुनियादी ढाँचे जैसे तकनीकी समाधानों को विकासशील देशों के साथ साझा करें।
- संवाद को बढ़ावा देना: वैश्विक संघर्षों में मध्यस्थता करने और नियम-आधारित व्यवस्था की वकालत करने के लिए राजनयिक प्लेटफॉर्म का लाभ उठाएँ।

निष्कर्ष:

जयशंकर का पांच सूत्री एजेंडा बहुध्रुवीय और समावेशी विश्व व्यवस्था को बढ़ावा देने में भारत के नेतृत्व को दर्शाता है जो वैश्विक दक्षिण को प्राथमिकता देता है। असमानताओं को दूर करके और सहयोग को बढ़ाकर, एजेंडा का उद्देश्य भविष्य की चुनौतियों के लिए एक अधिक निष्पक्ष, अधिक लचीला वैश्विक ढांचा तैयार करना है।

अभ्यास ला पेरोस

संदर्भ:

बहुपक्षीय नौसैनिक अभ्यास ला पेरोस 2025 भारतीय और प्रशांत महासागरों को जोड़ने वाले रणनीतिक जलडमरूमध्य में चल रहा है, जिसकी मेजबानी फ्रांस कर रहा है।

अभ्यास ला पेरोस के बारे में:

- यह क्या है: ला पेरोस एक बहुपक्षीय नौसैनिक अभ्यास है जो समुद्री सुरक्षा को मजबूत करने, अंतर-संचालन को बढ़ाने और भाग लेने वाली नौसेनाओं के बीच स्थितिजन्य जागरूकता विकसित करने के लिए आयोजित किया जाता है।
- मेजबान देश: फ्रांस अभ्यास का नेतृत्व करता है, जिसके कैरियर स्ट्राइक ग्रुप का नेतृत्व विमानवाहक पोत चार्ल्स डी गॉल करता है।
- स्थान: मलक्का, सुंडा और लोम्बोक जलडमरूमध्य में आयोजित किया जाता है, जो हिंद महासागर और प्रशांत महासागर के बीच प्रमुख चोकपॉइंट हैं।
- सदस्य: 2025 संस्करण में भारत, फ्रांस, यू.एस., कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, इंडोनेशिया, मलेशिया, सिंगापुर और यू.के. शामिल हैं।

उद्देश्य और लक्ष्य:

- समुद्री सुरक्षा: अवैध तस्करी, पर्यावरणीय खतरों और समुद्री संकटों जैसे मुद्दों को संबोधित करना।
- सहयोग बढ़ाना: समुद्री निगरानी, हवाई संचालन और समुद्री अवरोधन में प्रशिक्षण।
- अंतर-संचालन: समकालिक संकट प्रबंधन के लिए IORIS जैसी उन्नत प्रणालियों का उपयोग करें।
- नियम-आधारित व्यवस्था के प्रति प्रतिबद्धता: भारत के SAGAR (क्षेत्र में सभी के लिए सुरक्षा और विकास) के साथ अतिरिक्त एक स्थिर और सुरक्षित इंडो-पैसिफिक को बढ़ावा देना।

ग्लोबल साउथ और भारत

संदर्भ:

केंद्रीय वाणिज्य और उद्योग मंत्री ने आपदा प्रबंधन पर विश्व कांग्रेस के दौरान, वैक्सिन मैत्री जैसी पहलों के माध्यम से पड़ोसी और ग्लोबल साउथ देशों की सहायता करने में भारत के प्रयासों पर प्रकाश डाला।



ग्लोबल साउथ क्या है?

- ग्लोबल साउथ शब्द का व्यापक अर्थ विकासशील और कम विकसित राष्ट्रों से है, जो मुख्य रूप से एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका में हैं। ये राष्ट्र अक्सर ग्लोबल नॉर्थ की तुलना में गरीबी, आय असमानता और सीमित संसाधनों जैसी चुनौतियों का सामना करते हैं - अमीर, औद्योगिक राष्ट्र जो ज्यादातर उत्तरी अमेरिका, यूरोप और ऑशिनिया के कुछ हिस्सों में स्थित हैं।
- यह अवधारणा पुराने शब्द "थर्ड वर्ल्ड" के तटस्थ विकल्प के रूप में लोकप्रिय हुई, जो उपनिवेशवाद और आर्थिक हाशिए के साझा इतिहास को उजागर करती है।

ग्लोबल साउथ का महत्व:

- आर्थिक विकास की संभावना: ग्लोबल साउथ ने एशिया-प्रशांत जैसे क्षेत्रों की ओर धन का स्थानांतरण देखा है, जहाँ भारत और चीन जैसे राष्ट्र आर्थिक विकास को आगे बढ़ा रहे हैं।
उदाहरण के लिए, ब्रिक्स राष्ट्र अब संयुक्त सकल घरेलू उत्पाद में जी7 देशों से आगे निकल गए हैं।
- जनसांख्यिकी लाभ: ग्लोबल नॉर्थ में वृद्ध समाजों की तुलना में युवा आबादी के साथ, इन राष्ट्रों के पास भविष्य के वैश्विक आर्थिक योगदान के लिए तैयार कार्यबल है।
उदाहरण के लिए, स्किल इंडिया जैसी भारत की युवा-उन्मुख नीतियाँ इस जनसांख्यिकीय लाभों का दोहन करती हैं।
- भू-राजनीतिक प्रभाव: वैश्विक दक्षिण के राष्ट्र अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को आकार दे रहे हैं, एक बहुध्रुवीय दुनिया की ओर बढ़ रहे हैं।
उदाहरण के लिए, वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ समिट 2023 में भारत के नेतृत्व ने इसके भू-राजनीतिक महत्व को प्रदर्शित किया।
- इनोवेशन हब: ग्लोबल साउथ के राष्ट्र तेजी से एआई, नवीकरणीय ऊर्जा और डिजिटल समाधानों में तकनीकों को अपना रहे हैं, जो नवाचार के वैश्विक केंद्र बन रहे हैं।
उदाहरण के लिए, चंद्रयान-3 जैसी भारत की अंतरिक्ष पहल और यूपीआई जैसी डिजिटल भुगतान प्रणाली।
- वैश्विक चुनौतियों का समाधान: ये देश जलवायु परिवर्तन, गरीबी और सतत विकास जैसे वैश्विक मुद्दों से निपटने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
उदाहरण के लिए, भारत का अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन नवीकरणीय ऊर्जा अपनाने को बढ़ावा देता है।

ग्लोबल साउथ के लिए चुनौतियाँ:

- ग्रीन एनर्जी फंडिंग गैप: विकसित राष्ट्र ग्रीन पहलों के लिए पर्याप्त फंडिंग प्रदान करने में विफल रहते हैं, जिससे विकासशील देशों को जलवायु परिवर्तन का खामियाजा भुगताना पड़ता है।
उदाहरण के लिए, भारत लगातार ग्लोबल नॉर्थ से वादा किए गए जलवायु वित्त की कमी को उजागर करता है।
- आर्थिक निर्भरता: कई राष्ट्र बाहरी सहायता, ऋण या व्यापार संबंधों पर निर्भर रहते हैं, जो धनी अर्थव्यवस्थाओं के पक्ष में होते हैं।
उदाहरण के लिए चीन की बेल्ट एंड रोड पहल अक्सर छोटे देशों को कर्ज में डुबो देती है।
- संसाधनों तक सीमित पहुँच: संसाधन आवंटन में ऐतिहासिक असमानताएँ विकास में बाधा डालती हैं।
उदाहरण के लिए अफ्रीकी देशों को संकट के दौरान स्वास्थ्य सेवा और टीकों तक पहुँचने में चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।
- वैश्विक संघर्षों का प्रभाव: रूस-यूक्रेन संघर्ष जैसे युद्ध खाद्य और ऊर्जा असुरक्षा को बढ़ाते हैं। उदाहरण के लिए संघर्ष के बाद गेहूँ की बढ़ती कीमतों ने कई अफ्रीकी और दक्षिण एशियाई देशों को प्रभावित किया।
- कोविड-19 के झटके: महामारी ने आर्थिक विभाजन को और बढ़ा दिया, श्रीलंका और पाकिस्तान जैसी कमज़ोर अर्थव्यवस्थाएँ उबरने के लिए संघर्ष कर रही हैं।
उदाहरण के लिए भारत की वैक्सीन मैत्री ने महामारी के दौरान वैक्सीन असमानता को कम किया।

आगे की राह:

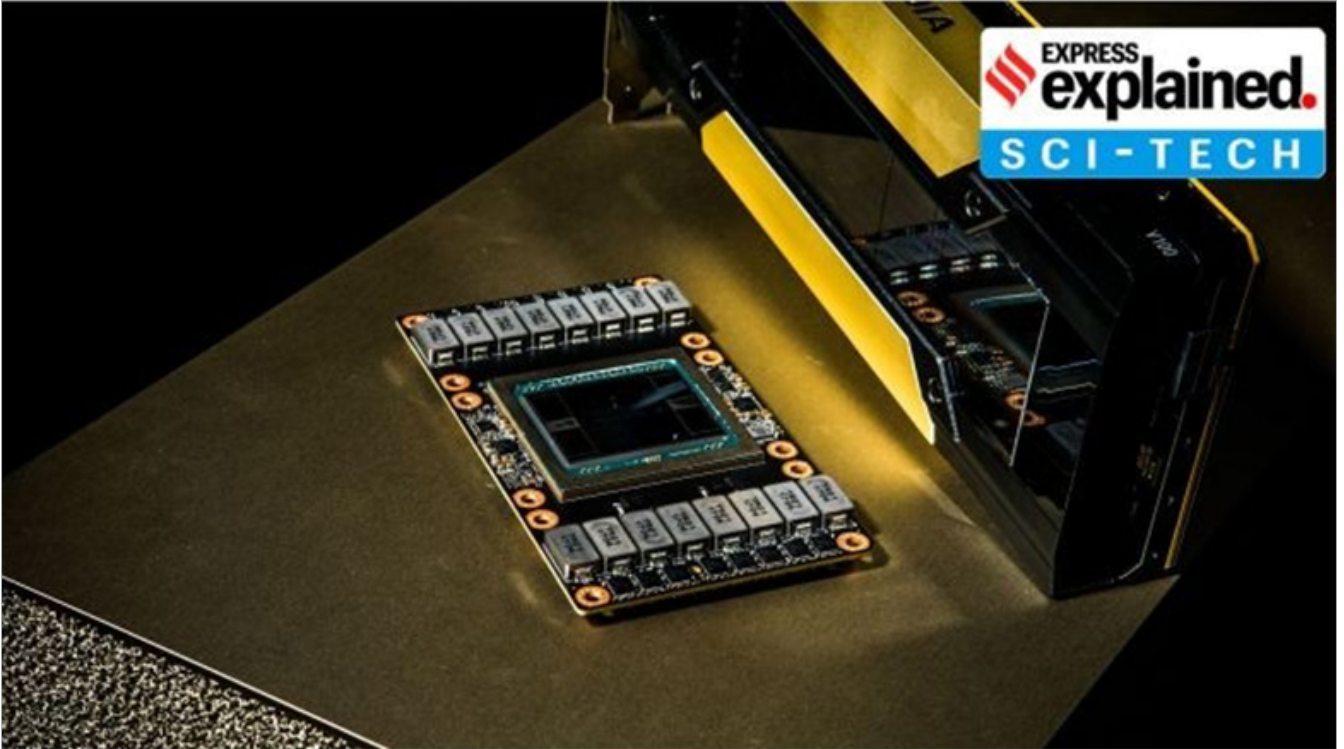
- सहयोगात्मक ढाँचे: व्यापार, स्वास्थ्य सेवा और प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में आपसी विकास के लिए दक्षिण-दक्षिण सहयोग को मज़बूत करना। उदाहरण के लिए भारत का ग्लोबल साउथ सेंटर ऑफ़ एक्सीलेंस साझा सर्वोत्तम प्रथाओं को बढ़ावा देता है।
- सतत विकास: हरित प्रौद्योगिकियों और जलवायु-लचीले बुनियादी ढाँचे में निवेश करें। उदाहरण के लिए, भारत का राष्ट्रीय हरित हाइड्रोजन मिशन एक वैश्विक उदाहरण स्थापित करता है।
- समान संसाधन वितरण: वैश्विक संसाधनों और वित्तपोषण तंत्र तक उचित पहुँच सुनिश्चित करना। उदाहरण के लिए, पर्याप्त जलवायु वित्तपोषण के लिए COP28 में वकालत करना।
- आर्थिक विविधीकरण: बाहरी शक्तियों पर निर्भरता कम करने के लिए अर्थव्यवस्थाओं में विविधता लाने पर ध्यान केंद्रित करना। उदाहरण के लिए, आत्मनिर्भर भारत के तहत भारत का आत्मनिर्भरता के लिए प्रयास।
- क्षमता निर्माण: जनसांख्यिकीय लाभांश का पूर्ण उपयोग करने के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और कौशल विकास को बढ़ावा दें। उदाहरण के लिए, NEP 2020 और स्किल इंडिया जैसी पहलों का उद्देश्य कौशल अंतराल को दूर करना है।

निष्कर्ष:

ग्लोबल साउथ एक अधिक समावेशी और बहुधुवीय वैश्विक व्यवस्था के वादे का प्रतिनिधित्व करता है। भारत जैसे राष्ट्र समानता और लचीलेपन में अंतराल को पाटने, भू-राजनीति और वैश्विक विकास ढाँचे को नया आकार देने के प्रयासों का नेतृत्व कर रहे हैं। जैसे-जैसे ये राष्ट्र आगे बढ़ेंगे, उनका प्रभाव अंतरराष्ट्रीय संबंधों को फिर से परिभाषित करना जारी रखेगा, जिससे एक संतुलित और टिकाऊ भविष्य सुनिश्चित होगा।

यूएस एआई निर्यात नियम**संदर्भ:**

बिडेन प्रशासन के अंतिम दिनों में, GPU जैसी उन्नत कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) तकनीकों के निर्यात को विनियमित करने के लिए "आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस डिफ्यूजन के लिए रूफरेखा" नामक एक नया नियामक ढाँचा पेश किया गया है।

**यूएस एआई निर्यात नियम के बारे में:****यह क्या है?**

- राष्ट्रीय सुरक्षा विंताओं के आधार पर एआई हार्डवेयर, विशेष रूप से जीपीयू के निर्यात को नियंत्रित करने के लिए अमेरिकी सरकार द्वारा शुरू किया गया एक विनियामक ढाँचा।
- इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि उन्नत एआई क्षमताएँ अमेरिका और उसके निकटतम सहयोगियों के दायरे में रहें।

श्रेणियाँ और भारत का स्थान:**1. टियर 1:**

- इसमें ऑस्ट्रेलिया, जापान, दक्षिण कोरिया और यूके जैसे 18 निकटतम अमेरिकी सहयोगी शामिल हैं।
- न्यूनतम निर्यात प्रतिबंध; अमेरिकी कंपनियाँ यहाँ स्वतंत्र रूप से एआई तकनीक तैनात कर सकती हैं।

2. टियर 2:

- इसमें भारत सहित अधिकांश देश शामिल हैं
- प्रतिबंधों में कंप्यूटिंग पावर आयात पर एक सीमा शामिल है, जब तक कि इसे विश्वसनीय वातावरण में होस्ट न किया जाए
- 2027 तक 50,000 उन्नत एआई चिप्स की सीमा, द्विपक्षीय समझौतों पर विस्तार योग्य

3. टियर 3:

- रूस, चीन और उत्तर कोरिया जैसे देशों को अमेरिकी एआई तकनीक के आयात पर लगभग पूर्ण प्रतिबंध का सामना करना पड़ रहा है।

4. भारत और चीन के लिए विशेष प्रावधान:

- भारत: अधिकृत फर्म नागरिक और सैन्य उद्देश्यों (परमाणु उपयोग को छोड़कर) के लिए निर्यात की गई तकनीक का उपयोग कर सकती हैं।
- चीन: निर्यात की गई तकनीक केवल नागरिक अनुप्रयोगों तक ही सीमित है।

भारत के लिए निहितार्थ:

भारत एआई मिशन:

- कंप्यूटिंग शक्ति लक्ष्यों को प्राप्त करने में संभावित देरी।
- प्रतिबंध बड़े पैमाने पर एआई डेटा सेंटर के विकास में बाधा डाल सकते हैं जबकि छोटी फर्मों को बरख्श सकते हैं।

रणनीतिक गठबंधन:

- अमेरिकी विदेश नीति में भारत के बढ़ते महत्व पर प्रकाश डालता है, लेकिन टियर 1 में इसके गैर-समावेश को रेखांकित करता है।
- प्रतिबंधों में ढील के लिए द्विपक्षीय वार्ता की आवश्यकता है।

घरेलू AI पारिस्थितिकी तंत्र:

- अत्याधुनिक जीपीयू तक सीमित पहुंच एआई अनुसंधान और नवाचार को धीमा कर सकती है।
- एआई हार्डवेयर निर्माण में भारत को आत्मनिर्भरता की ओर धकेलता है।

वैश्विक प्रतिस्पर्धा:

- भारत की टियर 1 के देशों के साथ प्रतिस्पर्धा करने की क्षमता में बाधा उत्पन्न कर सकता है, खासकर AI-संचालित उद्योगों में।

भारत बांग्लादेश सीमा विवाद

संदर्भ:

हाल ही में, बॉर्डर गार्ड्स बांग्लादेश (BGB) ने पश्चिम बंगाल के मालदा में अंतर्राष्ट्रीय सीमा पर कांटेदार तार की बाड़ के निर्माण में बाधा डालने का प्रयास किया था।

भारत-बांग्लादेश सीमा क्षेत्र:

- लंबाई और कवरेज: भारत-बांग्लादेश सीमा 4,096 किलोमीटर तक फैली हुई है, जिसमें पाँच भारतीय राज्य शामिल हैं: पश्चिम बंगाल, असम, त्रिपुरा, मेघालय और मिज़ोरम।
- सीमा प्रकार: सीमा मैदानी इलाकों, नदियों और वन क्षेत्रों का मिश्रण है, जिसमें लगभग 180 किलोमीटर की नदी सीमा है।
- एन्वलेव और एक्सवलेव: 2015 के भूमि सीमा समझौते ने अधिकांश एन्वलेव मुद्दों को हल कर दिया, फिर भी छोटे-मोटे विवाद बने हुए हैं, खासकर कोमिला-त्रिपुरा जैसे क्षेत्रों में।
- भू-राजनीतिक महत्व: सीमा व्यापार, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और रणनीतिक संपर्क को सुगम बनाती है, खास तौर पर सार्क और बिस्मटेक जैसे क्षेत्रीय सहयोग ढांचे के तहत।
- साझा पारिस्थितिकी तंत्र: सीमावर्ती क्षेत्रों में गंगा और ब्रह्मपुत्र जैसी साझा नदियाँ और अद्वितीय जैव विविधता शामिल हैं, जिसके लिए सहकारी प्रबंधन की आवश्यकता होती है।

भारत-बांग्लादेश सीमा से जुड़े मुद्दे:

- सीमा पर बाड़ लगाने के विवाद: बांग्लादेश भारत की बाड़ लगाने को 1975 के सीमा दिशा-निर्देशों का उल्लंघन मानता है, जो सीमा के 150 गज के भीतर रक्षा संरचनाओं को प्रतिबंधित करते हैं।
- अवैध प्रवास: छिद्रपूर्ण सीमा ने अनिर्दिष्ट प्रवास को बढ़ावा दिया है, जिससे भारतीय राज्यों में सामाजिक-राजनीतिक तनाव पैदा हुआ है।



- सीमा पार अपराध: मवेशियों, नशीली दवाओं और हथियारों की तस्करी एक लगातार मुद्दा रहा है, जिससे द्विपक्षीय संबंधों में तनाव पैदा हुआ है।
- अनसुलझे भूमि और नदी विवाद: कुछ सीमा खंड अचिह्नित रह गए हैं, और नदी की सीमाएँ बाढ़ लगाने के प्रयासों को जटिल बनाती हैं।
- समुदायों पर प्रभाव: बाढ़ लगाने और सीमा विवाद दोनों पक्षों की स्थानीय आजीविका और संसाधनों तक पहुँच को बाधित करते हैं।

भारत-बांग्लादेश सीमाओं की सुरक्षा के लिए मौजूदा सुरक्षा उपाय:

- बाढ़ लगाना: लगभग 3,141 किलोमीटर सीमा पर बाढ़ लगाई गई है, अवैध गतिविधियों पर अंकुश लगाने के लिए शेष खंडों को पूरा करने की योजना है।
- स्मार्ट निगरानी: गतिविधियों पर नज़र रखने के लिए संवेदनशील क्षेत्रों में सीसीटीवी, सेंसर और ड्रोन के साथ स्मार्ट बाढ़ लगाई जा रही है।
- जल विंग इकाइयाँ: BSF की जल शाखा नदी के किनारे के सीमा क्षेत्रों में गश्त करती है, जहाँ बाढ़ नहीं है और अवैध क्रॉसिंग के लिए असुरक्षित है।
- समन्वित गश्त: सीमा सुरक्षा बल (BSF) और बॉर्डर गार्ड बांग्लादेश (BGB) के बीच संयुक्त अभियान और पलैंग मीटिंग समन्वय को बढ़ावा देती हैं।
- तकनीकी एकीकरण: उन्नत रडार सिस्टम, थर्मल इमेजिंग और इलेक्ट्रॉनिक निगरानी उच्च जोखिम वाले क्षेत्रों में सुरक्षा को बढ़ाते हैं।

आगे की राह:

- द्विपक्षीय तंत्र को मजबूत करना: विवादों को सौहार्दपूर्ण ढंग से हल करने के लिए भारत और बांग्लादेश के बीच नियमित परामर्श और विश्वास-निर्माण उपाय आवश्यक हैं।
- बाढ़ लगाने का काम पूरा करना: भूमि अधिग्रहण और भू-भाग से संबंधित मुद्दों को संबोधित करने से सीमा पर बाढ़ लगाने का काम तेजी से पूरा हो सकता है।
- बेहतर सीमा प्रबंधन: एआई और स्मार्ट बाढ़ लगाने सहित अधिक प्रौद्योगिकी-संचालित समाधानों की तैनाती से सुरक्षा को बढ़ाया जा सकता है।
- सामुदायिक जुड़ाव: स्थानीय समुदायों को सुरक्षा ढांचे में शामिल करने से सुरक्षा और आजीविका को संतुलित करने में मदद मिल सकती है।
- नदी विवादों को हल करना: जल बंटवारे और नदी सीमा सीमांकन पर सहयोगी समझौते लंबे समय से चले आ रहे तनाव को दूर कर सकते हैं।

निष्कर्ष:

भारत-बांग्लादेश सीमा साझा इतिहास और आधुनिक चुनौतियों दोनों का प्रतीक है। द्विपक्षीय सहयोग को मजबूत करना, विवादों को सौहार्दपूर्ण ढंग से सुलझाना और सीमा प्रबंधन के लिए प्रौद्योगिकी का लाभ उठाना इस सीमा को आपसी समृद्धि और सुरक्षा के पुल में बदल सकता है।

भगदड़

संदर्भ:

29 जनवरी को प्रयागराज में महाकुंभ मेला 2025 में हुई एक दुखद भगदड़ में 30 लोगों की मौत हो गई और 60 लोग घायल हो गए, जिससे भीड़ प्रबंधन विफलताओं पर चिंता बढ़ गई।



भगदड़ क्या है?

- अचानक भीड़ का बढ़ना: भगदड़ तब होती है जब लोगों का एक बड़ा समूह अनियंत्रित रूप से आगे बढ़ता है, जिससे अक्सर लोग कुचल जाते हैं, दम घुटने लगते हैं और मौतें होती हैं।
- घबराहट या उत्तेजना से शुरू: यह अफवाहों, डर, सीमित जगह या अचानक हरकतों के कारण हो सकता है, जिससे भीड़ का व्यवहार अव्यवस्थित हो जाता है।
- धार्मिक समारोहों में आम: अध्ययनों से पता चलता है कि भारत में 79% भगदड़ धार्मिक आयोजनों के दौरान हुई हैं।

भगदड़ के लिए जिम्मेदार कारक:

- संरचनात्मक विफलताएँ: कमज़ोर अस्थायी संरचनाएँ, खराब बैरिकेडिंग और संकीर्ण प्रवेश/निकास खतरे पैदा करते हैं।
- भीड़ पर नियंत्रण की कमी: भीड़ के आकार का कम आंकलन, स्टाफ़ की कमी, अपर्याप्त निकास और अनियंत्रित पहुँच के कारण भीड़भाड़ बढ़ जाती है।
- घबराहट और अफ़वाहें: झूठे अलार्म या सामूहिक उन्माद के कारण अचानक हरकतें हो सकती हैं, जिससे लोग भागकर गिर सकते हैं।
- आग और बिजली संबंधी समस्याएँ: शॉर्ट सर्किट, आग बुझाने के यंत्रों की कमी या खराब रोशनी के कारण घबराहट की स्थिति पैदा हो सकती है।
- समन्वय की कमी: एजेंसियों के बीच खराब योजना, देरी से प्रतिक्रिया और वास्तविक समय की निगरानी का अभाव संकट को और भी बदतर बना देता है।

भगदड़ रोकने पर NDMA के दिशा-निर्देश

- भीड़ का अनुमान और प्रबंधन: अधिकारियों को अपेक्षित भीड़ के आकार का आकलन करना चाहिए, प्रवेश बिंदुओं को नियंत्रित करना चाहिए और लोगों की आवाजाही को नियंत्रित करना चाहिए।
- बुनियादी ढाँचा और सुरक्षा उपाय: मज़बूत बैरिकेड, आपातकालीन निकास और पर्याप्त वेंटिलेशन सुनिश्चित किया जाना चाहिए।
- सुरक्षा और निगरानी: भीड़ की आवाजाही पर नज़र रखने के लिए CCTV कैमरे, सार्वजनिक संबोधन प्रणाली और प्रशिक्षित सुरक्षा कर्मियों की तैनाती।

- आपातकालीन तैयारी: त्वरित प्रतिक्रिया के लिए चिकित्सा दल, एम्बुलेंस और अग्निशमन इकाइयों को रणनीतिक रूप से तैनात किया जाना चाहिए।
- जन जागरूकता और सूचना प्रसार: घबराहट की स्थिति से बचने के लिए साइनबोर्ड, हेल्पलाइन नंबर और वास्तविक समय के डिजिटल अपडेट के माध्यम से उपस्थित लोगों को शिक्षित करना।

भगदड़ रोकने में चुनौतियाँ:

- अनियंत्रित भीड़: धार्मिक भावनाएँ, अनुशासन की कमी और अचानक आने वाली भीड़ भीड़ को नियंत्रित करना मुश्किल बना देती है।
- अपर्याप्त कानून प्रवर्तन: प्रशिक्षित कर्मियों की कमी, समन्वय की कमी और खराब क्षेत्रवार तैनाती प्रतिक्रिया प्रयासों में बाधा डालती है।
- खराब बुनियादी ढाँचा रखरखाव: संकीर्ण मार्ग, कमज़ोर पुल और अवैध अतिक्रमण अड़चनें पैदा करते हैं।
- प्रौद्योगिकी एकीकरण की कमी: वास्तविक समय की भीड़ विश्लेषण, जीपीएस ट्रैकिंग और एआई-आधारित भीड़ नियंत्रण प्रणाली की अनुपस्थिति संकट प्रतिक्रिया में देरी करती है।
- पूर्व-पंजीकरण प्रणालियों का विरोध: कई तीर्थयात्री अनिवार्य ऑनलाइन पंजीकरण का विरोध करते हैं, जिससे अनियंत्रित भीड़ और अधिक क्षमता की समस्याएँ पैदा होती हैं।

आगे का रास्ता:

- सख्त पूर्व-पंजीकरण और टिकटिंग: प्रवेश सीमाओं को नियंत्रित करने के लिए अनिवार्य ऑनलाइन पंजीकरण लागू करें।
- उन्नत AI-आधारित निगरानी: वास्तविक समय की भीड़ विश्लेषण, उछाल की भविष्यवाणी और भीड़भाड़ को रोकने के लिए AI और ड्रोन का उपयोग करें।
- सुरक्षा और स्वयंसेवकों का प्रशिक्षण: भीड़ मनोविज्ञान और आपातकालीन प्रतिक्रियाओं में विशेषज्ञता वाले अच्छी तरह से प्रशिक्षित कर्मियों को तैनात करें।
- कुशल यातायात और आंदोलन योजना: क्षेत्र-आधारित भीड़ प्रबंधन, एकतरफा आंदोलन मार्ग और अलग आपातकालीन लेन लागू करें।
- आपातकालीन मॉक ड्रिल: संकट की स्थितियों से निपटने के लिए अधिकारियों, सुरक्षा और जनता को प्रशिक्षित करने के लिए नियमित रूप से भगदड़ प्रतिक्रिया अभ्यास आयोजित करें।

निष्कर्ष:

जैसा कि NDMA कहता है, "रोकथाम इलाज से बेहतर है।" भविष्य में भगदड़ को रोकने के लिए सक्रिय भीड़ प्रबंधन, प्रौद्योगिकी एकीकरण और सख्त विनियमन महत्वपूर्ण हैं। प्रभावी नीति कार्यान्वयन और समन्वय जीवन बचा सकता है और सुरक्षित सार्वजनिक समारोह सुनिश्चित कर सकता है।

मानव-हाथी संघर्ष

संदर्भ:

नामीबिया में हाल ही में हुए एक अध्ययन में इस बात पर प्रकाश डाला गया है कि किस तरह अलग-अलग जल बिंदु और उन्नत बुनियादी ढाँचा मानव-हाथी संघर्ष को कम कर सकता है।

मानव-पशु संघर्ष को कम करने के तरीकों के बारे में:

1. अलग-अलग संसाधन क्षेत्रों को नामित करना: प्रत्यक्ष संपर्क को कम करने के लिए गाँवों से दूर वन्यजीवों के लिए अलग-अलग जल बिंदु या बाँध बनाएँ।
उदाहरण के लिए, राष्ट्रीय हाथी संरक्षण योजना के तहत हाथियों के लिए नामीबिया के जल बाँध।
1. बुनियादी ढाँचे को उन्नत करना: क्षति को रोकने के लिए सुरक्षात्मक दीवारों, सौर ऊर्जा से चलने वाले पंपों और कंक्रीट के बाँधों के साथ जल बिंदुओं को सुदृढ़ करें।
उदाहरण के लिए, नामीबिया में सौर पंप प्रणालियों ने पाइपों और टैंकों को हाथियों द्वारा होने वाले नुकसान को कम किया।
1. सामुदायिक भागीदारी: स्वामित्व की भावना को बढ़ावा देने के लिए निगरानी और संरक्षण गतिविधियों में स्थानीय समुदायों को शामिल करें।
उदाहरण के लिए, 1990 के दशक से नामीबिया का सामुदायिक संरक्षण कार्यक्रम।
1. बफर जोन और अवरोध: वन्यजीवों के घुसपैठ को रोकने के लिए प्राकृतिक बाड़ या खाइयों का उपयोग करके मानव बस्तियों के आसपास बफर जोन बनाएं।
उदाहरण के लिए, हाथियों के संघर्ष को कम करने के लिए कर्नाटक में जैव-बाड़ का उपयोग।

यूपीएससी परीक्षा पाठ्यक्रम में प्रासंगिकता:

- जीएस पेपर 3 - पर्यावरण: वन्यजीव संरक्षण, पारिस्थितिक स्थिरता और जलवायु प्रभावों को कम करने की रणनीतियाँ।
- जीएस पेपर 3 - कृषि: ग्रामीण आजीविका और फसल नुकसान को प्रभावित करने वाले मानव-वन्यजीव संघर्ष।
- निबंध: मानव-पशु सह-अस्तित्व के नैतिक और पारिस्थितिक आयाम।
- नैतिकता में केस स्टडीज: विकास और संरक्षण में संतुलन, टिकाऊ नीतियों में सामुदायिक भागीदारी की भूमिका।

1. भारतीय ज्ञान प्रणालियों (आईकेएस) पर ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

परिचय

भारतीय ज्ञान प्रणालियाँ (आईकेएस) एक स्थायी और विकसित परंपरा का प्रतिनिधित्व करती हैं, जिसने भारत के बौद्धिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक लोकाचार को महत्वपूर्ण रूप से आकार दिया है।

- भौतिक और आध्यात्मिक दोनों आयामों को शामिल करते हुए, आईकेएस ने विविध क्षेत्रों में वैश्विक विचारों को प्रभावित किया है।
- 2020 में शिक्षा मंत्रालय के आईकेएस प्रभाग की स्थापना समकालीन संदर्भों में इसकी प्रासंगिकता सुनिश्चित करने के लिए इस विरासत को प्रलेखित करने और पुनर्जीवित करने के महत्व को रेखांकित करती है।
- जैसा कि ईशावास्योपनिषद में उजागर किया गया है, सच्चा ज्ञान (विद्या) समग्र है, जो संतुलित और सार्थक जीवन के लिए आध्यात्मिक ज्ञान और भौतिक समझ का सामंजस्य स्थापित करता है।

भारतीय ज्ञान प्रणालियों के घटक

वेद:

- भारतीय विचार के मूल ग्रंथ: ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद।
- आध्यात्मिक, वैज्ञानिक और व्यावहारिक ज्ञान को शामिल करें, जिसमें अनुष्ठान, शासन और प्राकृतिक विज्ञान शामिल हैं।

उपवेद:

- आयुर्वेद (चिकित्सा), धनुर्वेद (धनुर्वेद), गंधर्ववेद (प्रदर्शन कला) और शिल्पवेद (वास्तुकला) जैसे विशेष क्षेत्रों को शामिल करें।

उपनिषद:

- वास्तविकता, चेतना और मुक्ति की खोज करने वाले दार्शनिक प्रवचन।
- पराविद्या (उच्च ज्ञान) और अपराविद्या (भौतिक ज्ञान) की अवधारणाओं का परिचय दें।

पुराण:

- ब्रह्मांड विज्ञान, सृजन और सांस्कृतिक इतिहास का दस्तावेजीकरण करने वाली कथाएँ।
 - नैतिकता, समाजशास्त्र और दर्शन में अंतर्दृष्टि प्रदान करें।
- उदाहरण: ब्रह्मवैवर्त पुराण आधुनिक वैज्ञानिक विचारों के समानांतर समय सापेक्षता पर चर्चा करता है।

भारतीय ज्ञान प्रणालियों की विशेषताएँ

समग्र ज्ञान:

- मुक्ति (विमुक्ति) प्राप्त करने के लिए आध्यात्मिक ज्ञान (विद्या) को भौतिक समझ (अविद्या) के साथ संतुलित करता है।
- व्यक्तिगत और सामाजिक कल्याण पर ध्यान केंद्रित करता है।

निरंतरता और अनुकूलनशीलता:

- वेदों और पुराणों जैसे ग्रंथों में प्रलेखित होने से पहले सहस्राब्दियों तक मौखिक परंपराओं के माध्यम से संरक्षित।
- मूल दर्शन को बनाए रखते हुए बदलती सामाजिक आवश्यकताओं के साथ विकसित हुआ।

ऐतिहासिक समयरेखा और दस्तावेजीकरण

मौखिक परंपरा:

- हजारों वर्षों से मौखिक रूप से प्रसारित ज्ञान।

प्रलेखित ग्रंथ:

- वेद (~1500 ईसा पूर्व), पुराण (4वीं शताब्दी ईसा पूर्व-11वीं शताब्दी सीई), और रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्य।

औपनिवेशिक काल की चुनौतियाँ:

- ब्रिटिश शैक्षिक नीतियों के तहत IKS का पतन।
- ज्ञान संचरण की हानि और गलत धारणाओं का प्रसार।

विभिन्न क्षेत्रों में योगदान

दर्शन और नैतिकता:

- भौतिकवाद और आध्यात्मिकता को एकीकृत करता है।
- भगवद गीता जैसे ग्रंथ जीवन में कर्तव्य और संतुलन पर नैतिक मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।

गणित और खगोल विज्ञान:

- आर्यभट्ट, बौधायन और अन्य लोगों द्वारा त्रिकोणमिति, कलन और खगोल विज्ञान में योगदान।
- प्राचीन ग्रंथों में आकाशीय गति और ज्यामितीय सिद्धांतों का विस्तार से वर्णन किया गया है।

चिकित्सा:

- आयुर्वेद, जैसा कि चरक संहिता और सुश्रुत संहिता में विस्तृत रूप से बताया गया है, समग्र स्वास्थ्य पर जोर देता है।
- सुश्रुत ने मोतियाबिंद हटाने जैसी सर्जरी की शुरुआत की।
- तमिलनाडु की सिद्ध प्रणाली हर्बल और आध्यात्मिक उपचार पर जोर देती है।

कला और संस्कृति:

- भरत मुनि द्वारा नाट्य शास्त्र नाटक, नृत्य और संगीत के सिद्धांतों को रेखांकित करता है।
- आध्यात्मिक और धार्मिक विषयों को दर्शाता है।

प्रौद्योगिकी और शिल्प:

- धातु विज्ञान (जैसे, दिल्ली का लौह स्तंभ), वस्त्र (मुगा रेशम) और चीनी मिट्टी के बरतन में नवाचार।

आधुनिक प्रासंगिकता और पुनरुद्धार

मान्यता और एकीकरण:

- अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस जैसी पहल शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर जोर देती है।
- पारंपरिक चिकित्सा और जैविक खेती टिकाऊ जीवन पद्धतियों के साथ संरेखित होती है।

नीतिगत रूपरेखा (एनईपी 2020):

- आधुनिक शिक्षा और विज्ञान के साथ आईकेएस के एकीकरण को बढ़ावा देता है।
- अंतःविषय अनुसंधान और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को प्रोत्साहित करता है।

व्यावहारिक अनुप्रयोग:

- प्राचीन सिद्धांतों में निहित टिकाऊ वास्तुकला और स्वास्थ्य सेवा।
- भगवद गीता और उपनिषदों से प्रेरित नैतिक ढाँचे।

अंतःविषय अनुसंधान:

- IKS से प्राप्त अंतर्दृष्टि पर्यावरण संरक्षण और नैतिक प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में लागू की गई।

क्षेत्रीय ज्ञान:

- पूर्वोत्तर, तमिलनाडु और अन्य क्षेत्रों से आदिवासी और स्थानीय ज्ञान प्रणालियों का पुनरुद्धार।

चुनौतियाँ और अवसर

चुनौतियाँ:

- पारंपरिक संरक्षकता के नुकसान के कारण खंडित दस्तावेज़ीकरण और गलत व्याख्याएँ।

अवसर:

- विद्वानों, संस्थानों और समुदायों के बीच सहयोग।
- प्राचीन ग्रंथों का डिजिटलीकरण और मौखिक परंपराओं का संरक्षण।
- जलवायु परिवर्तन, स्वास्थ्य सेवा और शिक्षा जैसी आधुनिक चुनौतियों का समाधान करने के लिए IKS का अनुप्रयोग।

निष्कर्ष

भारतीय ज्ञान प्रणालियाँ ज्ञान की विरासत को मूर्त रूप देती हैं जिसने सहस्राब्दियों से मानव विचार को समृद्ध किया है। IKS को आधुनिक विषयों के साथ एकीकृत करने से भारत की समृद्ध विरासत को संरक्षित करते हुए वैश्विक चुनौतियों के लिए स्थायी समाधान मिलते हैं। एनईपी 2020 जैसी पहल इस अमूल्य ज्ञान को पुनर्जीवित करने के लिए एक रणनीतिक ढांचा प्रदान करती है, जिससे भविष्य की पीढ़ियों के लिए इसकी प्रासंगिकता सुनिश्चित होती है।

2. भारतीय ज्ञान प्रणालियों (IKS) के माध्यम से मन का विउपनिवेशीकरण

परिचय

भारत, जिसे प्रायः ज्ञान-भूमि कहा जाता है, में दर्शन, विज्ञान, कला, चिकित्सा और अध्यात्म सहित गहन बौद्धिक विरासत है।

- भारतीय ज्ञान प्रणालियाँ (IKS), वेदों, उपनिषदों और न्याय शास्त्र जैसे ग्रंथों में निहित हैं, जो केवल परंपराओं के बजाय ज्ञान का एक संरचित ढांचा बनाती हैं।

- हालाँकि, औपनिवेशिक शासन ने इन प्रणालियों को हाशिए पर डाल दिया, और उनकी जगह यूरोसेंट्रिक प्रतिमानों को स्थापित किया, जिसने सांस्कृतिक हीनता की भावना पैदा की।
- भारतीय मन को उपनिवेश से मुक्त करने में IKS को पुनर्जीवित करना, भारत की बौद्धिक पहचान को पुनः प्राप्त करना और समकालीन चुनौतियों के साथ इसके ज्ञान को एकीकृत करना शामिल है।

युगों के माध्यम से भारतीय ज्ञान प्रणालियाँ

- प्राचीन काल: ज्ञान की नींव

दार्शनिक नींव:

- वेद और उपनिषद: अस्तित्व, स्वयं (आत्मा) और परम वास्तविकता (ब्रह्म) में तल्लीनता।
- निवृत्ति (आत्म-विरक्ति) और प्रवृत्ति (संलग्न क्रिया) के मार्गों ने नैतिक जीवन को आकार दिया।
- न्याय: तार्किक जांच और वैज्ञानिक तर्क को बढ़ावा दिया।
- अद्वैत वेदांत: आत्मा और ब्रह्म की एकता पर जोर देते हुए एक अद्वैतवादी दर्शन की वकालत की।

वैज्ञानिक और गणितीय उपलब्धियाँ:

- शून्य की खोज, दशमलव प्रणाली, और त्रिकोणमिति में प्रगति।
- आयुर्वेद: समग्र कल्याण पर ध्यान केंद्रित करने वाली एक निवारक स्वास्थ्य प्रणाली।
- खगोल विज्ञान: आर्यभट्ट के सूर्यकेंद्रित सिद्धांत और सटीक खगोलीय गणनाएँ।

स्थिरता और पारिस्थितिक ज्ञान:

- प्राकृतिक चक्रों के साथ अखंड टिकाऊ कृषि पर जोर।
- समुदाय के नेतृत्व वाली वन और जल प्रबंधन प्रणाली।
- मध्यकालीन काल: सांस्कृतिक विकास

भक्ति आंदोलन:

- भक्ति, समानता और स्थानीय साहित्य की वकालत की।
- कबीर, गुरु नानक और चैतन्य महाप्रभु जैसे संतों ने आस्था के माध्यम से एकता और मुक्ति को बढ़ावा दिया।
- सामाजिक सुधार और सार्वभौमिक भाईचारे को बढ़ावा दिया।

जैन धर्म और बौद्ध धर्म:

- जैन धर्म: जीव (आत्मा) और अजीव (गैर-आत्मा) के द्वैतवाद की खोज की।
- बौद्ध धर्म: कर्म, नैतिक जीवन और स्थायी आत्म को अस्वीकार करने पर केंद्रित था।

आधुनिक काल: पुनरुत्थान और चुनौतियाँ

औपनिवेशिक विघटन:

- मैकाले के मिनट (1835) ने स्वदेशी शिक्षा को यूरोसेंट्रिक पाठ्यक्रम से बदल दिया।
- पारंपरिक उद्योगों और ज्ञान प्रणालियों को व्यवस्थित रूप से कमजोर किया गया।

आधुनिक विचारकों का योगदान:

- सर्वपल्ली राधाकृष्णन: उन्होंने अपने दर्शन को अद्वैत वेदांत में स्थापित किया, जिसमें सत्य और विविधता में एकता पर जोर दिया गया।
- स्वामी विवेकानंद: तर्कसंगत शिक्षा और भारतीय मानवतावाद पर आधारित एक सार्वभौमिक धर्म का समर्थन किया।
- श्री अरबिंदो: स्वनात्मकता के माध्यम से आध्यात्मिक विकास की वकालत की और व्यावहारिकता के साथ आदर्शवाद का संश्लेषण किया।

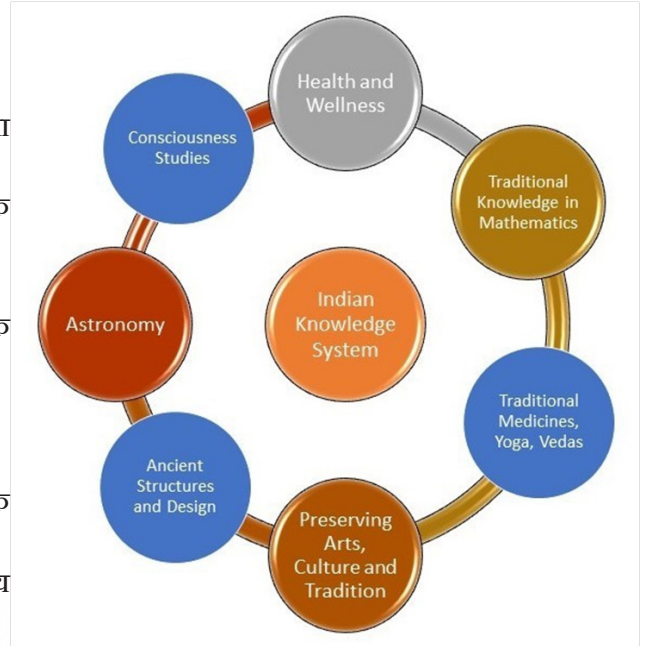
भारतीय ज्ञान प्रणालियों पर उपनिवेशवाद का प्रभाव

सांस्कृतिक अधीनता:

- स्वदेशी परंपराओं को पश्चिमी प्रणालियों से कमतर माना गया।
- चाणक्य जैसे व्यक्तित्वों को यूरोकेन्द्रित रूप से फिर से तैयार किया गया (उदाहरण के लिए, "भारत का मैकियावेली")।

आर्थिक और शैक्षिक व्यवधान:

- औपनिवेशिक नीतियों ने कपड़ा और धातु विज्ञान जैसे पारंपरिक उद्योगों को नष्ट कर दिया।
- स्वदेशी शिक्षा को समाप्त कर दिया गया, जिससे भारतीय अपनी विरासत से अलग हो गए।



मानसिक उपनिवेशीकरण:

- एडवर्ड सैड का ओरिएंटलिज्म: औपनिवेशिक प्रभुत्व को कायम रखने वाली रूढ़ियों को उजागर किया।
- फ्रांज़ फैनन का औपनिवेशिक अलगाव: उपनिवेशित आबादी के बीच आंतरिक हीनता को उजागर किया।

आई.के.एस. के माध्यम से मन का उपनिवेशीकरण**सांस्कृतिक पहचान को पुनर्जीवित करना:**

- शिक्षा सुधारों के माध्यम से भारत की बौद्धिक परंपराओं में गौरव को पुनः स्थापित करना।
- क्षेत्रीय भाषाओं और स्थानीय साहित्य को बढ़ावा देना।

शैक्षणिक सुधार:

- भारतीय दर्शन, विज्ञान और कला को शैक्षणिक पाठ्यक्रम में एकीकृत करना।
- आई.के.एस. पर केंद्रित अंतःविषय अनुसंधान केंद्र स्थापित करना।

आई.के.एस. की वैश्विक प्रासंगिकता:

- आयुर्वेद और योग विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त स्वास्थ्य पद्धतियाँ हैं।
- भारतीय पारिस्थितिक पद्धतियाँ समकालीन पर्यावरणीय चुनौतियों के लिए स्थायी समाधान प्रदान करती हैं।

स्थिरता और समग्र विकास:

- आई.के.एस. सिद्धांतों को संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों (एस.डी.जी.) के साथ संरेखित करें।
- नैतिक उपभोक्तावाद और समुदाय-आधारित संसाधन प्रबंधन पर जोर दें।

दार्शनिक मार्गदर्शन:

- न्याय और वेदांत जैसी प्रणालियाँ नैतिक तर्क और सचेतनता के ढाँचे प्रदान करती हैं।
- आधुनिक अस्तित्वगत संकटों को संबोधित करने के लिए प्राचीन ज्ञान को फिर से खोजें।

निष्कर्ष

भारतीय मन को उपनिवेश से मुक्त करना केवल खोई हुई विरासत को पुनः प्राप्त करने के बारे में नहीं है, बल्कि आत्म-साक्षात्कार और वैश्विक बौद्धिक नेतृत्व की ओर एक परिवर्तनकारी यात्रा को बढ़ावा देने के बारे में भी है। आधुनिक चुनौतियों के साथ भारतीय ज्ञान प्रणालियों को पुनर्जीवित और एकीकृत करके, भारत एक टिकाऊ, समावेशी और सांस्कृतिक रूप से निहित भविष्य का निर्माण कर सकता है। यह पुनरुद्धार न केवल भारतीयों को सशक्त बनाने के लिए बल्कि मानवता को उसके दबाव वाले मुद्दों के लिए सार्वभौमिक समाधान प्रदान करने के लिए भी आवश्यक है।

3. ज्ञान प्रणाली के रूप में संस्कृत**परिचय**

संस्कृत, जिसे अक्सर “देवताओं की भाषा” कहा जाता है, भारत की बौद्धिक विरासत में एक अद्वितीय स्थान रखती है। यह केवल एक भाषा नहीं है, बल्कि एक गहन ज्ञान प्रणाली है जिसने दर्शन, विज्ञान, गणित और कला को आकार दिया है।

- अपने सटीक व्याकरण और संरचित पद्धतियों के साथ, संस्कृत ने पीढ़ियों के बीच ज्ञान को संरक्षित करने और प्रसारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

ज्ञान संरक्षण में स्मृति तकनीकों की भूमिका**1. स्मृति संबंधी नवाचार**

- संरचित तकनीक: प्राचीन विद्वानों ने वैदिक ग्रंथों की अखंडता को बनाए रखने के लिए पदपाठ (शब्द-दर-शब्द पाठ) और क्रम पाठ (क्रमिक पाठ) जैसी विधियों का उपयोग किया।
- संरक्षण में सटीकता: इन प्रणालियों ने सुनिश्चित किया कि सामग्री और उच्चारण दोनों को सावधानीपूर्वक संरक्षित किया गया।

2. मौखिक परंपरा

- संस्कृत की मौखिक परंपरा ने सटीकता पर जोर दिया, क्योंकि यह माना जाता था कि उच्चारण में छोटी-छोटी गलतियाँ भी अर्थ बदल सकती हैं या प्रभावकारिता को कम कर सकती हैं।

भाषा: सार्वभौमिक संचार प्रणाली**1. भाषा की गतिशील अवधारणा**

- भारतीय परंपरा भाषा को एक विकसित और सार्वभौमिक इकाई के रूप में देखती है, जो विशिष्ट भाषाओं से परे है।
- व्यक्तिगत भाषाओं पर संकीर्ण ध्यान के विपरीत, भाषा की अवधारणा संचार के आंतरिक मूल्य को उजागर करती है।

2. भाषा की पवित्र प्रकृति

- भारतीय संस्कृति में भाषा को दिव्य माना जाता था, वेदों में इसे सरस्वती जैसे देवताओं के माध्यम से व्यक्त किया गया है।

3. संस्कृत की विशिष्ट पहचान

- अमरकोश जैसे प्राचीन ग्रंथों में, संस्कृत को उचित संज्ञा के रूप में नहीं बल्कि भास के परिष्कृत रूप के रूप में संदर्भित किया गया है, जो इसकी सार्वभौमिकता पर जोर देता है।

भाषा पर संस्कृत और वैदिक दर्शन

1. विविधता में एकता

- भारतीय दृष्टिकोण सभी भाषाओं को भास की दिव्य अवधारणा में निहित संचार की एक ही प्रणाली के व्युत्पन्न के रूप में मानता है।

2. ज्ञान के माध्यम के रूप में भाषा

- संस्कृत की सटीकता अमूर्त विचारों की सटीक रिकॉर्डिंग और प्रसारण को सक्षम बनाती है, जो ज्ञान और उसके प्रसार के बीच की खाई को पाटती है।

ज्ञान के वाहक के रूप में भाषा में चुनौतियाँ

1. अस्पष्टता

- समानार्थी शब्द: कई शब्द एक ही विचार का प्रतिनिधित्व कर सकते हैं (उदाहरण के लिए, जल, नीर, पानी)।
- समानार्थी शब्द: एक शब्द के कई अर्थ हो सकते हैं, जिससे गलत व्याख्या की संभावना बनती है।

2. लौकिक और स्थानिक विकास

समय के साथ, शब्द के अर्थ, उच्चारण और उपयोग विकसित होते हैं, जिससे संभावित विकृति होती है। उदाहरण के लिए, धर्म की संस्कृतियों और युगों में अलग-अलग व्याख्याएँ हैं।

3. ज्ञान हानि का जोखिम

मानकीकरण के बिना, भाषाई विकास से कोडित ज्ञान के मूल सार को बदलने का जोखिम होता है।

संस्कृत व्याकरण (व्याकरण) का विकास

1. शब्दशास्त्र: शब्दों का विज्ञान

- वैदिक अध्ययन में उत्पत्ति: व्याकरण वैदिक उच्चारण और व्याख्या की सुरक्षा के लिए एक सहायक अनुशासन (वेदांग) के रूप में विकसित हुआ।
- पाणिनि की अष्टाध्यायी: इस आधारभूत पाठ को अब तक के सबसे उन्नत व्याकरणिक ग्रंथों में से एक माना जाता है।

2. व्याकरण की पद्धति

- शब्द विच्छेदन: शब्दों का विश्लेषण किया जाता है:
- धातु (मूल): शब्द का आधार।
- प्रत्यय: व्याकरणिक संदर्भ जोड़ता है।
- सूत्र शैली: संक्षिप्त नियम (सूत्र) याद रखने में सहायता करते हैं और स्पष्टता सुनिश्चित करते हैं।
- डिफॉल्ट-अपवाद ढांचा: सामान्य नियम पहले बताए जाते हैं, उसके बाद अपवाद।

संस्कृत व्याकरण की मुख्य विशेषताएँ

1. संक्षिप्त और व्यापक

- पाणिनि की अष्टाध्यायी में लगभग 4,000 सूत्र शामिल हैं, जो भाषा के हर पहलू का विवरण देते हैं।

2. अनुकूलनशीलता

- जबकि संस्कृत समय के साथ विकसित हुई, इसका व्याकरणिक ढांचा इसके शास्त्रीय और आधुनिक रूपों का समर्थन करता है।

3. भाषा का परिष्कार

- "संस्कृत" शब्द का अर्थ ही "परिष्कृत" है, जो इसकी परिष्कृत और संरचित प्रकृति को रेखांकित करता है।



ज्ञान प्रणालियों में संस्कृत का योगदान

1. भाषाविज्ञान

- पाणिनि के व्याकरण ने आधुनिक भाषाई अध्ययनों की नींव रखी, जिसमें ध्वन्यात्मकता, वाक्यविन्यास और शब्दार्थ जैसी अवधारणाएँ शामिल थीं।

2. विज्ञान और गणित

- आर्यभटीय (गणित और खगोल विज्ञान) और सुश्रुत संहिता (शल्य चिकित्सा) जैसे संस्कृत ग्रंथ वैज्ञानिक प्रवचन में इसकी स्पष्टता और सटीकता को प्रदर्शित करते हैं।

3. दर्शन और नैतिकता

- उपनिषद और भगवद गीता जैसे कार्य संस्कृत की सटीक शब्दावली द्वारा सुगम किए गए गहन दार्शनिक विचारों में उतरते हैं।

4. इंडो-यूरोपीय भाषाओं पर प्रभाव

- संस्कृत ने प्राचीन भाषाई जड़ों और संरचनाओं को संरक्षित करते हुए भारतीय और यूरोपीय भाषाओं को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया है।

आधुनिक संदर्भ में संस्कृत की प्रासंगिकता

1. संस्कृत: एक कालातीत इकाई

- जबकि यह समकालीन भारतीय भाषाओं के अनुकूल है, संस्कृत अपने शास्त्रीय सार को बरकरार रखती है, ठीक वैसे ही जैसे गंगा की सहायक नदियाँ अपनी विरासत को आगे बढ़ाती हैं।

2. "मृत भाषा" बहस

- संस्कृत "जीवित" या "मृत" होने के दृढ़ से परे है, क्योंकि इसके सिद्धांत आधुनिक भारतीय भाषाओं में अंतर्निहित हैं, जो इसकी प्रासंगिकता सुनिश्चित करते हैं।

3. सीमाओं से परे ज्ञान

- भाषा को एक सार्वभौमिक अवधारणा के रूप में महत्व देकर, संस्कृत संस्कृतियों और युगों में संचार और ज्ञान-साझाकरण को बढ़ावा देती है।

निष्कर्ष

व्याकरण के सूक्ष्म विज्ञान के माध्यम से परिष्कृत संस्कृत, पीढ़ियों तक ज्ञान को संरक्षित करने और प्रसारित करने के भारत के लोकाचार का उदाहरण है। इसकी अनूठी विशेषताएँ - संक्षिप्त सूत्र, अनुकूलनशीलता और सार्वभौमिकता - इसे मानव सभ्यता का एक कालातीत खजाना बनाती हैं। संस्कृत को एक स्थिर इकाई के बजाय एक गतिशील प्रणाली के रूप में देखकर, हम वैश्विक ज्ञान प्रणालियों में इसके स्थायी योगदान और एक स्थायी भविष्य को आकार देने में इसकी भूमिका को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं।

4. कोणार्क का सूर्य मंदिर: महानदी डेल्टा पर एक भू-विरासत चमत्कार

परिचय

कोणार्क का सूर्य मंदिर, एक यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल, भारत की स्थापत्य प्रतिभा का एक प्रमाण है। पूर्वी गंगा राजवंश के राजा नरसिंहदेव प्रथम द्वारा 13वीं शताब्दी में निर्मित, यह मंदिर भगवान सूर्य, सूर्य देवता को समर्पित है।

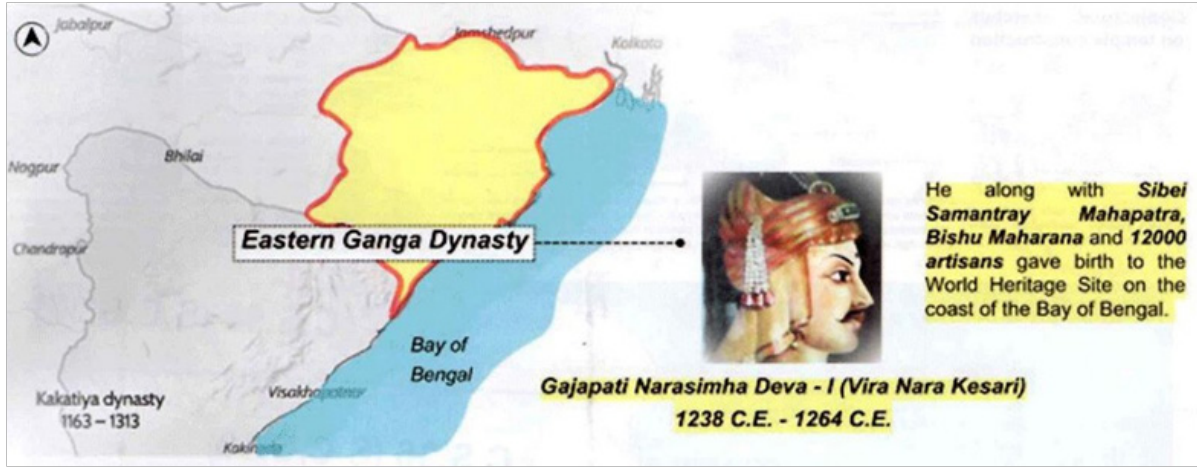
- ओडिशा के पुरी जिले में बंगाल की खाड़ी के पास 19.8134 डिग्री उत्तरी अक्षांश और 85.8315 डिग्री पूर्वी देशांतर पर स्थित इस मंदिर का डिज़ाइन 12 जटिल नक्काशीदार पहियों वाले एक विशाल रथ की नकल करता है, जो पंचरथ द्रविड़ और नागर शैलियों को दर्शाता है, जिन्हें सामूहिक रूप से कलिंग शैली के रूप में जाना जाता है।
- "कोणार्क" नाम संस्कृत के शब्दों "कोना" (कोना) और "अर्क" (सूर्य) से उत्पन्न हुआ है, जो दक्षिण-पूर्व कोने के सूर्य देवता को दर्शाता है।
- पौराणिक रूप से, यह वह स्थान है जहाँ सूर्य देव ने राक्षस अर्क पर विजय प्राप्त की थी, जिससे इसका धार्मिक महत्व बढ़ गया।



ऐतिहासिक संदर्भ

निर्माण और प्रतीकवाद:

- 1250 ई. में राजा नरसिंहदेव प्रथम के अधीन आक्रमणकारियों पर उनकी जीत की याद में और भगवान सूर्य के सम्मान में बनाया गया।
- यह पास की चंद्रभागा नदी से जुड़ी उपचार शक्तियों से जुड़ा है, जिसके बारे में माना जाता है कि यह त्वचा रोगों को ठीक करती है।



सांस्कृतिक और नौवहन संबंधी महत्व:

- यूरोपीय नाविकों द्वारा इसके गहरे रंग के स्वरूप और नौवहन स्थलचिह्न के रूप में उपयोग के कारण इसे "ब्लैक पैगोडा" के रूप में संदर्भित किया जाता है।
- सिद्धांतों से पता चलता है कि इसका निर्माण त्वचा संबंधी बीमारियों को दूर करने, राजा के कुष्ठ रोग को ठीक करने के लिए सूर्य देव को धन्यवाद देने या राजा नरसिंहदेव के पुत्र भानु के जन्म का जश्न मनाने के लिए किया गया था।

भौगोलिक और भूवैज्ञानिक पहलू

स्थान और भूभाग:

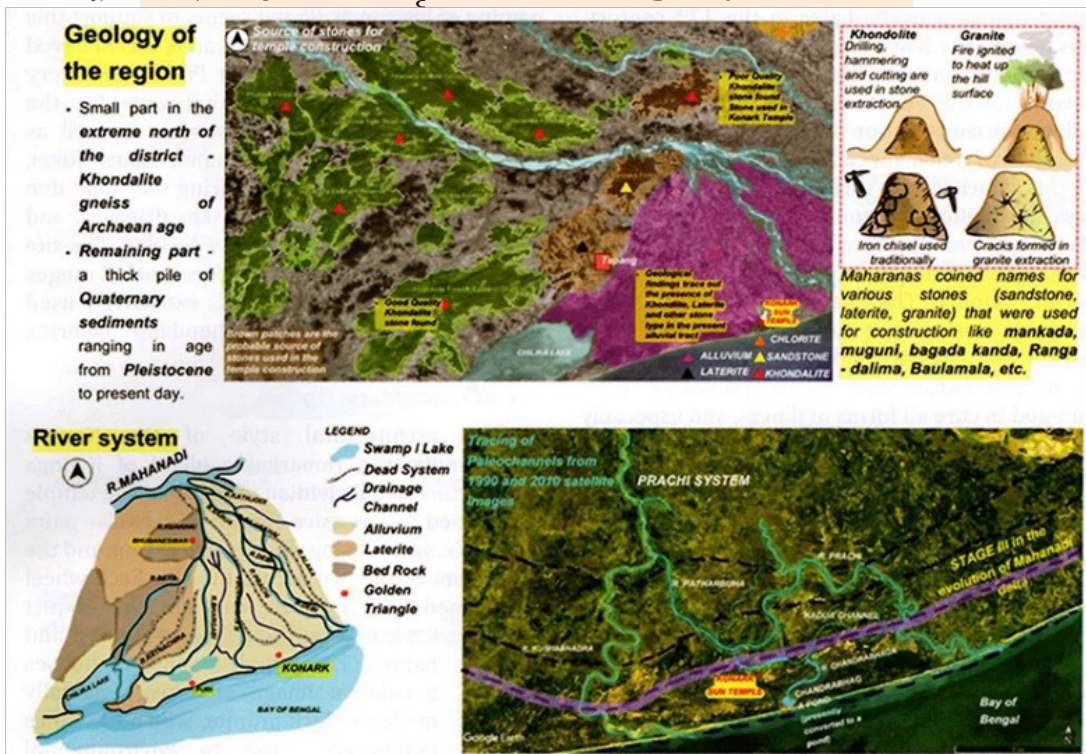
- महानदी डेल्टा में स्थित, जो सदियों के अवसादन द्वारा निर्मित है।
- प्रमुख नदियों में महानदी, दया, देवी, कुशाभद्रा, भार्गवी और प्राची शामिल हैं।
- रेतीली और जलोढ़ मिट्टी की विशेषता है जो इसकी अनूठी भूवैज्ञानिक रूपरेखा को परिभाषित करती है।

भूवैज्ञानिक संरचना:

- खोंडालाइट गनीस (आर्कियन युग), नींव के लिए लेटराइट और नक्काशी के लिए क्लोराइट से बने संरचनात्मक तत्व।
- नदी के बदलते मार्ग और तलछट जमाव ने साइट की स्थिरता को प्रभावित किया है।

नदी प्रणालियों की भूमिका:

- महानदी और प्राची जैसी नदियाँ निर्माण सामग्री के परिवहन के लिए महत्वपूर्ण थीं।
- साइट के पास चंद्रभागा नदी का एक समय सांस्कृतिक और औषधीय महत्व था।



वास्तुशिल्प चमत्कार**डिजाइन और प्रतीकवाद:**

- एक विशाल रथ के रूप में निर्मित, जिसमें सप्ताह के दिनों का प्रतिनिधित्व करने वाले सात घोड़े और महीनों और समय चक्रों का प्रतीक जटिल नक्काशीदार पहियों के 12 जोड़े हैं।
- विस्तृत नक्काशी दैनिक जीवन, पौराणिक विषयों और प्राकृतिक रूपांकनों को दर्शाती है।

सामग्री और तकनीक:

- मुख्य रूप से खोंडालाइट, लेटराइट और त्लोराइट पत्थरों का उपयोग किया जाता है जिन्हें स्थानीय रूप से मनकाडा, मुगुनी और रंगा दलिमा कहा जाता है।
- महानदी नदी पर लकड़ी के रोलर्स और राफ्ट के माध्यम से पत्थरों का परिवहन किया जाता है।
- इसमें आर्किटेक्ट (स्थापक), डिजाइनर (स्थापति), सर्वेक्षक (सूत्रब्रह्मिन), मूर्तिकार (तक्षक) और बिल्डर (वर्धकिन) का संयुक्त प्रयास शामिल था।

गर्भगृह की विशेषताएँ:

- मूल रूप से भगवान सूर्य की एक विशाल काले ब्रेनाइट की मूर्ति थी, जो अब खराब हो चुकी है।
- संक्रांति के दौरान सूर्य के प्रकाश को विशिष्ट क्षेत्रों को रोशन करने की अनुमति देने के लिए वास्तुकला की दृष्टि से संरेखित।

पर्यावरण संबंधी चुनौतियाँ**चक्रवात और अपक्षय:**

- अपने तटीय स्थान के कारण 250 किमी/घंटा से अधिक की चक्रवाती हवाओं के प्रति संवेदनशील।
- 1737 के सुपरसाइक्लोन सहित ऐतिहासिक चक्रवातों ने काफी नुकसान पहुँचाया है।

रेत का बहाव और घर्षण:

- रेत का जमाव और नमक से भरी हवाएँ लगातार खतरे पैदा करती हैं; 1906 से कैसुरीना और पिनांग पेड़ों सहित पुनर्वनीकरण प्रयासों का उद्देश्य इन प्रभावों को कम करना है।

ज्वारीय कटाव:

- ज्वारीय उछाल ने संरचना के कुछ हिस्सों को नष्ट कर दिया है, जिससे इसकी दीर्घायु को खतरा है।

सांस्कृतिक और भू-विरासत महत्व**पर्यटन और प्रतीकवाद:**

- अपनी वास्तुकला, पौराणिक और सांस्कृतिक महत्व के लिए विश्व स्तर पर प्रसिद्ध स्थल।
- कला, खगोल विज्ञान और आध्यात्मिकता को मिलाकर भारत के प्राचीन ब्रह्मांड विज्ञान का प्रतीक है।

वन्यजीव अभयारण्य:

- 1984 में स्थापित बालूखंड-कोणार्क वन्यजीव अभयारण्य, मंदिर के आसपास के स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र को संरक्षित करता है।

संरक्षण प्रयास**मुख्य चुनौतियाँ:**

- चक्रवात, कटाव और रेत के बहाव जैसे पर्यावरणीय खतरे।
- अनियंत्रित पर्यटन और प्रदूषण जैसे मानवीय कारक।

पुनर्स्थापना पहल:

- भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) द्वारा संचालित पुनर्स्थापना परियोजनाएँ।
- पुनर्वनीकरण पर्यावरणीय खतरों के खिलाफ एक प्राकृतिक बाधा के रूप में कार्य करता है।
- संरचनात्मक कमज़ोरियों का आकलन करने और उन्हें कम करने के लिए उन्नत अध्ययन।

भविष्य की योजनाएँ:

- टिकाऊ पर्यटन प्रथाओं को बढ़ावा देना।
- उन्नत संरक्षण प्रौद्योगिकियों का विकास।

निष्कर्ष

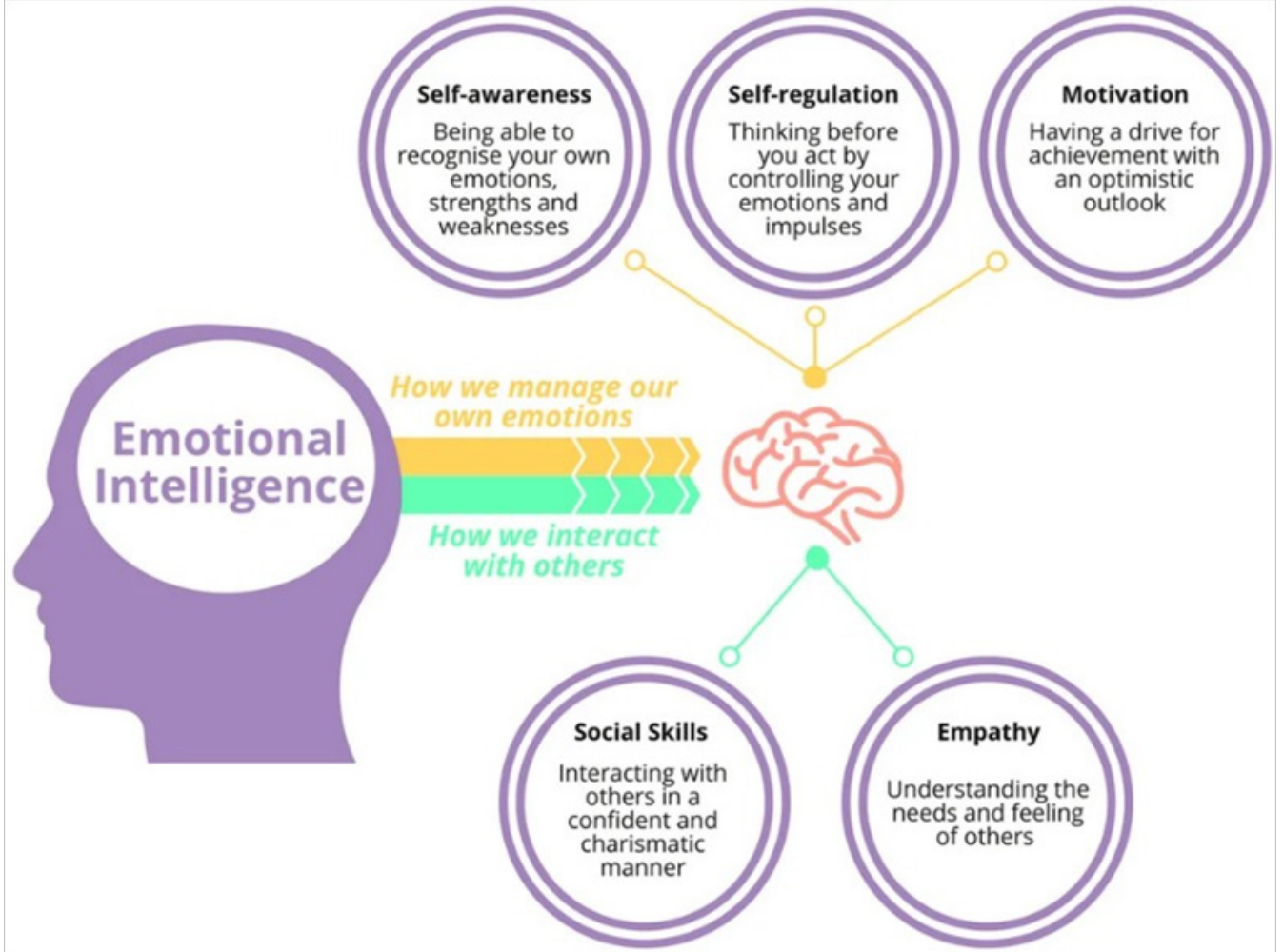
कोणार्क का सूर्य मंदिर भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, कलात्मक नवाचार और वैज्ञानिक दूरदर्शिता का उदाहरण है। पर्यावरणीय और मानवजनित चुनौतियों का सामना करते हुए, केंद्रित संरक्षण उपाय इस शानदार विरासत स्थल को भविष्य की पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रख सकते हैं। यह केवल एक वास्तुशिल्प चमत्कार नहीं है, बल्कि मानवता की रचनात्मक सरलता और हमारी सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने की सामूहिक जिम्मेदारी का प्रतीक है।

5. लोक प्रशासन में भावनात्मक बुद्धिमत्ता: एक बौद्ध परिप्रेक्ष्य

परिचय

भावनात्मक बुद्धिमत्ता (ईआई) आपकी अपनी भावनाओं के साथ-साथ दूसरों की भावनाओं को पहचानने, समझने और प्रबंधित करने की क्षमता है। इसे भावनात्मक भागफल (ईक्व्यू) के रूप में भी जाना जाता है।

- यह प्रभावी लोक प्रशासन के लिए महत्वपूर्ण है, जहाँ निर्णय बड़े पैमाने पर समाज को प्रभावित करते हैं।
- इसमें आत्म-जागरूकता, सहानुभूति और भावनात्मक विनियमन शामिल हैं - विश्वास, सहयोग और नैतिक शासन के निर्माण के लिए आवश्यक गुण।
- बौद्ध शिक्षाएँ, जो मन की शांति, भावनात्मक संतुलन और नैतिक जीवन पर जोर देती हैं, जटिल सामाजिक चुनौतियों का सामना करने वाले प्रशासकों के लिए गहन अंतर्दृष्टि प्रदान करती हैं।



लोक प्रशासन में भावनात्मक बुद्धिमत्ता

i. शासन में भावनात्मक बुद्धिमत्ता का महत्व:

- लोक प्रशासन के लिए लोगों पर केंद्रित दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है, जिसमें विविध समुदायों के प्रति सहानुभूति और संवेदनशीलता की आवश्यकता होती है।
- भावनात्मक बुद्धिमत्ता संचार को मजबूत करती है, जनता के विश्वास को बढ़ावा देती है और न्यायसंगत निर्णय लेने का समर्थन करती है।

ii. प्रशासकों के लिए भावनात्मक बुद्धिमत्ता के मुख्य घटक:

- आत्म-जागरूकता: पक्षपातपूर्ण निर्णयों से बचने के लिए भावनात्मक ट्रिगर्स को पहचानना।
- सहानुभूति: नागरिकों की चिंताओं को निष्पक्ष रूप से समझना और उनका समाधान करना।
- भावनात्मक विनियमन: उचित निर्णय सुनिश्चित करने के लिए दबाव में शांत रहना।

iii. भावनात्मक बुद्धिमत्ता और लोकतांत्रिक नेतृत्व:

- साझा मूल्यों और समावेशिता को प्रोत्साहित करता है।
- हितधारकों के बीच संघर्ष समाधान और सहयोग को सुगम बनाता है।

बौद्ध दर्शन और भावनात्मक बुद्धिमत्ता

i. भावनाओं की बौद्ध समझ:

- बौद्ध शिक्षाएँ भावनाओं, उनकी उत्पत्ति और व्यवहार पर उनके प्रभाव का विश्लेषण करती हैं
- अभिधर्म समुच्चय भावनाओं को पुण्य (कुशल) या अ-पुण्य (अकुशल) के रूप में वर्गीकृत करता है, जो भावनात्मक विनियमन में सहायता करता है।

ii. बौद्ध धर्म में मानसिक कष्ट:

- छह मूल कष्ट- आसक्ति, क्रोध, अभिमान, अज्ञानता, संदेह और विकृत विचार (व्लेश)- मानसिक संतुलन को बाधित करते हैं और तर्कसंगत निर्णयों में बाधा डालते हैं।

iii. नकारात्मक भावनाओं को प्रबंधित करने की रणनीतियाँ:

- माइंडफुलनेस: विचारों और भावनाओं के बारे में जागरूकता पैदा करना।
- करुणा और ज्ञान: परोपकारिता और निर्णय में स्पष्टता को प्राथमिकता देना।

सार्वजनिक प्रशासन में भावनात्मक बुद्धिमत्ता के लिए बौद्ध अभ्यास

i. समभाव विकसित करना:

- "आठ सांसारिक चिंताओं" (लाभ और हानि, प्रसिद्धि और अपमान, सुख और दर्द, प्रशंसा और अपमान) को संबोधित करना निष्पक्षता बनाए रखने में मदद करता है।
- समभाव स्वार्थी व्यवहार को कम करता है और संतुलित निर्णय लेने को बढ़ावा देता है।

ii. व्यावहारिक अनुप्रयोग:

- इच्छाओं को सीमित करना: नैतिक विकल्पों को बनाए रखने के लिए संतोष को प्रोत्साहित करना।
- आत्मनिरीक्षण: नियमित आत्म-चिंतन विनम्रता और कृतज्ञता को बढ़ावा देता है।
- परिवर्तन की स्वीकृति: अप्रत्याशित चुनौतियों से निपटने के लिए संतुलित दृष्टिकोण अपनाना।

सार्वजनिक प्रशासन के लिए बौद्ध शिक्षाओं की प्रासंगिकता

i. विचारशील निर्णय लेना:

- अल्पकालिक लाभों पर दीर्घकालिक सामाजिक कल्याण को प्राथमिकता देने को प्रोत्साहित करता है।

ii. संघर्ष समाधान:

- करुणा-संचालित दृष्टिकोण विवादों को प्रभावी ढंग से सुलझाने में मदद करते हैं।

iii. सतत नेतृत्व:

- विकासशील शासन चुनौतियों का समाधान करने के लिए लचीलापन और अनुकूलनशीलता का निर्माण करता है।

निष्कर्ष

बौद्ध सिद्धांतों के साथ भावनात्मक बुद्धिमत्ता का एकीकरण नैतिक सार्वजनिक प्रशासन के लिए एक व्यापक रूपरेखा तैयार करता है। विचारशीलता, करुणा और समभाव पर जोर देकर, प्रशासक व्यक्तिगत कल्याण को बनाए रखते हुए समाज की सेवा करने की अपनी क्षमता को बढ़ा सकते हैं। भावनात्मक विनियमन और नैतिक जीवन पर बौद्ध शिक्षाएँ संतुलित, सहानुभूतिपूर्ण और प्रभावी शासन सुनिश्चित करती हैं।

6. भारत के वैश्विक क्षमता केंद्र (GCC) अगली पीढ़ी की ओर ले जाते हैं

वैश्विक क्षमता केंद्र (GCC) अपतटीय या निकटवर्ती इकाइयाँ हैं जो मूल कंपनी को विशेष सेवाएँ प्रदान करती हैं।

- इन्हें वैश्विक इन-हाउस सेंटर (GIC) या कैपिटव सेंटर के रूप में भी जाना जाता है।

वैश्विक क्षमता केंद्र (GCC) के कार्य

- सेवा प्रावधान: GCC सूचना प्रौद्योगिकी (IT), अनुसंधान और विकास (R&D), ग्राहक सहायता और व्यवसाय प्रक्रिया आउटसोर्सिंग जैसी विविध सेवाएँ प्रदान करते हैं।
- दक्षता बढ़ाना: व्यवसाय प्रक्रियाओं को अनुकूलित करके, GCC कंपनियों को संचालन को सुव्यवस्थित करने और परिचालन लागत को कम करने में सक्षम बनाता है।
- नवाचार को बढ़ावा देना: GCC नवाचार को बढ़ावा देकर और निरंतर विकास को सुविधाजनक बनाकर कंपनियों को प्रतिस्पर्धी बने रहने में मदद करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
- प्रतिभा अधिग्रहण: GCC संगठनों को वैश्विक प्रतिभा पूल से जोड़ता है, जिससे उन्हें विशेष विशेषज्ञता और संसाधनों का उपयोग करने में सक्षम बनाया जाता है।
- वैश्विक उपस्थिति: भारत में 1,800 से ज़्यादा जीसीसी हैं, जो दुनिया के कुल जीसीसी के आधे से ज़्यादा हैं।
- रोज़गार: ये केंद्र 1.9 मिलियन लोगों को सीधे तौर पर रोज़गार देते हैं, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं में महत्वपूर्ण गुणक प्रभाव पैदा

आर्थिक योगदान:

- बाज़ार वृद्धि: 2014-15 में \$19.6 बिलियन से 2022-23 में \$60 बिलियन तक, जो 11.4% की वार्षिक वृद्धि दर को दर्शाता है (नैसकॉम-केपीएमजी)।
- गुणक प्रभाव: निवेश किए गए हर \$1 के लिए, जीसीसी \$3 का आर्थिक उत्पादन उत्पन्न करते हैं।
- नौकरी गुणक: जीसीसी में प्रत्येक प्रत्यक्ष नौकरी स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं में पाँच अप्रत्यक्ष नौकरियों का सृजन करती है।

GCC वृद्धि के लिए मुख्य चालक**(i) व्यापार करने में आसानी**

- SPICe+ फ्रेमवर्क: यह प्रशासनिक प्रक्रियाओं और समय को कम करके कंपनी निगमन को सरल बनाता है।
- जन विश्वास अधिनियम (2024): 42 केंद्रीय अधिनियमों में 183 प्रावधानों को अपराधमुक्त किया गया, जिससे अनुपालन में काफी आसानी हुई और व्यवसाय-समर्थक माहौल को बढ़ावा मिला।

(ii) मेक इन इंडिया

- एफडीआई नीतियाँ: विभिन्न क्षेत्रों में 100% विदेशी स्वामित्व भत्ता विदेशी कंपनियों के लिए अधिक स्वतंत्रता सक्षम बनाता है।
- विशेष आर्थिक क्षेत्र (SEZ): SEZ विभिन्न कर लाभ प्रदान करते हैं, जिसमें पहले पाँच वर्षों के लिए निर्यात लाभ पर 100% आयकर छूट शामिल है, जो व्यवसाय दक्षता को बढ़ाता है।

(iii) डिजिटल इंडिया पहल

- रिक्तल इंडिया डिजिटल (2023): केंद्र, राज्य सरकारों, निजी संगठनों और उच्च शिक्षा संस्थानों को शामिल करते हुए भविष्य के लिए तैयार कौशल विकसित करने के लिए एक सहयोगी पहल।
- एआई इकोसिस्टम विकास: मंत्रालय स्तर पर सरकारी हस्तक्षेप कृत्रिम बुद्धिमत्ता और अन्य अत्याधुनिक तकनीकों में भारत की स्थिति को मजबूत करता है।

भारत की प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त**(i) उच्च-मूल्य सेवाओं में परिवर्तन**

- भारत में जी.सी.सी. निम्नलिखित पर ध्यान केंद्रित करने के लिए विकसित हो रहे हैं:
- अनुसंधान और विकास (आर.एंड.डी.)
- बौद्धिक संपदा (आई.पी.) सृजन
- उच्च-मूल्य सेवाएँ, नवाचार केन्द्रों और उत्कृष्टता केन्द्रों (सी.ओ.ई.) में परिवर्तित हो रहे हैं।
- लागत केन्द्रों के रूप में कार्य करने से, जी.सी.सी. अब लाभ कमाने वाली संस्थाएँ बन गई हैं।

(ii) टियर-2 और टियर-3 शहरों में रणनीतिक विस्तार

- अहमदाबाद, कोच्चि, विशाखापत्तनम, जयपुर और कोयम्बटूर जैसे शहर निम्न कारणों से आकर्षक गंतव्य बन रहे हैं:
- कम परिचालन लागत।
- कुशल और विविध प्रतिभा पूल की उपलब्धता।
- यह विस्तार रियल एस्टेट, आतिथ्य, परिवहन और खुदरा जैसे क्षेत्रों में मांग को बढ़ाकर स्थानीय आर्थिक विकास को बढ़ावा देता है।

(iii) वैश्विक प्रतिस्पर्धियों से बेहतर प्रदर्शन

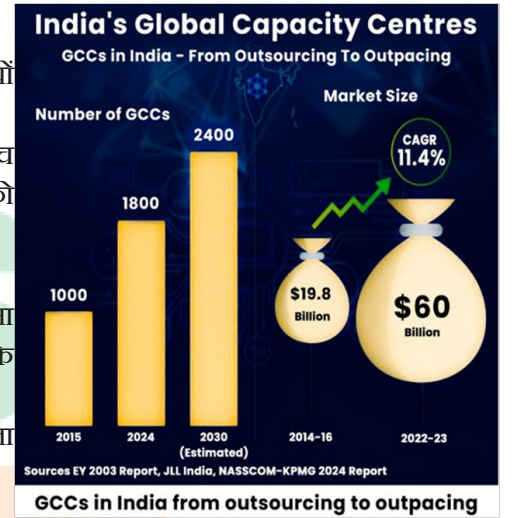
- मलेशिया, वियतनाम और फिलीपींस जैसे देश मुख्य रूप से कम लागत वाले श्रम और बुनियादी बीपीओ सेवाओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं, लेकिन उनके पास मजबूत प्रतिभा पूल और उन्नत बुनियादी ढांचे की कमी है।

भारत का लाभ:

- अत्याधुनिक डिजिटल बुनियादी ढांचा, जिसमें हाई-स्पीड इंटरनेट और आधुनिक कार्यालय स्थान शामिल हैं।
- सरकार और निजी क्षेत्र दोनों द्वारा समर्थित एक संपन्न नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र।

GCC का आर्थिक और सामाजिक प्रभाव

- रोजगार सृजन: प्रत्यक्ष रोजगार से परे, जीसीसी खुदरा, रियल एस्टेट और आतिथ्य जैसे क्षेत्रों में रोजगार वृद्धि को प्रोत्साहित करते हैं।
- नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र: स्टार्टअप, विश्वविद्यालयों और अनुसंधान संस्थानों के साथ साझेदारी नवाचार को बढ़ावा देती है, जिससे वैश्विक और स्थानीय समाधानों का मिश्रण बनता है।
- बुनियादी ढांचे का विकास: टियर-2 और टियर-3 शहरों में जीसीसी का उदय शहरी विकास को गति देता है और स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं के विकास में योगदान देता है।



चुनौतियाँ और अवसर**चुनौतियाँ:**

- वैश्विक प्रतिस्पर्धा के सामने प्रतिभा को बनाए रखना।
- उभरते शहरों में बुनियादी ढांचे की कमी।
- तेजी से बदलते वैश्विक कारोबारी माहौल के साथ नीति संरक्षण की आवश्यकता।

अवसर:

- कौशल विकास पहल को मजबूत करना।
- स्मार्ट सिटी परियोजनाओं में निवेश करना और कनेक्टिविटी में सुधार करना।
- हितधारकों के परामर्श के माध्यम से निरंतर नीति अपडेट।

निष्कर्ष

भारत का जीसीसी पारिस्थितिकी तंत्र राष्ट्र की नवाचार, अनुकूलन और नेतृत्व करने की क्षमता का उदाहरण है। कुशल कार्यबल, डिजिटल तत्परता और प्रगतिशील नीति सुधारों का लाभ उठाकर, भारत ने जीसीसी क्षेत्र में वैश्विक नेता के रूप में अपनी स्थिति मजबूत की है। यह सफलता न केवल आर्थिक विकास और बुनियादी ढांचे के विकास को बढ़ावा देती है, बल्कि नवाचार को भी बढ़ावा देती है, जिससे भारत वैश्विक मूल्य श्रृंखला में एक महत्वपूर्ण खिलाड़ी बन जाता है।



1. ग्रामीण विकास में इसरो की भूमिका

भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में इसकी 65% से अधिक आबादी रहती है और यह देश के सामाजिक आर्थिक ताने-बाने की रीढ़ है।

- हालांकि, खंडित कृषि पद्धतियाँ, अपर्याप्त बुनियादी ढाँचा, स्वास्थ्य सेवा तक सीमित पहुँच और प्राकृतिक आपदाओं के प्रति संवेदनशीलता जैसी चुनौतियाँ ग्रामीण समुदायों के विकास में बाधा बनती रहती हैं।
- भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो), अपनी उन्नत अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के माध्यम से, ग्रामीण परिवर्तन के एक प्रमुख प्रवर्तक के रूप में उभरा है।
- रिमोट सेंसिंग, भौगोलिक सूचना प्रणाली (जीआईएस) और उपग्रह-आधारित अनुप्रयोगों का लाभ उठाकर, इसरो ने ग्रामीण-शहरी विभाजन को पाटने और सतत विकास को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

इसरो और कृषि विकास

कृषि उत्पादकता में वृद्धि

- फसल निगरानी और उपज अनुमान: उपग्रह इमेजरी फसल के रकबे, स्वास्थ्य और उत्पादकता पर सटीक डेटा प्रदान करती है। यह जानकारी सार्वजनिक वितरण प्रणाली (पीडीएस) और निर्यात रणनीतियों की प्रभावी योजना बनाने में सहायता करती है।
- कीट और रोग प्रबंधन: रिमोट सेंसिंग कीट प्रभावित क्षेत्रों की पहचान करता है, जिससे समय पर हस्तक्षेप और फसल के नुकसान को कम करने में मदद मिलती है।
- मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन: मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना जैसे कार्यक्रम मिट्टी की उर्वरता, नमी के स्तर और पोषक तत्वों की कमी का विश्लेषण करने के लिए उपग्रह डेटा का उपयोग करते हैं, जिससे किसानों को इष्टतम फसल चयन और संसाधन उपयोग पर मार्गदर्शन मिलता है।

सरकारी पहलों का समर्थन

- प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना (PMFBY): ISRO का उपग्रह डेटा फसल क्षति का सटीक आकलन और बीमा दावों के त्वरित वितरण की सुविधा प्रदान करता है।
- डिजिटल कृषि मिशन: एग्रीस्टैक और कृषि निर्णय सहायता प्रणाली (कृषि DSS) जैसी पहलों के माध्यम से, ISRO निर्णय लेने में सहायता के लिए रिमोट सेंसिंग डेटा को वास्तविक समय के विश्लेषण के साथ एकीकृत करता है।



जल संसाधन प्रबंधन

वाटरशेड विकास

- एकीकृत वाटरशेड प्रबंधन कार्यक्रम (IWMP): ISRO के भू-स्थानिक उपकरण वाटरशेड क्षेत्रों का मानचित्रण करने में सक्षम बनाते हैं, जिससे मिट्टी और जल संरक्षण में सहायता मिलती है।
- भूजल पुनर्भरण और निगरानी: उपग्रह इमेजरी भूजल कमी वाले क्षेत्रों की पहचान करती है और पुनर्भरण संरचनाओं की योजना बनाने में सहायता करती है।

सिंचाई दक्षता

- जल उपयोग का अनुकूलन: उपग्रह डेटा सिंचित क्षेत्रों की निगरानी का समर्थन करता है, जिससे जल संसाधनों का कुशल आवंटन सुनिश्चित होता है।
- सूखे की तैयारी: राष्ट्रीय कृषि सूखा आकलन और निगरानी प्रणाली (NADAMS) जैसे उपकरण सूखे का पूर्वानुमान लगाने और शमन उपायों की योजना बनाने के लिए उपग्रह और मौसम संबंधी डेटा को एकीकृत करते हैं।

आपदा प्रबंधन और तैयारी

पूर्व चेतावनी प्रणाली

- बाढ़ प्रबंधन: इसरो की बाढ़ पूर्व चेतावनी प्रणाली (FEWS) बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों के लिए वास्तविक समय पर अलर्ट प्रदान करती है, जिससे जान-माल का नुकसान कम होता है।
- चक्रवात निगरानी: INSAT जैसे उपग्रह समय पर मौसम अपडेट और आपदा अलर्ट देते हैं, जिससे तैयारी बढ़ती है।

आपदा के बाद की वसूली

- क्षति का आकलन: उच्च-रिज़ॉल्यूशन वाली इमेजरी जलमग्न क्षेत्रों का मानचित्रण करने, क्षति का मूल्यांकन करने और राहत प्रयासों की योजना बनाने में सहायता करती है।

ग्रामीण संपर्क और बुनियादी ढांचा

ग्राम संसाधन केंद्र (वीआरसी)

- ग्रामीण संपर्क और डिजिटल समावेशन को बढ़ाने के लिए, इसरो ने गैर सरकारी संगठनों और राज्य सरकारों के सहयोग से 473 ग्राम संसाधन केंद्र स्थापित किए हैं। ये केंद्र निम्न प्रकार की सेवाएँ प्रदान करते हैं:
- टेलीमेडिसिन और टेली-शिक्षा
- कृषि सलाह और कौशल विकास
- ग्रामीण युवाओं के लिए करियर परामर्श

सरकारी योजनाएँ

- महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (MGNREGA): GIS-आधारित उपकरण ग्रामीण रोजगार परियोजनाओं की योजना और कार्यान्वयन में पारदर्शिता में सुधार करते हैं।
- प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना (PMGSY): उपग्रह-आधारित मानचित्रण ग्रामीण सड़क नियोजन को अनुकूलित करता है, जिससे संपर्क और पहुँच में वृद्धि होती है।

स्वास्थ्य सेवा और शिक्षा

स्वास्थ्य सेवा विभाजन को पाटना

- टेलीमेडिसिन: इसरो का उपग्रह-आधारित टेलीमेडिसिन कार्यक्रम शहरी केंद्रों में विशेषज्ञों के साथ दूरस्थ स्वास्थ्य सुविधाओं को जोड़ता है, जिससे चिकित्सा कर्मचारियों के लिए परामर्श और प्रशिक्षण संभव होता है।
- ई-संजीवनी: यह टेलीमेडिसिन पहल ग्रामीण आबादी को स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान करने के लिए इसरो की तकनीक का लाभ उठाती है।

शैक्षिक पहुँच बढ़ाना

- EDUSAT: दुनिया के पहले समर्पित शिक्षा उपग्रह के रूप में, EDUSAT ग्रामीण छात्रों के लिए दूरस्थ शिक्षा की सुविधा प्रदान करता है, गुणवत्तापूर्ण शैक्षिक संसाधनों तक पहुँच प्रदान करता है और शहरी-ग्रामीण शैक्षिक अंतर को कम करता है।

भूमि और संपत्ति प्रबंधन

भूमि अभिलेखों का आधुनिकीकरण

- डिजिटल इंडिया भूमि अभिलेख आधुनिकीकरण कार्यक्रम (DILRMP): उपग्रह डेटा भूमि पार्सल की सटीक मैपिंग सुनिश्चित करता है, स्वामित्व रिकॉर्ड को सुव्यवस्थित करता है और विवादों को कम करता है।
- स्वामित्व योजना: 2020 में शुरू की गई, यह पहल ग्रामीण भूमि पार्सल का मानचित्रण करने के लिए ड्रोन और भू-स्थानिक तकनीक का उपयोग करती है, जिससे ग्रामीणों को संपत्ति स्वामित्व रिकॉर्ड के साथ सशक्त बनाया जाता है।

भुवन पंचायत

- इसरो का भुवन पंचायत पोर्टल विकेंद्रीकृत नियोजन के लिए भू-स्थानिक डेटा प्रदान करता है, जो संसाधन प्रबंधन और शासन में ग्राम पंचायतों की सहायता करता है।

यह समर्थन करता है:

- प्राकृतिक संसाधनों का मानचित्रण
- बुनियादी ढाँचा नियोजन
- ग्रामीण विकास परियोजनाओं की निगरानी

जलीय कृषि और बागवानी को बढ़ावा देना

स्थायी जलीय कृषि

- जल गुणवत्ता निगरानी: उपग्रह डेटा क्लोरोफिल सांद्रता और मैलापन जैसे मापदंडों की निगरानी करता है, जो टिकाऊ मछली पालन के लिए महत्वपूर्ण हैं।
- साइट चयन: भू-स्थानिक विश्लेषण लवणता, पोषक तत्वों की उपलब्धता और प्रदूषण के स्तर के आधार पर जलीय कृषि के लिए इष्टतम स्थानों की पहचान करता है।

बागवानी विकास

- फसल तनाव निगरानी: हाइपरस्पेक्ट्रल इमेजिंग पौधों के स्वास्थ्य का आकलन करती है, जिससे फलों और सब्जियों के उत्पादन और वितरण की बेहतर योजना बनाई जा सकती है।
- आपूर्ति श्रृंखला अनुकूलन: उपग्रह डेटा बागवानी आपूर्ति श्रृंखलाओं के कुशल प्रबंधन की सुविधा प्रदान करता है।

भारतनेट: ग्रामीण भारत का डिजिटल सशक्तिकरण

भारतनेट, दुनिया की सबसे बड़ी ग्रामीण ब्रॉडबैंड परियोजनाओं में से एक है, जो इसरो की उपग्रह प्रौद्योगिकी का उपयोग निम्नलिखित के लिए करती है:

- 2.5 लाख से अधिक ग्राम पंचायतों को हाई-स्पीड इंटरनेट से जोड़ना
- ई-गवर्नेंस, ई-स्वास्थ्य और ई-शिक्षा सेवाओं को सक्षम बनाना
- घरों और संस्थानों को अंतिम-मील कनेक्टिविटी की सुविधा प्रदान करना



निष्कर्ष

इसरो द्वारा अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के अभिनव उपयोग से ग्रामीण भारत को बदलने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित किया गया है। कृषि और जल प्रबंधन से लेकर आपदा तैयारी और डिजिटल सशक्तिकरण तक, इसरो ने सतत ग्रामीण विकास में उल्लेखनीय योगदान दिया है। जैसे-जैसे भारत एक विकसित राष्ट्र बनने की ओर अग्रसर है, समावेशी विकास सुनिश्चित करने और ग्रामीण-शहरी असमानताओं को कम करने के लिए अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी का लाभ उठाना महत्वपूर्ण होगा। इसरो के प्रयास भारत की ग्रामीण आबादी के लिए बेहतर भविष्य बनाने के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी की क्षमता का उदाहरण हैं।

2. अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी: भारत में ग्रामीण-शहरी अंतर को पाटना

अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी ने कृषि, आपदा प्रबंधन, संचार और पर्यावरण निगरानी जैसे क्षेत्रों में क्रांति ला दी है, जिसने भारत में ग्रामीण विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उपग्रह-आधारित सेवाओं, सुदूर संवेदन और संचार प्रौद्योगिकियों ने ग्रामीण आबादी को सशक्त बनाया है और राष्ट्रीय विकास को बढ़ावा दिया है।

संचार में अंतरिक्ष प्रौद्योगिकियों की भूमिका

अंतरिक्ष प्रौद्योगिकियों, विशेष रूप से GSAT जैसे संचार उपग्रहों ने ग्रामीण भारत में डिजिटल विभाजन को पाटने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ये उपग्रह टेलीमेडिसिन, ई-लर्निंग और डिजिटल शासन की सुविधा प्रदान करते हैं, जिससे सेवाओं तक समान पहुँच सुनिश्चित होती है। ग्रामीण क्षेत्र अब वैश्विक नेटवर्क से जुड़ गए हैं, जिससे स्वास्थ्य सेवा, कृषि सलाह और सरकारी योजनाओं में सुधार हुआ है।

कृषि में अनुप्रयोग

अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी ने फसल निगरानी, मिट्टी विश्लेषण और मौसम की भविष्यवाणी के लिए महत्वपूर्ण डेटा प्रदान करके कृषि को बदल दिया है। प्रमुख अनुप्रयोगों में शामिल हैं:

- फसल निगरानी और उपज अनुमान: उपग्रह इमेजरी पोषक तत्वों की कमी और कीट संक्रमण जैसे मुद्दों का पता लगाने में मदद करती है, जिससे शुरुआती हस्तक्षेप और सटीक उपज अनुमान लगाना संभव हो जाता है।
- सिंचाई प्रबंधन: उपग्रह भूजल स्तर और सतही जल उपलब्धता को ट्रैक करते हैं, जिससे कुशल सिंचाई प्रणाली डिजाइन करने में मदद मिलती है।
- कृषि सलाहकार सेवाएँ: किसान कॉल सेंटर और मोबाइल ऐप जैसे प्लेटफॉर्म सर्वोत्तम प्रथाओं, कीट नियंत्रण और बाजार मूल्यों पर वास्तविक समय की सलाह देते हैं, जिससे किसानों को कार्रवाई योग्य ज्ञान मिलता है।

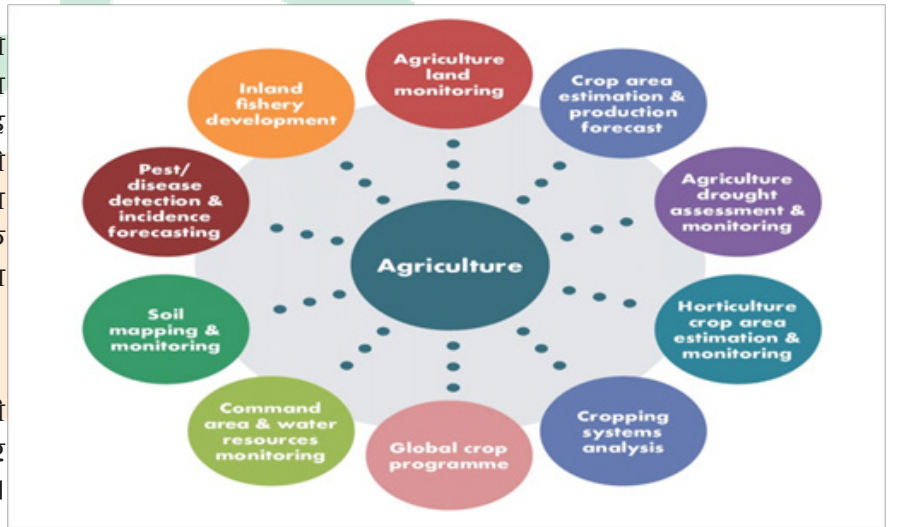
ग्राम संसाधन केंद्र (VRC)

- गैर-सरकारी संगठनों और सरकारी एजेंसियों के सहयोग से, ISRO ने ग्रामीण क्षेत्रों में सीधे अंतरिक्ष-आधारित सेवाएँ देने के लिए ग्राम संसाधन केंद्र (VRC) लॉन्च किए हैं। VRC ने कृषि, स्वास्थ्य सेवा और कौशल विकास में कई कार्यक्रम आयोजित किए हैं, जिससे ग्रामीण समुदायों के लाखों लोगों को लाभ हुआ है।

आपदा प्रबंधन और अंतरिक्ष प्रौद्योगिकियाँ

आपदा प्रबंधन में अंतरिक्ष प्रौद्योगिकियाँ अमूल्य हैं। रिमोट सेंसिंग क्षमताओं से लैस उपग्रह खतरों को ट्रैक करने, आपदा के प्रभावों का आकलन करने और प्रारंभिक चेतावनी प्रणालियों का समर्थन करने में मदद करते हैं।

उदाहरण के लिए, उपग्रह चक्रवातों, बाढ़ और जंगल की आग की निगरानी करते हैं, जिससे समय पर निकासी और राहत प्रयासों में मदद मिलती है। GPS तकनीक भी प्रभावित क्षेत्रों में बचे हुए लोगों का पता लगाने और कनेक्टिविटी बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।



पर्यावरण निगरानी

- मिट्टी की गुणवत्ता, पानी की उपलब्धता और वनस्पति स्वास्थ्य की निगरानी के लिए उपग्रह इमेजरी और रिमोट सेंसिंग उपकरण महत्वपूर्ण हैं, जो स्थायी संसाधन प्रबंधन और पर्यावरण संरक्षण में सहायता करते हैं।

मुख्य अनुप्रयोगों में शामिल हैं:

- सटीक कृषि: उपग्रह डेटा सिंचाई और कीट प्रबंधन को अनुकूलित करने में मदद करता है।
- वनों की कटाई और भूमि क्षरण पर नज़र रखना: रिमोट सेंसिंग वनों की कटाई और भूमि क्षरण की निगरानी करने में सक्षम बनाता है, जिससे पारिस्थितिकी तंत्र की रक्षा के लिए समय पर हस्तक्षेप करना संभव हो जाता है।

टेलीमेडिसिन: ग्रामीण स्वास्थ्य सेवा के लिए अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी

- इससे द्वारा 2001 में शुरू किया गया, टेलीमेडिसिन कार्यक्रम ग्रामीण स्वास्थ्य केंद्रों को उपग्रह संचार के माध्यम से शहरी अस्पतालों से जोड़ता है। यह कार्यक्रम विशेषज्ञ परामर्श और नैदानिक सेवाओं तक पहुँच प्रदान करता है, जिससे दूरदराज के क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवा वितरण में उल्लेखनीय सुधार होता है।

ग्रामीण उत्थान के लिए उपग्रह आधारित मौसम पूर्वानुमान

- उपग्रह आधारित मौसम पूर्वानुमान तकनीकें, जैसे कि INSAT-3D और मेघा-ट्रॉपिक्स, ग्रामीण भारत में, विशेष रूप से कृषि में एक परिवर्तनकारी भूमिका निभाती हैं। सटीक मौसम पूर्वानुमान किसानों को फसल की बुवाई, सिंचाई और कटाई के बारे में सूचित निर्णय लेने में मदद करते हैं, जिससे उत्पादकता और स्थिरता बढ़ती है।

प्राकृतिक आपदा प्रबंधन के लिए भू-स्थानिक समाधान

- जीआईएस, रिमोट सेंसिंग और उपग्रह इमेजरी सहित भू-स्थानिक तकनीकें बाढ़, सूखे और जंगल की आग जैसी प्राकृतिक आपदाओं के प्रबंधन में आवश्यक हैं। ये तकनीकें वास्तविक समय की निगरानी, पूर्व चेतावनी प्रणाली और आपदा प्रतिक्रिया रणनीतियों का समर्थन करती हैं।

निष्कर्ष

भारत में ग्रामीण-शहरी अंतर को पाटने में अंतरिक्ष तकनीकें आवश्यक हैं। वे कृषि उत्पादकता, आपदा प्रबंधन, स्वास्थ्य सेवा और पर्यावरणीय स्थिरता को बेहतर बनाने में योगदान करते हैं। इन प्रगति का लाभ उठाकर, भारत अपने ग्रामीण समुदायों के लिए अधिक समावेशी, लचीला और टिकाऊ भविष्य को बढ़ावा दे रहा है, जिससे ग्रामीण भारत के लिए एक उज्ज्वल कल सुनिश्चित हो रहा है।

3. सीखने के भविष्य की पुनर्कल्पना: अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी पर शिक्षा

- चूँकि भारत अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था में वैश्विक नेता बनने की आकांक्षा रखता है, इसलिए अंतरिक्ष प्रौद्योगिकियों पर शिक्षा को प्राथमिकता देने की तत्काल आवश्यकता है। यह दृष्टिकोण छात्रों और कार्यबल को इसकी क्षमता का दोहन करने, नवाचार और सतत विकास को बढ़ावा देने के लिए सशक्त बना सकता है।

अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी का बढ़ता महत्व

- अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी जलवायु परिवर्तन, आपदा प्रबंधन और सतत विकास जैसी वैश्विक चुनौतियों का समाधान करने में महत्वपूर्ण है। संयुक्त राष्ट्र बाह्य अंतरिक्ष मामलों के कार्यालय (UNOOSA) ने Space4SDGs पहल की शुरुआत की, जिसमें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और सभ्य कार्य और आर्थिक विकास सहित सभी 17 सतत विकास लक्ष्यों (SDG) को प्राप्त करने में इसकी भूमिका पर प्रकाश डाला गया।

मुख्य अनुप्रयोग:

- शिक्षा: हाई-स्पीड इंटरनेट कनेक्टिविटी, दूरस्थ शिक्षा समाधान और डिजिटल उपस्थिति प्रणाली।
- अर्थव्यवस्था: जीडीपी वृद्धि को बढ़ावा देने के लिए बैंकिंग, कृषि, आपदा लचीलापन और संचार जैसे क्षेत्रों को बढ़ाना।
- वैश्विक प्रभाव: विश्व आर्थिक मंच के अनुसार, वैश्विक अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था 2035 तक 630 बिलियन डॉलर (2023) से बढ़कर 1.8 ट्रिलियन डॉलर हो जाने का अनुमान है, जिसकी औसत वार्षिक वृद्धि दर (AAGR) 9% होगी। भारत की अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था के और भी तेज़ी से बढ़ने की उम्मीद है, जो 2030 तक 26% की चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर (CAGR) पर 77 बिलियन डॉलर तक पहुँच जाएगी।

अंतरिक्ष शिक्षा को शिक्षण प्रणालियों में एकीकृत करना**स्कूल पाठ्यक्रम:**

- स्कूल के पाठ्यक्रम में अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी को शामिल करने से छात्रों को वास्तविक दुनिया की समस्याओं को हल करने के लिए प्रेरित किया जा सकता है।

उदाहरणों में शामिल हैं:

- नवीकरणीय ऊर्जा मानचित्रण के लिए उपग्रह डेटा का उपयोग करना।
- भू-स्थानिक प्रौद्योगिकियों के साथ शहरी नियोजन सिखाना।

कोविड के बाद डिजिटल शिक्षा:

- कम सेवा वाले क्षेत्रों में VSAT जैसी लागत प्रभावी उपग्रह संचार प्रणालियों की तैनाती।
- शैक्षिक समानता और संसाधन प्रबंधन में सुधार के लिए भू-स्थानिक प्रौद्योगिकियों को बढ़ावा देना।

वैश्विक सर्वोत्तम अभ्यास**अमेरिका, जापान और यूई जैसे देश मूल्यवान मॉडल प्रदान करते हैं:**

- यूएसए: नासा अंतरिक्ष अवधारणाओं को सुलभ और आकर्षक बनाने के लिए संवर्धित वास्तविकता (एआर) जैसे उपकरणों का उपयोग करता है।
- जापान: JAXA के आउटरीच कार्यक्रमों में अंतरिक्ष यात्री सिमुलेशन और उपग्रह डिजाइन कार्यशालाएं शामिल हैं।
- यूरोप: यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी (ESA) अंतरिक्ष-थीम वाली परियोजनाओं के लिए संसाधन और प्रतियोगिताएं प्रदान करती है।

भारत में अवसर

भारत की अंतरिक्ष नीति 2023 अंतरिक्ष से संबंधित शिक्षा और नवाचार को बढ़ावा देने के लिए रणनीतियों की रूपरेखा तैयार करती है:

- इसरो द्वारा युवा वैज्ञानिक कार्यक्रम (युविका) छात्रों को उपग्रह निर्माण और मिशन योजना से परिचित कराता है।
- एशिया और प्रशांत क्षेत्र में अंतरिक्ष विज्ञान और प्रौद्योगिकी शिक्षा के लिए संयुक्त राष्ट्र से संबद्ध केंद्र (भारत में होस्ट किया गया) रिमोट सेंसिंग, उपग्रह संचार और अंतरिक्ष विज्ञान में पाठ्यक्रम प्रदान करता है।
- एजुसैट: उपग्रह-आधारित ई-लर्निंग सामग्री के माध्यम से ग्रामीण-शहरी अंतर को पाटना।

शिक्षा को मजबूत बनाना:

- सूचना तक पहुँच: डिजिटल मीडिया और वृत्तचित्रों का उपयोग करके चंद्रयान और गगनयान जैसे भारतीय मिशनों पर आउटरीच कार्यक्रम।
- कौशल-उन्मुख पाठ्यक्रम: उपग्रह डिजाइन, एआई, रोबोटिक्स और डेटा विश्लेषण में पाठ्यक्रम शुरू करना।
- सहयोग: स्पेसकिड्स और INSPACe जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से ISRO-निजी क्षेत्र की भागीदारी को बढ़ावा देना।
- शिक्षक प्रशिक्षण: शिक्षकों को अंतरिक्ष के उदाहरणों को शिक्षण में एकीकृत करने के लिए विशेष प्रशिक्षण।
- ग्रामीण फोकस: वंचित क्षेत्रों में छात्रों को प्रेरित करने के लिए मोबाइल प्रदर्शनी और उपग्रह-आधारित संसाधन।

चुनौतियाँ:

- जागरूकता का अंतर: विशिष्ट करियर से परे अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी की प्रासंगिकता की सीमित समझ।
- शिक्षक की तैयारी: शिक्षकों में तकनीकी विशेषज्ञता की कमी।
- पाठ्यक्रम प्रतिरोध: परीक्षा-उन्मुख शिक्षा अंतःविषय सीखने को हतोत्साहित करती है।
- सामाजिक-आर्थिक बाधाएँ: ग्रामीण और आर्थिक रूप से वंचित छात्रों को संसाधनों तक सीमित पहुँच का सामना करना पड़ता है।

निष्कर्ष

अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी में विज्ञान, अर्थव्यवस्था और स्थिरता में परिवर्तनकारी क्षमता है। भारत को अंतरिक्ष से संबंधित करियर और नवाचारों के लिए छात्रों को तैयार करने के लिए शिक्षा का लाभ उठाना चाहिए।

मुख्य कदमों में शामिल हैं:

- अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी को पाठ्यक्रम में शामिल करना।
- सार्वजनिक-निजी सहयोग को बढ़ाना।
- ग्रामीण क्षेत्रों में पहुँच और शिक्षक प्रशिक्षण में निवेश करना।

वैश्विक अभ्यास मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं, लेकिन भारत को इन रणनीतियों को अपनी अनूठी चुनौतियों के अनुरूप बनाना चाहिए। अंतरिक्ष शिक्षा में एक मजबूत आधार बनाकर, भारत न केवल अपने युवाओं को प्रेरित कर सकता है, बल्कि वैश्विक अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था में खुद को एक नेता के रूप में भी स्थापित कर सकता है।

4. सूखा और बाढ़ प्रबंधन के लिए उपग्रह-आधारित प्रारंभिक चेतावनी प्रणाली

सूखा और बाढ़ जैसी प्राकृतिक आपदाएँ ग्रामीण कृषि के लिए महत्वपूर्ण चुनौतियाँ पेश करती हैं, जिससे खाद्य सुरक्षा और किसानों की आजीविका को खतरा होता है।

- उपग्रह प्रौद्योगिकी सटीक निगरानी, प्रारंभिक चेतावनी और जोखिम न्यूनीकरण के लिए परिवर्तनकारी समाधान प्रदान करती है।
- सहयोगी प्रयासों के साथ भारतीय और वैश्विक उपग्रह कार्यक्रमों को मिलाकर आपदा की तैयारी को बढ़ाया जा सकता है और टिकाऊ कृषि प्रणालियों को बढ़ावा दिया जा सकता है।

सूखे और बाढ़ का प्रभाव**सूखा**

सूखा उप-सामान्य वर्षा, अनियमित वितरण या उच्च जल माँग के कारण सामान्य स्तर से नीचे पानी की उपलब्धता में एक अस्थायी कमी है। यह मनुष्यों, वनस्पतियों, पशुधन और पारिस्थितिकी तंत्रों पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। भारत को विभिन्न प्रकार के सूखे का सामना करना पड़ता है:

- मौसम संबंधी: वर्षा की कमी के कारण।
- कृषि: फसलों के लिए अपर्याप्त मिट्टी की नमी।

- जल विज्ञान: सतही और भूजल संसाधनों की कमी
- सामाजिक-आर्थिक: आजीविका और आर्थिक गतिविधियों पर असर

भारत में मुख्य प्रभाव:

- फसल की पैदावार: महत्वपूर्ण विकास चरणों के दौरान अपर्याप्त पानी उत्पादकता को कम करता है, जिससे आर्थिक नुकसान होता है।
- आजीविका: लगातार सूखे के कारण किसान कर्ज में डूब जाते हैं, जिससे ग्रामीण इलाकों में पलायन होता है।
- पशुधन: चारा और पानी की कमी से पशुधन का स्वास्थ्य कमज़ोर होता है, जिससे उत्पादकता कम होती है।
- जल संसाधन: भूजल पर अत्यधिक निर्भरता से जलभूत कम हो जाते हैं, जिससे दीर्घकालिक कमी पैदा होती है।

बाढ़

अत्यधिक वर्षा या नदियों के उफान के कारण आने वाली बाढ़ का तत्काल और दीर्घकालिक प्रभाव होता है:

- फसल विनाश: जलमग्न खेतों से पूरी तरह कृषि को नुकसान होता है।
- मिट्टी का क्षरण: ऊपरी मिट्टी का कटाव उर्वरता को कम करता है, जिससे भविष्य की खेती प्रभावित होती है।
- बुनियादी ढाँचे को नुकसान: सिंचाई और सड़क जैसी आवश्यक प्रणालियाँ नष्ट हो जाती हैं।
- स्वास्थ्य संबंधी खतरे: स्थिर पानी बीमारियों के लिए प्रजनन भूमि बनाता है।

पूर्व चेतावनी प्रणालियों में उपग्रह इमेजरी

उन्नत सेंसर से लैस उपग्रह आपदा प्रबंधन के लिए अमूल्य जानकारी प्रदान करते हैं:

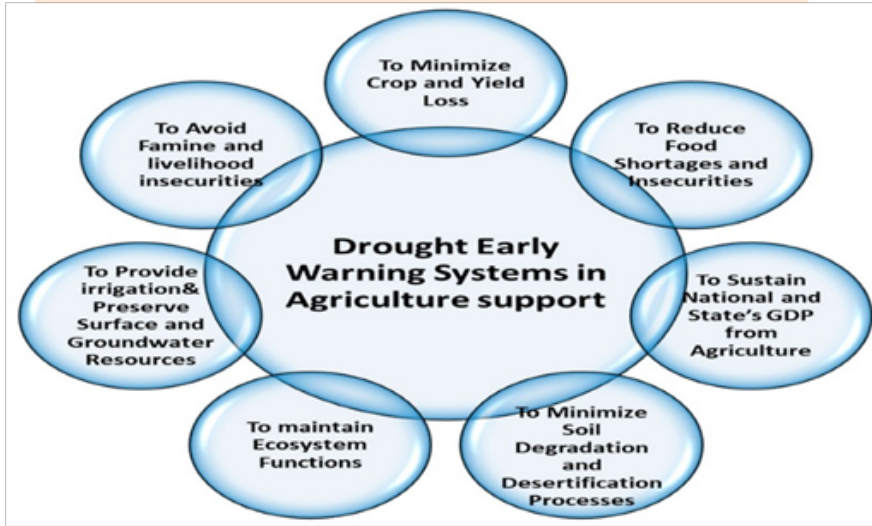
- वर्षा पैटर्न: सटीक डेटा मौसम, बाढ़ के जोखिम और कृषि योजना का पूर्वानुमान लगाने में मदद करता है।
- मिट्टी की नमी का स्तर: पानी की मात्रा का अनुमान लगाने से कुशल सिंचाई और सूखे के अनुकूलन में मदद मिलती है।
- नदी की निगरानी: अल्टीमिटर जल स्तर को ट्रैक करती है, जिससे बाढ़ के जोखिम का आकलन करने में मदद मिलती है।
- वनस्पति स्वास्थ्य: NDVI जैसे सूचकांक फसल तनाव और सूखा प्रभावित क्षेत्रों का पता लगाते हैं।

प्रमुख उपग्रह और कार्यक्रम

भारतीय उपग्रह: INSAT, RISAT और कार्टोसैट मौसम, मिट्टी की स्थिति और आपदा-ग्रस्त क्षेत्रों की निगरानी के लिए महत्वपूर्ण डेटा प्रदान करते हैं।

- वैश्विक पहल: सेंटिनल (ESA) और लैंडसैट (NASA) उन्नत इमेजरी के साथ भारतीय प्रयासों को पूरक बनाते हैं।
- सहयोग: FAO और WMO के साथ भागीदारी बेहतर आपदा प्रतिक्रिया के लिए वैश्विक उपग्रह डेटा को एकीकृत करती है।

उपग्रह प्रौद्योगिकी के माध्यम से सूखा प्रबंधन



निगरानी और मूल्यांकन

- वर्षा विसंगतियाँ: वर्षा में विचलन को ट्रैक करने से सूखे के जोखिमों की भविष्यवाणी करने में मदद मिलती है।
- मृदा नमी मानचित्रण: SMAP जैसे उपकरण बेहतर जल प्रबंधन के लिए वास्तविक समय डेटा प्रदान करते हैं।
- वनस्पति सूचकांक: NDVI और EVI फसल स्वास्थ्य को मापते हैं और अनुकूली प्रथाओं का मार्गदर्शन करते हैं।

पूर्व चेतावनी प्रणाली

- मौसमी पूर्वानुमान: दीर्घकालिक जलवायु रुझान तैयारी में सहायता करते हैं।
- गतिशील निगरानी: नियमित अपडेट समय पर हस्तक्षेप की अनुमति देते हैं।
- सामुदायिक अलर्ट: मोबाइल ऐप और स्थानीय मीडिया समुदायों को सशक्त बनाने के लिए चेतावनियाँ साझा करते हैं।

शमन रणनीतियाँ

- जल संसाधन प्रबंधन: कुशल सिंचाई और वर्षा जल संचयन स्थिरता को बढ़ावा देते हैं।

- फसल विविधीकरण: सूखा प्रतिरोधी फसलें आय और खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करती हैं।
- सरकारी योजनाएँ: PMKSY जैसे कार्यक्रम जल संरक्षण और टिकाऊ कृषि के लिए उपग्रह अंतर्दृष्टि को एकीकृत करते हैं।

उपग्रह प्रौद्योगिकी के माध्यम से बाढ़ प्रबंधन

बाढ़ जोखिम आकलन

- वर्षा तीव्रता निगरानी: समय पर शमन रणनीतियों को सक्षम बनाता है।
- नदी निगरानी: प्रारंभिक चेतावनियों के लिए जल स्तर को ट्रैक करता है।
- बाढ़ के मैदानों का मानचित्रण: लक्षित उपायों के लिए उच्च जोखिम वाले क्षेत्रों की पहचान करता है।

पूर्व चेतावनी प्रणाली

- वास्तविक समय अलर्ट: उपग्रह प्रणाली जीवन और संपत्ति के लिए जोखिम को कम करती है।
- जल विज्ञान मॉडल: बाढ़ के पूर्वानुमान और प्रतिक्रियाओं को बेहतर बनाते हैं।
- सामुदायिक तैयारी: प्रशिक्षण आपदा से संबंधित हताहतों और नुकसान को कम करता है।

शमन रणनीतियाँ

- संरचनात्मक उपाय: उपग्रह इमेजरी तटबंध और जलाशय डिजाइन में सहायता करती है।
- गैर-संरचनात्मक उपाय: वनीकरण और भूमि-उपयोग योजना बाढ़ के प्रभावों को कम करती है।
- राहत और पुनर्प्राप्ति: मानचित्रण बाढ़ के बाद कुशल पुनर्वास का समर्थन करता है।

चुनौतियाँ और सीमाएँ

- डेटा की सुलभता: हितधारकों के लिए किफायती और समय पर पहुँच आवश्यक है।
- बुनियादी ढाँचे की कमी: ग्रामीण क्षेत्रों में ब्राउंड स्टेशन बनाना महत्वपूर्ण है।
- जागरूकता और प्रशिक्षण: किसानों और अधिकारियों को शिक्षित करना उपग्रह अंतर्दृष्टि के प्रभावी उपयोग को सुनिश्चित करता है।
- नीति एकीकरण: आपदा प्रबंधन योजनाओं के साथ उपग्रह अनुप्रयोगों को संरेखित करना महत्वपूर्ण है।

भविष्य की दिशाएँ

- तकनीकी उन्नति: बेहतर डेटा विश्लेषण के लिए AI, ML और IoT को एकीकृत करना।
- सहयोगी प्लेटफॉर्म: सरकारों, निजी क्षेत्रों और अनुसंधान संस्थानों के बीच साझेदारी को मज़बूत करना।
- समुदाय-केंद्रित दृष्टिकोण: स्थानीय ज़रूरतों के हिसाब से समाधान तैयार करना।
- नीति समर्थन: वित्तपोषण और नियामक ढाँचे में सुधार करना।

निष्कर्ष

सूखे और बाढ़ ग्रामीण कृषि को बुरी तरह प्रभावित करते हैं, जिससे आजीविका और खाद्य सुरक्षा को खतरा होता है। सैटेलाइट तकनीक निगरानी, पूर्व चेतावनी और जोखिम न्यूनीकरण के लिए सटीक डेटा प्रदान करती है। डेटा पहुँच और बुनियादी ढाँचे की कमी जैसी चुनौतियों के बावजूद, AI और IoT में प्रगति नई संभावनाएँ प्रदान करती है। नीतियों के साथ सैटेलाइट अंतर्दृष्टि को एकीकृत करके और समुदाय-केंद्रित दृष्टिकोणों को बढ़ावा देकर, भारत प्राकृतिक आपदाओं के खिलाफ लचीलापन बना सकता है और ग्रामीण आबादी के लिए सतत विकास सुनिश्चित कर सकता है।

5. कृषि निर्णय सहायता प्रणाली (कृषि-DSS)

कृषि निर्णय सहायता प्रणाली (कृषि-DSS) एक उन्नत भू-स्थानिक प्लेटफॉर्म है जिसे डेटा-संचालित समाधानों के साथ भारतीय कृषि को सशक्त बनाने के लिए डिज़ाइन किया गया है। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग द्वारा 16 अगस्त, 2024 को लॉन्च किया गया, कृषि-डीएसएस कृषि में प्रौद्योगिकी को एकीकृत करने में एक महत्वपूर्ण छलांग का प्रतिनिधित्व करता है, जिसे अक्सर इस क्षेत्र के लिए "गति शक्ति" के रूप में जाना जाता है।

कृषि-डीएसएस की विशेषताएँ और उद्देश्य

कृषि-डीएसएस की अवधारणा एक एकीकृत मंच के रूप में की गई है जो मौसम के पैटर्न, मृदा स्वास्थ्य, फसल निगरानी और बहुत कुछ पर वास्तविक समय की जानकारी प्रदान करता है।

इसके उद्देश्यों में शामिल हैं:

- डेटा केंद्रीकरण: उपग्रह इमेजरी, मृदा स्वास्थ्य, भूजल स्तर और मौसम डेटा सहित सैकड़ों कृषि डेटा परतों की मेजबानी करना।
- हितधारक सशक्तिकरण: नीति निर्माताओं, किसानों और शोधकर्ताओं को कार्रवाई योग्य जानकारी प्रदान करना।
- रिश्तरता: बेहतर फसल चक्रण, मृदा संरक्षण और सूखा प्रबंधन के माध्यम से टिकाऊ कृषि प्रथाओं को बढ़ावा देना।



सूचित निर्णय लेने के लिए स्वदेशी प्लेटफॉर्म

कृषि-DSS RISAT-1A अर्थ ऑब्ज़र्वेशन सैटेलाइट, MOSDAC और BHUVAN जियोप्लेटफॉर्म (ISRO द्वारा विकसित) और VEDAS जैसी प्रणालियों से डेटा को एकीकृत करता है, ताकि सहज निर्णय लेने में सहायता मिले। यह एकीकरण हितधारकों को चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में भी विश्वसनीय, उत्त्व-रिज़ॉल्यूशन वाले भू-स्थानिक डेटा तक पहुँचने की अनुमति देता है।

मुख्य विशेषताएँ:

- वास्तविक समय की फ़सल निगरानी: फ़सल के क्षेत्रफल, स्वास्थ्य और अवशेष जलाने पर नज़र रखता है।
- सूखे की निगरानी: मिट्टी की नमी, जल भंडारण और सूखे के बारे में लगभग वास्तविक समय का डेटा प्रदान करता है।
- फ़ील्ड पार्सल सेगमेंटेशन: व्यक्तिगत फ़ील्ड पार्सल का विश्लेषण करके अनुरूप हस्तक्षेप सक्षम करता है।
- मृदा सूचना: मृदा प्रकार, pH और उर्वरता पर डेटा के माध्यम से संधारणीय प्रथाओं को सुविधाजनक बनाता है।

सतत कृषि की दिशा में अनुप्रयोग

- बेहतर फ़सल प्रबंधन: पार्सल-स्तरीय विश्लेषण लक्षित हस्तक्षेपों में सहायता करता है, जिससे उत्पादकता बढ़ती है।
- आपदा की तैयारी: कीटों, भारी वर्षा या ओलावृष्टि के लिए प्रारंभिक चेतावनी जोखिम को कम करती है।
- नीति विकास: सटीक डेटा के साथ साक्ष्य-आधारित नीति निर्माण संभव हो जाता है।
- बीमा समाधान: बाढ़ और सूखे के प्रभावों का सटीक आकलन उचित मुआवज़ा पाने में सक्षम बनाता है।

अंतर को पाटना: हितधारकों को लाभ

कृषि-DSS किसानों, वैज्ञानिकों और नीति निर्माताओं को जोड़ता है, जिससे हर स्तर पर सूचित निर्णय सुनिश्चित होते हैं:

- किसान: फ़सल की उपयुक्तता, सिंचाई और उर्वरकों के लिए व्यक्तिगत सलाह प्राप्त करें।
- शोधकर्ता: नवाचार के लिए स्पेक्ट्रल लाइब्रेरी और ग्राउंड ट्रुथ डेटा का लाभ उठाएँ।
- नीति निर्माता: क्षेत्र-विशिष्ट कृषि नीतियों को तैयार करने के लिए एनालिटिक्स का उपयोग करें।

डिजिटल कृषि मिशन के साथ एकीकरण

- कृषि-DSS व्यापक डिजिटल कृषि मिशन का एक हिस्सा है, जिसे ₹2,817 करोड़ के वित्तीय परिव्यय के साथ लॉन्च किया गया है।

इस मिशन में निम्नलिखित पहल शामिल हैं:

- एग्री स्टैक: कृषि सेवाओं में क्रांति लाने के उद्देश्य से एक डिजिटल रिपोजिटरी।
- मृदा प्रोफ़ाइल मानचित्रण: बारीक मृदा डेटा प्रदान करके सटीक कृषि को सक्षम बनाता है।
- डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना (DPI): केंद्र और राज्य सरकारों में IT पहलों का समर्थन करता है।

चुनौतियाँ और आगे का रास्ता

चुनौतियाँ:

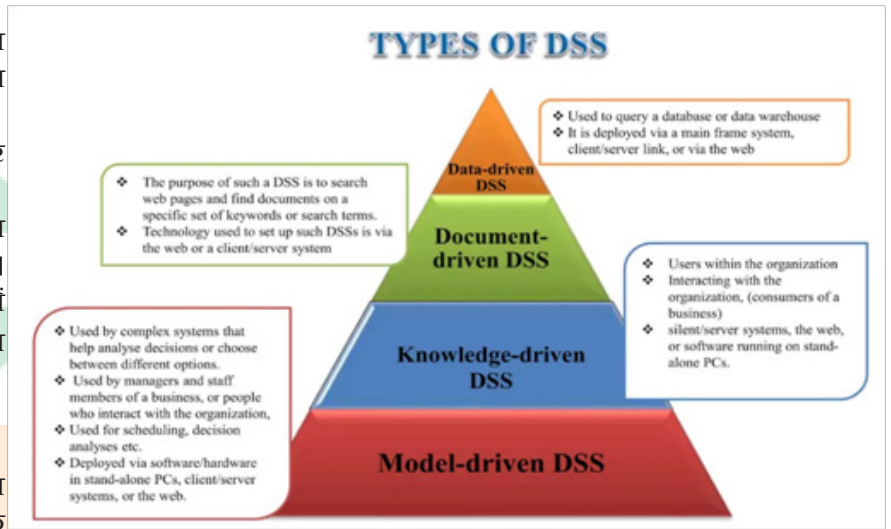
- डिजिटल डिवाइड: ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल अवसंरचना तक सीमित पहुँच।
- क्षमता निर्माण: किसानों और स्थानीय अधिकारियों के बीच तकनीकी विशेषज्ञता की कमी।
- डेटा गोपनीयता: कृषि डेटा के दुरुपयोग के बारे में चिंताएँ।

सिफारिशें:

- अवसंरचना विकास: ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट कनेक्टिविटी बढ़ाएँ।
- प्रशिक्षण कार्यक्रम: डिजिटल प्लेटफॉर्म का प्रभावी ढंग से उपयोग करने के बारे में हितधारकों को शिक्षित करें।
- नीति सुरक्षा: मजबूत डेटा सुरक्षा तंत्र सुनिश्चित करें।

निष्कर्ष

कृषि-DSS एक तकनीकी नवाचार से कहीं अधिक है; यह भारत में टिकाऊ और लचीली कृषि को प्राप्त करने की दिशा में एक परिवर्तनकारी कदम है। अत्याधुनिक भू-स्थानिक तकनीकों को वास्तविक समय के डेटा के साथ एकीकृत करके, यह हितधारकों को सशक्त बनाता है, उत्पादकता बढ़ाता है और स्थिरता को बढ़ावा देता है। डिजिटल कृषि मिशन के एक भाग के रूप में, कृषि-डीएसएस में भारतीय कृषि को पुनर्परिभाषित करने तथा आने वाली पीढ़ियों के लिए खाद्य सुरक्षा और ग्रामीण समृद्धि सुनिश्चित करने की क्षमता है।





———— CENTER FOR ————
CIVIL SERVICES
———— DEDICATED TO UPSC CSE ————